Vijaya™

बाल्यावस्था एवं विकास

(Childhood and Growing Up)

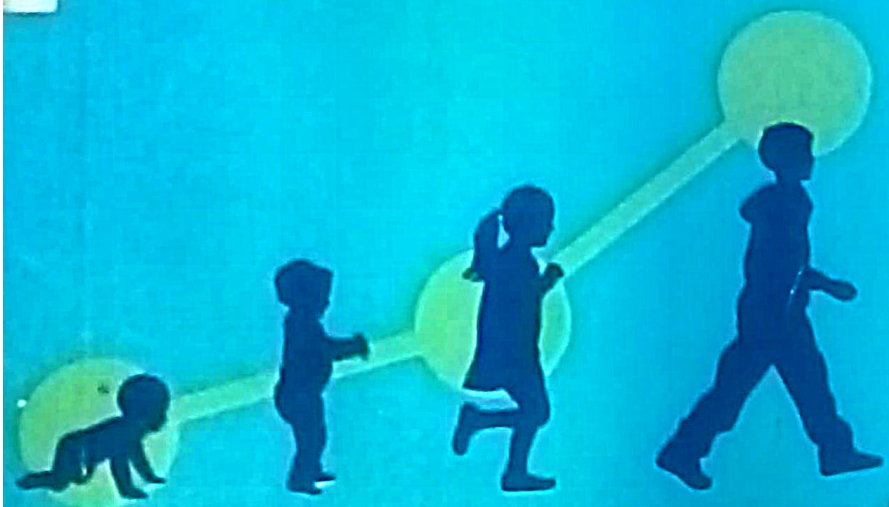

- Dr. SUNITA KUMAR
- JYOTI NARULA

AL-8
SH-1

P.S.R.S.T.C.
4457

VIJAYA PUBLICATIONS

LUDHIANA

बाल्यावस्था एवं विकास

(CHILDHOOD AND GROWING UP)

For B.Ed. Students

P.S.R.S.C.E.
4457
AL-B
S-2

Dr. Sunita Kumar
Principal
Shri Sardari Lal College of Education
Nahoni, Ambala

Jyoti Narula
Assistant Professor in Education
Shri Sardari Lal College of Education
Nahoni, Ambala

P.T. SITA RAM SHASTRI B.Ed TRAINING COLLEGE
LIBRARY
Book No. .....
BHIWANI

VIJAYA PUBLICATIONS
EDUCATIONAL PUBLISHERS
546, Books Market, LUDHIANA – 141008

Published by :
Vijay Kumar Tandon
Vijaya Publications
546. Books Market. Ludhiana (Pb.)
e-mail : vijayapublication@yahoo.in
Contact : 98140-67258. 97793-68600

COPY RIGHT

This book or part thereof may not be reproduced in any form without the written permission of the publishers.

Price : ₹ 199/-

ISBN : 978-93-84004-56-9

Printed by
New Simran Offset Printers
Jalandhar

प्रस्तावना

बच्चे अधिकतर दीर्घदर्श में बड़े होते हैं उनमें बदलाव शान्ति से, धीरे-धीरे तथा संवर्द्धित होते हैं। माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए बच्चे को बड़ा करना सबसे जटिल उत्तरदायित्वों में से एक है। बाल्यावस्था एवं विकास का कोर्स विभन्न सामाजिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठिभूमि से सम्बन्धित बाल्यावस्था, बाल विकास तथा किशोरावस्था के अध्ययन से परिचित कराता है। इस कोर्स से गुज़रने के बाद, विद्यार्थी अध्यापक बाल विकास की संकल्पना, विभिन्न अवस्थाएं तथा सिद्धान्त, बाल विकास में परिवार, स्कूल, समाज तथा समकालीन मुद्दों को अच्छे प्रकार से समझा सकेंगे।

प्रस्तुत किताब, "**बाल्यावस्था एवं विकास**" कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के दो साल के कोर्स की शैक्षणिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लिखी गई हैं। इसे दिलचस्प, संक्षिप्त तथा अच्छी हालत में रखने की पूरी कोशिश की गई है।

हम विभिन्न लेखकों का धन्यवाद करते हैं जिनके कार्य तथा विचार इस पुस्तक में सम्मिलित किए गए हैं। हम सत श्री हरमिलाप साहिब जी, उनके पूरे परिवार, तानया तथा रूचि का हार्दिक धन्यवाद करते हैं इसके साथ हम प्रकाशक विजय टंडन जी का धन्यवाद करते हैं जिन्होंने पूरी समर्पित टीम के साथ इस कार्य को पूरा किया।

हमें विश्वास है कि विद्यार्थी, अध्यापक तथा प्रशासक हमारी कोशिशों का स्वागत करेंगे तथा प्रशंसा करेंगे। इस पुस्तक की बेहतरी के लिए सुझाव (suggestions) 2015 @ gmail.com पर भेज सकते हैं जो अगले संस्करण में सम्मिलित किए जाएंगे।

- लेखकगण

SYLLABUS

(Kurukshetra University, Kurukshetra 2021-22)

COURSE 1

CHILDHOOD AND GROWING UP

COURSE CONTENTS

Max. Marks : 100 **Time : 3 Hours**

(Theory : 80, Internal : 20

Unit – I

1. Dimensions of Development

- Growth & Development: - Concept. Principal, Factors. & Stages.
- Characteristics of stages development with special reference to Childhood and Adolescence.
- Adolescence: Understanding their needs and problems in Indian context.
- Parenting styles: Concept and its impact Child development.
- Personality: meaning, nature and assessment.

Unit – II

2. Theories of Child Development

- Theory of Cognitive Development by piglet: Concept. Stages and Implications with special reference to Indian Context.
- Theory of Social & Emotional Development by Erickson: Concept, Stages and Implications with special reference to India Context.
- Kohlberg theory of Moral Development: Concept, Stages and Implications with special reference to India Context.

Unit-III

3. Learner as a Developing Individual

- Intelligence: Meaning. nature and theories of intelligence (two factor theory and Thurston's group factor theory, Measurement of intelligence and application of intelligence tests.
- Creativity: Concept; relationship with intelligence; techniques for fostering creativity.
- Mental Processes of Learning: Thinking Concept Types of

Thinking – Divergent, Convergent, Critical, Reflective & Lateral Thinking.

- Memory – Concept, Types & Strategies to develop Memory; Forgetting – Nature, Causes, Factors & Strategies to minimize Forgetting.

Unit- IV

4. Learning in socio Cultural Perspective

- Agencies of Socialization: Family, School, Community and their role in Child Development.
- Social & Cultural Change as factors influencing Child Development.
- Impact of Marginalization and Stereotyping on Child Development with special reference to Gender, Social Class & Poverty.

  Role of media in constructing & deconstructing perceptions & ways of dealing with above issues.

विषय-सूची

इकाई - I : बाल विकास

1. वृद्धि तथा विकास : संकल्पना, सिद्धान्त, कारक तथा चरण 3
(Growth and Development : Concept, Principle, Factors and Stages)
2. विकास की विभिन्न अवस्थाएं 19
(Different Stages of Development)
3. बाल्यावस्था 42
(Childhood)
4. बचपन 48
(Late Childhood)
5. किशोरावस्था 52
(Adolescence)

इकाई - II : बाल विकास के सिद्धान्त

6. बाल विकास 59
(Child Development)
7. मानसिक विकास 66
(Mental Development)
8. एरिक्सन की सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की थ्योरी : भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ 75
(Theory of Social and Emotional Development by Erickson : Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)
9. नैतिक विकास की कोहलवर्ग की थ्योरी ; भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ 82
(Kohlberg Theory of Moral Development ; Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)

इकाई - III : विकास के समाजिक प्रसंग

10. समाज 91
(Society)
11. समाजीकरण 99
(Socialization)

12. समाजीकरण की एजेन्सियाँ (Agencies of Socialization) 104
13. सामाजिक तथा सांस्कृतिक बदलाव तथा इसका बाल विकास पर प्रभाव (Social and Cultural Change and their Impact on Child Development) 115
14. आर्थिक बदलाव : शहरीकरण तथा आर्थिक बदलाव का बाल विकास पर प्रभाव (Economic Change : Impact of Urbanization and Economic Change on Child Development) 126
15. शहरीकरण (Urbanization) 129

इकाई - IV : समकालीन मुद्दे

16. लिंग, सामाजिक श्रेणी, गरीबी के विशेष संदर्भ में सीमांत तथा रूढ़िबद्धता (Marginalization and Stereotyping with Special Reference to Gender, Social Class, Poverty) 145
17. सीमांत तथा रूढ़िबद्धता का बाल विकास तथा सम्बन्धित परिणामों पर प्रभाव (Impact of Marginalization and Stereotyping on Child Development and Related Outcomes) 170
18. अनुभूतियों का निर्माण तथा विखंडना करने और उनसे व्यवहार करने में मीडिया की भूमिका (Role of Media in Constructing and Deconstructing Perceptions and Ways of Dealing) 176

NEW SYLLABUS

APPENDIX

UNIT-I : CHAPTER-1 किशोरोवस्था की आवश्यकताएँ तथा समस्याएँ (Needs and Problems of Adolescence) 1
UNIT-I : CHAPTER-2 परवरिश शैलियां-बचपन तथा किशोरवस्था के विकास के पहलुओं पर प्रभाव (Parenting Style....) 5
UNIT-I : CHAPTER-3 व्यक्तित्व (Personality) 12
UNIT-III : CHAPTER-1 बुद्धि (Intelligence) 20
UNIT-III : CHAPTER-2 सृजनात्मकता (Creativity) 38
UNIT-III : CHAPTER-3 चिंतन (Thinking) 42
UNIT-III : CHAPTER-4 स्मृति (Memory) 55

इकाई - I : बाल विकास

1. वृद्धि तथा विकास : संकल्पना, सिद्धान्त, कारक तथा चरण
   (Growth and Development : Concept, Principle, Factors and Stages)
2. विकास की विभिन्न अवस्थाएं
   (Different Stages of Development)
3. बाल्यावस्था
   (Childhood)
4. बचपन
   (Late Childhood)
5. किशोरावस्था
   (Adolescence)

CHAPTER

1 वृद्धि तथा विकास : संकल्पना, सिद्धान्त, कारक तथा चरण (Growth and Development : Concept, Principle, Factors and Stages)

परिचय
(Introduction)

आरम्भ में सरल शब्दों में पूछा जाए ; अध्यापक को वृद्धि तथा विकास का अध्ययन क्यों करना चाहिए ? इसका उत्तर है कि अध्यापक को विभिन्न संस्कृतियों तथा आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि (background) के बच्चों से सामना करना पड़ता है जिनमें विभिन्न आयु स्तरों पर अनेकों व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं जैसे मानसिक स्तर, योग्यताएं, क्षमताएं इत्यादि। अध्यापक समाज का एक एजेन्ट है उसका दायित्व बच्चों के व्यवहार में इच्छित बदलाव लाना है ताकि वह अच्छे नागरिक बन सकें तथा राष्ट्रीय विकास में योगदान दे सके ।

मनुष्य का जीवन माँ के गर्भ में (Conception) से शुरू होता है जो नए जीवन की वृद्धि तथा विकास का स्थान बन जाता है। वह प्रक्रिया जिससे Conceived प्राणी पूर्ण रूप से मनुष्य बन जाता है। सामूहिक तौर पर वृद्धि तथा विकास कहलाता है वृद्धि बालक के पूरे आकार या शरीर के हिस्सों में लगातार बढ़ोतरी को कहते हैं। विकास से भाव विभिन्न कलाओं, योग्यताओं जैसे सिर को संभालना, बोलना, सीखना, भावनाओं की अभिव्यक्ति तथा दूसरे लोगों के साथ सम्बन्ध इत्यादि की लगातार प्राप्ति है। वृद्धि तथा विकास साथ-साथ चलते हैं, परन्तु विभिन्न दरों पर।

बहुत सारे विकास के मनोवैज्ञानिक वृद्धि तथा विकास को एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग करते हैं, क्योंकि यह दोनों क्रियाएं एक दूसरे के साथ सम्बन्धित तथा एक दूसरे पर आधारित हैं। किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास में किसी एक के योगदान को अलग करना कठिन होता है। वातावरण के साथ लगातार प्रतिक्रिया (Interaction) बच्चे की आन्तरिक क्षमताओं, योग्यताओं तथा प्रतिभाओं की वृद्धि तथा विकास में सहायक होती है। औपचारिक तथा अनौपचारिक शिक्षा वृद्धि तथा विकास के इस पथ में सहायक होती है। वृद्धि तथा विकास, विकास के मनोवैज्ञान का एक हिस्सा है जो शुद्ध मनोवैज्ञान का एक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र है। साधारणतय: यह उन बदलावों की ओर इशारा करता है जो

किसी के अनुवांशिक तथा पर्यावरण कारकों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक तथा नैतिक (moral) पहलुओं के साथ प्रतिक्रिया के द्वारा उत्पन्न होते हैं।

वृद्धि का अर्थ
(Meaning of Growth)

वृद्धि से भाव है शारीरिक मापों की बढ़ौतरी की ओर इशारा जैसे भार तथा लम्बाई जिन्हें गुणात्मक (quantitative) बदलाव कहते हैं। अत: वृद्धि व आकार, लम्बाई तथा भार में बढ़ौतरी है। इसके साथ हृदय, मस्तिष्क, मांसपेशियों तथा शरीर की वृद्धि सम्मिलित हैं। इसे आसानी से देखा तथा मापा जा सकता है।

वृद्धि के प्रकार
(Types of Growth)

शारीरिक (Physical) : उदाहरणतय: ऊँचाई, पैसे की संख्या में वृद्धि।

अमूर्त (Abstract) : उदाहरणतय: सिस्टम अधिक जटिल हो जाता है, व्यक्ति अधिक परिपक्व हो जाता है।

जीवविज्ञान (Biology) :

1. सैल की वृद्धि
2. ट्यूमर की वृद्धि
3. बैक्टीरिया की वृद्धि
4. मानवीय वृद्धि
5. Auxology – मानवीय शारीरिक वृद्धि के सभी पहलुओं का अध्ययन
6. वृद्धि का हॉरमोन
7. प्राइमरी वृद्धि, वृद्धि जिसमें पौधे बढ़ जाते हैं।
8. सकैंडरी वृद्धि जिसमें लकड़ी वाले पौधे मोटे हो जाते हैं।

सामाजिक साईंस (Social Science) :

1. मानवीय वृद्धि (humanity)
2. विकास का मनोविज्ञान
3. व्यक्तिगत वृद्धि
4. इरिक्सन (Erickson) के मनोवैज्ञानिक-सामाजिक विकास के स्तर, व्यक्ति वृद्धि के चरण
5. जनसंख्या में वृद्धि।

Economy

1. आर्थिक वृद्धि
2. आय में वृद्धि, सरल तथा मिश्रित ब्याज के कारण।
3. वृद्धि में पैसा लगाना।
4. Mathematical मॉडल
5. सीधी वृद्धि (Linear growth)
6. रेखीय (logistic) वृद्धि जिसे S curve कहते हैं।
7. घातीय (exponential) वृद्धि जिसे ज्यामितिक (geometric) वृद्धि कहते हैं।
8. अतिशयोक्तिपूर्ण (Hyperbolic) वृद्धि

परिभाषाएं (Definitions) :

गैसल के अनुसार, "वृद्धि वातावरण की अपेक्षा प्राणी का कार्य है।"

क्रो तथा क्रो के अनुसार, "वृद्धि किसी विशेष अवस्था या तथ्य में बदलाव को सम्बोधित करता है।"

अत: कह सकते हैं वृद्धि शारीरिक परिपक्वता या आयु बढ़ने के साथ आने वाले जैविक बदलाव हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, "वृद्धि से भाव आकार, लम्बाई, भार, ऊँचाई इत्यादि में बढ़ौतरी है जो मापा जा सकता है।"

विकास का अर्थ
(Meaning of Development)

वृद्धि की अपेक्षा विकास जटिल प्रक्रिया है। विकास के नतीजे काफी जटिल तथा कठिन होते हैं क्योंकि इन्हें वास्तविक रूप से जानना तथा मापना बहुत मुश्किल है। विकास से भाव व्यक्ति के मानसिक संवेगात्मक सिस्टम पर वह प्रभाव है जो इन्हें ताकतवर तथा बढ़ाता है, इनकी संख्या बढ़ाता है तथा इनका आपस में सम्बन्ध बनाता है। संक्षिप्त में विकास प्राणी में एक समय में होने वाले गुणात्मक बदलाव हैं।

विकास विभिन्न योग्यताओं की लगातार प्राप्ति है जैसे सिर संभालना, बोलना, सीखना, अपनी भावनाओं को व्यक्त करना तथा दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्बन्धित करना। प्रत्येक बालक वृद्धि तथा विकास का असामान्य रास्ता अपनाता है जो गर्भ में वह अपने माता-पिता से प्राप्त करता है। यदि बालक अनुवांशिक तौर पर चतुर है तो उसका विकास तीव्र होगा। परन्तु दुर्भाग्यवश कई वस्तुएं इस अनुवांशिक तौर पर निर्धारित वृद्धि तथा विकास को बदल देती हैं जैसे संक्रमण, देखभाल की कमी, मनोवैज्ञानिक झटका, शिक्षा की कमी, कुपोषण इत्यादि।

सामान्य आहार प्राप्त करने वाला शिशु संक्रमण से बचा रहता है, पहले तीन महीने तेज़ी से बढ़ता है। यह बहुत आवश्यक है उन आयु समूहों को जानना जब अधिकतर बच्चे

कुछ कौशल सीख जाते हैं। सीखे गए इन विभिन्न कौशलों को मील का पत्थर (milestone कहते हैं। विकास पर नज़र रखते हुए हम देखते हैं कि किस आयु में बच्चे ने विभिन्न मील के पत्थर प्राप्त किए जैसे माता पर मुस्कुराना, बैगर सहारे के बैठना, हाथों द्वारा वस्तु क पकड़ना, खड़े होना, चलना तथा बोलना। आपको इस बात का रिकार्ड रखना चाहिए कि किस आयु में बालक ने विभिन्न मील के पत्थर प्राप्त किए।

यह याद रखना आवश्यक है कि प्रत्येक बालक अपने दर पर ही बढ़ता है। कुछ जल्दी चलना सीखते हैं तथा कुछ लेट चलते हैं। व्यक्तिगत बालक के विकास की दर विस्तृत तौर पर औसतन से भिन्न हो सकती है परन्तु फिर भी सामान्य ही रहेगी। एक बालक का विकास सामान्य है यदि उसके विकास की दर स्थिर (constant) है तथा विकास का पैटर्न सामान्य सीमा के भीतर है।

विशेषज्ञों के अनुसार (Expert's views)

हरलॉक के अनुसार, "विकास व्यस्कता के लक्ष्य की ओर व्यवस्थित ससंगत पैटर्न (Orderly cohert pattern) में होने वाले प्रगतिशील (progresive) बदलावों की शृंखला है।"

स्टीवनसन के अनुसार, "विकास जीवन के चक्र में व्यवहार में होने वाले बदलाव के अध्ययन से सम्बन्ध रखता है।"

लिबर्ट, पोलोस तथा **मारमर** के अनुसार, "विकास समय के अनुसार वृद्धि तथा योग्यताओं में आने वाले बदलाव की प्रक्रिया है जो वातावरण के साथ पारस्परिक क्रिया (interaction) तथा परिपक्वता का कार्य है।"

अत: कह सकते हैं कि विकास व्यक्ति की योग्यताओं का प्रकट होना तथा विस्तृत होना है जो कार्य अच्छी प्रकार करने में सहायक होता है जैसे motor ability यह वृद्धि के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है।

विकास को तेज करने वाले कारक (Factors Promoting Development)

विकास को तेज करने वाले कारक निम्नलिखित हैं :

अच्छा पोषण (Good nutrition) : सामान्य वृद्धि तथा विकास के लिए अच्छा पोषण आवश्यक है। शरीर के दूसरे अंगों की अपेक्षा, जन्म के समय मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता। जीवन के प्रथम छ: महीनों में अच्छे पोषण की बहुत आवश्यकता होती है। कुपोषण होने से मस्तिष्क पूर्ण रूप से विकसित नहीं होता जिसके लिए शिशु पूर्ण जीवन दु:ख भोगता है।

कुपोषित बालक थका तथा उदासीन रहता है तथा सीखने में दिलचस्पी नहीं लेता जो सामान्य विकास के लिए आवश्यक है।

संवेगात्मक सहारा (Emotional support) : जीवन के प्रथम पाँच वर्षों में, उन कलाओं का आधार बनता है जो जीवन के बाकी समय में विकसित होती हैं। नवजात शिशु को कोई ज्ञान नहीं होता तथा प्रथम वर्षों में वह काफी सीखता है। बालक के साथ सावधानीपूर्वक, प्यार तथा सम्मान से व्यवहार करना आवश्यक है क्योंकि उसे पूरे संवेगात्मक सहारे की ज़रूरत होती है। बच्चे के स्वस्थ संवेगात्मक विकास के लिए आठ आधारीय आवश्यकताएं होती हैं :

— प्यार
— सुरक्षा
— व्यक्ति की भांति स्वीकारे जाना
— स्वाभिमान
— उपलब्धि
— मान्यता (Recognition)
— स्वतन्त्रता
— अधिकार (Authority)

संक्षिप्त तौर पर :

प्यार : प्यार तथा सम्मान बालक की पहली भूख होती है। बच्चे को निरन्तर प्यार मिलना चाहिए। वह बालक जिसे प्यार नहीं मिलता वह दूसरे बालकों की भांति जल्दी नहीं सीखता, उदास रहता है तथा आस-पास की क्रियाओं में दिलचस्पी नहीं लेता।

सुरक्षा : सभी चीज़ों में सुरक्षा प्रथम स्थान पर होती है। सुरक्षा देने के लिए यह आवश्यक है कि बालक महसूस करे कि उसके माता-पिता उसे प्यार करते हैं तथा उसकी देखभाल करते हैं। उसे पता होना चाहिए कि उसके माता-पिता उसकी देखभाल करेंगे तथा उसकी सहायता करेंगे, उसे भूखा होने पर खाना देंगे, उसके साथ खेलेंगे, उसे खुश तथा सुविधाजनक रखेंगे। यह भावना उसमें लोगों के प्रति विश्वास की भावना पैदा करती है, पहले परिवार के प्रति तथा बाद में परिवार के दूसरे लोगों के प्रति।

व्यक्ति की भांति स्वीकारे जाना : बालक को पता होना चाहिए कि उसकी माता तथा परिवार उसे उसी भांति प्यार तथा स्वीकार करते हैं जैसे वह है। वह दूसरे बच्चों के साथ उसकी तुलना न करें तथा यह न बताए कि वह कार्य करने में बहुत धीमे है तथा वह दूसरे बच्चे की भांति अच्छा नहीं है। वह उसकी अच्छाईयों तथा कमियों के साथ स्वीकारा जाए। माता-पिता बच्चों को एहसास कराए कि वह अद्‌भुत (unique) है जैसे सभी बच्चे अद्‌भुत हैं।

स्वाभिमान : बच्चों को यह एहसास होना चाहिए कि उनका बहुत मूल्य है। वह बहुमूल्य हैं। वह अपने आप कार्य करने के काबिल हो जाएं, वह सफलता प्राप्त कर

सकते हैं तथा उसकी सफलता को स्वीकारा जाएगा। कोई भी चीज़ जो उन्हें नीचा दिखाए बालक के लिए नुकसानदायक हो सकती है।

उपलब्धियां : संतोष तथा उपलब्धि की भावना बच्चे को कुछ नया करने तथा अपनी क्षमता को पहचानने के लिए प्रेरित कर सकती है। जो चीज़ बच्चे स्वयं कर सकते हैं, माता-पिता को नहीं करनी चाहिए। उन्हें प्रत्येक कार्य करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए परन्तु माता-पिता का निर्देश मिलते रहना चाहिए।

मान्यता : बच्चे को पता होना चाहिए कि जब वह कुछ नया करना सीखता है तो उसके माता-पिता खुश होते हैं। माता-पिता को बच्चे को कार्य करने में सहायता करनी चाहिए ताकि उसे उपलब्धि का एहसास हो। उन्हें बच्चों को पढ़ाना चाहिए क्योंकि वह उसे प्यार करते हैं तथा दर्शाते हैं कि वह उस पर गर्वांनित हैं। इससे बच्चा सुरक्षित महसूस करेगा तथा जल्दी सीखेगा। बच्चे की सकारात्मक क्रियाएं दूसरों द्वारा सम्मानित हों।

स्वतन्त्रता : बच्चे को स्वयं निर्णय लेने के लिए उत्साहित करना चाहिए, वह स्वयं निर्णय ले तथा स्वतन्त्र बने। माता-पिता बच्चे की स्वतन्त्रता में बाधक न बने तथा उसे आवश्यकता से अधिक सुरक्षा प्रदान न करे।

अधिकार : बच्चे को माता-पिता के प्यार के साथ उनके रोब (authority) की भी आवश्यकता होती है। माता-पिता को बच्चे को अभ्यस्त करना चाहिए। वह घर, पड़ोस, स्कूल तथा सोसाइटी के नियमों का पालन करें। इससे उन्हें पता चलेगा कि उसे क्या करना है तथा क्या नहीं करना है। जो वह कर सकता है उसे इनाम तथा प्रशंसा से सम्मानित करना चाहिए। जो बच्चा नहीं कर सकता है उसे भली प्रकार अनुत्साहित करना चाहिए। बच्चे को उस व्यवहार के अवांछनीय व नतीजों के बारे में बताना चाहिए। इस प्रकार बच्चा जीवन की बाधाओं (restrictions) को स्वीकार करना सीख जाएगा।

खेल (Play) : बच्चे के विकास में खेलों का महत्त्वपूर्ण भाग है। खेलें सूचना के स्त्रोत, मस्तिष्क के लिए उत्प्रेरक, मांसपेशियों के लिए उत्प्रेरक तथा मौज मस्ती का साधन होती हैं। यह बच्चे की शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक विकास के लिए आवश्यक है। यदि बच्चा नहीं खेलता तो वह बिमार है। खेलने के लिए मंहगे खिलौने आवश्यक नहीं। छोटे बच्चें उपलब्ध वस्तुओं जैसे कागज़, स्टिक तथा पत्थरों से ही खेलते रहते हैं। माता-पिता ध्यान रखें कि खिलौने से बच्चे को कोई नुकसान न हो। ध्यान रहे खिलौना बहुत छोटा न हो जो बच्चे के गले में न फस जाए।

बच्चों को खेल द्वारा सिखाने के लिए, उसके लिए आवश्यक है :

— बच्चे को खेलने का खुला स्थान दें ताकि वह घूम सके तथा चीज़ों को ढूंढ सके।

— जो वह करना चाहे या जिसमें उसे आनन्द मिले करने दें।

— विभिन्न प्रकार के खिलौने दें ताकि वह विभिन्न कलाएं सीखे सकें।
— ढेर लगाने के लिए लकड़ी के ब्लाक, फेंकने के लिए गेंद, पानी या रेत भरने तथा डालने के लिए कंटेनर।
— व्यस्क भी बच्चों के साथ खेलें।

वृद्धि तथा विकास का शैक्षणिक महत्त्व
(Educational Significance of Growth and Development)

वृद्धि तथा विकास के सिद्धान्तों का ज्ञान अध्यापकों, माता-पिता तथा शिक्षा में जुड़े व्यक्तियों के लिए बहुत आवश्यक है। यह वह निर्देश हैं जिनसे बच्चों को समझने तथा उनके विकास कार्यों (developmental tasks) के बारे में जानने में सहायता मिलती है। वृद्धि तथा विकास के सिद्धान्त इस प्रकार से सहायक हैं :

1. व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ज़ोर (Emphasis on individual differences) : वृद्धि तथा विकास की दर में बच्चों में विस्तृत विभिन्नताएं पाई जाती हैं। इसलिए उनकी शिक्षा तथा विकास के लिए कोर्स की योजना बनाते समय हमें उनके व्यक्तिगत पैटर्न तथा वृद्धि दर पर ध्यान देना चाहिए।

2. विकास के चरण को समझने के लिए आवश्यक (Important for understanding stages of development) : इसका ज्ञान हमें यह जानने में सहायता करता है कि एक बालक से उसके शारीरिक, मानसिक, सामाजिक विकास के लिए विकास के विभिन्न चरणों में क्या तथा कितनी आशा की जाए। वृद्धि के सही ज्ञान से माता-पिता तथा अध्यापक बालक के भविष्य की योजना तथा आशाओं को निम्न स्तर पर नहीं रखेंगे।

3. असामान्यता को पहचानने के लिए महत्त्वपूर्ण (Important for identifying, abnormabilities) : यह विकास की दिशा तथा सामान्य पैटर्न को जानने में सहायक होता है। यह बालकों तथा विद्यार्थियों में असामान्यता की डिग्री ढूंढने में सहायता करता है। इस बात का ज्ञान होने पर कि विकास पूर्ण से खण्ड़ों में तथा फिर खण्डों से पूर्ण की ओर शुरू होता है, सीखने की क्रिया की योजना बनाने तथा उसी अनुसार सीखने की विधियां सैट करने में दिशा मिलती है।

4. एकरूपता विकास में महत्त्वपूर्ण (Important for harmonious development) : वृद्धि तथा विकास के विभिन्न पहलूओं के सिद्धान्तों का आपस में सम्बन्ध तथा एक दूसरे पर निर्भर होना बालक के व्यक्तित्व के एकरूप वृद्धि तथा विकास को लक्षित करने में सहायक होता है तथा जानकारी देता है कि एक पहलू को विकसित करने में दूसरे को नकारा न जाए।

5. स्वस्थ वातावरण को समझने में महत्त्वपूर्ण (Important for understandin need for healthy environment) : इस बात का ज्ञान कि अनुवांशिक तथा वातावर दोनों ही वृद्धि तथा विकास की प्रक्रिया में सहायक हैं, बालक की परवरिश में वातावर की दशाओं पर पूर्ण ध्यान देने में सहायक होता है।

6. शैक्षणिक प्रोग्राम बनाने में सहायक (Framing educational programmes) विकास के स्तर के आधार पर स्कूल के प्रोग्राम तथा प्रैक्टिस व्यवस्थित करने में सहायत करता है।

7. उचित निर्देश देना (Giving proper guidance) : यह बच्चों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को समझ कर उचित निर्देश के प्रोग्राम बनाने में सहायक होता है।

8. भविष्य की योजना में महत्त्वपूर्ण (Important for future planning) : वृद्धि तथा विकास की एक समानता का ज्ञान अध्यापकों तथा माता-पिता को बच्चों में होने वाले बदलावों के लिए योजना बनाने में सहायक होता है। बालकों को भी इन बदलावों के बा में पहले से पता होने पर लाभ ही होगा।

सारांश : संक्षिप्त में कह सकते हैं कि वृद्धि तथा विकास के सिद्धान्तों का पूर्ण ज्ञा होने पर अध्यापकों के लिए उचित निर्देश देना, अध्ययन की स्थितियां व्यवस्थित करना निर्देश के प्रोग्रामों की योजना बनाना सम्भव होता है जिससे बालकों के व्यक्तित्व में इच्छित एकरूप विकास हो सकता है।

वृद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing Growth and Development)

व्यक्ति की वृद्धि तथा विकास में आन्तरिक तथा बाहरी दोनों ही कारक महत्त्वपू भाग अदा करते हैं :

(A) आन्तरिक कारण

(a) अनुवांशिकता तथा जैविक कारक (Heredity and biological factor) व्यक्ति की वृद्धि तथा विकास में **अनुवांशिकता कार्य महत्त्वपूर्ण** भाग अदा करते है। यह कारक बच्चे में गर्भ धारण के **समय से ही मौजूद होते हैं**। अनुवांशिक विकास की जड़ें में उपस्थित होती है जबकि **वातावरण इसे प्रकट होने में सहायता** करता है। कुछ प्रभावित करने वाले अनुवांशिक कारक हैं :

1. **ढील ढौल** (Physique) : **लम्बाई, भार, रंग, आँखों** का रंग, शारीरिक आकृति बहरापन, गूंगापन, अन्धेपन जैसी **त्रुटियां व्यक्ति में हीन** भावना पैदा कर देती हैं। शारीरिक रूप से कमज़ोर तथा आन्तरिक **रूप से परेशान बालक बिमारियों** से ग्रस्त रहते हैं। वह सामाजिक वातावरण में मानसिक **समस्याओं से जूझते हैं** तथा समाज में व्यवस्थित नहीं हो पाते। दूसरी ओर जो बालक स्वस्थ, **मजबूत तथा ऊर्जा से भरपूर** है वह जीवन में संवेगात्मक रूप से सन्तुलित होगा।

2. बुद्धिमत्ता (Intelligence) : यह व्यवस्थित होने, सीखने तथा उचित समय पर उचित निर्णय लेने की योग्यता है। बुद्धिमान लोगों का अपने संवेगों पर नियन्त्रण होता है तथा वह घर, स्कूल तथा समाज में कम बुद्धिमान लोगों की अपेक्षा बेहतर व्यवस्थित होते हैं।

3. लिंग भेद (Sex differences) : लड़के अधिक सख्त दिमाग के तथा अपनी बात मनवाने वाले होते हैं। उनकी दिलचस्पी मशीनरी तथा बाहरी क्रियाओं में होती है। वह सहने, दया करने, सहायता करने, अपनी इज्जत करवाने, खुशी तथा दूसरी सामाजिक विशेषताओं में मजबूत होते हैं। लड़कियां लड़कों की अपेक्षा जल्दी परिपक्व हो जाती हैं।

4. स्नायु संस्थान (Nervous system) : व्यक्ति की बौद्धिक योग्यता motor योग्यता, शारीरिक ताकत तथा व्यवस्थित होने की योग्यता स्नायु संस्थान की बनावट तथा कार्य पर निर्भर करती है। स्नायु संस्थान पर लगी चोट व्यक्ति के विकास पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी। स्नायु संस्थान सीखने की क्षमता को नियन्त्रित करता है।

(b) संवेगात्मक परिपक्वता (Emotional maturity) : संवेगात्मक परिपक्वता का शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक विकास तथा कई प्रकार की व्यवस्थाओं पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। संवेगात्मक परिपक्वता की कमी इन पहलूओं पर नकारात्मक प्रभाव डालती है। यदि किसी का अपने संवेगों के ऊपर नियन्त्रण नहीं होता है तो वह वृद्धि तथा विकास के पहलू में पीछे रह जाते हैं।

(c) समाजीकरण (Socialization) : यह वह क्रिया है जिसमें व्यक्ति सामाजिक स्तर पर व्यवहार करना सीखते हैं तथा सामाजिक व्यवस्थाएं करते हैं। समाजीकरण का वृद्धि तथा विकास पर कई प्रकार से प्रभाव पड़ता है।

(B) बाहरी कारक (External factors) : वृद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले यह कारक वातावरण में उपस्थित होते हैं। यह कारक निम्नलिखित हैं :

1. जन्म से पूर्ण का वातावरण (Prenatal environment) : शिशु के जन्म से पूर्व का वातावरण माँ का गर्भ होता है। यदि माँ अच्छी शारीरिक दशा में है तथा सन्तुलित और पौष्टिक आहार लेती हैं तो शिशु की वृद्धि ठीक होगी। इस समय के कुछ कारक इस प्रकार हैं : (*a*) माँ का शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य

(*b*) गर्भ में पल रहा अकेला या अधिक बच्चे

(*c*) सामान्य या असामान्य प्रसव

खेलों के प्रकार
(Kinds of Play)

शारीरिक खेलें : इससे बच्चों की बड़ी मासपेशियों की कसरत होती हैं तथा बालक स्वस्थ तथा मजबूत बनता है। इन खेलों में दौड़ना, कूदना, चढ़ना तथा तैरना सम्मिलित है।

जोड़-तोड़ (Manipulative) : **खेलें :-** इन खेलों में बालक हाथों तथा आँखों क प्रयोग करता है। इनसे वस्तुओं के आकार, विन्यास, संगति (consistency), साईज़ तथ रंगों का पता चलता है। जोड़-तोड़ खेलों में सम्मिलित हैं : रेत, मिट्टी, चिकनी मिट्टी तथ पानी।

सृजनात्मक खेलें : पेंटिंग, पेपर कटिंग, सिलना, क्रेयान, धागा डालना, मोती तथ शैल, (Clay) मॉडलिंग, ईंटों या लकड़ी के ब्लॉक के साथ निर्माण करना सभी क्रिया बालकों को अपने हाथ तथा आँखे एक साथ प्रयोग करने में सहायता करती हैं जिससे व चीज़ें बना सके जो पहले नहीं थीं।

नकल करने की खेलें : नकल करने की खेलों द्वारा बच्चा व्यक्ति बनना सीख है। आवाज़ को नकल करके, बच्चा भाषा सीखता है। प्रत्येक वस्तु को नकल करके व कपड़े डालने, खाना खाने, धोना इत्यादि कलाएं अपना लेते हैं।

कल्पनात्मक खेलें : बच्चा तैयार होकर किसी व्यक्ति जैसा दर्शाएगा जिसे व पसन्द करता है। ड्राइवर बन कर कार चलाता है। किसी पशु जैसा दिखाता है। इस प्रका की खेलों से वह गुस्से, डर तथा तनाव आदि नकारात्मक संवेगों से छुटकारा पा सकता है

वृद्धि तथा विकास को मापने का महत्त्व (Importance of Assessing Growth and Development)

वृद्धि तथा विकास को मापना बच्चे के स्वास्थ्य तथा पोषण का स्तर पता करने के लिए आवश्यक है। सामान्य वृद्धि तथा विकास बच्चे के स्वस्थ पोषण के स्तर को दर्शा है। असामान्य वृद्धि या वृद्धि न होना बिमारी को दर्शाता है।

वृद्धि तथा विकास मनोवैज्ञान का महत्त्वपूर्ण विषय है। प्रत्येक अध्यापक तथा माता पिता को वृद्धि तथा विकास के आधारिय ज्ञान का पता होना आवश्यक है। अच्छ प्रभावशाली शिक्षण तथा निर्देश वृद्धि तथा विकास के अध्ययन पर निर्भर करता है प्रभावशाली सीखना उस समय होता है जब सीखने की परिस्थितियों को वृद्धि त विकास के अनुसार व्यवस्थित किया जाए।

जन्म के समय बालक असहाय होता है। धीरे-धीरे वह स्वतन्त्र होना सीखता है पाठ्यक्रम की तैयारी करते समय अध्यापक को विभिन्न स्तरों पर होने वाले बदलावों के बारे में आधारिय ज्ञान होना चाहिए।

वृद्धि तथा विकास के मध्य अन्तर (Difference between Growth and Development)

वृद्धि से भाव शरीर में होने वाले बदलाव हैं, जबकि विकास में शरीर तथा व्यवह के विभिन्न पहलूओं की व्यवस्था करना सम्मिलित है :

— वृद्धि को मापा जा सकता है जबकि विकास को होने वाले बदलाव को निरीक्षण (observe) किया जाता है।

— परिपक्वता होने तक वृद्धि रूक जाती है जबकि विकास चलता रहता है।

— वृद्धि तथा विकास सम्बन्धित हैं वह समान्तर चलते हैं।

— विकास अधिक विस्तृत पारिभाषिक पद (term) है जिसमें वृद्धि सम्मिलित है।

— विकास शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक हो सकता है जबकि वृद्धि शारीरिक पहलू तक ही सीमित रहती है।

— विकास गुणात्मक होता है जबकि वृद्धि संख्यात्मक होती है।

वृद्धि और विकास
(Growth and Development)

वृद्धि और विकास को निम्नलिखित प्रकार से अलग किया जा सकता है :

वृद्धि	विकास
1. वृद्धि शब्द परिमाण सम्बन्धी परिवर्तनों के लिए प्रयोग होता है। जैसे बच्चे के बड़े होने के साथ-साथ आकार, लम्बाई, ऊंचाई और भार आदि में होने वाले परिवर्तन को वृद्धि कहते हैं।	1. विकास उन परिवर्तनों के लिए प्रयोग होता है, जिससे बालक की कार्य क्षमता, कार्य कुशलता और व्यवहार में प्रगति होती है।
2. वृद्धि की क्रिया बालक द्वारा परिपक्वता ग्रहण करने के साथ ही समाप्त हो जाती है।	2. विकास एक निरन्तर चलने वाली क्रिया है, जो आजीवन चलती रहती है।
3. वृद्धि में होने वाले परिवर्तन दिखाई देते हैं। इन्हें मापा भी जा सकता है।	3. कार्य क्षमता, कार्य कुशलता और व्यवहार में होने वाले परिवर्तन बालक के व्यवहार द्वारा ही देखे जा सकते हैं। इन्हें मापा नहीं जा सकता।
4. वृद्धि के साथ-साथ विकास होना आवश्यक नहीं है। मोटापा बढ़ने से उसकी कार्य क्षमता तथा कार्य कुशलता में वृद्धि नहीं होती।	4. विकास भी वृद्धि के बगैर सम्भव है, जैसे बच्चों की ऊंचाई या लम्बाई न भी बढ़े, परन्तु उसका मानसिक विकास या कार्य क्षमता का विकास हो जाता है।

वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलू
(Various Aspects of Growth and Development)

बच्चे के व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से विकास निम्न पहलुओं से दिखाई देता है :

(*i*) शारीरिक विकास (Physical Development)

(*ii*) मानसिक विकास (Mental Development)

(*iii*) संवेगात्मक विकास (Emotional Development)

(*iv*) सामाजिक विकास (Social Development)

(*i*) शारीरिक विकास (Physical Development) : बालक के शारीरिक विक में उसके शरीर के बाहरी और आन्तरिक अंगों का विकास शामिल है।

(*ii*) मानसिक विकास (Mental Development) : इसमें सभी प्रकार की मानसि शक्तियां जैसे सोचने-विचारने की शक्ति, कल्पना शक्ति, निरीक्षण शक्ति, स्मरण शं तथा एकाग्रता (Concentration), सृजनात्मकता (Creativity), संवेदना (Sensatio प्रत्यक्षीकरण (Perception) और सामान्यीकरण (Generalization) आदि से सम्बन्धि शक्तियों का विकास सम्मिलित होता है।

(*iii*) संवेगात्मक विकास (Emotional Development) : इसमें विभिन्न संवे की उत्पत्ति, उनका विकास और संवेगात्मक व्यवहार सम्मिलित होता है।

(*iv*) सामाजिक विकास (Social Development) : बच्चे में उचित सामाजि गुणों का विकास कर समाज के मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार व्यवहार करना सिखा सामाजिक विकास के अन्तर्गत आता है।

शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएं
(Stages of Physical Development)

विकास की अवस्था	अवधि और अनुमानित आयु
1. गर्भावस्था (Prenatal Period)	गर्भावस्था से जन्म तक
2. नवजात अवस्था (Stage of Infancy)	जन्म से लेकर 3 वर्ष की आयु तक
3. बाल्यावस्था (Childhood Stage)	चौथे वर्ष से 12 वर्ष तक
(*i*) पूर्व-बाल्यावस्था (Pre-Childhood Stage)	चौथे वर्ष से 6 वर्ष तक
(*ii*) उत्तरा-बाल्यावस्था (Post-childhood Stage)	सातवें से 12 वर्ष तक

4. किशोरावस्था (Adolescence)	13 से 19 वर्ष तक
5. प्रौढ़ावस्था (Adulthood)	20 वर्ष से लेकर संतानोत्पत्ति की क्षमता रहने तक
6. वृद्धावस्था (Old age)	संतानोत्पत्ति की क्षमता समाप्त होने के समय से लेकर मृत्यु तक

वृद्धि और विकास के सिद्धान्त (Principles of Growth and Development)

वृद्धि और विकास की क्रिया के फलस्वरूप व्यक्ति में आने वाले परिवर्तन तयशुदा सिद्धान्तों के अन्तर्गत होते हैं। इन्हें वृद्धि और विकास के सिद्धान्त कहते हैं। यह सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

1. निरन्तरता का सिद्धान्त (Principle of Continuity) : विकास निरन्तर चलता रहता है जो कभी समाप्त नहीं होता। एक व्यक्ति का जीवन कोशिका से शुरू होकर उसके शरीर में मस्तिष्क तथा दूसरे पहलुओं का निरन्तर विकास होता रहता है।

2. वृद्धि तथा विकास की दर एक समान नहीं होती (Rate of growth and development is not Uniform) : वृद्धि और विकास की दर जीवन के पहले वर्षों में तेज़ होकर फिर शैशवावस्था में धीमे हो जाती है। वय: सन्धि अवस्था के समीप यह फिर तेज़ हो जाती है। इसलिए किसी भी अवस्था में वृद्धि और विकास की दर एक समान नहीं होती। यह तेज़ और धीमी होती रहती है।

3. व्यक्तिगत विभिन्नताओं का सिद्धान्त (Principle of Individual Differences) : प्रत्येक बच्चे की वृद्धि और विकास की दर अलग-अलग होती है।

4. लय में समानता (Uniformity of Pattern) : हालांकि वृद्धि और विकास की दर एक समान नहीं होती और इसमें व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं परन्तु इसमें एक समान पैटर्न होता है, जैसे सभी व्यक्ति सिर से नीचे की ओर बढ़ते हैं। इसी प्रकार सभी का भाषा विकास और मांसपेशियों का विकास एक लय में होता है।

5. विकास सामान्य से विशेष की ओर बढ़ता है (Development proceeds from General to Specific) : विकास के प्रत्येक पहलू में विशेष क्रिया से पूर्व सामान्य क्रिया होती है। उदाहरणतय: जब बच्चा रोता है तो उसका पूरा शरीर हिलता है। वृद्धि के साथ यह रोना सिर्फ गले तक या आँखों तक सीमित रह जाता है। इसी प्रकार बच्चा पहले प्रत्येक व्यक्ति को डैडी ही बोलता है। इसी के बाद वह इसका प्रयोग अपने पिता के लिए करता है।

6. सम्पूर्णता का सिद्धान्त (Principle of Integrity) : विकास में गतिविधियों के कई हिस्सों को मिलाकर सीखने की क्रिया बनती है, जैसे उठाने की क्रिया करते समय चलने, झुकने, बैठने, चुनाव करने, उठाने आदि की क्रियाएं मिलाई जाती हैं।

7. सम्बन्धता का सिद्धान्त (Principle of Interrelation) : वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलू जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक इत्यादि एक दूसरे से सम्बन्धित और निर्भर होते हैं। एक पहलू का विकास दूसरे पहलू के विकास को प्रभावित करता है। उदाहरणतय: जिस बच्चे का पूरा शारीरिक विकास नहीं होता वह संवेगात्मक और बौद्धिक विकास में भी पिछड़ा रहता है।

8. विकास की भविष्यवाणी हो सकती है (Development is Predictable) बच्चे की वृद्धि की दर को देखकर यह अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि वह कितना व्यस्क होगा जैसे बालक की कलाई की एक्स-रे के द्वारा उसके द्वारा प्राप्त की जाने वाली लम्बाई का पता चल जाता है। इसी प्रकार उसकी मानसिक योग्यता देखकर यह पता चल जाता है कि उसका मानसिक विकास कितना होगा।

9. विकास की दिशा का सिद्धान्त (Principle of Developmental Direction) : विकास की दर सिर से पांव की ओर चलती है, जैसे बालक पहले सिर संभालता है फिर पांव जिन पर खड़े होना सीखता है। इसी प्रकार विकास शरीर के मध्य से शुरू होकर बाहर की ओर चलता है। पहले बड़ी मांसपेशियों पर नियन्त्रण करके वह छोटी मांसपेशियों को नियन्त्रित करना सीखता है।

10. वृद्धि और विकास पर अनुवांशिक और वातावरण का प्रभाव होता है (Growth and development is the joint product of the both Heredity and Environment) : वृद्धि और विकास पर अनुवांशिक और वातावरण दोनों प्रभाव पड़ते हैं।

गर्भाधारण में अंसतोषजनक कारक हैं :
(Unfavourable Factors in the Pre-natal Environment)

(*i*) कुपोषण
(*ii*) विटामिनों की कमी
(*iii*) एल्कोहल लेना
(*iv*) सिगरेट पीना
(*v*) माँ पर अत्यधिक दवाब
(*vi*) माँ के पेट में शिशु को कोई चोट या दुर्घटना

प्रसव के समय देखभाल (Peri-natal Care) : यह प्रसव के समय दी जाने वाली स्वास्थ्य सेवा है। प्रसव का समय तब शुरू होता है जब दर्द के साथ युटिरस सिकुड़ता है, एसेन्टा तथा मेम्बरेन युटिरस से पूरे बाहर आ जाते हैं तथा रक्त स्राव नियन्त्रित हो जाता है।

इस समय डाक्टर के तीन कर्त्तव्य होत हैं :

— इस समय माँ सुरक्षित हो।

— शिशु ठीक हो।

— प्रसव की दर्दें ठीक आ रही हों।

प्रसव के बाद का वातावरण (Post natal environment) : वृद्धि तथा विकास को प्रभावित करने वाले यह कारक हैं :

1. भोजन (Food) : बच्चे के सामान्य विकास के लिए यह महत्त्वपूर्ण कारक हैं। टेढे-मेढे दाँत, त्वचा के रोग तथा दूसरी स्वास्थ्य की समस्याएं कुपोषण से जुड़ी होती है। सन्तुलित आहार आवश्यक है।

2. ताजी वायु तथा सूर्य की रोशनी (Fresh air and Sunlight) : जीवन के प्रथम वर्षों में बच्चे को ताजी वायु तथा सूर्य की रोशनी आवश्यक है जो उसकी परिपक्वता तथा स्वस्थ्य दशाओं को प्रभावित करती हैं।

3. शारीरिक व्यायाम तथा क्रियाएं (Physical exercises and activities) : यह बच्चे के शारीरिक विकास के लिए आवश्यक हैं। खेलों, ड्रिल, जिमनास्टिक, डांस, पहाड़ चढ़ना इत्यादि को उत्साहित करना चाहिए।

4. घटनाएं तथा दुर्घटनाएं (Incidents and accidents) : जीवन में अच्छी तथा बुरी घटनाएं वृद्धि और विकास पर प्रभाव डालती हैं। सिर पर चोट लगने तथा जहर और बैक्टीरिया के संक्रमण से वृद्धि और विकास रूक जाता है।

5. मित्र तथा सहयोगी (Friends and companions) : विकास पर मित्र तथा सहयोगी अच्छा प्रभाव डालते हैं।

शिक्षा एक प्रक्रिया तथा आगे बढ़ने का साधन है। अध्यापक तथा माता-पिता को पता होना चाहिए कि बच्चे क्या करने के योग्य हैं और उनमें क्या क्षमताएं हैं। यह जानकर वह बच्चे के विकास के लिए उचित वातावरण बना सकते हैं। इसके साथ अध्यापक तथा माता-पिता बच्चों के लिए सौहदर्यपूर्ण, सहायक तथा उत्साही हों। बच्चों की विभिन्नताओं को सामने रखते हुए स्कूल के प्रोग्राम वैसे ही बनाने चाहिए। खेलें इत्यादि सम्मिलित करके शारीरिक तथा मानसिक विकास किया जा सकता है। बच्चों में सन्तुलित आहार की आदत डालें। व्यक्तिगत विभिन्नताओं के विकास के लिए विशिष्ट योग्यताओं, दिलचस्पियों तथा (Co-curricular) क्रियाओं को सम्मिलित करें।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. विकास की परिभाषा लिखें।
2. वृद्धि की परिभाषा लिखें।
3. वृद्धि और विकास में क्या अन्तर है।
4. वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलू कौन से हैं ?
5. शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएं कौन-कौन सी हैं ?
6. मानसिक विकास के विभिन्न पहलू कौन से हैं ?
7. विकास की गति सामान्य से विशेष की ओर कैसे होती है ?
8. सम्बन्धता का सिद्धान्त विकास में कैसे लागू होता है ?
9. विकास की दिशा का कौन-सा सिद्धान्त है ?
10. विकास निरन्तर चलता है, उल्लेख करें।

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. वृद्धि और विकास की परिभाषा लिखें।
2. वृद्धि और विकास में क्या अन्तर है।
3. वृद्धि और विकास के विभिन्न पहलू कौन से हैं ?
4. शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएं कौन सी हैं ?
5. वृद्धि और विकास के सिद्धान्तों का उल्लेख करें।
6. "विकास का सम्बन्ध जीवन काल में व्यवहार में होने वाले बदलावों के अध्ययन से है" प्रकाश डालें।
7. वृद्धि तथा विकास पर आन्तरिक तथा बाहरी कारक प्रभाव डालते हैं। उल्लेख करें।

CHAPTER

2 विकास की विभिन्न अवस्थाएं (Different Stages of Development)

शैशवावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development During Babyhood)

भार (Weight) : जन्म के चार महीने में शिशु का भार लगभग दुगुना हो जाता है। एक वर्ष का होने पर भार जन्म से तीन गुणा हो जाता है जो कि लगभग 9 से 10 किलो होता है। इसके बाद यह भार बढ़ने की गति मन्द हो जाती है। शैशवावस्था में भार बढ़ना अधिकतर वसा तन्तुओं के बढ़ने से होता है।

तालिका 2.1

आयु	भार
जन्म के समय	2.5 से 3 कि०ग्रा०
एक वर्ष	9-10 कि०ग्रा०
दो वर्ष	11-12.5 कि०ग्र०
तीन वर्ष	12.5-14 कि०ग्रा०

ऊंचाई (Height) : चार महीने का बालक 23 से 24 ईंच लम्बा होता है। एक वर्ष का बालक 28 से 30 ईंच तथा दो वर्ष का बालक 32 से 34 ईंच लम्बा होता है।

तालिका 2.2

आयु	लम्बाई
जन्म के समय	50 सै०मी०
4 महीने बाद	57-60 सै०मी०
8 महीने बाद	65-70 सै०मी०
12 महीने बाद	72-75 सै०मी०
24 महीने बाद	83-85 सै०मी०
36 महीने बाद	92-95 सै०मी०

शारीरिक अनुपात (Body Proportions) : शैशवावस्था में सिर की वृद्धि धीरे होती है जबकि पेट तथा टांगों-बाजुओं की वृद्धि बढ़ जाती है।

सिर (Head) : नवजात शिशु का सिर पूरे शरीर की लम्बाई का चौथा हिस्सा है। शैशवावस्था में सिर की वृद्धि धीरे-धीरे होती है जबकि पेट तथा टांगों-बाजुओं वृद्धि तेज होती है। इसलिए शैशवावस्था के अन्त तक शिशु का सिर उतना भारी लगता और वह पतला दिखाई देना शुरू हो जाता है। शारीरिक विकास के दो सिद्धान्त हैं-सिफैलो-कोडल (Cephalo-Caudal) तथा प्रोक्सीमो डिस्टल (Proxi distal)। पहले का अर्थ है सिर से टांगों तक का विकास तथा दूसरे का अर्थ है शरी केन्द्र से बाहर की ओर जाती हुई वृद्धि।

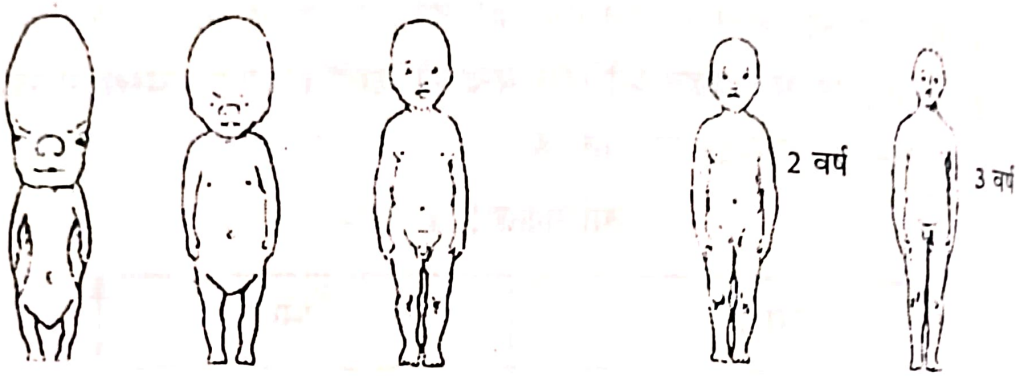

2 माह का भ्रूण 5 माह का भ्रूण नवजात गर्भस्थ व जन्मेतर शिशु में शारीरिक अनुपात

हड्डियां (Bones) : शैशवावस्था में हड्डियों की संख्या बढ़ती है। प्रथम वर्ष में ह सख्त होनी शुरू हो जाती हैं। अठारह महीने तक शिशु के सिर का (Fontella) प प्रतिशत तक और सिर दो वर्ष तक पूरा भर जाता है।

टांगें तथा बाजू (Head and Feet) : जन्म के समय शिशु की टांगें बाजुओं अपेक्षा छोटी तथा मुड़ी होती हैं। लम्बाई बढ़ने के साथ टांगें सीधी होनी शुरू हो जाती दो वर्ष का होने तक टांगों की लम्बाई 40% तथा बाजू की लम्बाई 60-75% तक जाती है।

मांसपेशियां तथा वसा (Muscles and Fat) : शैशवावस्था में मांसपेशियां कम होती हैं, परन्तु इस समय वसा तन्तु तेज़ी से बनते हैं। इसका कारण है कि बालक अधिक लेता है जिसमें वसा ज्यादा होती है।

शारीरिक बनावट (Body Structure) : दूसरे वर्ष के अन्त तक बालक लम्बे पतले (Ectomorphic), या गोल तथा मोटे (Endomorphic) या भारी तथा (Mesomorphic) हो जाते हैं।

दांत (Teeth) : दूध के दांत छः माह की आयु में दिखाई देते हैं। एक वर्ष के तक शिशु में औसतन चार से छः तथा दो वर्ष के अन्त तक सोलह अस्थाई दांत होते अस्थाई दांतों की संख्या 20 होती है। सर्वप्रथम आगे के दांत तथा आखिर में निकलती हैं।

आयु	दांत निकलना
6-7 माह	नीचे के बीच वाले दो कुतरने वाले दांत (Lower central Incisors)
7-9 माह	ऊपर के दो बीच वाले कुतरने वाले दांत (Upper Central Incisors)
8-10 माह	ऊपर के दो इधर-उधर के कुतरने वाले दांत (Lateral incisors upper)
10-12 माह	नीचे के दो इधर-उधर के कुतरने के दांत (Lateral incisors lower)
12-15 माह	चबाने वाले आगे के चार दांत (Pre-molars)
15-20 माह	ऊपर तथा नीचे के चार चीरनें फाड़ने वाले दांत (Canine)
20-24 माह	द्वितीय चबाने वाले दांत (Second molars)

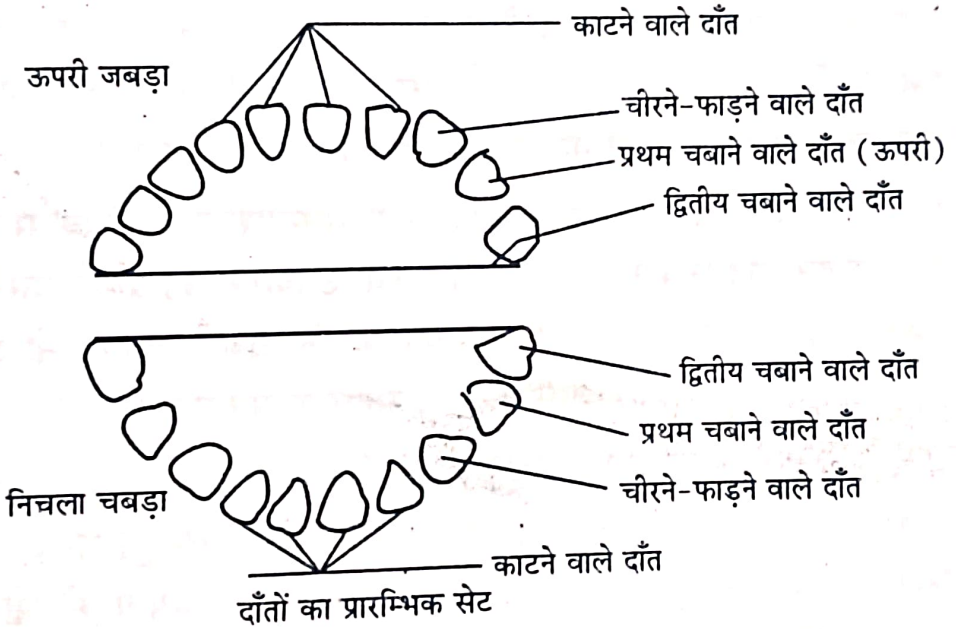

स्नायु तन्त्र (Nervous System) : जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार कुल भार का आठवां हिस्सा होता है। जिससे उसके ऊपर का भाग अधिक भारी दिखाई देता है। मस्तिष्क के (Cerebellum) का भार जो शरीर के सन्तुलन तथा शरीर की स्थिति को नियन्त्रित करता है, प्रथम वर्ष में तीन गुणा हो जाता है। जन्म के समय उपस्थित अविकसित कोशिकाएं विकसित होती जाती हैं।

स्नायु तन्त्र (Sense Organs) : तीन महीने की आयु तक आंखों की मांसपेशियां व्यवस्थित हो जाती हैं जिससे शिशु साफ देखने लगता है। शिशु की आंखों के (Cones) विकसित हो जाते हैं जिससे रंग दिखने लगते हैं। सुनने की क्षमता विकसित हो जाती है। जन्म के समय सूंघने तथा स्वाद की क्षमता उपस्थित होती है। त्वचा पतली होने के कारण छुए जाने पर शिशु प्रतिक्रिया करते हैं। इस समय शिशु दबाव, दर्द तथा तापमान को भी पूरी तरह महसूस कर लेते हैं।

आंतरिक विकास (Internal Growth) : जन्म के बाद शरीर में बहुत परिवर्तन होते हैं। जन्म के बाद सांस क्रिया तेज होने के साथ-साथ हृदय की धड़कन भी तेज हो जाती है। हृदय के आकार में वृद्धि होने के साथ-साथ रक्त चाप बढ़ जाता है। भोजन आहार नली में से गुजरने में अधिक समय लेता है और पाचन आसान हो जाता है। मूत्राशय में मूत्र लम्बे समय तक रह सकता है, शरीर का तापमान अधिक स्थिर रहता है और रक्त की संरचना अधिक स्थायी हो जाती है।

क्रियात्मक विकास
(Motor Development)

क्रियात्मक विकास से अभिप्राय स्नायु केन्द्र, नसों और मांसपेशियों के समन्वय (co-ordination) द्वारा शारीरिक गतिविधियों पर नियन्त्रण करने में विकास करना है। इस भुजाओं, टांगों और शरीर के अन्य भागों के प्रयोग में गति और समन्वय का विकास होता है। जब तक यह विकास नहीं होता, बालक असहाय रहता है। पहले चार-पांच वर्षों के दौरान बालक लगभग सभी क्रियात्मक गतियों पर नियन्त्रण पा लेता है।

मुख्य गतिविधियों पर नियन्त्रण के बाद छोटी मांसपेशियों का विकास होता है। इस कसकर गेंद पकड़ने, गेंद फैंकने, पढ़ने-लिखने तथा उपकरण का प्रयोग करने में प्रयुक्त होता है। क्रियात्मक विकास बालक की अन्य बालकों के साथ मिलकर उन्हें दोस्त बना उनके साथ खेलने तथा एक साथ काम करने में सहायता करता है।

प्रारम्भ में वस्तुओं को उठाने-पकड़ने जैसी गतिविधियां पूरे शरीर द्वारा की जाती जैसे-जैसे बालक बड़ा होता है वह वस्तु को उठाने की क्रिया सम्पूर्ण शरीर द्वारा न कर किसी विशेष भाग द्वारा करता है। मांसपेशियों का विकास सिर से पांव की ओर तथा शरीर के केन्द्र साइडों पर विकसित होता है। उदाहरणतय: मांसपेशीय नियन्त्रण उंगलियों की अपेक्षा भुजाओं में पहले बनता है। पहले वह किसी वस्तु को पकड़ने के लिए दोनों हाथों का प्रयोग करता है, फिर वह उंगलियां प्रयोग करने लग जाता है।

क्रियात्मक नियन्त्रण का विकास
(Development of Motor Control)

1. सिर का भाग (Head Region) :

आंखों का नियन्त्रण (Eye Control) : जन्म से लगभग बारह घण्टों बाद शिशु आंखें लाईन में चलती हुई वस्तुओं की ओर देखती हैं। तीसरे से चौथे हफ्ते के मध्य चलती हुई वस्तु की ओर देखता है, दूसरे तथा तीसरे महीने में आंखें ऊपर से नीचे की देखना शुरू कर देती है। कुछ महीनों बाद आंखें गोल घूमने लगती हैं।

मुस्कराहट (Smiling) : प्रथम हफते में छुए जाने पर शिशु मुस्कराता है। तीसरे तथा चौथे महीने में शिशु दूसरे व्यक्ति के मुस्कराए जाने पर मुस्कराता है।

सिर संभालना (Head Holding) : एक महीने का शिशु ठोडी उठा सकता है। पीठ के सहारे लेटा हुआ शिशु पांचवें महीने तथा चौथे और छठे महीने के मध्य बैठा हुआ शिशु सिर संभाल लेता है।

2. पेट का भाग (Trunk Region) :

लुढ़कना (Rolling) : दो महीने का शिशु साईड से साईड पर लुढ़क सकता है। चौथे महीने से पीठ से साईड पर तथा छठे महीने पूरा लुढ़क सकता है। इस समय शिशु पहले अपना शरीर घुमाता है फिर कंधे, फिर श्रोणि (Pelvis) तथा अंत में टांगों की उछल-कूद के साथ पूरा शरीर मोड़ लेता है।

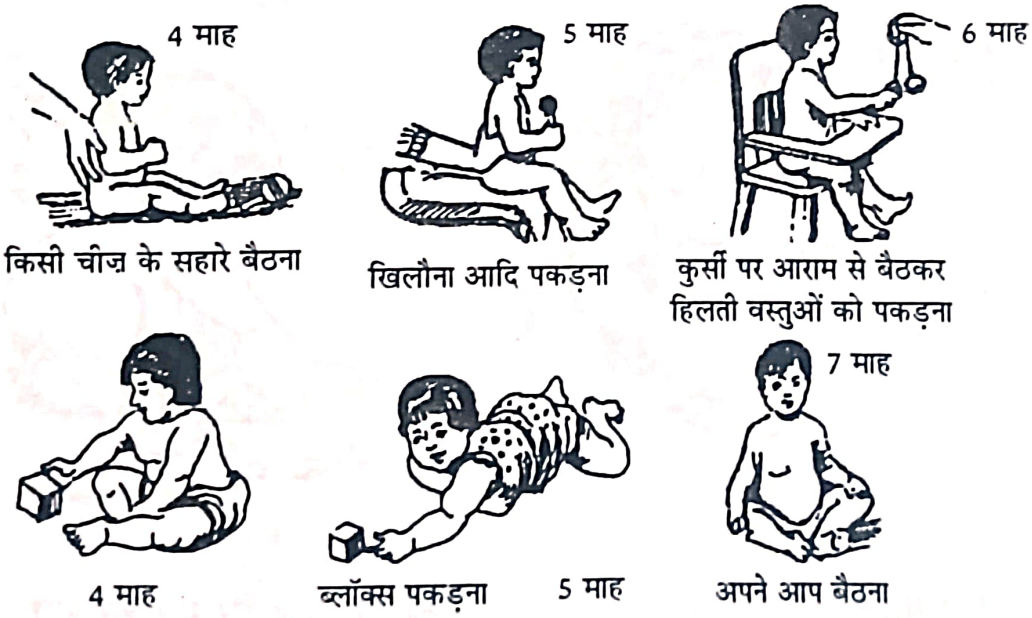

बैठना (Sitting) : चौथे महीने शिशु को पकड़ पर बैठने वाली स्थिति में लाया जा सकता है, पांचवें महीने सहारे के साथ, सातवें महीने बगैर सहारे तथा नौवें महीने बगैर सहारे दस या अधिक मिन्टों तक बैठ सकता है। जब बालक अकेला बैठने लगता है तो वह बाजू फैलाए आगे की ओर झुक जाता है और अपना सन्तुलन बनाए रखता है। धीरे-धीरे वह बिना किसी की सहायता के अपने शरीर को सन्तुलित रखना सीखता है।

बाजू तथा हाथ का भाग-

हाथ (Hands) : शिशु तीसरे से चौथे महीने के मध्य वस्तुएं पकड़ने लगते हैं। आ से दस महीने के मध्य पड़ी हुई वस्तु को उठा लेते हैं। ऊंगलियों की कोमल मांसपेशि धीमी गति से विकसित होती हैं। उंगलियों के निकट अंगूठा जो कसकर पकड़ने सहायता करता है, इसमें पकड़ आठवें, नौंवे महीने में शुरू होती है। शैशवावस्था के दौरा हाथों के प्रयोग में तेजी से वृद्धि होती है। हाथ के कौशल मुख्यतय: रक्षा करने, अनुभ करने, खेलने तथा स्वयं भोजन करने के गिर्द केन्द्रित होते हैं।

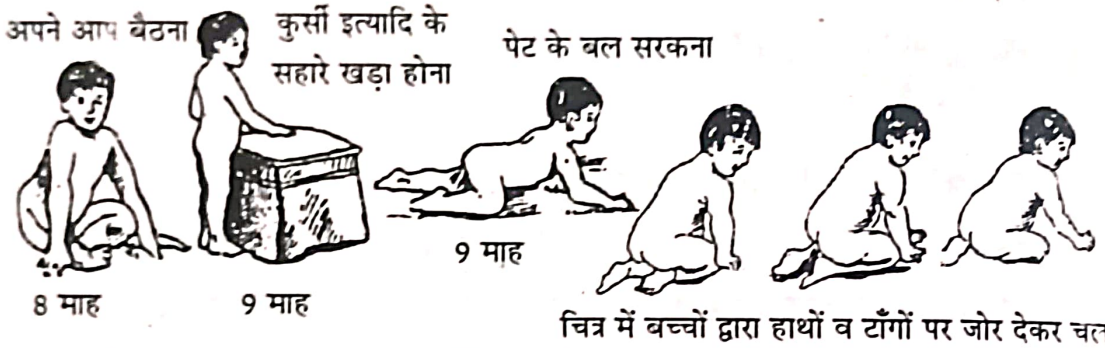

चित्र में बच्चों द्वारा हाथों व टाँगों पर जोर देकर चलना

बाजू (Arms) : शिशु छ: से सातवें महीने तक वस्तुओं तक पहुंच कर उन्हें पक सकता है। एक वर्ष का होने तक वह छोटी वस्तुओं को बगैर गल्ती किए उठा सकता

8 माह

9 माह

टांगों का भाग (Leg Region) : दूसरे हफ्ते तक शिशु पैर मार कर शरीर को ए स्थान से हिला सकता है। छठे महीने तक बैठने की स्थिति में घूम जाता है। आठ से दस महीने में रेंगना तथा सरकना शुरू कर देता है तथा ग्यारहवें महीने तक हाथों तथा बाजु चारों का प्रयोग करके घूमता है। दसवें महीने तक खड़े होने की स्थिति में स्वयं को खी लेता है। ग्यारहवें महीने तक सहारे के साथ तथा एक वर्ष तंक बगैर सहारे के खड़ा जाता है। ग्यारहवें से एक वर्ष की आयु तक सहारे के साथ तथा चौदहवें महीने तक बगै सहारे के चल सकता है।

दौड़ना कूदना (Running and Jumping) : दूसरे और तीसरे वर्ष के दौरान शिशु दौड़ना, ऊपर चढ़ना, सन्तुलन रखना और नाचना आदि सीखता है।

दोनों हाथों को पकड़ कर चलना

हाथों और घुटनों के सहारे सरकना

अपने आप खड़ा होना

एक हाथ पकड़ कर चलना

रस्सी कूदना और उछलना (Skipping and Hopping) : बालक जब 6-7 वर्ष का होता है तो वह उछलने-कूदने में निपुण हो जाता है। पहले वह दो पांवों पर उछलता है और फिर एक पांव पर उछलता है।

चढ़ना (Climbing) : चलने से पूर्व बालक घिटसने और रेंगने के द्वारा कुछ सीढ़ियां चढ़ सकता है। वह अपने हाथों और घुटनों के सहारे रेंगता है। दो वर्ष की आयु से पूर्व बालक जंगले या किसी व्यक्ति के हाथ की सहायता से सीढ़िया चढ़ सकता है। वह सीधा खड़े होने की स्थिति में सीढ़ियां चढ़ और उतर सकता है। लड़कों में चढ़ने की निपुणता लड़कियों की अपेक्षा जल्दी विकसित होती है।

अपने आप चलना

सीढ़ियां चढ़ना

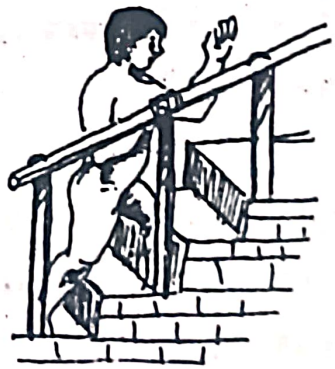
शुरू में किसी के सहारे चढ़ना और बाद में अपने आप

ट्राइसाइकिल चलाना (Tricycling) : दो वर्ष की आयु के निकट बालक ट्राइसाइकिल की सवारी कर सकता है। वह साइकिल को धक्का दे सकता है और जब कोई सीट को पकड़े तभी साइकिल चला सकता है। तीन चार वर्ष में वह ट्राइसाइकिल चला सकता है। बालक के चलने से पूर्व निम्नलिखित क्रम बनता है- (*i*) ठोड़ी उठाना, (*ii*) छाती उठाना, (*iii*) सहारे के साथ बैठना, (*iv*) बैठ कर वस्तु उठाने की कोशिश में

आगे को होना, (*v*) अकेले बैठना, (*vi*) सहारे के साथ चलना, (*vii*) वस्तु को पकड़ कर उठना, (*viii*) रेंगना तथा सरकना, (*ix*) कोई पकड़े तो चलना, (*x*) खींचे जाने पर खड़ा होना, (*xi*) सीढ़ियां चढ़ना, (*xii*) अकेले खड़े होना, (*xiii*) अकेले चलना।

स्वयं खाना (Self-Feeding) : आठ महीने का बालक बोतल दिए जाने पर अपनी बोतल स्वयं पकड़ सकता है। एक माह बाद वह बोतल को स्वयं बाहर निकाल सकता है और फिर बिना सहायता के मुंह में रख सकता है। पहले जन्म दिन के आस-पास वह प्याला दोनों हाथों में पकड़ सकता है। इसके बाद वह एक हाथ से प्याला पकड़ना सीख लेता है और स्वयं चम्मच से भोजन मुंह में डालने की कोशिश करता है। इस समय वह काफी भोजन नीचे भी गिरा देता है। तीसरे वर्ष के अन्त तक बालक मक्खन या जैम ब्रैड पर फैला सकता है। स्कूल जाने तक वह अपना कार्य कर सकता है।

गेंद फैंकना और पकड़ना (Ball throwing and catching) : दो वर्ष से पूर्व वह गेंद फैंकने की कोशिश करता है। चार वर्ष तक वह काफी हद तक गेंद को फैंक तथा पकड़ सकता है। छः वर्ष की आयु तक अधिकतर बच्चे गेंद फैंकने में निपुण हो जाते हैं।

स्वयं वस्त्र पहनना (Self-Dressing) : पहले वर्ष के अन्त तक अधिकतर बच्चे अपनी जुराबें और जूते उतार सकते हैं। इसके बाद वह आगे बटन वाले अधिकतर सारे वस्त्र उतारने सीख जाते हैं। 3-4 वर्ष की आयु तक बालक अपने वस्त्र स्वयं पहन और उतार सकता है। वह अपने वस्त्रों के बटन स्वयं लगा सकता है, बालों में ब्रश कर सकता है, स्नान कर सकता है, दांतों को साफ करने के लिए ब्रश को कसकर पकड़ सकता है।

खेल कौशल (Play Skills) : पहले वर्ष के अन्त तक आवश्यक खेल कौशल विकसित नहीं होते। यह दूसरे वर्ष में विकसित होते हैं। बालक डिब्बे खोल सकता है, बोतलों और मर्तबान के ढक्कन खोल सकता है, पुस्तक के पन्ने पलट सकता है, ब्लॉक से ढांचा बना सकता है।

लिखने की कला (Writing Skill) : अठारहवें महीने के पास वह अपनी पैंसिल को घसीटता है। तीन वर्ष के आस-पास वह साधारण इकाई बनाने का प्रयास करता है। चार-पांच वर्ष के आस-पास बालक वर्णमाला और कुछ सरल शब्द लिख सकता है। नौवें वर्ष तक उसकी लिखाई साफ हो जाती है और एक लिखने का ढंग बन जाता है।

क्रियात्मक विकास का क्रम (Sequence of Motor Development)

सिर का भाग (Head Region) :

- आंखों को घुमाकर देखना : 4 हफ्ते
- सामाजिक मुस्कराहट (दूसरों को देखकर मुस्कराना) : 3 महीने

- आंखों का समन्वय (Co-ordination) : 4 महीने
- सिर को उठा कर संभालना

  लेटने की अवस्था में : 1 महीने

  बैठने की अवस्था में : 4 महीने

पेट का भाग (Trunk Region) :

- **घूमना** (Turning) :

  साईड से पीठ पर आना : 2 महीने

  पीठ से साईड पर आना : 4 महीने

  पूरा घूम जाना : 6 महीने
- **बैठना** (Setting) :

  पकड़ कर बैठाना : 4 महीने

  सहारे के साथ बिठाना : 5 महीने

  बगैर सहारे के बैठना : 9 महीने
- **मूलमूत्र त्याग** (Elimination) :

  मल त्याग पर नियन्त्रण : 2 वर्ष

  मूत्र त्याग पर नियन्त्रण : 2 से 4 वर्ष

बाजू तथा टांगें (Arms and Legs) :

- अपने बचाव की हरकत (Defensive Movements) : 2 हफ्ते
- अंगूठा चूसना : 1 महीना
- आगे हो कर उठाना : 4 महीने
- उठा कर पकड़ना : 5 महीने
- अंगूठे तथा साथ वाली अंगुली के साथ छोटी वस्तुओं को उठाना : 8 महीने

टांगे तथा पैर (Legs and Feet) :

- बैठने की अवस्था में आगे को होने का प्रयत्न करना : 6 महीने
- रेंगना : 7 महीने
- **सरकना** (Creeping) :

  हाथ तथा घुटनों पर : 9 महीने

  हाथों तथा घुटनों (चारों पर) : 10 महीने

- **खड़ा होना :**

  सहारे के साथ : 8 महीने

  सहारे के बगैर : 11 महीने

  एक पांव पर 2-3 सैकेण्ड खड़े होना : 30 महीने

- **चलना :**

  सहारे के साथ : 11 महीने

  सहारे के बगैर : 12 से 14 महीने

- **भागना :**

  भागते हुए गिर जाना : 24 महीने

- **कूदना :**

  दोनों पांव के साथ हवा में कूदना : 30 महीने

क्रियात्मक विकास की आवश्यकताएं (Essentials in Learning Motor Skills)

1. अच्छा स्वास्थ्य (Good Health) : प्रसन्न प्रसव जीवन, अच्छा स्वास्थ्य और पोषण क्रियात्मक विकास को तेज करते हैं।

2. उपयुक्त समय (Adequate Time) : बालक किसी क्रियात्मक कला को सीखने के लिए तैयार होना चाहिए तभी वह उस क्रिया को अच्छी प्रकार सीख पाएगा।

3. उपयुक्त अवसर (Opportunity) : यदि माता-पिता या वातावरण बच्चे को सीखने का अवसर प्रदान नहीं करते तो बालक पिछड़ जाता है। खेलने-कूदने के अवसर मिलने पर बालकों का क्रियात्मक विकास अच्छा होता है।

4. अभ्यास करने का अवसर (Opportunity for Practice) : यदि बालकों को बार-बार सीखने का अवसर मिलता है तो वह उस कला में अभ्यस्त हो जाएंगे।

5. अच्छा मॉडल (Models) : बालक दूसरों से बहुत कुछ सीखते हैं, इसलिए क्रियाओं को सीखने में अच्छे मॉडल की बहुत आवश्यकता होती है।

6. निर्देश (Guidance) : निर्देश मिलते रहने से बालक कम गल्तियां करते हैं। एक अच्छे मॉडल के साथ-साथ अच्छे निर्देशक की भी आवश्कता होती है।

7. प्रोत्साहन (Motivation) : प्रोत्साहन मिलतने रहने से सीखे की क्रिया बनी रहती है। सबसे अच्छा प्रोत्साहन क्रिया सीखने का सन्तोष, प्राप्ति तथा स्वतन्त्रता की भावना होती है।

8. प्रत्येक क्रिया अलग-अलग सीखनी चाहिए (Each Motor skill must be learned Individually) : प्रत्येक क्रिया एक दूसरे से भिन्न होती है जैसे चम्मच पकड़ना या पैंसिल पकड़ना दोनों अलग-अलग क्रियाएं हैं।

9. एक समय एक ही क्रिया सीखनी चाहिए (Skills should be learned one at a Time) : एक समय एक ही क्रिया सीखनी चाहिए विशेष तौर पर जब उसमें एक ही प्रकार की मांसपेशियां प्रयोग होती हों।

क्रियात्मक विकास को तीव्र करने के लिए कुछ सुझाव (Guidelines for Promoting Motor Development)

कुछ शिशु बगैर सहारे के एक वर्ष तक तथा 70% तक शिशु 13 महीने की आयु तक स्वयं चलना शुरू कर देते हैं। हम शिशु की निम्नलिखित ढंग से सहायता कर सकते हैं :

1. बैठना (Sitting) : छः से सात महीनों तक पीछे सहारा दिए जाने पर कुछ समय तक बैठ सकते हैं। हम इनकी सहायता कर सकते हैं :

- बच्चे के इर्द-गिर्द तकियों या कपड़ों का घोल घेरा बना कर रखें ताकि आक्समिक गिरने से बच्चा सुरक्षित रहे तथा उसे दर्द न हो।
- बच्चे को जमीन पर टांगें खोल कर बिठाया जाए ताकि उसका सन्तुलन बना रहे।
- बच्चे को अकेला नहीं छोड़ें, नहीं तो वह गिर सकता है तथा उसकी बाजू नीचे फँस जाएगी।

2. रेंगना (Crawling) : नौ महीने तक अधिकतर शिशु रेंगना शुरू कर देते हैं हालांकि वह अपनी दिशा को नियन्त्रित नहीं कर पाते। उनकी सहायता के लिए--

- उनके घुटनों को घिटसने से बचाने के लिए उन्हें हल्के पाजामें या dungaress पहना कर रखें।
- उन्हें सीढ़ियों, उबड़-खाबड़ स्थानों या चुभने वाली वस्तुओं से बचा कर रखें।

3. खड़े होना (Standing) : दसवें महीने तक शिशु कुछ क्षण तक खड़े हो सकते हैं परन्तु अपना सन्तुलन नहीं रख पाते तथा उसी समय बैठ जाते हैं। उनकी सहायता करने के लिए-

- फर्नीचर स्थिर हो ताकि जब शिशु उसके सहारे उठने की कोशिश करे तो वह उल्टे नहीं।

- नुकसान पहुंचाने वाली रस्सियां, बिजली के प्वाइंट या मेजपोश न हो जि शिशु खींच कर नुकसान पहुंचा सके।

4. चलना (Walking) : पहले वर्ष के आखिर में बच्चे अकेले खड़े हो कर फर्नी पकड़ कर कमरे में घूमना सीख जाते हैं। हम उनकी सहायता करने के लिए-

- शिशु से एक या दो कदम दूर घुटनों के बल बैठ कर बाजू फैला कर उन्हें च के लिए उत्साहित करना।
- उन्हें नंगे पांव चलने देना, जूतों की अपेक्षा जुराबें पहना दें तथा फिसलने वा फर्श पर शिशु को न चलाएं।
- उनका बार-बार गिरने से बचाव करें।

शारीरिक विकास के यह महत्त्वपूर्ण क्षण व्यक्तिगत शिशु के आत्म-विश्वास त प्रोत्साहन पर तथा उनकी मांसपेशियों और इनके समन्वय पर निर्भर करते हैं।

भाषा का विकास
(Language Development)

भाषा का विकास से भाव है अर्थ पूर्ण शब्दों और वाक्यों से एक दूसरे के स सम्पर्क स्थापित करना। भाषा अपने आपको व्यक्त करने का माध्यम है। भाषा में ध्वनि होती हैं जिनका प्रयोग कई प्रकार के मेल से किया जाता है। इन सभी ध्वनियों तथा उ मेलों में जो अर्थ होता है उसे बोली (Speech) कहते हैं।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार बालक 13 से 14 महीने की आयु में पहला शब्द बो है, इस समय उसकी भाषा का विकास आरम्भ होता है। इससे पूर्व का काल भाषा योग्यता विकसित करने की तैयारी होता है क्योंकि इस समय बालक विभिन्न आव निकाल कर अपनी आवश्यकताएं दूसरों को दर्शाता है। जब बालक तीन हफ्तों का ह है वह विभिन्न आवाज़ों तथा शारीरिक गतिविधियों द्वारा अपनी भूख, ठण्ड, दर्द, गीले का एहसास इत्यादि दर्शाता है। भाषा विकास पूर्व बालक तीन प्रकार के संकेत दर्शाता

1. रोना (Crying) : बालक द्वारा निकाले जाने वाली यह प्रथम आवाज़ है। प्र दो हफ्तों तक तो बालक बगैर किसी कारण के रोते हैं। धीरे-धीरे इस रोने में अन्तर जाता है। तीसरे या चौथे हफ्ते रोने के ढंग तथा तीव्रता और शारीरिक गतिविधियों से बात का पता चल जाता है कि बालक क्यों रो रहा है जैसे दर्द होने पर बालक का बहुत तीखा और ऊंचा होता है, इसमें कराहने की आवाज़ होती है। भूखा होने पर बा बीच-बीच में चूसने की कोशिश करता है। पेट गैस इकट्ठा होने पर बालक तीव्र रो साथ-साथ टांगे इकट्ठी करता है।

2. **कूजन** (Cooing) : लगभग कुछ महीनों तक शिशु जो vowel जैसी आवाजें निकालता है उसे Cooing कहते हैं। इसमें 'यू' 'जैसी' आवाज अधिक होती है जैसे 'कू', 'यू', 'वू', 'ऊ', 'यू' इत्यादि।

3. **बबलाना** (Babbling) : छः महीने का होने तक शिशु कुछ (vowel) तथा (consonant) आवाजें जैसे मा-मा, दा-दा तथा ना-ना आवाजें निकाल सकता है। वह आवाजें दूसरे या तीसरे महीने से शुरू होकर आठवें महीने तक चर्म सीमा पर पहुंच जाती हैं। मां बच्चे के पैदा होते ही उससे बातें करनी शुरू कर देती है। जब वह उसके कपड़े बदलती है, नहलाती है दूध पिलाती है तब उससे बातें करती है। सहजता से आवाज के सहयोग द्वारा ही बच्चा आवाज निकालना जानता है। जब बालक को प्रसन्नता होती है तब बालक ये आवाजें निकालते हैं। इन आवाजों के तीन लाभ हैं :

- ये आवाजें भाषा सीखने की प्रक्रिया तीव्र करती हैं।
- शिशु की दूसरों के साथ बोलचाल करने की इच्छा को उत्साहित करती हैं।
- शिशु महसूस करते हैं कि शिशु समाज के समूह का एक हिस्सा हैं।

4. **हाव भाव** (Gestures) : शिशु भाषा के स्थान पर हाव-भाव दर्शा कर स्वयं के भाव प्रकट करते हैं। अपनी बाहू तथा टांगों को उठा कर शिशु प्रकट करते हैं कि कोई उन्हें उठा ले। यदि वह किसी वस्तु को हटाने का प्रयास करें तो अर्थ है कि वह उस वस्तु को नहीं चाहते। यदि बच्चा भूखा नहीं है तो बोतल से मुंह फेर लेगा।

5. **संवेगात्मक अभिव्यक्ति** (Emotional Expression) : अपने संवेगों को व्यक्त करने के लिए वे चेहरे के हाव-भाव प्रयोग करते हैं। उदाहरणतय: जब वह प्रसन्न होते हैं तो मुस्कराते हैं, हाथ पैर मारते हैं तथा अन्दर से कू-कू की आवाज निकालते हैं।

भाषा के विकास की अवस्थाएं
(Stages in Language Development)

शिशु के भाषा के विकास की चार अवस्थाएं हैं :

1. **अर्थ ग्रहण** (Comprehension) : इसमें दूसरों द्वारा बोले गए शब्दों को समझने की योग्यता है। बालकों में बोलने से पूर्व ही समझने की योग्यता बन जाती है। चार महीने का शिशु मनुष्य की आवाज सुनकर अपना सिर घुमा लेता है। छः से आठ महीने का होने पर वह शब्द ध्यान से सुनने का प्रयास करता है तथा उन्हें बोलने का भी यत्न करता है। बारह महीने का होने पर वह सरल निर्देश समझ कर उन्हें पूरा करने का प्रयत्न करता है। अर्थ ग्रहण की अवस्था शब्दों का प्रयोग सिखाती हैं।

2. **उच्चारण** (Pronuciation) : शब्दों का उच्चारण बालक दूसरों से सीखता है। बालक नए वातावरण में नया उच्चारण सीख जाता है। बालक शब्दों का उच्चारण बड़ों की

भाषा से कभी ठीक कभी गलत बोलकर सीखते हैं। अठारह महीनों तक बच्चे की भा अधिकतर समझ नहीं आती, परन्तु इसके बाद सुधार हो जाता है। इस समय यदि बच्चों सम्पर्क में आने वाले गलत उच्चारण करेंगे तो बच्चा गलत ही सीखेगा।

3. शब्दावली (Vocabulary Building) : पहले जन्म दिन तक शिशु एक श बोलना शुरू कर देता है जैसे दूध, मामा, दादा, डॉल इत्यादि।

बालक प्रथम लोगों तथा वस्तुओं के नाम सीखते हैं तथा उसके बाद verbs जै 'देना', 'लेना' सीखते हैं। शिशु पहले वस्तु के साथ अर्थ जोड़ते हैं, इसके बाद वह श वस्तु का चिन्ह या लेबल बन जाता है, बारह से अठारह महीने के मध्य शिशु 'वाक बोलना शुरू करते हैं। जिसमें एक शब्द के साथ-साथ संकेत करते हैं जैसे हाथ बड़ा व कहना 'दूध'। धीरे-धीरे वाक्य में और शब्द जुड़ते जाते हैं। दो वर्ष का बालक 200 300 शब्द बोलता है। अठाई महीने का बालक 400 जबकि तीन वर्ष का बालक 100 तक शब्द बोल लेता है।

वाक्य रचना (Sentence formation) : दो वर्ष का बालक दो या तीन शब्दों क मिलाकर साधारण वाक्य बोलना शुरू करता है। वह सर्वनामों की अपेक्षा संज्ञा का प्रयो अधिक करता है। लड़कियां वाक्य बनाने में लड़कों की अपेक्षा आगे रहती हैं। इसक कारण लड़कियों का तीव्र बौद्धिक विकास है।

शैशवावस्था की शब्दावली :-

- **संज्ञा** (Nouns) : शिशु सर्वप्रथम संज्ञा प्रयोग करता है जिन्हें वह बबलाने वाली आवाज़ों से लेता है। जैसे मा-मा, पा-पा, बा-बा आदि।
- **क्रिया शब्द** (Verbs) : जब वह संज्ञा शब्दों को व्यक्तियों के साथ जोड़ना सीख जाता है तो क्रिया शब्दों को प्रयोग करता है जो किसी कार्य को दर्शाते हैं, जैसे 'देना', 'लेना', 'पकड़ना' आदि।
- **क्रिया-विशेषण** (Adjectives) : यह क्रिया-विशेषण बच्चे में 1½ वर्ष की आयु में शब्दावली में आते हैं। अधिकतर प्रयोग होने वाले क्रिया-विशेषण हैं- 'अच्छा', 'बुरा', 'गर्म', 'ठण्डा' इत्यादि। इन्हें वह लोगों, भोजन तथा खिलौनो के साथ जोड़ते हैं। जैसे अच्छी मम्मी, ठण्डा पानी, सुन्दर गुड़िया इत्यादि।
- **Adverbs :** यह उसी आयु में सीखे जाते हैं जब बच्चा क्रिया-विशेषण सीखता है। बालक की शब्दावाली में पहले प्रयोग होने वाले Adverbs हैं 'यहां' तथा 'कहां'।
- **सर्वनाम** (Pronouns) : शब्दावली में सबसे आखिर में आते हैं। छोटे बच्चे को यह मालूम नहीं होता कि कहां पर मैं, मेरा या मुझे लगाना है। इनके स्थान पर वह अपना नाम लगाता रहता है।

भाषा के विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Language Development)

1. शारीरिक स्वास्थ्य (Physical Health) : यदि शिशु जन्म के बाद बहुत बीमार रहे तो उसके भाषा के विकास पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। यदि बोलने के साथ जुड़े अंगों में विकार हो तो भी बालक देर से बोलना सीखते हैं जैसे बहरे बच्चे देर से बोलना सीखते हैं।

2. बुद्धि (Intelligence) : मानसिक रूप से उच्च स्तर के बच्चे बाकी बच्चों से जल्दी बोलना सीखते हैं। उनका उच्चारण भी शुद्ध होता है तथा शब्दावली भी अधिक होती है तथा वाक्य लम्बे होते हैं।

3. सामाजिक स्तर (Socio-Economic Status) : उच्च सामाजिक स्तर के बच्चे की शब्दावली तथा भाषा की योग्यता अधिक होती है। उच्च सामाजिक स्तर के माता-पिता अधिक पढ़े-लिखे तथा बुद्धिमान होते हैं जिसका सीधा प्रभाव बच्चों पर पड़ता है। इसके साथ इस स्तर के पास टी०वी०, कम्प्यूटर, इंटरनैट, पत्रिकाओं, किताबों इत्यादि की सुविधा भी अधिक होती है, तीसरे बच्चे माता-पिता की नकल करके सीखते हैं, चौथे उच्च स्तर के माता-पिता बच्चे के मानसिक विकास की ओर अधिक ध्यान देते हैं। जिसका बच्चे के भाषा के विकास पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

4. लिंग भेद (Sex Differences) : लड़कों की अपेक्षा लड़कियां जल्दी बोलना सीखती हैं। उनके वाक्य संरचना, शब्दों का प्रयोग, शब्दों की समझ तथा उच्चारण लड़कों की अपेक्षा अच्छा होता है। उनकी शब्दावली अधिक तथा विस्तृत होती है।

5. पारिवारिक सम्बन्ध (Family Relationships) : संयुक्त परिवारों के बच्चे जल्दी बोलते हैं और अधिक बोलते हैं क्योंकि उनके पास बड़ों तथा दूसरे बच्चों से सीखने के अवसर अधिक होते हैं। जिस परिवार में घनिष्ट सम्बन्ध हैं, वहां बच्चों पर साकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

6. संवेगात्मक स्थिरता (Emotional Stability) : जिन परिवारों में लड़ाई-झगड़े होते हैं वहां बच्चे तनाव ग्रस्त रहते हैं तथा सहम जाते हैं और भाषा विकास में पीछे रह जाते हैं। तनाव और डर के कारण उनमें भाषा के विकार भी उत्पन्न हो जाते हैं।

7. वंचित बच्चा (Deprived Child) : स्वस्थ, उत्साहवर्धक तथा प्रोत्साहन भरपूर वातावरण में बच्चों की भाषा का विकास तेजी से होता है। अनाथ बच्चों की भाषा का विकास कम होता है क्योंकि उन्हें माता-पिता को नकल करने का अवसर नहीं मिलता।

8. बच्चे के जन्म का क्रम (Birth Sequence) : बड़े बच्चों को माता-पिता का ध्यान अधिक मिलने से वह उनकी नकल जल्दी करते हैं उधर छोटे बच्चे बड़े बच्चों की नकल करके बोलना सीखते हैं।

9. परिपक्वता (Maturation) : भाषा के विकास की प्रक्रिया परिपक्वता से सीखने पर निर्भर करती है। भाषा विकास की विभिन्न अवस्थाएं जैसे बोलना, शब्द भण्डार, वाक्य रचना, लिखना, पढ़ना आयु से विशेष रूप से सम्बन्धित हैं। भाषा के सही विकास के लिए इन विभिन्न अवस्थाओं में सही देखभाल तथा प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है। परिपक्वता से पहले बच्चे से आशा रखना उसके बोलने, पढ़ने-लिखने में कठिनाई पैदा करती है या उसमें रूकावट बनती है।

भाषा विकास का विकास करने के कुछ सुझाव (Guidelines for Promoting Language Development)

कुछ लोगों के लिए शिशुओं के साथ बात करना बहुत सरल होता है, इन व्यक्तियों में शिशु के माता-पिता तथा देखभाल करने वाले हैं। कुछ लोगों को प्राकृतिक तौर पर बात करना अच्छा लगता है, कुछ खामोश रहते हैं तथा उन्हें शिशु के साथ बात करना बेवकूफी लगती है क्योंकि वह उनके साथ बात नहीं करते। हम अपने व्यक्तित्व में परिवर्तन तो नहीं कर सकते, परन्तु शिशु को बोलना निम्नलिखित ढंगों से सिखा सकते हैं :

- हमेशा शिशु को सुने, जब वह आपकी ओर देखकर मुस्कराते हैं या cooing की आवाज़ें निकालते हैं, उन्हें शब्दों में उत्तर देने की कोशिश करें। यह आवश्यक नहीं कि लगातार बोलते रहें, परन्तु शिशु के बोलने की कोशिश के प्रति प्रतिक्रिया ज़रूर करें।
- जैसे हम अपने मित्र से बात करते हैं उसी प्रकार सहज ढंग से बात करें। भाषा को अधिक सरल करने का प्रयास न करें।
- शिशु के पास रहते हुए जो कार्य आप कर रहे हैं उसके बारे में बात करें उदारणतय: यदि शिशु को नहला रहे हैं तो हर क्रिया के बारे में शिशु को बताएं। हम पेट पर साबुन लगाते हैं, सिर पर शैम्पू लगाते हैं, जब पानी डालते हैं इत्यादि।
- शिशु से प्रश्न पूछें 'क्या यह अच्छा है', 'कहां गया' इत्यादि। शिशु अपने हाव-भाव से या कोई आवाज़ निकाल कर उत्तर देगा जो बोलने के बराबर ही होता है।
- बच्चे को दूध पिलाते समय बात करते रहें। इससे वह सोएगा भी नहीं और खाने का समय उसके लिए प्रसन्नतादायक रहेगा।
- बच्चे को कहानियों की किताबें पढ़ कर सुनाएं, तस्वीर की ओर इशारा करके उनके नाम बताएं। हालांकि शिशु समझ नहीं पाएगा पर वह हाथ-पांव हिला कर उस अनुभव का आनन्द अवश्य लेगा।
- कुछ सरल कविताओं को याद करके शिशु को सुनाएं।

सामाजिक व्यवहार के विकास का क्रम
(Pattern of Development of Social Behaviour)

सामाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति समूह में एक कार्यशील सदस्य के रूप में विकसित होता है। इसके आदर्शों, इसके निर्धारित रीति-रिवाज़ों और आचरणों, इसकी परम्पराओं का पालन करने तथा स्वयं को उपलब्ध स्थितियों के अनुरूप ढालने तथा अपनी सहनशीलता को नियन्त्रित करने का प्रयास करता है। वह समाज की संस्कृति के अनुसार बनता है।

हरलॉक ने सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता लाने को सामाजिक विकास कहा है।

जन्म के समय शिशुओं का सामाजीकरण नहीं होता, उस समय उन्हें कोई भी उठा ले, प्यार कर ले, नहला दे, दूध पिला दे इससे उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। कोई भी व्यक्ति या वस्तु जो उन्हें आराम दे एक समान लगती है। छः हफ्तों का होने पर वह होठों से कोई वस्तु छुए जाने की अपेक्षा किसी व्यक्ति के मुस्कराने पर मुस्कराते हैं, यहां पर सामाजिक विकास आरम्भ होता है। जो व्यक्ति बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करता है उसे सामाजिक अभिकर्त्ता (social agent) कहते हैं। यह वही व्यक्ति हो सकता है जो बालक का ध्यान रखते हैं और जिससे बालक का व्यवहार प्रभावित होता है। शैशवावस्था के प्रथम वर्ष में शिशु सन्तुलन की अवस्था में रहते हैं। इस समय वह मैत्रीपूर्ण, देखभाल करने में आसान तथा प्रसन्न रहते हैं। दूसरे वर्ष के समाप्त होने पर यह असहयोगी तथा चिड़चिड़े हो जाते हैं। बाल्यावस्था के समाप्त होने पर इनमें मैत्रीपूर्ण तथा सामाजिक व्यवहार फिर विकसित हो जाता है।

शैशवावस्था में सामाजिक अभिव्यक्ति
(Social Development in Infancy)

जन्म के बाद : जन्म के बाद जब तक बच्चे की आवश्यकताएं पूरी होती रहें वह लोगों में दिलचस्पी नहीं लेते। जीवन के प्रथम एक दो महीनों में वह वातावरण के प्रति हल्की प्रतिक्रिया करते हैं, परन्तु व्यक्ति की तथा दूसरी आवाज़ों के मध्य अन्तर नहीं कर सकते।

दो से तीन महीने : बालक व्यक्तियों से अजीवित वस्तुओं के मध्य अन्तर समझने लगते हैं। उन्हें इस बात की समझ आ जाती है कि लोग उसकी आवश्यकताएं पूरी करते हैं। जब तक वह लोगों के मध्य होते हैं, तब तक प्रसन्न रहते हैं। अकेले छोड़े जाने पर दुःखी हो जाते हैं। इस समय तक बालक की मांसपेशियां मजबूत तथा व्यवस्थित होनी शुरू हो जाती हैं। इससे वह लोगों की गतिविधियों को देखते रहते हैं। दूसरे लोगों के मध्य वे मुस्कराकर, पैर मारकर तथा बाजू हिला कर खुशी दर्शाते हैं। शिशु की गालों को हाथ लगा देने पर वह मुस्कराने लगते हैं।

चार से पांच महीने : बालक इस समय चाहता है कि कोई व्यक्ति उसे उठा ले। समय व झिड़कों तथा मुस्कराहट के मध्य अन्तर समझ लेते हैं तथा गुस्से वाली मैत्रीपूर्ण आवाज़ों के प्रति अलग से प्रतिक्रिया करते हैं। इस समय वह जाते हुए व्यक्ति देखते रहते हैं। जो व्यक्ति उनके साथ बात करता है उसकी तरफ देखकर मुस्कराते हैं। व्यक्तिगत आकर्षण पाने पर तथा उनके साथ खेले जाने पर प्रसन्न हो जाते हैं। इस स शिशु पैर मारकर, हंस कर या मुंह से बुलबुले निकाल कर दूसरों का ध्यान आकर्षित क चाहते हैं।

छः से सात महीने : वह जाने पहचाने चेहरे देखकर प्रसन्न होते हैं तथा अन चेहरा देखकर डर जाते हैं।

छः महीने तक शिशु उठाने वाले के बाल खींचते हैं, उसका नाक या ऐनक प लेते हैं। दूसरे बच्चों को देखकर खुश होते हैं तथा जब वे रोते हैं तो उन्हें देखते रहते

आठ से नौ महीने : इस समय शिशु दूसरों की भाषा, हाव-भाव या सरल क्रिय की नकल करते हैं।

बारह महीने : शिशु 'ना' किए जाए पर हाथ हटा लेते हैं, यदि अनजाना व्य पकड़ना चाहे तो वह डर तथा नापसन्दी दर्शाते हैं। दूसरा बच्चा यदि उनके खिलौने ले तो वह रोने लगते हैं।

पन्द्रह महीने : इस समय शिशु व्यस्कों में बहुत दिलचस्पी लेते हैं तथा उनके स रहना चाहते हैं, उनकी नकल करते हैं।

सोलह से अठारह महीने : बड़ों के द्वारा आदेश को इंकार कर देते हैं, भाग जाते या क्रोधित हो जाते हैं। इस समय शिशु दूसरे साथियों को खिलौने दे देते हैं तथा उन साथ सहयोग करते हैं।

बाईस महीनों से दो वर्ष : शिशु खाने, कपड़ने पहनने तथा नहाने में सहयोग लगता है। दूसरे बच्चों के साथ खेलने में अधिक दिलचस्पी लेता है।

शैशवावस्था में सामाजिक व्यवहार का प्रतिमान
(Behaviour Pattern Shown in Babyhood)

1. शर्माना (Shyness) : तीन या चार महीने में बालक अपने और अजनबियों मध्य अन्तर समझना शुरू कर देता है। वह मां और जान-पहचान वालों को पहचानता और अजनबियों से डरता है। इसका प्रदर्शन वह चिल्लाकर और दूर अपना सिर घुमा या सिर छुपा कर करता है।

2. मुस्कान और फटकार के समय विभिन्न व्यवहार (Reacting differently Smiling and Scolding) : पांच-छः माह की आयु में बच्चा प्यार और गुस्से की आवा

को पहचानता है। जान पहचान वाले व्यक्तियों की ओर देखकर मुस्कराता है जबकि अजनबियों के सामने डर जाता है। छः माह की आयु में सामाजिक व्यवहार का विकास होता है और वह झगड़ालू हो जाता है। वह दूसरों के बाल, ऐनक तथा नाक को खींचता है ताकि उनके हाव-भाव को देख सके।

3. लगाव का व्यवहार (Attachment Behaviour) : जब बच्चा मां या उसकी देखभाल करने वाले से स्नेह भरा सम्बन्ध कर लेता है तो उनके सम्पर्क में प्रसन्नता अनुभव करता है। यह भावना दूसरों के साथ मित्रतापूर्वक व्यवहार स्थापित करने में सहायता करती है।

4. नकल करना (Imitation) : नकल करके बालक एक सामाजिक समूह का भाग बनता है। सबसे पहले वह चेहरे के हाव-भाव और चाल-ढाल की नकल करता है, फिर व्यवहार की और आखिर में पूरे व्यवहार की नकल करता है।

5. निर्भरता (Dependency) : जिस व्यक्ति की देख-रेख में बच्चा रहता है वह उसी पर निर्भर हो जाता है।

6. प्रतिद्वन्दिता (Rivalry) : प्रतिद्वन्दिता दूसरे बच्चों के सम्पर्क में आने से होती है। इस भावना को वह अपनी वस्तुओं को दूसरों से छीन कर करता है। यह ज़रूरी नहीं कि सभी वस्तुएं उसे चाहिए लेकिन वह अपने आपको ऊंचा दिखाना चाहता है।

7. ध्यान आकर्षित करना (Attention Seeking) : दूसरे वर्ष की आयु तक बालक दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए रोता है, उनके कपड़े खींचता है तथा उन्हें मारता है।

8. सामाजिक सहयोग (Social Co-operation) : बच्चा बड़े बहन-भाइयों के साथ सहयोग दिखाता है क्योंकि वे उसके सभी प्रकार के कार्य करते हैं।

9. प्रतिरोधी व्यवहार (Resistant Behaviours) : दो साल की आयु में बालक उन क्रियाओं के प्रति प्रतिरोध दिखाता है जो उसे पसन्द नहीं है। इस प्रकार का व्यवहार वह शरीर को अकड़ा कर, चिल्ला कर और दूसरों का कहना न मानकर करता है।

सामाजीकरण का विकास
(Socialization in Babyhood)

शैशवावस्था के सामाजिक अनुभव शिशु के भविष्य के सामाजिक सम्बन्धों तथा दूसरों के साथ होने वाले व्यवहार को प्रभावित करते हैं। शिशु का जीवन घर में केन्द्रित होता है, यहीं पर उसके सामाजिक व्यवहार तथा दूसरों के प्रति दृष्टिकोण की नींव बनती है। घर के वातावरण के अनुसार ही बालक अन्तर्मुखी (Introvert) या बहुर्मुखी (Extrovert) बनते हैं।

बाल्यावस्था में सामाजीकरण का प्रभाव और भी ढंगों से पड़ता है। सामाजिक स्थिति में दर्शाया गया व्यवहार बालक के व्यक्तिगत तथा सामाजिक व्यवस्था में सहायता करता है। हंसता हुआ बालक सभी को अच्छा लगता है। माता-पिता तथा दूसरे लोग भी ऐसे बालक को अधिक पसन्द तथा प्यार करते हैं। इसी प्रकार बालक को यदि किसी जीवित वस्तु जैसे कोई व्यक्ति या जानवर या अजीवित वस्तु जैसे खिलौने के साथ अधिक लगाव है तो वह वस्तु यदि उसके पास है तो उसे नई परिस्थिति में कम डर लगेगा। उदाहरणतय: बच्चे अपने पसन्दीदा खिलौने को लेकर अकेले भी सो जाते हैं।

बाल्यावस्था में बनी हुई सामाजीकरण की नींव आगे भी बनी रहती है जो बच्चे छोटे होते हुए भी रोते हैं वे बड़े होकर क्रोधी तथा दूसरों का ध्यान आकर्षण करने वाले बनते हैं। प्रसन्न बच्चे समाज में अच्छी प्रकार व्यवस्थित हो जाते हैं।

संवेगात्मक विकास
(Emotional Development)

व्यक्ति के प्रत्येक कार्य में संवेग होते हैं। यह शब्द लॉटिन भाषा के शब्द 'ईमोवर' (Emover) से बना है जिसका अर्थ है 'हिलाना' या 'विरोध करना' या 'उत्तेजित होना'। इसलिए संवेग मस्तिष्क की परेशान स्थिति है। जब हमारी भावनाएं गहरी और उत्तेजित हो जाती हैं तो संवेग उत्पन्न होते हैं। इस समय व्यक्ति ऐसे कार्य कर देता है जो वह सामान्य मानसिक अवस्था में नहीं करता।

वुडवर्थ के अनुसार, ''संवेग शरीर की तनावग्रस्त स्थिति है।'' वुडवर्थ के अनुसार प्रत्येक संवेग भावना है तथा प्रत्येक संवेग का उसी समय क्रियात्मक रूप भी है। प्रत्येक बच्चा कुछ आन्तरिक भावनाओं को लेकर उत्पन्न होता है। किशोरावस्था तक यह संवेग बढ़ते जाते हैं।

शैशवावस्था में संवेगात्मक अभिव्यक्ति

1. गुस्सा (Anger) : शैशवावस्था में क्रोध दिलाने वाले कारक हैं- की जाने वाली गतिविधियों में रूकावट, किसी इच्छा से अवरुद्ध आना, अपनी मर्जी के अनुसार कार्य न करने देना, अपने आप को समझा न पाना इत्यादि। बहुत छोटे शिशु शारीरिक आराम न मिलने पर, नहाते समय या कपड़े पहनते समय भी गुस्सा हो जाते हैं। इसके साथ यदि दूसरे लोग उनकी इच्छानुसार उन्हें आकर्षण न दें या उनकी वस्तुओं को दूर ले जाएं या हटा दें तो भी यह संवेग दर्शाते हैं। बालक गुस्सा होने पर ऊपर नीचे कूदते हैं, अपने आपको फर्श पर गिरा देते हैं तथा अपनी सांस रोक लेते हैं। दूसरे वर्ष में गुस्सा होने पर बालक चिल्लाते हैं, टांगे मारते हैं, बाजू हिलाते हैं, वस्तु या व्यक्ति को मारते या काटते या खीचते हैं, थूकते हैं या चूंटी काटते हैं। भाषा का विकास होने पर वह ज़ोर से चिल्लाते हैं कि मैं आप से बात नहीं करूंगा, मुझे यह चाहिए इत्यादि।

2. **डर** (Fear) : शिशु ऊंची आवाज, अनजाने व्यक्ति, तेज रोशनी, वस्तुओं तथा स्थितियों, अन्धेरे कमरे, ऊंचे स्थानों, अकेलेपन तथा जानवरों से डरते हैं। कोई भी स्थिति जो आकस्मिक हो या शिशु के लिए अनजानी हो शिशु में डर पैदा करती है। यदि दूसरा व्यक्ति किसी वस्तु से डर दिखाए-जैसे छिपकली या कॉकरोच देखकर यदि कोई चीखता है तो बालक भी डर जाएगा।

डरने पर शिशु रोना शुरू कर देते हैं। डरा देने वाली परिस्थिति से बचना चाहते हैं, मां का आंचल पकड़ लेते हैं, सांस रोक लेते हैं या डर जाने पर करता हुआ कार्य बन्द कर देते हैं।

3. **जिज्ञासा** (Curosity) : बालकों को वातावरण की कोई भी नयी क्रिया या वस्तु जिज्ञासु बनाती है। शिशु पहले पहल नई स्थिति या वस्तु से डरते हैं। जब उन्हें लगता है कि यह वस्तु या स्थिति हानिकारक नहीं है तो वह उसके बारे में जिज्ञासु हो जाते हैं। जिज्ञासु होने पर उनका मुंह खुल जाता है तथा जीभ बाहर आ जाती है। उसके बाद वह उस वस्तु को छूते हैं, मुंह में डालते हैं या हिला कर देखते हैं।

4. **प्रसन्नता** (Joy) : शिशु को सुखद एहसास होने पर वह प्रसन्न रहता है। दूसरे तथा तीसरे महीने में यदि कोई शिशु के साथ बात करे, खेले, उठाए, उसके गालों को छुए तो वे मुस्कराते हैं। दूसरे व्यक्तियों को पास देखकर या सुनकर भी वह खुश होते हैं। प्रसन्न होने पर वह मुस्कराते हैं, हंसते हैं तथा अपनी बाजू और टांगें जोर-जोर से हिलाते हैं। कई बार वह मुंह से आवाज़ें भी निकालते हैं।

5. **प्रेम** (Affection) : कोई भी व्यक्ति जो शिशु के साथ खेलता है, उसकी देखभाल करता या उसके साथ प्यार करता है उसमें शिशु का स्नेह हो जाता है। इसके बाद शिशु खिलौनों तथा जानवरों के साथ भी प्यार करने लगता है। पांच महीने से कम का शिशु प्यार करने वाले व्यक्ति के मुंह की तरफ टकटकी लगाए देखता है, उसे देखकर अपनी बाजू उठाकर हिलाता है, उठने की कोशिश करता है तथा मुस्कराता है। छः महीने का होने पर शिशु स्नेह करने वाले की ओर बाजू उठाता है, उसके मुंह को छूता है तथा आवाज़ निकालता है। पहले वर्ष के बाद छोटे बालक प्यार करने वाले व्यक्ति या वस्तु को पकड़ते हैं, चूमते हैं तथा उसके साथ रहना पसन्द करते हैं। इसी प्रकार जिन खिलौनों या घरेलू जानवरों को वे पसन्द करते हैं उन्हें जोर से पकड़ते हैं तथा उनके साथ खेलते हैं।

6. **ईर्ष्या** (Jealousy) : घर में नए शिशु के आगमन पर बड़ा बच्चा उससे ईर्ष्या करने लगता है क्योंकि जो आकर्षण पहले उसे मिलता था, वह अब दूसरे शिशु के साथ बंट जाता है। बड़ा बच्चा छोटे को मारता है, रोकर अपना गुस्सा दर्शाता है, उसकी वस्तुएं तथा खिलौने फैंक देता है, उसकी बोतल अपने मुंह में डाल लेता है। यदि ईर्ष्या की भावना

अधिक गहन हो जाए तो वह रात को बिस्तर गीला करना शुरू कर देता है। यदि वह बोलने की अवस्था में हो तो दूसरों को कहता है कि इस शिशु को बाहर फैंक दो, यह गन्दा है इत्यादि।

बौद्धिक विकास
(Cognitive Development)

— वस्तुओं को छुपाने वाली क्रियाओं से आनिन्दत होता है।

— प्रारम्भ में बालक छुपी वस्तु को एक ही स्थान पर ढूंढता है। (यदि बालक ने किसी स्थान पर वस्तु को छुपाते देख लिया है।) बाद में बालक विभिन्न स्थानों पर खोजना शुरू कर देता है।

— दूसरी वस्तु पकड़ा दिए जाने पर खिलौने को दूसरे हाथ में ले लेता है। इसे 'Crossing the midline' कहते हैं जो महत्त्वपूर्ण (neurological) विकास कहते हैं।

— नया खिलौना दिए जाने पर वस्तु को एक ओर करके (गोदी में लेकर या ज़मीन पर रखकर) तीन से चार वस्तुओं को व्यवस्थित कर सकता है।

— खिलौने को मुंह में डालना कम कर देता है।

— चित्रों वाली किताबों में आनन्द लेता है।

— क्रियात्मक सम्बन्धों की समझ को प्रदर्शित करता है (जो वस्तुएं एक दूसरे से सम्बन्धित है), कटोरी में चम्मच डालता है तथा चम्मच को ऐसे प्रयोग करता है जैसे खा रहा हो। कप को प्लेट पर रखता है तथा कप से घूंट भरता है। गुड़िया को खड़ा करने की कोशिश करता है।

— दूसरे व्यक्ति को देखने के लिए खिलौना देता है।

— प्रतिदिन की वस्तुओं के नाम जान लेता है।

— स्थान तथा आकार की लम्बाई-चौड़ाई समझना शुरू कर देता है। (Pegboard) में सभी (pegs) डाल लेता है, बड़े (form) बोर्ड या (puzzle) में तीनो (geomatrical) अकार रख सकता है।

— छोटी वस्तुओं (ब्लॉक, सुईयां, दालें इत्यादि) को एक डिब्बे में डालकर निकाल देता है।

— दूसरों को देखकर (mechanical) वस्तुएं बनाने की कोशिश करता है।

— मुँह के भावों से उत्तर देता है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. सामाजिक और मानसिक विकास को परिभाषित करें।
2. बबलू अन्जान व्यक्ति द्वारा प्यार किए जाने पर रोने क्यों लगता है ?
3. शैशवावस्था में सामाजिकता को कौन से कारक प्रभावित करते हैं ?
4. पहले वर्ष में सामाजिकता के कौन से चरण आते हैं ?
5. शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएं कौन-सी हैं ?
6. किस आयु में बालक- (*i*) प्यार और झिड़क में अन्तर महसूस कर सकता है ?
   (*ii*) जिप बन्द कर सकता है ?
   (*iii*) मेज पर बैठ कर स्वयं खाना खा सकता है ?
   (*iv*) छोटी वस्तु को पकड़ सकता है ?
7. एक वर्षीय बच्चा अपनी माँ को न पाकर कौन-सा संवेग प्रकट करेगा ?
8. 8-9 माह के बच्चे के सामाजिक विकास के दो सूचक बताएं।
9. बालकों के दो संवेगों के नाम लिखें। बालक का उन्हें प्रदर्शित करने का एक मुख्य तरीका भी बताएं।
10. छः माह से लेकर दो वर्ष के बालकों के सामाजिक विकास का वर्णन करें।
11. बच्चों में भाषा का विकास कैसे होता है ?
12. दो वर्ष तक के बालक के भाषा का विकास लिखें।
13. भाषा के विकास में हाव-भाव (Gestures) का क्या योगदान होता है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. संवेगात्मक विकास की परिभाषा तथा चरण लिखें ? दो वर्ष का शिशु कौन-कौन से संवेग प्रकट करता है ?
2. दो वर्ष तक क्रियात्मक विकास का वर्णन करें।
3. शैशवावस्था में सामाजिक विकास कैसे होता है ?
4. जन्म से तीन वर्ष की आयु तक बच्चों में क्रियात्मक विकास की तालिका बनाओ।
5. बालकों में मानसिक विकास की अवस्थाओं का वर्णन करें।
6. एक तीन वर्षीय बालक में ईर्ष्या होने के दो कारण लिखें। वह किन चार तरीकों से उसे प्रकट कर सकता है ?

ω ω ω

CHAPTER

3

बाल्यावस्
(Childhoo

बाल्यावस्था (दो से छः वर्ष)
(Childhood [2 to 6 Years])

1. शारीरिक विकास (Physical Development) : इस समय शारीरिक विक उतना तेज नहीं होता जितना कि शैशवावस्था में। इस समय बच्चे के शरीर का अनु व्यवस्कों जैसा होता है। टांगे बढ़कर शरीर की पूरी लम्बाई का आधा भाग हो जाती सिर की वृद्धि धीरे तथा पेट की वृद्धि मध्यम होती है। साधारणतय: तीन वर्ष का लड़ 38 ईंच लम्बा तथा 38 पाउंड भारी होता है। लड़कियां थोड़ी छोटी तथा हल्की होती पांच वर्ष तक बालक की सामान्य लम्बाई 43 ईंच तथा भार 43 पाउंड हो जाता है। बच्च की लम्बाई और भार को दूसरे कारक भी प्रभावित करते हैं जैसे माता-पिता की लम्ब पोषण, बीमारी इत्यादि।

इस समय मांसपेशियों का विकास शीघ्रता से होता है। बढ़ी मांसपेशियां छो मांसपेशियों की अपेक्षा अच्छी प्रकार विकसित होती हैं। मस्तिष्क का भार व्यस्क भार 90 प्रतिशत हो जाता है।

2. अनुभव में वृद्धि (Perceptual Development) : बचपन में बालक कई प्रक के motor skills सीख जाता है। पांच से छः वर्ष तक वह स्वयं खाना, कपड़े पहनन नहाना, बालों की कंघी करना, खिलौनों के साथ खेलना, पैंसिल का प्रयोग करना, कूद सीख जाता है। निम्नलिखित तालिका दो से पांच वर्ष के बालकों में विकास की क्रि दर्शाती है-

विकास की दर
(Development Norms given by Bulher, Gessel, Terman)

	दो वर्ष	तीन वर्ष	चार से पांच वर्ष
Motor Development	बगैर सहायक के चल सकता है, कूदता तथा भागता है।	रस्सी कूद सकता है।	स्वतन्त्र गतिशीलता ब जाती है, संगीत के प्रति क्रिया करता है।
Fine Motor Co-ordination	दूसरों की नकल कर सकता है।	आकारों को मिला सकता है, सामान्यतय: तथा विभिन्नता को पहचान सकता है।	रंगों के नाम बत सकता है।

Perceptual	अपने आप को पहचानता है तथा रंगों को मिला सकता है।	डिब्बों को फिट कर सकता है।	आकारों तथा रंगों को मिला सकता है तथा नाम से व्यक्ति को पहचान लेता है।
Vocalization	200 शब्द बोल सकता है।	900 शब्द बोल सकता है। निर्देश मान लेता है।	2000 से 3000 शब्द बोल लेता है।
Adaptive behaviour	Bowel पर नियन्त्रण करना सीखता है।	ब्लाक बना लेता है तथा व्यक्ति का चित्र बनाने की क्षमता रखता है।	शरीर का चित्र विवरण सहित बना सकता है।

भाषा का विकास (Language Development) : जन्म होते ही रोने के साथ बच्चे की भाषा का विकास शुरू हो जाता है। दस माह का बालक एक शब्द बोल सकता है जबकि एक वर्ष तक वह तीन से चार शब्द बोल लेता है। घर के अच्छे वातावरण तथा बालक को सिखाने की ट्रेनिंग से उसकी शब्दावली का विकास जल्दी होता है। बुद्धि तथा भाषा के विकास का सीधा सम्बन्ध है। निम्नलिखित तालिका शब्दावली के विकास को दर्शाती है :

आयु	शब्दावली	
	स्मिथ	टर्मन
एक वर्ष	3	
दो वर्ष	272	
तीन वर्ष	896	
चार वर्ष	1560	
छः वर्ष	2562	
आठ वर्ष		3600
बारह वर्ष		9000

बौद्धिक विकास (Intellectual Development) : दो वर्ष के बाद बालक का बौद्धिक विकास तीव्र हो जाता है क्योंकि उसका सामाजिक वातावरण बढ़ता है और उसे नए अनुभव होते हैं।

बौद्धिक विकास की निम्नलिखित विशेषताएं हैं :

- बालक भौतिक और सामाजिक वास्तविकता के प्रति अपनी धारणा बनानी शुरू कर देता है।

- छः वर्ष की आयु तक बालक आकार, आकृति, रंग, समय तथा दूरी आदि (perception) बना लेता है।
- बालक की यादाश्त तेज़ी से बढ़ती है। बच्चा रट कर चीज़ों को याद करता है
- बच्चे में रचनात्मकता तथा कल्पना का विकास होता है।
- मूर्त (Concrete) वस्तुओं के सम्बन्ध में बालक की सोच तथा तर्क का विका होता है।
- ध्यान (attention) देने का समय सात से बीस मिन्ट हो जाता है तथा वातावर को विस्तार से देखने की दिलचस्पी बढ़ती है।
- बालक भाषा, चित्रकला, खेल तथा समस्या सुलझाने में प्रतीक (symbols) व प्रयोग कर सकता है।
- बालक वातावरण के सम्बन्ध में प्रश्न पूछता है।

सामाजिक विकास (Social Development) : बालक का जन्म समाज के वातावर में होता है जहां उसके व्यक्तित्व का विकास समाज के मापदण्डों (norms) के अनुस होता है।

- बच्चे में स्वतन्त्रता का विकास होता है। वह अपने वातावरण को स्वयं से ढूंढ है।
- बच्चे का समाज घर से बाहर विस्तृत हो जाता है।
- दोनों लिंग के बच्चे बगैर भेदभाव के साथ-साथ खेलते हैं। वह दोनों समूह क खेलों में भाग लेते हैं जहां शारीरिक ऊर्जा का प्रयोग किया जाता है जैसे रे लगाना, छुपना और ढूंढना आदि।
- वह दूसरों के साथ सहयोग करना सीखते हैं और अपने जैसे दिलचस्पी औ व्यक्तित्व वाले बच्चों को मित्र बनाते हैं।
- बच्चे परियों तथा पशुओं की कहानियों में दिलचस्पी लेते हैं।
- तीन से छः वर्ष के भीतर उनमें नकारात्मक व्यवहार बन जाता है। इसका कार परिस्थितियां होती हैं। बड़ों की दखल-अंदाजी से वह निराश हो जाते हैं औ उनका व्यवहार नकारात्मक हो जाता है।
- खेल की स्थितियों में लड़कियां लड़कों की अपेक्षा अधिक दबंग (dominating होती हैं।
- बच्चा अपनी क्रियाओं के लिए समाज से स्वीकृति चाहता है।

संवेगात्मक विकास (Emotional Development) :

- संवेग जीवन की परिस्थितियों से जूझने के लिए ऊर्जा प्रदान करते हैं।

- संवेग बालकों के व्यवहार के लिए प्रेरणा का कार्य करते हैं।
- संवेग बालकों के जीवन में सुख प्रदान करते हैं।
- संवेग बालकों की क्रिया में विशेषताएँ उत्पन्न करते हैं।
- संवेग बालक के समाज में व्यवस्थित होने को प्रभावित करते हैं।
- तीव्र संवेग बालकों के शिक्षण में सम्पूर्ण को अव्यवस्थित कर देते हैं। जिससे सोचने और तर्क करने की क्षमता कम हो जाती है।
- संवेग बच्चों में विचारों के आदान-प्रदान के माध्यम का कार्य करते हैं। यह व्यक्ति को उसके व्यवहार को बदलने के लिए निर्देशित करते हैं ताकि वह समाज के स्तर के अनुसार चल सके।
- संवेगों के प्रकटन को बहाव न मिलने पर व्यक्तित्व में असामान्यता दिखाई देती है।

माता-पिता तथा अध्यापकों के लिए सुझाव
(Suggestions for Guidance of Parents and Teachers)

1. घर तथा स्कूल के उचित वातावरण प्रदान करना चाहिए। बच्चों को अपनी भावनाएं (Feelings) प्रकट करने के लिए उत्तेजित करना चाहिए।
2. घर तथा स्कूल में सुरक्षा तथा स्वतन्त्रता प्रदान की जानी चाहिए।
3. बच्चों को खेलों, सांस्कृतिक क्रियाओं तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
4. लड़के तथा लड़कियों में तुलना न करें।
5. सब के साथ समान व्यवहार करना चाहिए।
6. यदि बच्चे तीव्र संवेग प्रकट करें तो उनके साथ धैर्य तथा बुद्धिमत्ता से पेश आना चाहिए।
7. लड़कों को पिता का साथ उपलब्ध होना चाहिए ताकि उनमें पुरुष जैसी विशेषताओं का विकास हो सके।
8. बच्चों की व्यक्तिगत भावनाओं का सम्मान करें तथा उनमें विश्वास रखें।
9. बच्चों में उचित व्यवहार को बढ़ावा दें।
10. माता-पिता तथा अध्यापकों को यह याद रखना चाहिए कि बच्चे को प्राप्त होने वाले वातावरण का उस पर बहुत प्रभाव पड़ता है।
11. बच्चों को उनकी संस्कृति से अवगत कराना चाहिए।

12. बच्चों को स्वतन्त्र होने के लिए उत्साहित करना चाहिए। उनमें स्वयं निर्भर होने की भावना को बढ़ाना चाहिए।
13. बच्चों को मित्र बनाने से नहीं रोकना चाहिए। साथी समूह में बच्चे अपने आप को अभिव्यक्त करना तथा अकेलेपन से दूर रहना सीखते हैं। उनमें सुरक्षा की भावना बनती है तथा स्वयं के महत्त्व का पता चलता है।
14. बच्चों को स्कूल तथा घर में विभिन्न क्रियाओं में भाग लेने को उत्साहित करना चाहिए।
15. बच्चों में hobbies बनाने की दिलचस्पी बढ़ानी चाहिए।
16. बच्चों को विभिन्न प्रयोग करने के अवसर प्रदान करने चाहिए।
17. बच्चों को साहित्य पढ़ने के लिए उत्साहित करें।
18. स्कूल को चाहिए कि वह बच्चों को आस-पास के वातावरण से परिचित कराए।
19. स्कूल की ओर से बच्चों को खेलों के उचित निर्देशन प्राप्त होने चाहिए। लड़के तथा लड़कियों को अलग तरह से निर्देश देने चाहिए।
20. बच्चों की आयु स्तर के अनुसार उन्हें खेल क्रियाओं तथा शारीरिक व्यायाम के निर्देश प्राप्त होने चाहिए।
21. बच्चों की संवेगात्मक ऊर्जा को उचित दिशा में समाज द्वारा स्वीकृत रास्तों पर ले जाना आवश्यक है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. बाल्यावस्था की अवधि कितनी होती है ?
2. बाल्यावस्था में शारीरिक विकास किस प्रकार होता है ?
3. बाल्यावस्था में बच्चों की लम्बाई और भार लगभग कितना होता है ?
4. बाल्यावस्था में बालक कौन-कौन से motor skills सीख जाता है ?
5. दो वर्ष, तीन वर्ष और पांच वर्ष का बालक लगभग कितने शब्द बोल लेता है ?
6. बाल्यावस्था में बौद्धिकता की कौन-सी क्षमताएं विकसित होती हैं ?
7. बाल्यावस्था में बच्चे किस प्रकार के खेल खेलते हैं ?
8. बाल्यावस्था में बच्चे किस प्रकार के सहयोगी बनाते हैं ?

9. बाल्यावस्था में बच्चों का व्यवहार नकारात्मक क्यों हो जाता है ?
10. तीव्र संवेग बच्चों के लिए किस प्रकार हानिकारक होते हैं ?
11. बच्चे किन क्रियाओं द्वारा अपने संवेग प्रकट करते हैं ?
12. बच्चों में मुख्य व्यावहारिक समस्याएं कौन सी होती हैं ?
13. बच्चों को खाना कैसे खिलाएं ?
14. बच्चों में अच्छा व्यवहार विकसित करने की क्यों आवश्यकता पड़ती है ?
15. बच्चों को व्यवस्थित रहना कैसे सिखा सकते हैं ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. बाल्यावस्था किसे कहते हैं ?
2. बाल्यावस्था में विकास की दर कैसे होती है ?
3. बाल्यावस्था में बौद्धिक विकास की मुख्य विशेषताएं कौन सी होती हैं ?
4. बाल्यावस्था में सामाजिक विकास कैसे होता है ?
5. संवेग बालकों के लिए किस प्रकार सहायक होते हैं ?
6. बच्चों के संवेगों की क्या विशेषताएं होती हैं ?
7. बच्चों में अच्छा व्यवहार कैसे विकसित किया जा सकता है ?

ꕥ ꕥ ꕥ

CHAPTER

4

बचपन
(Late Childhood)

बचपन (Late Childhood) ज़िन्दगी का महत्त्वपूर्ण भाग है। Redl ने इस समय क विशेषता इस प्रकार बताई है, "इस समय सबसे अच्छे बच्चे भी अजीब ढंग से व्यवहा करने लगते हैं।" इस प्रकार अध्यापक और मां-बाप बच्चों से और बच्चे उनसे नाराज रहते हैं। समाज में बच्चों की उचित व्यवस्था करने के लिए मां-बाप तथा अध्यापकों द्वा इन बच्चों को उचित निर्देशन तथा मार्ग दर्शन मिलना आवश्यक है।

जी० स्टेनले हॉल ने कहा है कि, "8 से 12 वर्षों की आयु मनुष्य के जीवन क अद्भुत समय है जब मस्तिष्क व्यस्क के आकार का आधा बन चुका है, भार तथा स्वास्थ्य सबसे अच्छा है, क्रियाशीलता सर्वाधिक तथा विभिन्नता लिए हुए है तथा सहनशीलता जीवनता और कम-से-कम थकावट होती है। बच्चा घर से बाहर एक नए जीवन क निर्माण करता है तथा उसकी प्राकृतिक दिलचस्पियां बन जाती है।"

शारीरिक विकास : Late Childhood के समय भार तथा कद में धीमे वृद्धि होती है। लड़कियां विकास में लड़कों की अपेक्षा तेज होती हैं। इस समय बच्चे बिमारियों से रहित होते हैं। दूध के दांत गिरकर स्थायी (Permanent) दांत बनने से मुंह की बनावट बदल जाती है। माथा सीधा, नाक तेज, छाती चौड़ी और खेलने से क्रियात्मक कलाएं (motor skills) विकसित हो जाती हैं। उस समय निम्नलिखित बदलाव दिखाई देते हैं :

1. हाथ के कामों में अधिक दक्षता बनना।
2. शक्ति का विकास।
3. कम थकावट होना।
4. खेलों में अधिक उचितता तथा धैर्य (endurance) का विकास।

मानसिक विकास : छः से बारह वर्ष की आयु में मानसिक विकास में निम्नलिखित विशेषताएं दिखाई देती हैं :

1. बच्चे को अपने और बाहरी संसार में साफ फर्क नज़र आने लगता है। वह अपने वातावरण में वास्तविकता को ढूंढता है।
2. प्राकृतिक कानून के प्रत्यय (concept) पूर्णतयः विकसित हो जाते हैं।
3. यह समय जानकारी (information) तथा विचारों को इकट्ठा करने का होता है। इस समय सीखना और याद करना अधिक प्रभावकारी हो जाता है क्योंकि बालक को औपचारिक शिक्षा प्राप्त होती है।

4. तर्कयुक्त (Logical) सोच की ताकत बढ़ती है। बालक की मूर्त (concrete) वस्तुओं के सम्बन्ध में चुनाव करने, विकसित करने तथा बौद्धिक क्रियाओं (cognitive operations) को लागू करने की क्षमता बढ़ जाती है।
5. विज्ञान की कहानियों तथा यान्त्रिक क्रियाओं (mechanical operations) में दिलचस्पी अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है।
6. साहस तथा आज्ञा की भावना (loyalty) बढ़ जाती है। बच्चे कार्य करने में साहस का प्रदर्शन करते हैं।
7. कल्पनात्मक खेलों में बालक की दिलचस्पी बढ़ती है।
8. बालक ऐसी सामग्री पढ़ना पसन्द करते हैं जो तथ्य, विज्ञान और गणित शास्त्र (mathematical) जानकारी से सम्बन्धित हो तथा ऐसी कहानी पसन्द करते हैं जो वास्तविक विषय रखती हो।
9. बालक वातावरण में होने वाली भौतिक, यांत्रिक (mechanical) तथा प्राकृतिक क्रियाओं (phenomena) के बारे में कारण सम्बन्धों (causal relationship) की सोच अपनाते हैं।
10. बारह वर्ष की आयु तक कल्पनात्मक डर समाप्त हो जाते हैं।
11. इस समय बच्चे विशिष्ट उदाहरणों के साधारण नियम (generalize) करने की योग्यता विकसित कर लेते हैं। बच्चे तुरन्त होने वाली घटनाओं तथा कारण (cause) तथा प्रभाव (effect) सम्बन्धों के साथ अधिक सम्बन्ध रखते हैं।
12. Flavell 1977 के अनुसार इस समय बच्चे समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। वह वातावरण को लचकीला (flexible), बेहतर (efficient) तथा चिन्ह रूप (symbolic) से deal करता है। वह अपने नियमों का निर्माण करता है जो तर्कशील तथा पदार्थ रूप में (concrete) हों।

संवेगात्मक विकास (Emotional Development) : संवेगों का जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान है जो बालक के विकास के साथ बदलती हैं। इस अवस्था में निम्नलिखित ढंग से संवेगात्मक विशेषताएं दिखाई देती हैं :

1. इस समय बच्चा अपने संवेगों की अभिव्यक्ति के ऊपर नियन्त्रण करना सीख लेता है।
2. बच्चे की संवेगात्मक अभिव्यक्ति अधिक साफ हो जाती है।
3. समूर्त वस्तुओं की अनुपस्थिति में भी बच्चा संवेगों को प्रकट करता है।
4. इस समय बच्चे दूसरों पर अधिक आधारित होते हैं इसलिए उनके संवेग दूसरों के संवेग देखकर बनते हैं।

5. पहली अवस्था के जानवर, ऊंचे स्थानों, आवाजों के डर समाप्त हो जाते हैं तथा अलौकिक (supernatural), काल्पनिक जानवरों, असफलता, दूसरों द्वारा मज़ाक बनने तथा दूसरों से भिन्न होने का डर बढ़ जाता है।
6. दूसरों द्वारा ताड़ना मिलने, तंग किए जाने, दूसरे बच्चों के साथ प्रतिकूल तुलना (infavourable comparison) किए जाने, तरक्की की क्रियाओं में रूकावट आने, साथियों या बच्चों द्वारा मज़ाक बनाए जाने तथा दूसरों द्वारा तिरस्कारित (neglect) किए जाने से क्रोध उत्पन्न होता है।
7. मां-बाप द्वारा पक्षपात (favouritism) किए जाने से बच्चों में ईर्ष्या उत्पन्न होती है।
8. कक्षा में लड़कियां लड़कों की अपेक्षा अधिक ईर्ष्यालु होती हैं क्योंकि लड़कों को समाज बेहतर सलूक देता है।
9. इस समय खुशी, आनन्द, प्यार, जिज्ञासा तथा दु:ख जैसे संवेग उत्पन्न हो जाते हैं।

सामाजिक विकास : पहली अवस्था में समाजीकरण की प्रक्रिया घर तथा आस-पड़ोस के वातावरण से सम्बन्धित होती है। स्कूल जाने से उसका दायरा बढ़ जाता है। इस समय निम्नलिखित बदलाव आते हैं :

1. इस समय बच्चे अपने लिंग के साथियों के साथ समूह बना लेते हैं तथा घर से बाहर रहते हैं। इस समय साथी समूह समाजीकरण का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है।
2. इस समय बालक घर तथा स्कूल में नियमों का खंडन करते हैं।
3. इस समय बच्चे अनुशासनहीन हो जाते हैं।
4. इस स ा वह व्यस्कों द्वारा निर्धारित स्तर अपनाने से इन्कार कर देते हैं।
5. किश ावस्था की अपेक्षा बालक अधिक अपराधी (delinquent) होते हैं।
6. इस समय लड़कियां लड़कियों के साथ तथा लड़के अपने लिंग के बच्चों के साथ खेलते हैं। खेल की क्रियाओं में भी लिंग (sex) भिन्नता पाई जाती है। लड़कियां लड़कों के प्रति नकारात्मक प्रवृत्ति रखती हैं।
7. लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक विद्रोही होते हैं तथा लड़कियों की अपेक्षा उनका समूह अधिक व्यवस्थित होता है।
8. बच्चे समूह वाली खेलें खेलते हैं। लड़के तथा लड़कियां अपने समूह बना लेते हैं। समूह के प्रति जागरूकता बढ़ती है तथा बच्चे कम स्वार्थी, स्वयं-केन्द्रित तथा गुस्से वाले होते हैं तथा अधिक सहयोगी तथा अपने भाव प्रकट करने वाले बन जाते हैं।

9. समाज के प्रति जागरूकता बढ़ती है। इस आयु को 'द्वितीय बाल्य' भी कहते हैं। अब बच्चे समाज आयु के साथ समूह बना लेते हैं जो एक प्रकार से सोचते तथा कार्य करते हैं। बच्चे अपने द्वितीय के प्रति बहुत सम्मानदार होते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. बचपन में शारीरिक विकास कैसे होता है ?
2. बचपन में मानसिक विकास के महत्वपूर्ण अंग कौन से होते हैं ?
3. बचपन में संवेगात्मक विकास कैसे होता है ?
4. बचपन में सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण पहलू कौन से होते हैं ?
5. खेल बालकों के लिए किस प्रकार सहायक होते हैं ?
6. बच्चों के संवेगों की क्या विशेषताएं होती हैं ?

ओ ओ ओ

CHAPTER

5

किशोरावस्थ
(Adolescence

किशोर अवस्था विकास तथा समायोजन का वह समय है जो बचपन तथा वयस्
अवस्था के बीच अन्तर-कालीन (Transitional) समय होता है। इस समय बचपन
विकास समाप्त हो जाता है और परिवर्तन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। यह समय 12
19 वर्ष की आयु तक रहता है तथा इस अवधि में व्यक्तिगत तथा सांस्कृतिक विभिन्नत
होती हैं। **जर्सिल्ड** (Jersild) के अनुसार, **"किशोरावस्था वह अवधि है, जिसमें लड़
तथा लड़कियां मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक तथा शारीरिक रूप से बचपन
व्यस्कता की ओर बढ़ जाते हैं।"**

किशोरावस्था को दो भागों में बाटा जा सकता है :

Early किशोरावस्था : यह लड़कियों में 13 से 17 वर्ष तक होती है। यह अवधि
इस बात पर निर्भर करती है कि लड़कियां कब लैंगिक रूप से परिपक्व होती हैं। लड़क
में 14 से 17 वर्ष लैंगिक परिपक्वता के ऊपर निर्भर हैं। किशोरावस्था के शुरू के वर्षों क
'teen वर्ष' तथा किशोरों को teen-agers कहा जाता है।

Late किशोरावस्था : यह अवधि 17-18 वर्ष है। इस समय किशोरों की विशेषताए
लगभग व्यस्कों जैसी हो जाती हैं।

किशोरावस्था में शारीरिक परिवर्तन
(Physical Changes in Adolescence)

ऊंचाई तथा भार में वृद्धि (Increase in Height and Weight) : किशोरावस्था में
शारीरिक वृद्धि तथा विकास अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाती है तथा इस समय किशोर
आकार, भार तथा लम्बाई पूर्णतय: प्राप्त कर लेता है। बाहरी तथा आन्तरिक अंगों की वृद्धि
तथा क्रिया चरम सीमा पर पहुंच जाती है। इस अवस्था में सभी ग्रंथियां बहुत अधिक
क्रियाशील हो जाती हैं। इस समय लड़के लड़कियों की अपेक्षा अधिक लम्बे तथा भारी
होते हैं हड्डियां तथा मांसपेशियां पूरी तौर पर बढ़ जाती हैं। लड़कियों की मांसपेशियां नर्म
होती हैं जबकि लड़कों की सख्त हो जाती है।

शारीरिक अनुपात में बदलाव (Change in Bodily Proportions) : बाजू तथा
टांगे लम्बी हो जाती हैं। हाथ तथा पांव बड़े हो जाते हैं। पेट चौड़ाई तथा लम्बाई में बढ़
जाता है, कंधे चौड़े हो जाते हैं। नाक लम्बा, माथा चौड़ा तथा ठोडी लम्बी हो जीती है।

आवाज में बदलाव (Change in Voice) : लड़कों की आवाज़ गहरी तथा खुदरदरी तथा लड़कियों की तीखी तथा मीठी हो जाती है।

लैंगिक परिवर्तन (Sex Changes) : बाजू के नीचे तथा जनतन्त्र अंगों के इर्द-गिर्द बाल बढ़ जाते हैं। लड़कियों के स्तन तथा hips की गोलाई और लड़कों में मूंछ तथा दाढ़ी आ जाते हैं। इस अवस्था में लड़कियों में माहवारी तथा लड़कों में स्वप्न दोष (सोते समय semen) निकलना शुरू हो जाता है। लड़कियों में माहवारी शुरू होने की अवस्था को (menarche) कहते हैं। यौवन (Puberty) से भाव है व्यस्कता की आयु (Age of manhood) यह वह समय जब जनतन्त्र अंग परिपक्व होकर कार्य करना शुरू कर देते हैं।

Puberty उस समय शुरू होती है जब बच्चे का शरीर व्यस्क के शरीर में बदलना शुरू होता है तथा यह अवस्था उस समय समाप्त होती है जब यह बदलाव समाप्त हो जाता है।

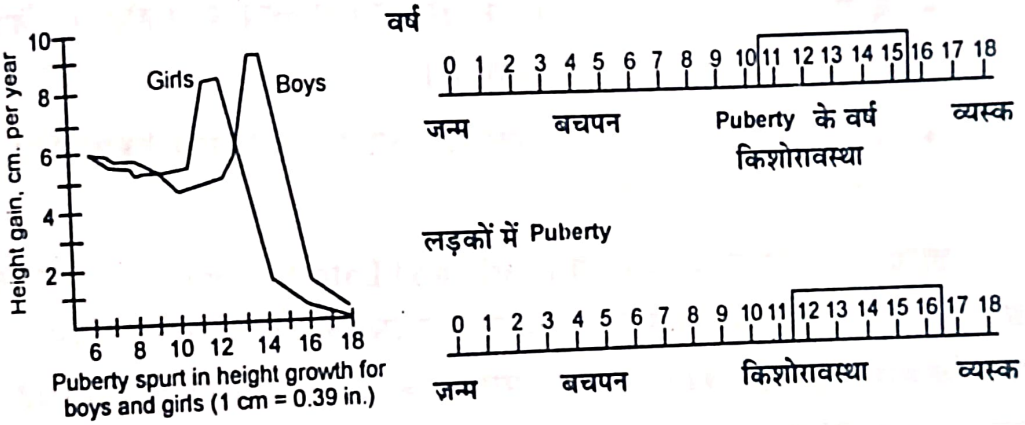

लड़कों में बदलाव (Changes in Bodys) :

- मांसपेशियां भारी होने के कारण कंधे चौड़े हो जाते हैं तथा पेट त्रिकोना हो जाता है।
- मांसपेशियों के विकास से बाजू तथा टांगे अपने पूर्ण आकार में आ जाती हैं।
- Pubic बाग उग आते हैं जो जांघों तक बढ़ जाते हैं।
- बाजू के नीचे बाल आ जाते हैं।
- होठों के ऊपर, गालों की साइडों पर, ठोडी तथा गले पर बाल आ जाते हैं।
- टांगों, बाजू, छाती तथा कंधों पर बाल आ जाते हैं।
- त्वचा के रंग तथा विन्यास में बदलाव आ जाता है।

लड़कियों में बदलाव (Changes in Females) :

- कंधों का चौड़ा होना, कूल्हों की चौड़ाई तथा गोलाई बढ़ना, कमर का पतला हो जाना।

- बाजू तथा टांगों का पूर्णतय: आकार बनना।
- स्तन का विकास।
- Pubic बाल।
- बाजू के नीचे बाल।
- होठों के ऊपर, गालों के ऊपर तथा ठोड़ी के किनारे बाल आना।
- टांगों तथा बाजू पर बाल आना।
- त्वचा के रंग तथा विन्यास में बदलाव।

आन्तरिक अंगों में परिवर्तन (Change in Internal Organs) : इस समय का व्यास आधा तथा भार दुगना बढ़ जाता है। लड़कों में हृदय की वृद्धि दर लड़कियं अपेक्षा अधिक होती है।

- किशोरावस्था में लड़कों में नाड़ी की दर (Pulse rate) बढ़ जाती है।
- बचपन में लड़कियों में लड़कों की अपेक्षा रक्त चाप उच्च होता है। किशोराव में लड़कों में रक्तचाप बढ़ जाता है।
- पाचन संस्थान के अंगों में बदलाव आता है। जिससे किशोरों में खाने अधिक इच्छा होती है।

शीघ्र तथा देर से परिपक्वता (Early and Late Maturation) : कुछ बच्चे क अवधि में ही वयस्क बन जाते हैं जबकि कुछ वयस्क बनते-बनते बहुत समय ले लेते है यदि किशोर का शरीर काफी अधिक समय तक अपने साथियों से भिन्न रहे तो इस काफी नुकसानदायक प्रभाव हो सकते हैं।

यदि बदलाव बहुत जल्दी हो जाए तो बालक शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक तौर प विचलित हो जाता है। उसकी दिलचस्पियां अपने साथियों से भिन्न हो जाती हैं। व शर्मिंदगी से बचने के लिए समाज से सम्पर्क तोड़ जाता है। कई बार उसमें बुरी प्रवृत्तिय आ जाती हैं।

इसकी अपेक्षा धीरे व्यस्क होने वाले को लाभ रहता है कि उसे शारीरिक बदलाव के साथ व्यवस्थित होने के लिए अधिक समय मिलता है। परन्तु कई बार वह इस धीमी प्रक्रिया के बारे में चिन्तित रहता है।

शीघ्र व्यस्क होने के प्रभाव (Effects of Early Maturing) :

लड़के (Boys) :

- खेलों में क्षमता बढ़ जाती है।
- लीडर बन जाते हैं।
- स्वयं पर विश्वास बढ़ जाता है तथा अपने प्रति विचार अच्छे बन जाते हैं।

लड़कियां (Girls) :

- उनके बड़े आकार तथा भिन्न सामाजिक दिलचस्पियों के कारण उनका कीर्तिमान ठीक नहीं रहता।
- अधिक झगड़ालू हो जाती हैं।

देर से परिपक्वता (Late Maturing) :

- लीडर नहीं बनते।
- शर्मिले स्वभाव के रहते हैं क्योंकि उन्हें अपनी दबी हुई वृद्धि का ज्ञान होता है।
- सामाजिक अभिवृत्ति उनके प्रति बहुत अच्छी नहीं होती।

लड़कियां (Girls) :

- लीडर बनती हैं तथा सहेलियों में लोकप्रिय होती है।
- देर तक बच्चा समझे जाने के कारण विद्रोही हो जाती हैं।
- समाज द्वारा स्वीकृत रहती हैं तथा लड़के उन्हें पसन्द करते हैं।

शारीरिक व्यायाम तथा क्रियाएं (Physical Exercise and Activities) : किशोरावस्था में शारीरिक वृद्धि तीव्रता से होने के कारण इस समय शारीरिक अभ्यास तथा क्रियाएं जैसे खेलें, ड्रिल, डांस, जिम्नास्टिक, कुश्ती, फुटबाल, कबड्डी इत्यादि की जानी चाहिए। इस समय डांस सर्वाधिक अच्छा रहता है। डांस द्वारा सबसे अच्छी अभिव्यक्ति हो सकती है। इसमें प्रदर्शन स्वतन्त्र रूप से हो सकता है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. किशोरावस्था से क्या भाव है ?
2. किशोरावस्था की अवधि कितनी होती है ?
3. Menarche से क्या भाव है ?
4. लड़कों में स्वप्न-दोष क्या होता है ?
5. शीघ्र परिपक्वता से क्या भाव है ?
6. देर से परिपक्वता से लड़कों में क्या प्रभाव पड़ता है ?
7. देर से परिपक्वता से लड़कों में क्या प्रभाव दिखाई देते हैं ?
8. शीघ्र परिपक्व होने से लड़कों में क्या प्रभाव होता है ?
9. शीघ्र परिपक्वता लड़कियों के लिए कैसे हानिकारक हो सकती है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. शीघ्र तथा देर से परिपक्व होने में क्या अन्तर है ?
2. किशोरावस्था में शारीरिक परिवर्तन किस प्रकार दिखाई देते हैं ?
3. लड़के तथा लड़कियों में किशोरावस्था में लैंगिक परिवर्तन किस प्रकार से होते हैं ?

ॐ ॐ ॐ

इकाई - II : बाल विकास के सिद्धान्त

6. बाल विकास
   (Child Development)
7. मानसिक विकास
   (Mental Development)
8. एरिक्सन की सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की थ्योरी : भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ
   (Theory of Social and Emotional Development by Erickson : Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)
9. नैतिक विकास की कोहलबर्ग की थ्योरी ; भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ
   (Kohlberg Theory of Moral Development ; Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)

CHAPTER

6

बाल विकास
(Child Development)

बाल विकास से भाव मनुष्य में जन्म से लेकर किशोरावस्था तक होने वाले शारीरिक, मनोवैज्ञानिक तथा संवेगात्मक बदलाव हैं। जैसे-जैसे मनुष्य बढ़ा होता है वह दूसरों पर निर्भरता से स्वयं पर निर्भरता की ओर बढ़ता है। यह सदैव चलने वाली क्रिया है जिसमें भविष्य के क्रम का पता होता है। परन्तु फिर भी प्रत्येक बालक के लिए अलग कोर्स है। यह एक समान दर पर आगे नहीं बढ़ती तथा प्रत्येक स्तर विकास के पहले के स्तर द्वारा प्रभावित होता है क्योंकि यह विकास के बदलाव अनुवांशिक कारकों तथा गर्भावस्था में होने वाली घटनाओं से प्रभावित होते हैं। विकास के बदलाव अनुवांशिक कारकों तथा गर्भावस्था में होने वाली घटनाओं से प्रभावित होते हैं। विकास के बदलाव अनुवांशिक नियन्त्रक प्रक्रियाएं जैसे परिपक्वता का नतीजा होती है ; या वातावरण के कारक तथा सीखने की क्रिया का नतीजा हैं तथा सामान्यतय: इन दोनों के बीच की प्रतिक्रिया है। यह मनुष्य की प्रकृति का भी नतीजा है तथा हम वातातवरण से सीखने की योग्यता भी रखते हैं।

विकास की विभिन्न अवस्थाएं हैं :

1. नवजात शिशु (0-4 हफ्ते)
2. शिशु (4 हफ्तों से 1 वर्ष)
3. toddler (1-3 वर्ष)
4. स्कूल से पूर्व की अवस्था (4-6 वर्ष)
5. स्कूल जाने की अवस्था (6-13 वर्ष)
6. किशोरावस्था (13-19 वर्ष)

विभिन्न संस्थाएं जैसे ज़ीरो से तीन तथा World Association for Infant Mental Health शिशु के स्थान पर जन्म से 3 वर्ष तक की अवस्था को बचपन में ही लेते हैं।

बाल विकास के अर्न्तगत विभिन्न पहलू सम्मिलित हैं :

1. शारीरिक वृद्धि (Physical growth) : शारीरिक वृद्धि जन्म से 15-20 वर्ष तक होती रहती है जब व्यक्ति जन्म के समय सामान्य 3·5 किलो तथा 50 सैं०मी० लम्बाई से पूरा व्यस्त बन जाता है। लम्बाई तथा भार बढ़ने से शरीर का अनुपात भी बदलता हैं,

नवजात शिशु के बढ़े सिर, छोटा धड़ तथा छोटी बाजू-टांगों से व्यवस्थता के समय अपेक्षाकृत सिर छोटा, बाजू-टांगे तथा धड़ लम्बा हो जाता है। बच्चे का विकास सिर से पांव की दिशा में होता है।

विकास की गति तथा पैटर्न (Speed and Pattern of development) : पहले तीन महीनों में विकास दर बहुत तेज होती है। चार महीने तक भार जन्म के भार से दुगना तथा साल भार में तिगुना हो जाता है। Puberty से पूर्व विकास दर धीमी हो जाती है (से 15 वर्ष के मध्य)। Puberty में विकास दर तेज हो जाती है। शरीर की वृद्धि दर तथ समय में शरीर के सभी भागों के लिए एक समान नहीं होती। जन्म के समय सिर व आकार व्यस्क के समान ही होता है ; परन्तु शरीर का नीचे का हिस्सा छोटा होता है। वृद्धि के दौरान सिर बहुत कम बढ़ता है परन्तु धड़ तथा टांगे-बाजू की वृद्धि अधिक होत है।

मोटर विकास
(Motor Development)

बचपन के दौरान की बगैर सीखी, अनैच्छिक (involuntry) गतिविधियां बचपन के आखिरी दौर तथा किशोरावस्था में कला से भरपूर इच्छित (voluntry) गतिविधियों में बदल जाती है।

विकास की गति तथा पैटर्न (Speed and Pattern of development) : आरम्भिक वर्षों में क्रियात्मक (motor) विकास की दर तेज होती है प्रथम वर्ष में ही नवजात शिशु के reflexes बदल जाते हैं या गुम हो जाते हैं तथा बाद में यह धीमे हो जाते हैं।

शारीरिक वृद्धि की भांति क्रियात्मक (motor) विकास भी (cephalocaudal) (सिर से पैर) तथा (proximodistal) (धड़ से बाहर के हिस्से की ओर) होता है। शरीर के निचले हिस्सों या हाथों तथा पैरों की गतिविधियों से पूर्व सिर तथा शरीर के बीच वाले हिस्सों में जल्दी नियन्त्रण प्राप्त होता है।

विभिन्न गतिविधियां स्तरों के क्रम में होती हैं जैसे 6-8 महीने में बालक हाथों तथा पैरों पर सरकना शुरू करता है, फिर शरीर को खींच कर किसी वस्तु का सहारा लेकर खड़ा होता है, व्यस्क का हाथ पकड़ कर चलता है तथा बाद में स्वयं से चलना शुरू कर देता है। बड़े बच्चे कम निभाते हुए साईड़ पर या पीछे की तरफ चलता है, उछलता है, एक टांग पर कूदता है तथा दूसरे के साथ चलता है तथा आखिर में रस्सी कूदना शुरू कर देता है। मध्य बचपन तथा किशोरावस्था में निर्देशों द्वारा या निरीक्षण करके नई क्रियात्मक (motor) कलाएं सीखी जाती हैं।

मोटर विकास का तंत्र (Mechanism of Motor Development)

Motor विकास के mechanism में कुछ अनुवांशिक कारक भी होते हैं जिनसे खास आयु में शरीर के हिस्सों का आकार तथा मांसपेशियों तथा शरीर की ताकत को तय करते हैं। Motor कलाओं में प्रयोग होने वाले शरीर के हिस्से हैं Frental cortex, parietal cortext तथा basal ganglia हैं। Dorsolateral frontal cortex strategic processing के लिए उत्तरदायी है। Parietal cortex perceptual motor integration तथा basal ganglia motor क्रम को नियन्त्रित करते हैं।

पोषण तथा व्यायाम शरीर को ताकतवर तथा लचकीला बनाते हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताएं (Individual differences) : यह विभिन्नताएं सामान्य होती हैं तथा बच्चे के भार तथा आकार पर निर्भर करती हैं। शैशवावस्था के बाद यह विभिन्नताएं प्रैक्टिस करने, निरीक्षण करने, निर्देशित किए जाने के अवसरों पर निर्भर करती है। चार से छः महीनों के बाद देर से चलना या autism, cerebral palsy, Down's syndrome विकास के पिछड़ेपन की निशानी है। कम motor विकास में गति में अस्पष्टता तथा जटिल कार्य न कर पाना सम्मिलित है।

अयोग्यताओं वाले बालक (Children with disabilities) : Down syndrome या विकास coordination अयोग्यता वाले बालक मुख्य motor योग्यताओं वाले मील के पत्थर तक पहुँच नहीं पाते जैसे चूसना, पकड़ना, रोल होना, बैठना, चलना, बोलना इत्यादि। इनका कारण chromosomal abnormalities होता है।

बौद्धिक/मानसिक विकास (Cognitive/Intellectual development) : शैशवावस्था में सीखने, याद रखना, सूचना को चिन्हों में बदलान, मुश्किलों को सुलझाना बिल्कुल सरल स्तर पर होती है जिनकी आवश्यकता ऐसे मानसिक कार्य में होती है जैसे जीवित तथा अजीवित वस्तुओं में अन्तर करना कुछ वस्तुओं को पहचानना इत्यादि। बचपन वर्षों में सीखने तथा सूचना की प्रक्रिया की गति बढ़ जाती है, यादाशत बढ़ जाती है, अमूर्त योग्यता की योग्यता (capacity) बनती जाती हैं जब तक किशोरावस्था नहीं आ जाती।

बौद्धिक विकास का तंत्र (Mechanism of Cognitive Development)

बौद्धिक विकास का अनुवांशिक तथा जैविक (mechanism) होता है। पर्यावरण के कारकों में भोजन तथा पोषण, माता-पिता की तरफ से मिलने वाली प्रतिक्रिया (response), दैनिक अनुभव, शारीरिक क्रिया तथा प्यार बच्चों के बौद्धिक विकास में सहायता करते हैं। अनुभव तथा सीखने की क्रिया बौद्धिक विकास में सहायक होते हैं। खासकर उच्च स्तर की योग्यताएं जैसे सारग्रहण (abstraction) यह काफी हद तक औपचारिक शिक्षा पर निर्भर करता है।

व्यक्तिगत विभिन्नताएं (Individual differences) : विशिष्ट बौद्धिक योग्यताएं प्राप्त करने के आयु-स्तरों की व्यक्तिगत विभिन्नताएं होती हैं, परन्तु अद्यौगिकरण किए हुए देश मानते हैं कि यह विभिन्नताएं अधिक नहीं है। बौद्धिक विकास में पिछड़े हुए बच्चों की उन देशों में अधिक समस्या होती है जहां कार्य करने के लिए तथा स्वतन्त्र जीवन के लिए उच्च स्तर की बौद्धिक कलाएं चाहिए।

सामाजिक-संवेगात्मक विकास (Social-Emotional Development)

नवजात शिशु किसी विशिष्ट व्यक्ति के साथ न तो डर तथा न ही आकर्षण महसूस करते हैं। पहले कुछ महीनों में वह सिर्फ खुशी, गुस्सा या उदासी का अनुभव करता है। पहली मुस्कान 6 से 10 हफ्ते में दिखाई देती है जिसे सामाजिक मुस्कान कहते हैं क्योंकि यह सामाजिक प्रतिक्रियाओं के दौरान उत्पन्न होती है। लगभग 8-12 महीनों में तेजी से बदलाव आते हैं, वह दी जाने वाली झिड़कों से डर जाते हैं, जाने पहचाने वाले लोगों को प्राथमिकता देते हैं, उनसे बिछड़ जाने पर या अजनबियों द्वारा उठाए जाने पर दुखी होते हैं। अलग किए जाने पर चिंता (anxiety) दिखाने के लिए वह हाथ पैर मारते हैं, चीखते हैं तथा गुस्सा (temper tantrunus) दिखाते हैं। इसकी तीव्रता के आधार पर जान सकते हैं कि उनमें अलग किए जाने वाली चिंता की संवेदना का (anxiety) विकार तो नहीं है।

भाषा तथा पैटर्न का विकास (Speech and pattern of development) : सामाजिक-संवेगात्मक विकास के कुछ पहलू जैसे सहानुभूति (empathy) धीरे-धीरे विकसित होते हैं, परन्तु कुछ दूसरे जैसे भय बालक के संवेगों में एकदम से अनुभव किए जाते हैं। शारीरिक परिपक्वता के साथ-साथ लैंगिक तथा रोमांटिक संवेगों का विकास होता है।

सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास का तंत्र (Mechanisms of Social and Emotional Development)

तय आयु पर कुछ लैंगिक कारक कुछ सामाजिक-संवेगात्मक विकासों को नियन्त्रित करते हैं जैसे भय तथा सम्बन्धित लोगों के साथ सम्बन्ध। अनुभव यह जानने में सहायता करता है कि कौन से लोग जाने पहचाने हैं, कौन से सामाजिक नियम पालन किए जाते है तथा किस प्रकार से गुस्सा दर्शाते हैं।

व्यक्तिगत विभिन्नताएं (Individual Differences) : मोटर योग्यता में व्यक्तिगत विभिन्नताएं सामान्य हैं तथा काफी हद तक बच्चे के भार तथा ढील ढौल पर निर्भर करती हैं। परन्तु शैशवास्था के बाद, यह व्यक्तिगत विभिन्नताएं अभ्यास करने के अवसर, निरीक्षण करने तथा विशिष्ट गतिविधियों पर निर्देश प्राप्त होने पर निर्भर करती हैं। सामान्य मोटर गतिविधि न होना, विकास में देर होना या autism या cerebral palsy जैसी समस्याएं दर्शाती हैं।

जनसंख्या की विभिन्नताएँ (Population Differences) : जनसंख्या में विभिन्नताएँ कई कारणों से होती हैं। उदाहरणतया; यदि यह सोचा जाता है कि लड़कों के लिए खेल-कूद अधिक उचित है या उन्हें लड़कियों से अलग प्रकार से व्यवहार करना चाहिए ; एक सामाजिक समूह के बालकों द्वारा सीखे गए रीति-रिवाज दूसरे समूह से अलग हैं। एक ही समूह में लड़के तथा लड़कियों के मध्य सामाजिक तथा संवेगात्मक विभिन्नताएँ इन दोनों में दिखाई देने वाली यौवन (Puberty) की विशेषताओं की विभिन्नता से सम्बन्धित की जा सकती हैं।

भाषा (Language) : भाषा के विकास से भाव है अर्थपूर्ण शब्दों तथा वाक्यों से एक दूसरे के साथ सम्पर्क स्थापित करना। भाषा अपने आपको व्यक्त करने का माध्यम है। भाषा में ध्वनियाँ होती हैं जिनका प्रयोग कई प्रकार के मेल से किया जाता है। इन सभी ध्वनियों तथा उनके मेलों में जो अर्थ होता है उसे बोली (speech) कहते हैं। भाषा विकास को कोई एक प्रयोगी नहीं है।

Autism तथा बोलने में देरी दोनों सम्बन्धित हैं। Autism का बच्चों भाषा सीखने पर इलाज किया जा सकता है। Autism में भाषा, बोलने, बातचीत करने तथा सामाजिक कार्यों में समस्याएं हो सकती हैं।

बाल विकास में रिस्क के कारक
(Risk Factors in Child Development)

बाल विकास कई प्रकार के रिस्क कारकों द्वारा नकारात्मक ढंग से प्रभावित होता है। यह कई कारक विकासशील देशों में अध्ययन किए गए हैं। इन्हें दो समूहों में बांटा जा सकता है :

1. अनुवांशिक (Hereditary)
2. वातावरण (Environment)

वातावरण सम्बन्धी कारक :

1. जन्म से पूर्व का वातावरण
   - गर्भावस्था में माँ से सम्बन्धित कारक
   - पोषण सम्बन्धी कमियां
   - माँ को मधुमेह होना
   - रेडिएशन के सम्पर्क में आना
   - German measles से संक्रमण
   - धूम्रपान
   - दवाईयों का प्रयोग
   - भ्रूण से सम्बन्धित कारक

— युटिरस में पोज़ीशन ठीक न होना
— प्लेसैन्टा गलत पोज़ीशन में होना

2. जन्म के बाद का वातावरण

— बाहरी वातावरण
— परिवार का सामाजिक-आर्थिक स्तर
— बच्चे का पोषण
— रेड़िएशन का सम्पर्क
— जलवायु तथा मौसम
— परिवार में बच्चे की क्रम संख्या
— परिवार में बहन-भाईयों की संख्या
— परिवार का ढांचा (एक ही माता या पिता, संयुक्त परिवार)
— आन्तरिक वातावरण
— बच्चों की बौद्धिकता
— हॉरमोन का प्रभाव
— संवेग
— कुपोषण, माँ को डिप्रेशन तथा बच्चे को प्रताड़ित करना इत्यादि।

गरीबी (Poverty) : पब्लिश किए हुए अध्ययनों से पता चलता है कि पड़ोस का ख़ होना, माता-पिता की कम आय, अशिक्षित माता-पिता, निम्न व्यवसाय, निम्न सामाजिक स्तर, कारोबार में अत्यधिक दबाव, रोज़गार न होना, घर न होना तथा घरेलू सामान की कमी बच्चे के स्वास्थ्य तथा विकास को विपरीत प्रभावित करते हैं।

कुपोषण (Malnutrition) : विकासशील देशों में कुपोषण बड़ी समस्या है जिसका बच्चों के भार तथा लम्बाई पर विपरीत प्रभाव पड़ता है तथा बौद्धिक विकास भी नहीं होता। इसका कारण माता-पिता की कम बुद्धि-लब्धि (IQ) भी हो सकता है।

पौष्टिक तत्त्व (Nutrients) : कुछ अध्ययनों के अनुसार कम लोहा लेने वाले बच्चों में कम बुद्धि-लब्धि होती है। लोहा आयोडीन तथा ज़िंक के साथ मस्तिष्क के विकास में सहायक होता है। आयोडीन की आवश्यकता थायरॉयड हॉरमोन बनने के लिए आवश्यक है जो मस्तिष्क के विकास के लिए चाहिए। आयोडीन तथा ज़िंक की कमी से वृद्धि तथा विकास पर कुप्रभाव पड़ता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर (Socio-economic status) : यह स्तर आय, शिक्षा स्तर तथा व्यवसाय पर निर्भर करता है। लम्बे समय तक गरीबी निम्न बुद्धि-लब्धि का कारण बनती है। गरीबी के साथ दूसरे कारक भी जुड़ जाते हैं जैसे कुपोषण, लैड (Lead) का ज़हर इत्यादि।

माता-पिता के शैक्षणिक स्तर के साथ बच्चे की बौद्धिक योग्यताएं जुड़ी होती है। माँ का उच्च IQ बच्चे के IQ से जुड़ा होता है। माँ के व्यवसाय का भी बौद्धिक उपलब्धि के साथ सम्बन्ध है। यदि माँ का व्यवसाय समस्या को सुलझाने के साथ जुड़ा है तो वह बच्चे को अधिक प्रेरक कार्य करने को देंगी। ऐसे कार्य करने या खेलें खेलने से बच्चे में बोलने की क्षमता अधिक होगी। एक बड़ा कारक स्कूल का वातावरण है जिसमें अध्यापक की आशाएं तथा विशेषताएं सम्मिलित हैं। अध्यापक कम सामाजिक आर्थिक स्तर वाले बच्चों को कम IQ वाला देखते हैं तथा उन्हें कम ध्यान तथा प्रोत्साहन देते हैं।

बाल विकास में माता-पिता का रोल (Role of Parents in Child Development)

बच्चे की वृद्धि तथा विकास के दौरान माता-पिता का रोल बच्चे की क्रियाओं में उत्साह, हौसला प्रदान करना तथा सहायता और निर्देश देना है। माता-पिता बच्चे के सबसे महत्त्वपूर्ण अध्यापक रहते हैं। यह बच्चे के समाजीकरण तथा विकास में सर्वाधिक हिस्सा डालते हैं। वह बच्चे के जीवन में स्थिरता देकर उसे स्वस्थ विकास को उत्साहित करते हैं। दूसरा बड़ा कारक उनके देखभाल की गुणता है। एक कोच की भांति कार्य करते हुए वह बच्चे को आयु उपयुक्त चुनौतियों (challenges) के प्रति जागरूक करते हैं तथा बच्चे को उन अनुभवों से सामना कराते हैं ताकि वह अपने रास्ते ढूंढ सके तथा वातावरण के साथ प्रतिक्रिया करके सीख सके।

समाज के लिए बच्चे का उचित विकास आवश्यक है तथा बच्चे की सामाजिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा शैक्षणिक विकास को समझना ज़रूरी है। इसके लिए कई प्रकार से अध्ययन हुए हैं तथा कई थयोरियां विकसित की गई हैं।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. बाल विकास में रिस्क कारक कौन से हैं ?
2. बाल विकास में माता-पिता का क्या रोल है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. बाल विकास से आप क्या समझते हैं ? विभिन्न विकास पहलुओं में गति तथा पैटर्न का उल्लेख करें।
2. बच्चे के विकास पर आर्थिक-सामाजिक स्तर कैसे प्रभाव डालता है ?

ଓ ଓ ଓ

CHAPTER

7

मानसिक विकास (Mental Development)

मानसिक विकास वृद्धि का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसमें विभिन्न मानसिक क्षमताओं को शामिल किया जाता है। मानसिक विकास से भाव है बच्चे की सोचने की औ समस्याओं को सुलझाने की शक्ति का विकास करना। मानसिक विकास जन्म से ही शु हो जाता है और वृद्धि के साथ-साथ मानसिक क्रियाएं भी बदल जाती है। आरम्भ में य प्रक्रियाएं साधारण होती हैं और आयु बढ़ने के साथ-साथ यह जटिल मानसिक गतिविधिय में सहायक होती हैं।

मानसिक विकास की प्रक्रिया समस्त मानसिक क्षमताओं जैसे संवेदना (Sensation) कल्पना शक्ति (imagination), स्मरण शक्ति (Memory), तर्क (argument), समझ (Understanding), बुद्धि, सामान्यीकरण (Generalization), अर्थज्ञान, भाषा का विकास विचार करने तथा निर्णय लेने की क्षमता पर निर्भर करती है। यह क्षमताएं एक दूसरे पर निर्भर करती हैं।

पियाज़े ने मानसिक विकास की चार अवस्थाएं दी हैं :

1. **संवेगात्मक अवस्था** (Sensory motor Period) : जन्म से दो वर्ष तक।
2. **पूर्व सक्रियात्मक अवस्था** (Pre-operation Stage) : दो से सात वर्ष।
3. **मूर्त सक्रियात्मक अवस्था** (Concrete operation Stage) : सात से ग्यारह वर्ष।
4. **अमूर्त सक्रियात्मक अवस्था** (Formal operation Stage) : ग्यारह से सोलह वर्ष।

1. **संवेगा त्मक अवस्था** (Sensory motor Period) : इस अवधि में शिशु अपनी संवेदनाओं तथ (perceptions) को अपनी शारीरिक गतिविधियों तथा क्रियाओं के साथ व्यवस्थित तथा समन्वय करता है। उसका संसार शारीरिक मांगों की सन्तुष्टि से सम्बन्धित होता है। शिशु आंखों, कानों, हाथों के अभिनय से सोचता है। यह अवधि छः अवस्थाओं में बांटी जाती है :

(1) सहज क्रियाएं (जन्म से 1 महीना) : इस समय शिशु की क्रियाएं और चूसना, हाथ पैर हिलाना, हाथ में कुछ आने पर पकड़ लेना, तेज रोशनी में आंखें बन्द करना तथा तेज आवाज़ में डर जाना सहज होती हैं। धीरे-धीरे वह सहज क्रिया की अनुपस्थिति में भी इस प्रकार का व्यवहार करता है जो इन सहज क्रियाओं के साथ

(2) दोहराने वाली मुख्य क्रियाएं (प्राथमिक वर्तुलाकार प्रतिक्रियाएं) (Primary Circular Reactions) : यह अवस्था एक से चार महीने की आयु तक होती है। इस समय शिशु आकस्मिक परिणामों के कारण अचानक क्रियान्वित हो जाता है। पहले चार सप्ताहों में वह अंगूठा चूसने लगता है। शिशु एक दिलचस्प तथा आनन्ददायक ढंग को दोहराता है जैसे खुलते-खुलते मुंह में हाथ जाने से शिशु उसे चूसना शुरू कर देता है अर्थात् यह क्रिया उसे आनन्द देती है। आंखें गतिशील चीजों तथा आंख-कान के समन्वय का अनुकरण करती है। इस समय भी शिशु अपने तक केन्द्रित रहता है।

(3) दोहराने वाली द्वितीय क्रियाएं (दोहराई जाने वाली वर्तुलाकार प्रतिक्रियाएं) (Secondary Circular Reactions) : यह चार से आठ महीने की आयु तक होती है। इस समय शिशु स्वयं से हट कर वस्तुओं तथा संसार पर भी केन्द्रित होना शुरू हो जाता है। हुई (cattle) एक बार हिला देने से जो ध्वनि उत्पन्न होती है शिशु उस (cattle) को बार-बार हिला कर वही ध्वनि उत्पन्न करना चाहता है। इस समय शिशु दूसरों का अनुकरण करना सीख जाता है परन्तु उसकी अनुकरण करने की क्षमता उन क्रियाओं तक ही सीमित होती है जो उसे पहले से ही आती होती हैं जैसे व्यक्तियों द्वारा कोई आवाज निकालना। इस समय भी शिशुओं की क्रियाएं लक्ष्य नियोजित नहीं होती।

(4) द्वितीय क्रियाओं का समन्वय (दोहराई जाने वाली वर्तुलाकार प्रतिक्रियाओं का समन्वय) (Co-ordination of Secondary Circular Reactions) : इस समय शिशु साधन सम्बन्धों को सुलझाने में समर्थ हो जाता है। इस समय शिशु पूर्व से सीखी गई (Schemes) का समन्वय करना सीख जाता है। वह वस्तु को पकड़ कर उसी समय उसे देख भी सकता है, उसको चूसकर निरीक्षण भी कर सकता है। इस समय उसकी क्रियाएं अपने के केन्द्र से अलग हो जाती हैं। इस समय शिशु के कार्य आकस्मिक नहीं रहते बल्कि खोज पूर्ण और टटोलने वाले हो जाते हैं। उदाहरणार्थ: वह छड़ी का प्रयोग करके (साधन) खिलौने को अपनी तरफ खींच लेता है (लक्ष्य प्राप्ति), वह तकिए को एक तरफ करके नीचे से खिलौने को ढूंढता है। इस अवस्था में अनुकरण करने वाली क्षमता में भी वृद्धि होती है। वह पहले से सीखे गए तथा अभ्यस्त व्यवहार से भिन्न व्यवहार का अनुकरण करता है।

(5) दोहराने वाली तृतीय क्रियाएं (दूसरी वर्तुलाकार प्रतिक्रियाएं) (Tertiary Circular Reactions) : यह 12 से 18 महीने की आयु है। इस समय शिशु इस बात से

अवगत होना शुरू हो जाता है कि वस्तुओं की कई विशेषताएं होती हैं तथा वस्तुओं के साथ भिन्न-भिन्न क्रियाएं हो सकती हैं। ब्लॉक का प्रयोग खेलने के लिए, फैंकने के लिए, घुमाने के लिए, दूसरी वस्तुओं को मारने इत्यादि के लिए किया जा सकता है। इस अवस्था में बालक उद्देश्यपूर्वक वस्तुओं के साथ प्रयोग करता है, उनके साथ अलग-अलग ढंग से कार्य करता है तथा नतीजों को देखता है। यह अवस्था बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस समय जिज्ञासा उत्पन्न होती है तभा बालक नएपन की खोज करता है। इस समय बालक कोशिश करके, गल्तियां करके (Trial and Error) सीखता है।

(6) स्कीमों को अन्तर्ग्रहण करना (Internalization of Schemes) : यह 18 महीनों से 2 वर्ष की आयु है इस समय बालक प्रतीकों (symbols) को पहचानने लगता है तथा आन्तरिक मानसिक संयोजन के द्वारा नए उपायों की खोज करता है। जब बालक किसी ऐसे लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है जिसकी प्राप्ति के लिए उसके पास ऐसा कोई उपाय नहीं है, जिसका कोई अभ्यास नहीं है तो वह एक नए उपाय की खोज करता है। यह क्रिया वह आन्तरिक प्रयोग द्वारा करता है। अब वह छुपी हुई चीज़ों को ढूंढ सकता है। यदि कोई खिलौना एक डिब्बे में हो तथा वह डिब्बा छुपा कर रख दिया जाता है तो बालक हर सम्भव तरीके से वह खिलौना ढूंढ लेगा। इस समय वह मॉडल की नकल भी करता है। वह वर्तमान में न होने पर भी अतीत को याद रख सकता है। यह प्रवृत्ति उसके खेलने की प्रकृति में मुख्य परिवर्तन का कारण बनती है। छोटा बालक अब अपने सुपरिचित व्यक्ति के व्यवहार की तरह खेलने में व्यस्त हो जाता है। वह उन्हीं की तरह खाता है, सोता है, खिलौना कार चलाता है।

2. पूर्व सक्रियात्मक अवस्था (Pre-operation Thought) : 2 से 7 वर्ष इस अवस्था में स्कूल से पूर्वकाल तथा स्कूल जाने की अवस्था के प्रथम वर्ष सम्मिलित हैं। इस अवस्था में प्रतीकों की संख्या बढ़ जाती है। इस समय बालक भाषा और अनुभव (perception) का प्रयोग सीख लेता है। इस समय बालक स्वयं केन्द्रित (egocentric) होते हैं और अपने तथा दूसरों की सोच तथा देखने के ढंग में अन्तर नहीं कर पाते उदाहरणतय: यदि पिता टैलीफोन पर बेटे से पूछा कि मम्मी घर पर है तो वह बोले बगैर 'ना' में सिर हिला देता है अर्थात् वह यह नहीं समझ पाता कि पिता टैलीफोन पर उसे देख नहीं पाता।

इस समय बालक 'जीवित' तथा 'अजीवित' में अन्तर नहीं कर पाता। उदाहरणतय, सड़क पर गिर जाने पर बालक को चोट लगती है तो वह रोकर मां से कहता है कि वह सड़क को मारे क्योंकि उसने उसे मारा है। इसके साथ बालक वस्तुओं की आकृति बदलने के साथ उसकी विशेषताओं को जोड़ नहीं पाता। उदाहरणतय: बालक के सामने दो एक समान गिलास दूध से एक समान भरकर रखे गए। तीसरा गिलास बाकी गिलासों से अधिक लम्बा और सकरा लिया गया। पहले गिलास से दूध तीसरे गिलास में डाला जाए और पूछा जाए कि दूसरे तथा तीसरे गिलास में दूध क्या एक समान है तो वह 'ना' में उत्तर

देगा क्योंकि वह इस बात की समझ नहीं कर पाता कि दोनों गिलासों में एक मात्रा में दूध है। बालक वर्गीकरण के लिए दो या अधिक विशेषताओं का प्रयोग करने में असमर्थ होता है। वह सोचता है कि बाल, कपड़े, आकार बदल जाने से लिंग भी बदल जाता है। वह सामान्य विशेषताओं के आधार पर वस्तुओं का वर्गीकरण नहीं कर पाता, इस समय बालक serialization यानि वस्तुओं को छोटे से बड़े में लगाना भी नहीं कर पाता जैसे लकड़ियों को छोटे से लम्बा व्यवस्थित नहीं कर पाता। वह लोगों के सामाजिक गुण जैसे मैत्रता, ताकत, सुन्दरता तथा भय को भी नहीं समझ पाता।

इस आयु में बालक का ध्यान एक ही विशेषता पर केन्द्रित रहता है उदाहरणतय: जिस गिलास में दूध ऊंचा है वही अधिक है। बालक में उल्ट कर सोचने (Irreversibility) की क्षमता नहीं होती जैसे तीसरे गिलास से पहले गिलास में दूध उल्टा दिए जाने से वह पहले समान ही हो जाता है।

3. मूर्त सक्रियात्मक अवस्था (7 से 11 वर्ष) (Concrete operation Stage) : यह मध्य बाल्यावस्था की अवस्था है। इस समय बालक स्वयं केन्द्र (egocentrism) से निकल कर सापेक्षवाद की अवस्था (relativism) में आ जाता है। वह समस्या के कई पहलुओं पर विचार कर सकता है। उसके विचार में लचकीलापन आ जाता है। उसमें उल्ट कर सोचने की क्षमता आ जाती है। कई क्रियाओं को वह सोच के द्वारा कर सकता है जैसे सोच कर गणित हल कर सकता है। वह जोड़ने-घटाने, गुणा करने तथा भाग देने की क्रियाएं कर सकता है। बालक मात्रा और अंक, समय और स्थान की संकल्पना-उन्हें वर्गीकृत करने और प्रतिदिन के जीवन के अनुभवों में आने वाली वस्तुओं को समूहीकृत करने में समर्थ हो जाता है।

4. अमूर्त सक्रियात्मक अवस्था (11 से 16 वर्ष) (Formal operation Stage) : इस अवस्था में बालक जटिल, मौखिक समस्याओं, काल्पनिक समस्याओं के बारे में विचार कर सकते हैं। बालक भूत, वर्तमान और भविष्य तथा मौखिक और अमौखिक दोनों स्तरों से निपट सकता है। इस समय किशोर तथ्य से विपरीत तर्क के योग्य हो जाता है। उदाहरणतय: एक किशोर को यदि कहा जाए कि वह एक कमरे में बैठा है तथा उसकी दीवारें समाप्त हो जाएं तो उसे क्या दिखाई देगा। इस समय किशोर अपने बनाए हुए आदर्शों को सत्य के धरातल पर देखना चाहता है और यदि वह सच को बदल नहीं सकता तो वह अधैर्य हो जाता है और उसे पता नहीं चलता कि वह कौन से आदर्शों को अपनाए। उसमें स्वयं और बाहरी दुनिया के बारे में नए सामर्थ्य का विकास होता है। तर्क शक्ति विकसित होती है। इस समय किशोर अमूर्त चिन्तन को प्रयोगात्मक निर्धारण (Verification) द्वारा टैस्ट करता है। एक लड़का जो लड़की को सुन्दरता तथा अच्छाई की ही मूर्त समझता है, उस समय अपना विश्वास तोड़ देता है जब उसे किसी के साथ लड़ते हुए देखता है।

वह प्रतीकों, पहेलियों, उपनामों तथा कविताओं के छुपे अर्थों को भी समझने लग
इस समय बालक की मानसिक योग्यताएं जैसे बुद्धि, बोध, तर्क, निर्णय क्षमता, क
शक्ति इत्यादि पूर्ण विकसित होती हैं। इस अवस्था में बालक अपने व दूसरों के अ
का लाभ उठा सकता है।

पियाजे की थियोरी का शैक्षणिक महत्त्व
(Educational Implications of Piaget's Theory)

शिक्षा की प्रैक्टिस पर पियाजे की थियोरी का बहुत महत्त्व है। प्रथम थियोरि
ध्यान विकास के लिए उचित शिक्षा पर केन्द्रित हुआ है। यह शिक्षा विद्यार्थि
शारीरिक तथा बौद्धिक योग्यताओं और उनके सामाजिक, संवेगात्मक आवश्यकता
लिए उचित वातावरण, पाठ्यक्रम, सामग्री तथा निर्देश प्रदान करती है। इसके
पाठ्यक्रम तथा निर्देश के कई प्रमुख मुद्दे सीधे तौर पर पियाजे की थियोरी पर आधा
यह थियोरी सीखने के निर्माणात्मक मॉडल को प्रभावित करती है।

पियाजे ने प्रमुख तौर पर निम्नलिखित सीखने के मुद्दे दिए हैं :

1. बच्चे की सोच की क्रिया पर केन्द्रित है न कि उसकी सामग्रियों पर : के उत्तरों की जाँच करने के साथ-साथ अध्यापक को उन प्रक्रियाओं को भी स चाहिए जो बच्चे उत्तर प्राप्त करने में प्रयोग करते हैं। उचित सीखने का अनुभव जो की बौद्धिक क्रिया के वर्तमान स्तर पर निर्मित हो, सिर्फ तभी अध्यापक बालक के वि निर्णय तक पहुँचने की विधि को सराह सकते हैं।

2. बच्चे की स्वयं से शुरू की गई, सीखने की क्रियाओं में सक्रिय योगद महत्त्व को पहचानना : पियाजे की कक्षा में पहले से तैयार ज्ञान की प्रस्तुति को अनुत किया जाता है तथा बच्चों को उत्साहित किया जाता है कि वह वातावरण के साथ समय प्रक्रिया करके अपने आपको पहचाने। इस प्रकार अध्यापक का उद्देश्य मात्र ही नहीं बल्कि विभिन्न प्रकार की क्रियाएं प्रदान करना है जो बच्चे को प्रत्यक्ष भौतिक संसार के साथ क्रिया करने के लिए प्रेरित करे।

3. उन अभ्यासों को निरुत्साहित करना जिनका उद्देश्य बच्चे को सो व्यस्क जैसा करना है : पियाजे ऐसे प्रश्न को, "हम विकास को तेज कैसे कर हैं।" अमरीकी प्रश्न कहता था। वह जिस भी देशों में गया, उनमें अमरीका के मनोवैज्ञ तथा शैक्षणिक उन तकनीकों में अधिक दिलचस्पी लेते थे जो बच्चे की उन्नति को कर सके। पियाजे आधारित शैक्षणिक प्रोग्राम इस तथ्य को मानते हैं कि अपरिपक्व शि शून्य शिक्षण से बदतर है क्योंकि यह व्यस्क के फार्मूले को ऊपरी स्तह पर स्वीकार है न कि सत्य बौद्धिक समझ को।

4. विकास की उन्नति में व्यक्तिगत विभिन्नताओं को स्वीकार करना : पियाजे की थियोरी मानती है कि सभी बच्चे वही विकास के क्रम से गुजरते हैं, परन्तु उनकी दर विभिन्न होती है। इसलिए अध्यापक को चाहिए कि वह पूरी कक्षा की अपेक्षा क्रियाओं को बच्चों के व्यक्तिगत तथा छोटे समूहों के लिए व्यवस्थित करे। इसका कारण है व्यक्तिगत विभिन्नताओं की आशा करना। बच्चे की शैक्षणिक उन्नति का मूल्यांकन बच्चे के उसके अपने पूर्व के विकास के चरण से हो न कि उसी आयु-समूह के लिए तय किए गए स्तरों के अनुसार।

बौद्धिक विकास के स्तरों की क्रियाएं (Activities for the Stages of Cognitive Development)

पियाजे के चारों स्तरों पर बच्चों को शिक्षित करने के प्रयोगात्मक तरीके हैं। इन्हें अपना कर विद्यार्थी को प्रभावकारी शिक्षण के लिए तैयार कर सकते हैं :

1. संवेगात्मक अवस्था (Sensorimotor period) : **शिशु तथा सरकने वाली बालकों के लिए क्रियाएं** (Activities for Infants and Toddlers) : पहले दो वर्षों में शिशु अपनी senses से ही संसार को समझता है। इस अवस्था में भाषा तथा आनलाईन प्रतिनिधित्व (representation) की कमी होती है। यह उन सजगताओं (reflexes) पर केन्द्रित होता है, जिनके साथ शिशु का जन्म होता है जैसे चूसना, आगे आना तथा पकड़ना। विकास की इस अवस्था में बालक Primary circular reactions को विकसित करता है, यह क्रियाएं बच्चे के शरीर पर केन्द्रित होती हैं तथा दोहराने वाली प्रकृति की होती हैं। धीरे-धीरे बच्चे पृथक क्रियाओं का समन्वजय (Coordination) विकसित करते हैं तथा भाषा की उत्पत्ति होती है। इस अवस्था की आखिरी उपलब्धि कारण तथा प्रभाव सम्बन्ध को पहचानना है।

- अच्छा प्रोत्साहक वातावरण प्रदान करना।
- बच्चों को उन खिलौनों के साथ खेलने को उत्साहित करना जो दबाने पर आवाज करते हैं। पहले बच्चा खिलौने को दबाएगा, वह आवाज से हैरान होगा कि यह कैसे आई। उसके बाद उसे एहसास हो जाएगा कि यह कैसे आई। उसके बाद उसे एहसास हो जाएगा कि खिलौना दबाने से ही आवाज आती है। यह कारण कि खिलौना दबाने से ही आवाज आती है। यह कारण तथा प्रभाव के सम्बन्ध की उदाहरण है, यदि मैंने खिलौना दबाया, उसमें से आवाज आई।
- दूसरी उदाहरण झुनझुना है जो हिलाने पर बजता है।
- Peek-a-boo खेलना भी इस भांति की आनन्द देने वाली क्रिया है।

पूर्व सक्रियात्मक अवस्था-सरकने वाले बच्चे तथा बच्चों के लिए क्रियाएं (Pre-operational Period–Activities for Toddlers and Early Childhood)

यह अवस्था बच्चे में 2 से 7 वर्ष में आती है। इस अवस्था में बच्चा श्रेणियों की सभी विशेषताओं को समझने के लिए अयोग्य होता है। इस आयु समूह में Tranductive reasoning शुरू होती है। इसका अर्थ है श्रुटिपूर्ण तर्क पर एक विशिष्ट से दूसरे विशिष्ट का अर्थ निकालना। इस आयु समूह में Egocentrism तथा Conservation विशेषताएं पाई जाती हैं। अहंकारपूर्ण Egocentrism से भाव है दूसरे व्यक्ति के नज़रिए को देखने की अयोग्यता। बच्चे के (egocentrism) को दूर करने के लिए चाहिए कि उन्हें दूसरे व्यक्ति के परिप्रेक्ष्य (perspective) को समझने के लिए प्रेरित करें। इसके लिए बच्चों के साथ ड्रैस की खेलें खेलनी चाहिए और बच्चे को उस चरित्र के लिए उत्साहित करें।

- इस आयु वर्ग में कई बच्चे घर-घर खेलने में आनन्द लेते हैं। यह एक अच्छी क्रिया है क्योंकि बच्चे उन रोल से विभिन्न रोल खेलते हैं जो वह अपनी जिन्दगियों में देखते हैं।
- बच्चों को क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को उन खिलौनों से खेलने के लिए उत्साहित करें जो अपना आकार बदलते हैं (जैसे रेत, मिट्टी, पानी) क्योंकि यह conservation का concept बनाने में सहायक होते हैं।
- बच्चे विकास के लिए आवश्यक तथ्य तथा कलाओं का अभ्यास हाथों से करें।
- शब्द बनाने के लिए कागज़ पर काटे हुए letters का प्रयोग करें।
- वह पाठ न लें जो बच्चे के संसार से भिन्न हों। इसके लिए वर्क बुक या पेपर तथा पेन्सिल क्रियाओं का अधिक प्रयोग करें।

मूर्त सक्रियात्मक अवस्था-मध्य बचपन के लिए क्रियाएं (Concrete Operations–Activities for Middle Childhood)

इस समय बच्चे अहंकारपूर्ण (egocentric) सोच से नियमों द्वारा नियन्त्रित सोच पर चले जाते हैं। तर्क के कुछ नियम हैं। उलटने-पलटने की योग्यता (reversibility), पहचान (identity) तथा संरक्षण (conservation) मापने के कई आकार में उपलब्ध हैं। एक ही माप को विभिन्न प्रकार के मापने के बरतनों के प्रयोग से मापना खेल है। सामग्रियों को विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकरण कर सकते हैं जैसे सूखी सामग्री तथा गीली सामग्री इत्यादि। नम्बर तथा क्रमबद्धता अगला कदम है। इस समय बच्चे रसोई में सहायता करना पसन्द करते है जैसे कुकिस बेक करना इससे वह सीखते भी हैं।

- बच्चों को वस्तुओं को हेर-फेर करने का तथा विचारों को टैस्ट करने का मौका दें।
- बच्चों के सहयोग के साथ सरल प्रयोग करें।
- एक ही समय तीन या चार variables के साथ व्यवहार (deal) न करें।
- कोई भी अध्ययन करते समय उसमें सीमित मात्रा में ही पात्र हों।
- प्रयोगों में सीमित संख्या में ही चरण हों।
- विद्यार्थियों को अभ्यास हो कि वह वस्तुओं तथा विचारों को जटिल स्तर पर क्रम में लगा सकें।
- विद्यार्थियों को कागज़ के टुकड़े पर वाक्यों को समूहित करने को कहें।
- नई सामग्री का सम्बन्ध प्राप्त किए गए ज्ञान के साथ जोड़ने के लिए उपमा (analogies) का प्रयोग करें।

अमूर्त सक्रियात्मक अवस्था-किशोरावस्था के लिए क्रियाएं (Formal Operations : Activities for Adolescents)

इस अवस्था में किशोर तर्क को वास्तविक वस्तुओं या परिस्थितियों पर लागू करता है।

इस अवस्था के आरम्भ में :

- अध्यापक concrete operations अवस्था में प्रयोग होने वाली विधियों तथा सामग्रियों का प्रयोग जारी रखें।
- चार्ट तथा दूसरी प्रदर्शन की सामग्री में नए ग्राफ तथा डायग्राम को सम्मिलित करें।
- उल्लेख तथा सामग्री स्तरों में दें।
- विद्यार्थियों को विभिन्न काल्पनिक स्थितियों को ढूंढने के लिए नए अवसर प्रदान करें।
- विद्यार्थियों को स्कूल में काल्पनिक विषयों पर विवाद करने के लिए समूह में कार्य करने के लिए उत्साहित करें। जैसे सामाजिक तथ्यों का समूह तथा मंथन (brainstorm) में विवाद करें।
- उन्हें काल्पनिक विषयों पर कहानी लिखने के लिए कहें जैसे बाहरी वायुमंडल में जीवन कैसा होगा। इस प्रकार बालक की सृजनात्मकता का विकास होगा।
- विद्यार्थियों को इस बात को उल्लेख करने के लिए उत्साहित करें कि उन्होंने समस्या का समाधान कैसे किया।

— विद्यार्थी जोड़ों में कार्य कर सकते हैं। एक सुनेगा तथा दूसरा समस्या सुलझाएगा। समस्या को सुलझाने वाला जोर से बोलेगा तथा सुनने वाला दे कि सभी चरण अपनाए गए तथा तर्कयुक्त हैं।

— अध्यापक टैस्ट में कुछ लम्बे प्रश्नों को डालें। इस प्रकार विद्यार्थी एक से अ उत्तर दे पाएंगे।

— अध्यापक विस्तृत संकल्पना (concepts) का अध्ययन कराए न कि तथ्यों का।

— विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त सामग्री तथा विचार प्रयोग करे। जैसे गृह (Civil war) पर विवाद करते समय उन तर्कों का उल्लेख करें जिनसे विभाजित हुआ।

— कविता पढ़ाने के लिए प्रचलित गाने के बोल प्रयोग करें।

अभ्यास के प्रश्न

1. विस्तार से पियाजे की थियोरी का उल्लेख करें।
2. बच्चे की शैक्षणिक आवश्यकता समझने के लिए जीन पियाजे की थियोरी वै सहायक है ?

ॐ ॐ ॐ

CHAPTER

8 एरिक्सन की सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास की थ्योरी : भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ

(Theory of Social and Emotional Development by Erickson : Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)

Erik Homburger Erikson (15 जून 1902-12 मई 1994) जर्मन में पैदा हुआ अमेरिकी विकासवादी मनोवैज्ञानिक तथा मनोविश्लेषक (Psychoanalyst) था जो मनुष्य के मनोसामाजिक विकास पर अपनी थ्योरी के लिए प्रसिद्ध है। वह मुहावरा Identity crisis बनाने के लिए जाना जाता है।

उसकी थ्योरी बचपन से शुरू होकर किशोरावस्था के बीच घुलते हुए व्यस्कता तक के सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास से सम्बन्धित developmental tasks का वर्णन करती है। यह थ्योरी विकास के आठ चरणों में प्रस्तुत की गई।

Erikson के अनुसार, सामाजीकरण की प्रक्रिया के आठ चरण हैं जिसे मानव के आठ स्तर कहते हैं। मानव के इन आठ स्तरों को मनोचिकित्सा में विस्तृत अनुभवों द्वारा बनाया गया। इसके साथ बच्चों तथा किशोरों का विस्तृत अनुभव लिया गया जो निम्न, मध्य तथा उच्च सामाजिक श्रेणियों से थे। प्रत्येक अवस्था को मनोसामाजिक (Psychosocial crisis) कहा गया जो शुरू होता है तथा अगली अवस्था तक सन्तोषजनक ढंग से जाने के लिए संकल्प (resolution) चाहता है। यह स्तर घर के निर्माण जैसा ही है, जैसे प्रथम floor के लिए नींव आवश्यक है तथा दूसरी floor के लिए पहली floors।

Erikson के विकास के आठ स्तर
(Erikson's Eight Stages of Development)

1. आधारिय भरोसा बनाम आधारिय संदेह को सीखना (आशा) (Learning Basic Trust versus Basic Mistrust (Hope)) : यह जीवन के प्रथम एक या दो वर्ष है। वह बालक जिसकी देखभाल ठीक हुई हो, प्यार मिला हो उसमें भरोसा तथा सुरक्षा की भावना तथा आधारिय आशा बनती है। यदि देखभाल उचित न हो तो उसमें असुरक्षा की भावना बन जाती है तथा वह भरोसे के योग्य नहीं रहता।

2. स्वायत्तता बनाम शर्म सीखना (इच्छा) (Learning Autonomy versus Shame (Will)) : Erikson के अनुसार दूसरा मनोसामाजिक Crisis शुरूआत के बचपन में होता है- 18 महीने से 2 वर्ष तथा 3½ से 4 वर्ष की आयु में। अच्छी परवरिश वाले बच्चे अपने आप पर विश्वास रखते हैं, नए प्राप्त नियन्त्रण से अच्छा महसूस करते हैं तथा शर्म के बजाए अपने ऊपर गर्व महसूस करते हैं। स्वायत्तता हमेशा स्वयं पर विश्वास के साथ नहीं जुड़ी होती। इस समय स्वायत्तता तूफानी व्यवहार भी दिखाते हैं जैसे जिद्दी होना, नकारात्मक व्यवहार, हाथ पैर पटकना इत्यादि। जैसे सड़क पार करते समय दो वर्ष का बालक अपनी बाजू को मोड़कर अपनी माता को हाथ पकड़ने नहीं देगा। इसी प्रकार 'ना' की आवाज़ शुरू हो जाती है।

3. पहल बनाम अपराध सीखना (उद्देश्य) (Learning Initiative versus Guilt (Purpose)) : Erikson के अनुसार यह तीसरा चरण 'खेलने की अवस्था' में शुरू होता है। इस समय स्वस्थ रूप से विकसित होने वाला बालक सीखता है। (*i*) कल्पना करना, इस कला का वह सभी प्रकार की क्रियाशील कलाओं में विस्तृत कर लेता है, जिसमें कल्पना (fantasy) सम्मिलित है। (*ii*) दूसरों के साथ सहयोग करना। (*iii*) नेतृत्व करना तथा अनुसरण करना। यदि अपराध की भावना से ग्रस्त हो तो वह (*i*) डरा रहेगा (*ii*) मित्रों या समूह के पीछे-पीछे चलेगा (*iii*) खेलने की कला तथा कल्पना में पिछड़ा रहेगा।

4. उद्योग बनाम हीनता (क्षमता) (Industry versus Inferiority) : Erikson के अनुसार चौथा चरण 'स्कूल जाने की अवस्था' में आता है। इस समय बालक जीवन की औपचारिक कलाएं सीख जाता है। (*i*) नियमों के अनुसार साथियों के साथ सम्बन्ध रखना (*ii*) स्वतन्त्र खेलों से उन खेलों की ओर उन्नति करना जहां भली प्रकार निर्मित नियम हों तथा औपचारिक समूह कार्य हो। जैसे फुटबाल खेलना (*iii*) सामाजिक अध्ययन, पढ़ना तथा गणित में निपुणता बनाना। गृह-कार्य एक आवश्यकता है इसमें प्रति वर्ष अनुशासन की आवश्यकता बढ़ती है। वह बालक जो पहले मनोसामाजिक Crisis के दौरान सफल संकल्प प्राप्त कर लेता है, स्वतन्त्रता तथा पहल प्राप्त करके आसानी से मेहनती बन जाता है। परन्तु संदेही बालक भविष्य पर भी संदेह करेगा। शर्म तथा अपराध से भरा बालक हार तथा हीनता का ही अनुभव करेगा।

5. पहचान बनाम पहचान प्रसार सीखना (सत्य के प्रति निष्ठा) (Learning Identity versus Identity Diffusion (Fidelity)) : इस अवस्था में किशोर (13-14 वर्ष से 20 वर्ष तक) इस प्रकार के प्रश्नों के सन्तोषजनक तथा प्रसन्नता से उत्तर देते है। "मैं कौन हूं ?" भली प्रकार व्यवस्थित किशोर भी कुछ रोल पहचान प्रसार अनुभव करते है ; कई लड़के तथा कुछ लड़कियां भी बाल अपराधी (delinquent) तथा विद्रोही बन जाती हैं तथा स्वयं पर अविश्वास करना आरम्भ कर देते हैं।

Erikson के अनुसार किशोरावस्था के प्रारम्भ में परिपक्व समय का परिप्रेक्ष्य (perspective) बन जाता है। बालक स्वयं पर चेतना (self-consciousness) तथा स्वयं पर शंक (self-doubt) की अपेक्षा स्वयं पर विश्वास (self-certainty) करना सीखता है। वह विभिन्न, सामान्य, निर्माणात्मक रोल पर जोर देता है न कि नकारात्मक पहचान पर। वह उपलब्धियों के बारे में पहले से ही सोच लेता है और उन्हें प्राप्त भी कर लेता है तथा हीनता की भावना तथा अनुचित समय प्ररिपेक्ष्य (inadequate time perspective) से परे हो जाता है। किशोरावस्था की बाद की अवस्था में, साफ लैंगिक पहचान - स्त्रीत्व या पुरुषत्व बन जाता है। किशोर नेतृत्व ढूंढता है ताकि वह उससे प्रेरणा पा सके तथा धीरे-धीरे आदर्शों का सैट विकसित कर लेता है। जो सामाजिक रूप से अनुकूल तथा इच्छित हो, यह सफल किशोर के मामले में होता है। Erikson कहता है, हमारी संस्कृति में किशोरावस्था में 'मनोसामाजिक रोक' नहीं होती, खासकर मध्य तथा उच्च श्रेणी में। वह प्रयोग कर सकते हैं, विभिन्न रोल ट्राई करते हैं तथा सबसे उत्तम ढूंढ लेते हैं।

6. आत्मीयता बनाम अकेलापन सीखना (प्यार) (Learning Intimacy versus Isolation (Love)) : सफल व्यस्क, प्रथम बार में सच्ची आत्मीयता का अनुभव करते हैं- यह आत्मीयता अच्छे वैवाहिक जीवन या सच्ची तथा लम्बे समय तक चलने वाली मैत्रता के लिए आवश्यक है।

7. उत्पादकता बनाम स्वयं-अवशोषित होना सीखना (देखभाल) (Learning Generativity Versus Self-Absorption (Care)) : व्यस्कता में, मनोसामाजिक Crisis उत्पादकता चाहता है, वैवाहिक जीवन में तथा माता-पिता बनने पर ताकि उत्पादकता तथा सृजनात्मकता चलती रहे।

8. एकीकरण बनाम निराशा (बुद्धिमता) (Integrity versus Despair (Wisdom)) : यदि पहले मनोसामाजिक Crisis का सफलता से संकल्प हो गया है तो व्यस्क मनुष्य अपनी व्यवस्था तथा अखण्डता के चरम पर पहुँच जाता है। वह विश्वास करता है, वह आज़ाद है। वह सख्त मेहनत करता है, जो उसने जीवन में भली प्रकार परिभाषित रोल ढूंढ लिए हैं वह self-concept बना कर उसमें प्रसन्न रहता है। वह बगैर दबाव, गुनाह की भावना, दोष की भावना, सच्चाई के खुश रह लेता है। अपनी सृजनात्मकता, बच्चों, कार्य तथा hobbies में खुश रहता है। यदि पहले मनोसामाजिक संकट का हल (crisis resolve) नहीं हुआ तो वह अपने आपको तथा अपने जीवन को निराशा से देखता है।

मनुष्य के मनोसामाजिक संकट के यह आठ चरण प्रंशसनीय तथा अन्तदृष्टि वर्णन है कि कैसे व्यक्तित्व विकसित होता है। परन्तु वर्तमान में यह उल्लेख ही है। हमें आधारीय तथा जाँच का ज्ञान ही मालूम है कि किस प्रकार का वातावरण होगा, उदाहरणतय: भरोसे बनाम संदेह की स्थिति में या पहचान बनाम पहचान प्रसार की स्थिति में। बालक को

विभिन्न स्तरों में से ले जाना तथा उन्हें सकारात्मक सीखने की क्रिया देना एक कठिन कार्य है। इसके लिए माता-पिता तथा अध्यापक चिन्तित रहते हैं। इस कार्य को करना बाल-विकास के क्षेत्र में अनुसन्धान का विषय है।

समाजीकरण – यह एक सीखने तथा अध्ययन की क्रिया है जो सफल होने पर मानवीय जीवन के शैशवास्था के असहाय स्थिति से आदर्श व्यस्क के अंहकार अवस्था की ओर आगे बढ़ती है जहां संवेदात्मक अनुपालन तथा स्वतन्त्र सृजनात्मक होती है।

Erikson ने मनोसामाजिक विकास की आठ अवस्थाएं दी हैं जो जन्म से व्यस्क की ओर चलती हैं। प्रत्येक अवस्था में विकास का संकट होता है तथा प्रत्येक संकट से सकारात्मक तथा नकारात्मक पहलू निकलते हैं। सकारात्मक अनुभवों के सकारात्मक परिणाम तथा नकारात्मक अनुभवों के नकारात्मक परिणाम निकलते हैं।

किशोरावस्था में सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास

किशोरावस्था बालक में बड़े सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास का समय है। प्रत्येक बच्चे का सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास भिन्न होता है। बच्चे के विकास पर genes, मस्तिष्क विकास, वातावरण, परिवार तथा मित्रों के साथ अनुभव तथा समुदाय और संस्कृति का भी प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक तथा संवेगात्मक बदलाव बताते हैं कि आपका बच्चा स्वतन्त्र पहचान बना रहा है तथा व्यस्क होना सीख रहा है।

सामाजिक बदलाव : बदलाव के दौरान बच्चा :

- अपनी पहचान ढूंढता है। किशोर बच्चे जानने में लगे रहते हैं कि वह कौन हैं तथा संसार में कहां फिट होते हैं। यह खोज लिंग, साथी समूह, सांस्कृतिक background तथा परिवार की आशाओं द्वारा प्रभावित होती है।
- अधिक स्वतन्त्रता ढूंढना - यह बच्चे के लिए जाने वाले निर्णय को तथा उसके परिवार तथा मित्रों के साथ सम्बन्धों को प्रभावित करता है।
- घर तथा स्कूल में अधिक उत्तरदायित्व ढूंढना।
- नए अनुभव खोजना - किशोरावस्था में मस्तिष्क विकास का अर्थ है कि किशोर नए अनुभव ढूंढते हैं तथा अधिक ठीक व्यवहार में लगे रहते हैं, परन्तु वह अपने संवेगों पर नियन्त्रण करने में पूरे नहीं होते।
- 'ठीक' तथा 'गलत' के बारे में अधिक सोचना। आपका बच्चा मजबूत व्यक्तिगत मूल्य तथा नैतिकता बना लेता है। किशोर समझ लेता है कि वह अपनी क्रियाओं, निर्णयों तथा नतीजों के लिए खुद उत्तरदायी है। वह अधिक प्रश्न पूछते हैं।

आपके शब्द तथा क्रियाएं आपके बच्चे की 'सही' तथा 'गलत' धारणा में सहायक होती है।

- मित्रों का प्रभाव अधिक होता है विशेषकर जब व्यवहार, स्वयं की धारणा तथा आत्म-सम्मान की बात हो।
- सैक्सिक पहचान विकसित होती है तथा ढूंढनी शुरू हो जाती है।
- इस समय किशोर रोमांटिक सम्बन्ध बना लेते हैं तथा विपरीत लिंग के साथी से मित्रता बनानी शुरू कर देते हैं।
- अलग ढंग से बातचीत करना : इंटरनेट, मोबाइल फोन तथा सामाजिक मीडिया इस बात को प्रभावित करते हैं कि बालक मित्रों के साथ बातचीत कैसे करता है तथा संसार के बारे में कैसे सीखता है।

संवेगात्मक बदलाव : इस समय किशोर :

- विभिन्न समयों पर तीव्र भावनाएं तथा संवेग दर्शाते हैं। उसका मूड पहचाना नहीं जा सकता। ऊपर तथा नीचे जाने वाले संवेग संघर्ष को जन्म देते हैं। बालक को भिन्नलिंग व्यस्कों की भांति संवेगों को दर्शाना तथा नियन्त्रण करना सीख रहा होता है।
- आपके संवेगों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। बड़े होने के साथ-साथ बच्चे दूसरों के संवेग पढ़ना सीख जाते हैं। जब वह यह कला सीख रहे होते हैं तो कई बार वह मुख की अभिव्यक्ति या शरीर की भाषा को गलत पढ़ लेते हैं।
- अपने शरीर की दिखावट तथा बदलाव के प्रति अधिक सचेत हो जाते हैं। उनका स्वयं के प्रति आदर इस बात से बहुत प्रभावित होता है कि वह कैसे दीखते हैं तथा उनके साथी उनके बारे में क्या सोचते हैं। वह अपने शरीर की मित्रों के शरीर से तुलना भी करते हैं।
- बहुत तेजी से सोचते हैं तथा क्रिया करते हैं जैसे उनका कभी बुरा हो ही नहीं सकता। बच्चे की निर्णय लेने की कला विकसित हो रही होती है तथा वह अपनी क्रियाओं के नतीजे सीख रहा होता है।

सम्बन्धों में बदलाव

- परिवार के साथ कम तथा साथियों, मित्रों के साथ अधिक समय बिताता है।
- आपके साथ अधिक बहस करता है। किशोरावस्था में माता-पिता तथा बच्चों के बीच कुछ संघर्ष सामान्य है क्योंकि बच्चे अधिक स्वतन्त्रता ढूंढते हैं। यह दर्शाता है कि आपका बच्चा बड़ा हो रहा है। किशोरावस्था में संघर्ष चरम सीमा पर होता है। यदि आप सोचते हैं कि आप सारा समय बच्चे के साथ बहस कर

रहे हैं तो लम्बे समय में इसका आपके बच्चे के साथ सम्बन्धों पर असर
होगा।

— वस्तुओं को आपसे भिन्न देखते हैं, क्योंकि वह आपको परेशान करना
चाहते। यह इसलिए है कि बच्चा अमूर्त ढंग से सोचना शुरू कर देता है
विभिन्न ढंग से प्रश्न करते हैं। उसी समय, कुछ किशोर इस बात को समझने
असमर्थ होते हैं कि उनके व्यवहार तथा दूसरे लोगों की टिप्पणियों का
प्रभाव होता है।

सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास को सहारा देना

बच्चे की सामाजिक तथा संवेगात्मक विकास को सहारा देने के कुछ तथ्य इ
प्रकार हैं :

— सकारात्मक सम्बन्धों को बनाने तथा बनाए रखने के लिए भूमिक मॉडल बनें
अपने मित्रों, बच्चों, पार्टनर तथा साथियों के साथ। आपका बच्चा उन सम्बन्
को देखकर सीखेगा जहां इज्ज़त हो, सहानुभूति हो तथा संघर्ष खत्म करने के
सकारात्मक ढंग हों।

— अपने बच्चों के मित्रों को जानने की कोशिश करें तथा उनका घर में स्वाग
करें। इस प्रकार आप बच्चे के सामाजिक सम्बन्धों के सम्पर्क में रहेंगे। इ
प्रकार आप बच्चों को बता सकते हैं कि उनके मित्र आपके लिए कित
महत्त्वपूर्ण हैं। मित्रों के चुनाव में उन्हें नम्रता तथा स्पष्टता से गाइड़ करें।

— बच्चे की भावनाओं को सुने। यदि आपका बच्चा आपसे बात करना चाहता
तो रूके और उसे पूरा ध्यान दें। यदि आप किसी कार्य के मध्य में हैं तो अल
से समय निकालें जब आप खाली हों। बच्चे की भावनाओं की इज्ज़त करें त
उनका दृष्टिकोण समझने की कोशिश करें चाहे वह अलग ही हो।

— अपनी भावनाओं के बारे में स्पष्ट तथा खुले रहें। आप उसे बताएं कि जब बच्
अलग व्यवहार करता है तो आपको कैसा लगता है। उदाहरणतय:, "मुझे बहु
खुशी हुई जब तुमने मुझे स्कूल में बुलाया।" इस प्रकार बच्चा संवेगों को पढ़
तथा जवाब देना सीख जाएगा। यह दूसरे लोगों के प्रति सकारात्मक त
सृजनात्मक मॉडल उपस्थित करेगा।

— जटिल संवेगों तथा मूड़ से सकारात्मक ढंग से व्यवहार करें। उदाहरणतय: को
समय ऐसा हो सकता है जब आप थकी हुई हो तथा बच्चे के साथ प्रतिक्रिया
करनी चाहे। चुप रहने के बजाए, उससे कहें कि आप थकी हैं। मैं ठीक ढंग
बात नहीं कर सकती। हम खाने के बाद बात करेंगे।

CHAPTER

9

नैतिक विकास की कोहलबर्ग की थ्योरी ; भारतीय प्रसंग के विशिष्ट संदर्भ में संकल्पना, स्तर तथा निहितार्थ

(Kohlberg Theory of Moral Development ; Concept, Stages and Implications with Special Reference to Indian Context)

लौरेंस कोहलबर्ग के नैतिक विकास के स्तर : यह एक मनोवैज्ञानिक थ्योरी का अनुकूलन है जिसकी वास्तविकता में सविज़ मनोवैज्ञानिक **जीन पियाजे** ने कल्पना की थी। कोहलबर्ग ने इस विषय पर 1958 में तब काम करना शुरू किया जब वह शिकागो यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी था और आजीवन उसने इस थ्योरी पर काम किया। इस थ्योरी के अनुसार नैतिक (ethical) व्यवहार का आधार नैतिक (moral) कारण हैं तथा इसके छः पहचाने जाने वाले स्तर हैं, प्रत्येक पहले स्तर की नैतिक दुविधाओं से बेहतर जवाब देता है। कोहलबर्ग नैतिक निर्णय में पियाजे से कहीं आगे है जिसने यह दावा किया कि नैतिकता तथा तर्क निर्माणात्मक स्तरों से विकसित होता है। पियाजे के कार्य का विस्तार करते हुए कोहलबर्ग ने नैतिक विकास की क्रिया को जाना कि यह न्याय से जुड़ा है और जीवन प्रयन्त चलता है।

थियोरी का इतिहास : उसके विचार उस समय शुरू हुए जब वह छोटे बच्चों को विषय बनाकर कार्य कर रहा था। उसने देखा कि बच्चें अलग नैतिक मुद्दों का सामना करते हैं तथा उनका यह निर्णय कि वह इन दुविधाओं पर सकारात्मक या नकारात्मक कार्य करें, कई कारकों पर निर्भर करता है। प्रत्येक स्थिति में कोहलबर्ग यह नहीं देख रहा था कि उस अवस्था में व्यक्ति नैतिक रूप से सही है या गल्त, परन्तु वह यह जानना चाहता था कि यह बच्चे क्यों सोचते हैं कि कोई विशेष चरित्र नैतिक रूप से सही है या नहीं।

नैतिक विकास के छः स्तरों का तीन चरणों में समूहीकरण किया गया है ; पूर्व-पारम्परिक नैतिकता, पारम्परिक नैतिकता तथा पोस्ट-परम्परागत नैतिकता।

सामान्य शिक्षा प्रदान करने वाले अध्यापकों को Erikson के आठ स्तरों में से पाँच स्तरों पर ध्यान देना आवश्यक है। इन पाँच स्तरों को आयु, सकारात्मक सामाजिक अनुभवों, नकारात्मक सामाजिक अनुभवों तथा शैक्षणिक निहितार्थ के आधार पर उल्लेखित किया गया है :

चरण I. भरोसा बनाम संदेह (0-18 महीने)

— भरोसा : यदि पोषित किया जाए तथा आधारिय आवश्यकताएं पूरी होती रहें, बच्चे सीखते हैं कि दूसरे लोग भरोसे तथा विश्वास के योग्य हैं।

— संदेह : यदि माता-पिता की पूरी परवरिश प्राप्त न हो, देखभाल न हो, बच्चा सीखेगा कि संसार विश्वास तथा भरोसे के योग्य नहीं तथा खतरनाक है।

— शैक्षणिक निहितार्थ (Implications) : शारीरिक आवश्यकताएं पूरी की जाएं तथा नियमित अन्तराल पर शारीरिक स्नेह प्रदान करें।

चरण II. स्वायत्तता बनाम शर्म (18 महीने से 3 वर्ष)

— स्वायत्तता : यदि उचित स्थानों पर सन्तुष्टिदायक व्यवहार को उत्साहित किया जाए तो बच्चे व्यक्तियों की भांति विकसित होते हैं।

— शर्म : यदि देखभाल करने वाले की आकांशाएं बहुत हों तथा स्वायत्तता प्रदान न की जाए तो बच्चे समस्या को सुलझाने में शर्म तथा संदेह विकसित कर लेंगे।

— शैक्षणिक निहितार्थ : एकसार तथा उपयुक्त अनुशासन प्रदान करें, बच्चों को स्वयं से करने के अवसर दें तथा उनके लिए सकारात्मक रोल मॉडल बनें।

चरण III. पहल बनाम अपराध (3-6 वर्ष)

— पहल : यदि योजना बनाने तथा क्रियाएं करने की आज़ादी दी जाए तो बच्चे योजना बनानी सीखते हैं तथा अपनी आवश्यकताओं और क्रियाओं की जिम्मेदारी लेते हैं।

— अपराध : यदि बच्चे की योजना या क्रियाओं को अनुत्साहित किया जाए तो बच्चे अपनी आवश्यकताओं और इच्छाओं के प्रति अपराध की भावना बना लेते हैं।

— शैक्षणिक निहितार्थ : क्रियाओं की योजना बनाने तथा क्रियाएं करने के लिए सहायता करें, उन्हें दूसरों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वास्तविक चुनाव करने में सहायता करें।

चरण IV. उद्योग बनाम हीनता (6-12 वर्ष आत्म-सम्मान बनने के लिए महत्त्वपूर्ण समय)

— उद्योग : यदि मेहनत, लम्बे कार्य को देर तक करना, खुशी से पहले कार्य को रखना सम्मानित होते हैं तो बच्चे अपनी उपलब्धियों में गर्व महसूस करना सीखते हैं।

— हीनता : यदि बच्चों को दण्ड़ मिलता है तथा अपनी आशाओं पर पूरे नहीं उतरते, उनमें अपनी योग्यताओं के प्रति हीनता आ जाती है।

— शैक्षणिक निहितार्थ : बच्चों को अवसर प्रदान करें कि वह सृजना करके पहचान तथा प्रशंसा प्राप्त करें।

चरण V. पहचान बनाम रोल के प्रति भ्रम (12-18 वर्ष आत्म-सम्मान बनने के लिए महत्त्वपूर्ण समय)

— **पहचान :** यदि विद्यार्थियों के साथ व्यस्क की भांति व्यवहार करें उन्हें वास्तविक लक्ष्य के साथ चुनौती दें, वह व्यस्क की भांति किए जाने वाले रोल के प्र पहचान की भावना रखेंगे।

— **रोल के प्रति भ्रम :** यदि विद्यार्थियों को बच्चों की भांति समझा जाए वह इ बात के लिए मिश्रित विचार तथा भावनाएं रखेंगे कि वह समाज में कहाँ फिट होते है।

— **शैक्षणिक निहितार्थ :** विद्यार्थियों के साथ व्यस्क की भांति व्यवहार क वास्तविक लक्ष्य के साथ चुनौती दें तथा पहचान बनाने के अवसर दें।

स्तर I. पूर्व-पारम्परिक नैतिकता (Pre-convectional morality) :

पूर्व-पारम्परिक स्तर (नौ वर्ष के लगभग आयु स्तर पर), नैतिकता का हमा व्यक्तिगत कोड़ नहीं होता। अपितु हमारा अपना नैतिक कोड़ व्यस्कों के स्तर तथा उनके नियमों को अपनाने तोड़ने के नतीजों से निर्धारित होता है।

अधिकार व्यक्ति से बाहर है तथा विचार इन कार्यों के शारीरिक नतीजों पर निर्भ करता है।

चरण I. आज्ञाकारिता तथा दण्ड दिशा निर्देश (Obedience and Punishmen Orientation) : बच्चा या व्यक्ति इसलिए अच्छा है क्योंकि वह दण्ड से बचना चाहता है यदि व्यक्ति को दण्ड मिला है तो उसने कुछ गल्त ही किया होगा।

चरण II. व्यक्तिवाद तथा विनियम (Individualism and Exchange) : इस स्तर पर उसे पता चल जाता है कि अधिकारित लोगों द्वारा दिए जाने वालों की एक ही ठीक राय नहीं होती। विभिन्न व्यक्तियों की विभिन्न राय होती है।

स्तर II. पारम्परिक नैतिकता (Convectional morality) :

इस स्तर पर अधिकतर किशोर तथा व्यस्क सम्मानित व्यस्क role मॉडल के नैतिक स्तरों को अपनाना शुरू कर देते हैं। अधिकारी व्यक्ति का अनुसरण किया जाता है प्रश्न नहीं पूछे जाते तथा विचार समूह के मापदण्ड़ों पर आधारित होता है जहां से व्यक्ति सम्बन्ध रखता है।

चरण III. अच्छे पारम्परिक सम्बन्ध : व्यक्ति अच्छा इसलिए है क्योंकि वह दूसरों द्वारा अच्छा कहलवाना चाहता है। इस प्रकार उत्तर दूसरों की अनुमति से सम्बन्धित है।

चरण IV. सामाजिक व्यवस्था बनाए रखना : बालक/व्यक्ति समाज के विस्तृत नियमों को मानने से सम्बन्धित होता है ताकि कानून को बनाए रखकर गुनाह से बचा जा सके।

स्तर III. पोस्ट-पारम्परिक नैतिकता (Post-convectional morality) : व्यक्तिगत निर्णय स्वयं द्वारा चुने हुए सिद्धान्तों तथा नैतिक विचार व्यक्तिगत हकों तथा न्याय पर आधारित होता है। कोहलबर्ग के अनुसार नैतिक विचार का यह स्तर बहुत कम व्यक्तियों के साथ रहता है। मात्र 10-15% लोग इस प्रकार की अमूर्त सोच के योग्य होते हैं। अधिकतर लोग अपने नैतिक विचारों को अपने आस-पास से लेते हैं तथा कुछ ही अपने लिए नैतिक सिद्धान्तों को बनाते हैं।

चरण V. सामाजिक अनुबन्ध तथा व्यक्तिगत हक (Social Contract and Individual Rights) : बालक/व्यस्क जागरूक हो जाता है कि हालांकि नियम/कानून बड़ी मात्रा में अच्छे के लिए ही बनाए गए हैं, कई बार यह किसी विशिष्ट व्यक्ति के हितों के उल्ट कार्य करते हैं। बहुत बार मुद्दे साफ नहीं होते। उदाहरणतय: कई बार किसी के लिए नियम तोड़ने की अपेक्षा किसी की जान बचाना अधिक महत्त्वपूर्ण है।

चरण VI. सार्वभौमिक सिद्धान्त (Universal Principles) : इस स्तर पर लोग अपने नैतिक गाइड़ लाइन बना लेते हैं जो कानून के अनुकूल हो या न हो। यह सिद्धान्त सब पर लागू होते हैं जैसे मानवीय अधिकार, न्याय तथा समानता। लोग इन सिद्धान्तों का बचाव करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं चाहे इसका अर्थ क्रिया में समाज के विरूद्ध जाना हो, उसका विरोध करने के नतीजे भुगतने हों या जेल हो जाए। कोहलबर्ग के अनुसार कुछ ही लोग इस स्तर तक पहुँचते हैं।

कोहलबर्ग की विधियों का महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन/समस्याएं (Critical Evaluation/Problems with Kohlberg's Methods)

बहुत सारे लोगों को दुविधाएं साफ नहीं हैं। कोहलबर्ग के विषय 10 से 16 वर्ष के भीतर हैं। उनकी शादी नहीं हुई तथा वह विकट परिस्थितियों तक नहीं पहुँचे।

1. सैम्पल एक तरफा है (The sample is biased) : Gilligan (1977) के अनुसार कोहलबर्ग की थ्योरी मात्र पुरूष सैम्पल पर आधारित है जो नर व्यक्ति की नैतिकता की परिभाषा पर आधारित है। पुरूष की नैतिकता कानून तथा न्याय के अमूर्त सिद्धान्तों पर आधारित है जबकि स्त्रियों की दया तथा देखभाल के सिद्धान्तों पर है।

2. दुविधाएं अकाल्पनिक हैं (The dilemmas are hypothetical) : वास्तविक स्थिति में, व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले कार्य के वास्तविक नतीजे होंगे जो उस व्यक्ति के लिए भी असुखद हो सकते हैं। क्या वास्तविक परिस्थितियों में रखे जाने पर व्यक्ति उसी प्रकार से तर्क करेंगे। हम नहीं जानते।

कोहलबर्ग की थ्योरी व्यक्ति के अप्राकृतिक दुविधाओं के उत्तर पर निर्भर करती इससे खोज में नतीजों की वैधता का पता नहीं चलता। लोग वास्तविक परिस्थिति भिन्न से प्रक्रिया करेंगे जबकि रिसर्च के वातावरण में कृत्रिम दुविधा प्रस्तुत किए जाने उनकी प्रक्रिया भिन्न होगी।

3. खराब रिसर्च का डिज़ाइन (Poor research design) : थ्योरी बनाते स जिस प्रकार से कोहलबर्ग ने अपना अनुसन्धान किया, टैस्ट करने का कोई बेहतर तरी नहीं है। क्या पता बच्चों के विकास की वैसी ही शृंखला चली। उसका अनुसन्ध Cross-sectional था, अर्थात् उसने विभिन्न आयुओं के बच्चों को इन्टरवयू किया देखने के लिए कि वह नैतिक विकास के किस स्तर पर हैं।

अच्छा तरीका यह होता कि यह देखने के लिए कि सभी बच्चे स्तरों के एक सम व्यवस्था से गुज़रते हैं वह उन्हीं बच्चों पर longitudinal अनुसन्धान करता।

Colby et al. (1983) में कोहलबर्ग की थ्योरी पर longitudinal खोज की ज उसने कोहलबर्ग के वास्तविक अध्ययन के 58 नर प्रतिभागी चुने। सताईस वर्ष अन्तराल में उसने 6 बार टैस्ट किया तथा उसने कोहलबर्ग के वास्तविक निष्कर्ष क समर्थन किया कि हम सभी नैतिक विकास के स्तरों में इसी प्रकार की व्यवस्था से गुज़र हैं।

कोहलबर्ग की थ्योरी के साथ समस्याएँ (Problems with Kohlberg's Theory)

1. क्या यह नैतिक विकास के स्पष्ट (distinct) स्तर है ?

कोहलबर्ग ने कहा है कि यह अलग तथा स्पष्ट स्तर हैं परन्तु प्रमाण इसको सही नहीं मानते। उदाहरणतय: एक व्यक्ति जिसने एक परिस्थिति में सिद्धान्तिय तर्क के अनुसार निर्णय को सही माना है (पोस्ट-पारम्परिक नैतिकता 5-6 स्तर) वह कई बार पारम्परिक तर्क पर चला जाता है (स्तर 3-4) साधारण जीवन में सही तथा गलत का तर्क स्थितियों पर निर्भर करता है न कि साधारण नियमों पर।

यह भी स्पष्ट नहीं है कि अधिकतर व्यक्ति स्तरों में से नहीं निकलते हैं तथा चौदह में से एक पीछे की ओर आ जाते हैं। इस प्रकार नैतिक विकास के अलग स्तर के प्रमाण आ जाते हैं। इस प्रकार नैतिक विकास अलग स्तर के प्रमाण बहुत कमज़ोर हैं, कुछ कहते हैं कि यह थ्योरी सांस्कृतिक रूप से पक्षपाती (biased) है तथा इसमें दूसरी संस्कृतियों तथा समाजों की अपेक्षा अमरीका के मूल्यों को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।

2. क्या नैतिक निर्णय व्यवहार के साथ मेल खाते हैं ?

कोहलबर्ग ने कभी नहीं कहा कि सोचने तथा करने के बीच सीधा व्यवहार (Correspondence) होता है (जो हम कहते हैं तथा जो हम करते हैं) परन्तु वह सुझाव देते हैं कि दोनों जुड़े हुए हैं। Bee (1994) ने सुझाव दिया है कि हमें निम्न बातों को ध्यान में रखना चाहिए :

— लम्बे समय तक बनने वाली लोगों की आदतें।

— क्या लोगों को परिस्थितियां बहुत जटिल लगती हैं तथा उनका क्या योगदान है।

— एक विशिष्ट प्रकार से व्यवहार करने की कीमत तथा फायदे।

— स्पर्धा वाले उद्देश्य जैसे मित्रों का दबाव, स्वयं की दिलचस्पी इत्यादि।

इस प्रकार कह सकते हैं कि Bee के अनुसार नैतिक व्यवहार नैतिक तर्क पर ही नहीं सामाजिक कारकों पर भी निर्भर करता है।

3. क्या न्याय सर्वाधिक आधारीय नैतिक सिद्धान्त है ?

यह कोलहबर्ग का ख्याल है। परन्तु Gilligan (1977) ने सुझाव दिया है कि दूसरों की देखभाल करने का सिद्धान्त भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ कोहलबर्ग के अनुसार पुरूषों का नैतिक तर्क स्त्रियों से कहीं अधिक आगे है।

लड़कियां कोहलबर्ग के सिस्टम में अधिकतर स्तर तीन पर (अच्छा लड़का - अच्छी लड़की orientation) होती हैं जबकि लड़के अधिकतर स्तर चार पर होते हैं (कानून तथा आर्डर दिशा निर्देश orientation) Gilligan ने कहा है वह विशेषताएं जो पारम्परिक तौर पर स्त्रियों की अच्छाई, उनकी देखभाल तथा दूसरों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशील बनाती है, वह हैं जो उन्हें नैतिक विकास में पीछे मानते हैं।

दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि Gilligan के अनुसार कोहलबर्ग की थ्योरी में लिंग पक्षपात है। वह स्त्रियों के करूणा, प्यार तथा अंहिसा को नकारता है जो लड़कों के समाजीकरण से जुड़ा होता है।

Gilligan इस नतीजे पर पहुँचा है कि कोहलबर्ग की थ्योरी इस तथ्य को नहीं मानती कि स्त्रियां, नैतिक समस्याओं को देखभाल की नैतिकता (ethics of care) से देखती हैं न कि 'न्याय की नैतिकता' (ethics of jusitice) के नज़रिये से जो कोहलबर्ग की थ्योरी के आधारिय पहलुओं को चैलेंज करता है।

नैतिक विकास की थ्योरी बहुत दिलचस्प है जो जीन पियाजे की नैतिक तर्क की थ्योरी से उपजी है। मनोवैज्ञानिक लौरेंस कोहलबर्ग द्वारा दी गई थ्योरी हमें समझाती है कि नैतिकता बचपन के शुरू से आरम्भ होती है तथा कई कारक इसे प्रभावित करते हैं।

शिक्षा माता-पिता तथा अध्यापक दोनों की ही जिम्मेदारी है। इसलिए मिलजुल कर कार्य करना सीखना चाहिए। इसके लिए सच्चाई को पहचानना तथा स्वीकारना आवश्यक है।

अभ्यास के प्रश्न

1. कोहलबर्ग की नैतिक विकास की थ्योरी का उल्लेख करें।
2. कोहलबर्ग की थ्योरी का महत्त्वपूर्ण ढंग से उल्लेख करें।

ॐ ॐ ॐ

इकाई - III : विकास के समाजिक प्रसंग

10. समाज
    (Society)
11. समाजीकरण
    (Socialization)
12. समाजीकरण की एजेन्सियाँ
    (Agencies of Socialization)
13. सामाजिक तथा सांस्कृतिक बदलाव तथा इसका बाल विकास पर प्रभाव
    (Social and Cultural Change and their Impact on Child Development)
14. आर्थिक बदलाव : शहरीकरण तथा आर्थिक बदलाव का बाल विकास पर प्रभाव
    (Economic Change : Impact of Urbanization and Economic Change on Child Development)
15. शहरीकरण
    (Urbanization)

CHAPTER 10

समाज (Society)

समाज का परिचय

प्रत्येक व्यक्ति समाज का अभिन्न अंग है। हम किसी व्यक्ति के बारे में सोचने से पहले उसके समाज के बारे में सोचते हैं। वह समाज में पैदा होता है। समाज के बगैर वह जीवन नहीं जी सकता। समाज की अच्छाई या बुराई वहाँ रहने वाले लोगों की अच्छाई या बुराई पर निर्भर करती है। समाज का लोगों पर तथा लोगों का समाज पर प्रभाव पड़ता है।

समाज की परिभाषाएं

— **Maclver** तथा **Page** के अनुसार, "समाज समाजिक सम्बन्धों का जाल है तथा हमेशा बदलता रहता है।"

— **Hegal** के अनुसार, "राज्य या समाज न कि लोग वास्तविक व्यक्ति है। लोगों की वास्तविकता तभी तक होती है जब तक वह राज्य या समाज का हिस्सा होते हैं।"

— **J. Narula** तथा **S. Kumar** के अनुसार, "समाज अमीर, ताकतवर तथा फैशनेबल लोगों की संगति है।"

समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ

समाज की व्यापक समझ के लिए उसकी विशेषताओं का विश्लेषण होना आवश्यक है। समाज को संकीर्ण तथा विस्तृत दोनों प्रकार से ही समझा जा सकता है। संकीर्ण तौर पर समाज लोगों का समूह है, परन्तु विस्तृत तौर पर यह समूह मानविय समाज है। परन्तु समाज में निम्नलिखित विशेषताएं होती है :

समाज में जनसंख्या होनी चाहिए। लोगों के बिना समाज नही होता इसके साथ सामाजिक सम्बन्ध आवश्यक हैं। जिसके लिए लोग चाहिए। जनसंख्या की उत्पति मिलाप के सम्बन्ध से होती है। इसलिए यह समाज की पहली आवश्यकता है।

1. समानता (Likeness) : प्रसिद्ध समाजशास्त्री (**Maclever**) के अनुसार समाज का अर्थ समानता है। समानता के बगैर आपस में मिल जुल कर रहने की भावना को पहचान नहीं मिलती। भूतकाल के समाज में समानता की यह भावना राजाओं की सीमाओं में मिलती थी तथा आधुनिक समाज में समाजिक समानता की दशाएँ राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों में विस्तृत हो गई हैं।

समाज में एक जैसी पसन्द, रुचि तथा बौद्धिकता वाले लोग रहते हैं। इससे वह दूसरे को समझ भी सकते हैं। इसीलिए **F.H. Giddings** के अनुसार समाज चेतना (Conscriousness of Kind) पर निर्भर करता है।

2. विभिन्नताएँ : समानता के साथ विभिन्नता भी समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। क्योंकि समाज में विभिन्नताएं होती है तथा यह समानता पर भी निर्भर करता है इसीलिए **Maclver** के मत अनुसार, "प्राइमरी समानता तथा सैकेण्डरी विभिन्नताएं सामाजिक संस्थानों में बड़ा-श्रम के विभाजन की सृजना करता है" क्योंकि विभिन्नताएँ सम्बन्धों में प्रशंसनीय है। यदि लोग हर पहलू से एक समान होंगे समाज का निर्माण नहीं होगा, पारस्परिक सम्बन्ध बहुत कम होंगे। परिवार जो पहला समाज है यह जैविक विभिन्नताओं पर आधारित है यह विभिन्नताएं योग्यता, दिलचस्पी तथा समर्थता में हो सकती है। हांलाकि यह विभिन्नताएं समाज के लिए आवश्यक हैं, परन्तु यह विभिन्नताएं मात्र समाज नहीं बनाती। इनके साथ समानताएं आवश्यक हैं।"

3. अन्तर निर्भरता (Inter-Dependence) : यह समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता है आज के समाज में अन्तर निर्भरता हर पहलू में दिखाई देती है। प्रसिद्ध ग्रीक दार्शनिक **Aristotle** के अनुसार, "मनुष्य सामाजिक प्राणी है।" तथा दूसरों पर निर्भर है। प्रत्येक मनुष्य के समाज में जीने के लिए तथा ठीक रहने के लिए यह अन्तर निर्भरता आवश्क है कोई भी मनुष्य आत्मनिर्भर नही होता।

ढसे भोजन, छत तथा सुरक्षा तथा दूसरी कई आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए दूसरों पर निर्भर होना पड़ता है। समाज के आधुनिकरण होने से यह अन्तर निर्भरता बढ़ती है। परिवार पहला समाज होने के नाते लिंगों की जैविक अन्तर निर्भरता पर आधारित होता है। व्यक्ति ही नहीं बल्कि समूह, समुदाय तथा समाज भी अन्तर निर्भर होते हैं।

4. सहयोग तथा संघर्ष : समाजशास्त्री **Maclver** ने एक बार कहा है कि, "समाज एक सहयोग है जो संघर्ष से ऊपर है।" समाज के निंमाण के लिए सहयोग आवश्यक है। सहयोग के बिना समाज नहीं होगा। सहयोग के बिना लोग खुशहाल जीवन नहीं गुज़ार सकते। परिवार पहला समाज होने के कारण सहयोग तथा आर्थिक तरक्की में मदद करता है।

सहयोग के साथ समाज के लिए संघर्ष भी आवश्यक है। संघर्ष सामाजिक सम्बन्ध बनाने के लिए सीमेंट का कार्य करता है। स्वस्थ तथा अच्छी प्रकार विकसित समाज में सहयोग तथा संघर्ष साथ-साथ रहते हैं। संघर्ष सहयोग को अर्थपूर्ण बनाता है। संघर्ष प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकता है।

5. समाज समाजिक सम्बन्धों का जाल है : सामाजिक सम्बन्ध समाज का आधार है। **Maclver** ने कहा है, कि समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। इसलिए सामाजिक

सम्बन्धों का श्रेणीकरण करना कठिन है। यह सामाजिक सम्बन्ध आपसी जागरुकता या पहचान पर आधारित होते हैं, जिसे **Cooley** ने we-felling, **Giddings** ने जाति की जागृति तथा **Thomas** ने सहजप्रवृत्ति कहा है। इन सामाजिक सम्बन्धों के बगैर कोई समाज नहीं बनता।

क्योंकि सामाजिक सम्बन्ध प्रकृति में अमूर्त होते हैं समाज भी प्रकृति में अमूर्त ही होता है। विभिन्न प्रकार की सामाजिक प्रक्रियाएं जैसे सहयोग, संघर्ष समाज में लगातार होती रहती हैं तथा यह स्थापित होने वाले सम्बन्ध समाज बनाते हैं।

6. स्थाई प्रकृति : यह समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। यह व्यक्तियों की अस्थाई संगठन नहीं है। किसी की मौत के बाद भी समाज रहता है। समाज एक स्पष्ट संगठन है।

7. समाज अमूर्त है : समाज अमूर्त संकलन है। **Maclver** ने समाज को सामाजिक सम्बन्धों का जाल कहा है। हम इस सम्बन्ध को देख नहीं सकते परन्तु महसूस कर सकते हैं। **Wright** ने ठीक ही कहा है, कि समाज का अर्थ एक अवस्था, सम्बन्ध है जो अमूर्त है। इसके साथ समाज रीति रिवाजों, लोक तरीके, आचार-विचार तथा संस्कृति है जो भी अमूर्त हैं। इसलिए समाज प्रकृति में अमूर्त है।

8. समाज गतिशील है : समाज की प्रकृति गतिशील तथा बदलने वाली है। कोई भी समाज रूका नहीं होता। प्रत्येक समाज लगातार बदलता रहता है। पुराने रीति रिवाज, लोक-तरीके, मूल्य तथा संस्थाएं बदलती हैं तथा नए रीति रिवाज तथा मूल्य आ जाते है। समाज अपनी पुरानी प्रकृति से आधुनिक प्रकृति में बदल जाता है। इस प्रकार यह समाज की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

9. व्यापक संस्कृति : प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है जो दूसरों से भिन्न होती है प्रत्येक समाज के सदस्यों की अपनी संस्कृति होती है जिसे वह दूसरों से अलग करता है। संस्कृति समाज के सदस्यों का जीने का ढंग है जिसमें उनके मूल्य, विश्वास, कलाएँ, आचार-विचार इत्यादि सम्मिलित होते हैं। इस प्रकार संस्कृति व्यापक है क्योंकि यह सामाजिक जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करता है तथा सांस्कृतिक रूप से स्वयं में पूर्ण है। इसके साथ प्रत्येक समाज आने वाली पीढ़ी को अपने सांस्कृतिक पैटर्न स्थानांतरित करता है।

10. कई बार मात्र व्यक्तियों को एकत्र करने से अधिक है : इसमें सन्देह नहीं कि समाज व्यक्तियों से ही बनता है, परन्तु लोगों का समूह ही समाज नहीं यह इससे अधिक तथा व्यक्तियों से आगे है। **Durkheim** सही है जब वह कहता है कि समाज अपने हिस्सों जो व्यक्ति हैं, उससे कहीं अधिक है।

11. आवास तथा परिपाक (Accommodation and Assimilation) : समाज को आगे चलाने तथा समतल कार्य के लिए यह दोनों जुड़ी हुई सामाजिक क्रियाएं महत्त्वपूर्ण हैं। यह समाज की अतिरिक्त विशेषता है।

शिक्षा तथा समाज के मध्य सम्बन्ध
(Association between Education and Society)

शिक्षा तथा समाज एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। प्रत्येक समाज अपनी आवश्यकताओं आदर्शों तथा आशओं को ध्यान में रखकर शिक्षा की इस प्रकार व्यवस्था करता हैं कि वह अपनी आवश्यकताओं, आदर्शों को पहचाने तथा अपने व्यक्तियों को प्रगतिशील नागरिक बनाए। यह तभी सम्भव है जब इसके सभी व्यक्ति अपने व्यवहार को समाज के आदर्शों के अनुसार बदलने के योग्य हों तथा उसके साथ सामजस्यंपूर्ण समायोजन करें। शिक्षा समाज के उद्देश्य को प्राप्त करने का ताकतवर साधन है।

दूसरे शब्दों में समाज शिक्षा का पैटर्न अपनी जरूरतें, आदर्श तथा इच्छाओं के अनुसार तय करता तथा बनाता है। हम कह सकते हैं कि जैसा समाज है वैसी ही शिक्षा होती है। इस प्रकार शिक्षा सर्व करने वाले समाज के आदर्शों को अपनाने की कोशिश करती है।

शिक्षा तथा समाज के मध्य सम्बन्ध को शैक्षिक समाजशास्त्र (Educational Sociology) कहते हैं।

Pyne के अनुसार, "Educational sociology यह समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक प्रायोगिक विज्ञान (Applied Science) है।

Ottawaytz के शब्दों में, "Educational sociology शिक्षा तथा समाज के सम्बन्धों की वैज्ञानिक अध्ययन है।"

Educational Psychology बहुत महत्त्वपूर्ण है जो कई समस्याओं को सुलझाने में सहायता करती है।

समाज का शिक्षा पर प्रभाव :

1. समाज के ढाँचे तथा आदर्शों का प्रभाव : समाज के आदर्श शिक्षा द्वारा प्राप्त किए जाने वाले मूल्यों को तय करते हैं। उदाहरणयय: आदर्श समाज में आदर्शों तथा बौद्धिकता का बहुत महत्त्व है। इस समाज में शिक्षा चरित्र निर्माण तथा नैतिक विकास पर दबाव देती है। इसी प्रकार भौतिकतावादी (Materialistic) समाज में भौतिक भलाई के लिए ही मूल्य तथा आदर्श बनाए जाते हैं। इसलिए सभी शैक्षिक पैटर्न इस प्रकार व्यवस्थित किये जाते हैं ताकि व्यक्तियों की योग्यताएं इस प्रकार विकसित हों ताकि अधिक से अधिक शरीरिक योग्यताएं तथा भौतिक भलाई प्राप्त हो।

2. धार्मिक दशाओं का प्रभाव : वह समाज जो कट्टर धार्मिक धारणाएं रखता हैं वह शिक्षा की इसी प्रकार योजना बनाते हैं तथा स्वतन्त्र सोच को नकारते हैं। वह समाज जो स्वतन्त्र सोच में विश्वास करता है वह धर्म निरेपक्ष प्राकृति की शिक्षा प्रदान करता है।

3. राजनीतिक मान्यताओं का प्रभाव : राज्यों की सरकार राजनीतिक सिद्धान्तों, आदर्शों तथा उद्देश्यों के अनुसार ही शिक्षा को व्यवस्थित करती है।

4. आर्थिक दशाओं का प्रभाव : विकसित समाज समूह की शिक्षा के लिए शिक्षा की योजना को स्वतन्त्रता प्रदान करता है। दूसरी ओर गरीब समाज अपने नागरिकों को सभी प्रकार की शिक्षा प्रदान नहीं कर सकता।

5. सामाजिक आदर्शों तथा विचारों का प्रभाव : ऐसा समाज जहाँ पुराने रीति रिवाज प्रधान हों वहाँ शिक्षा पुराने (Traditionall) ढंग से व्यवस्थित की जाती है। दूसरी ओर उन्नत समाज अपने सदस्यों को उन्नत शिक्षा प्रदान करता है जिसके आधुनिक उद्देश्य, पाठ्यक्रम तथा विधियाँ हों।

6. सामाजिक बदलाव का प्रभाव : समाज प्रकृति में बदलाव वाला है। यह लोगों के सामाजिक आदर्शों, मूल्यों तथा अभिवृतियों (attitudes) के बदलने के साथ बदल जाता है। समाज बदलने के साथ शिक्षा बदल जाती है। भारतिय शिक्षा प्रणाली इस बदलाव की उदाहरण है।

शिक्षा का समाज पर प्रभाव
(Impact of Education on Society)

समाज शिक्षा को प्रभावित करता है। इसी प्रकार शिक्षा का भी समाज पर प्रभाव पड़ता है :-

1. समाजिक भावनाओं को जगाना : एक व्यक्ति समाज में रह कर समाज के द्वारा ही विकास प्राप्त करता है। समाज के बगैर वह रह नहीं सकता। सामाजिक भावनाएं सामाजिक अभिवृति तथा सामाजिक जागरूकता के लिए यह आवश्यक है।

2. सामाजिक धरोहर को संरक्षित करना : प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति होती है जिसमें उसके रीति रिवाज, नैतिक तथा धार्मिक मूल्य सम्मिलित होते हैं। प्रत्येक समाज अपने सामाजिक धरोहर पर गर्व महसूस करता है। शिक्षा ही समाज के सामाजिक तथा सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित करके बचाता है जो समाज का आधार है।

3. सामाजीकरण : समाज के उद्देश्य के अनुसार बालक का विकास करना सामाजीकरण कहलाता है। इसका प्रमुख पहलू समाज के नियमों के अनुसार बालक का दूसरों के साथ व्यवहार होता है। शिक्षा बालक का समाजीकरण करती है। शिक्षा के द्वारा वह समाज के सांस्कृतिक मूल्यों तथा आदर्शों को बच्चों के भीतर तक ले जाती है जहाँ का वह एक विशिष्ट भाग है।

4. राजनीतिक विकास : शिक्षा समाज के राजनीतिक विकास में सहायता करती है। शिक्षा के द्वारा ही बालक को संसार के विभिन्न राजनीतिक आदर्शों का ज्ञान प्राप्त होता है। शिक्षा लोगों में अपने अधिकारों, जिम्मेदारियों की सामाजिक भावना तथा दूसरों के लिए भलाई के कार्य की राजनीतिक जागरुकता फैलाती है।

5. आर्थिक विकास : शिक्षा समाज का आर्थिक रूप से विकास करती है। बच्चों को स्वयं की उन्नति करने, आर्थिक उन्नति करने, समाज में समृद्धि लाने व्यवसायिक ट्रेनिंग प्रदान करती है।

6. सामाजिक बदलाव : शिक्षा सामाजिक विकास का प्रभावकारी तथा ताक साधन है। यह सामाजिक बदलाव लाता है। आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक से मान क्रियाओं के क्षेत्र में नए अनुसन्धान, तकनीकें तथा क्रान्तिकारी बदलाव आए हैं। शिक्षा व्यक्तियों को आधुनिक वैज्ञानिक विकास का ज्ञान देती है।

7. सामाजिक नियन्त्रण : सामाजिक नियन्त्रण के लिए शिक्षा आवश्यक है त सामाजिक नियन्त्रण के बगैर समाज में कोई सुधार सम्भावित नहीं है। शिक्षा समाज के तथा हानिकारक रीति रिवाज, तथा कुरीतियों को प्रकट करती है। यह सामाजिक बुराइ के विपरीत जनता की धारणा बनाती है।

8. सामाजिक सुधार : शिक्षा व्यक्तियों तथा समाज की अच्छाई तथा भलाई लिए सामाजिक बदलाव तथा समाज सुधार लाती है।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाज तथा शिक्षा के मध्य घनिष्ट सम्बन्ध है।

समाज के शिक्षा के प्रति कर्त्तव्य
(Duties of Society towards Education)

समाज का शिक्षा के प्रति आवश्यक कर्त्तव्य हैं। समाज का प्रमुख कार्य व्यक्ति क पूर्ण विकास है। इसका अर्थ है कि प्रत्येक सामाजिक संस्थान को व्यक्ति को हर प्रकार से शिक्षित करना चाहिए। समाज के शैक्षणिक कार्य निम्नलिखित हैं :-

1. व्यक्ति का सर्वांग विकास : व्यक्ति का हर पहलू से विकास शिक्षा का प्रमुख कार्य है। मानसिक विकास के लिए स्कूल बनाए जाने चाहिए। इसके साथ शारीरिक विकास भी आवश्यक है। इसलिए समाज को जिम, खेलने के मैदान, खेलों की सामग्री, पार्क तथा बागों को प्रदान करना चाहिए ताकि व्यक्ति का स्वास्थ्य विकसित हो।

2. सभी के लिए स्कूल बनाना : सभी आयु समूह के बच्चों के लिए स्कूल प्रदान करना समाज का प्रमुख कर्त्तव्य है। इसके साथ योग्य तथा ट्रेनिंग लिए हुए अध्यापक तथा सम्बन्धित सामग्री प्रदान करना आवश्यक है।

3. व्यवसायिक ट्रेनिंग प्रदान करना : सदस्यों को आत्म-निर्भर बनाने के लिए व्यवसाय की शिक्षा प्रदान करना समाज का कर्त्तव्य है। कई देशों में व्यवसायिक ट्रेनिंग प्रदान करना समाज का उत्तरदायित्व है।

4. लाइब्रेरियां बनाना : पढ़ने वालों को राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय पहलुओं से जागरुक कराने के लिए समाज को अधिक से अधिक पढ़ने के कमरें तथा लाइब्रेरियाँ बनानी चाहिए जहाँ समाचार पत्र, मैगज़ीन तथा Periodicals पढ़ने के लिए उपलब्ध हों।

5. अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करना : लोगों का अच्छा स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधा तथा सन्तुलित आहार आवश्यक है, इसके लिए समाज द्वारा अच्छे हस्पताल तथा दवाईयाँ उपलब्ध करानी जरूरी है।

6. अध्ययन (Academic) तथा सांस्कृतिक शिक्षा प्रदान करना : शिक्षा के द्वारा समाज सांस्कृतिक तथा शैक्षिक रूप से उन्नत किया जा सकता है। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए शैक्षिक (academic) तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा conferences बार-बार व्यवस्थित करें।

7. व्यस्क शिक्षा प्रदान करना : व्यस्कों को भी शिक्षा अवसर मिलने चाहिए ताकि वह सामाजिक सुधार तथा समाज विकास के लिए प्रोत्साहित हो सकें।

8. हाथ से काम करने के गौरव को बनाए रखना : समाज शारीरिक कार्य को उचित स्थान दे तथा सदस्यों में यह प्रतिष्ठित करे कि शारीरिक कार्य मानसिक कार्य से कम नहीं है। यह दुखद है कि हमारे देश में शिक्षित व्यक्तियों तथा मानसिक कार्य को ही उच्च समझा जाता है तथा शारीरिक कार्य को निम्न जान कर उससे बचा जाता है।

9. दूसरी एजेन्सियों के साथ सहयोग : शैक्षणिक प्रोग्राम, पॉलिसी तथा गतिविधियां व्यवस्थित करते समय समाज को सभी एजेन्सियों का सहयोग लेना चाहिए। परिवार, चर्च, स्कूल, समुदाय तथा दूसरी औपचारिक तथा अनौपचारिक एजेन्सियों को शैक्षणिक कार्य तथा क्रियाओं के साथ सहयोग के लिए उत्साहित करना चाहिए।

10. नैतिक वातावरण का निर्माण करें : समाज को बनाए रखने के लिए आवश्यक नैतिक वातावरण का निर्माण करना समाज का कर्त्तव्य है।

11. सौन्दर्यात्मक भावना का विकास करना : बच्चों में सौन्दर्यात्मक विकास की भावना विकसित करने के लिए समाज को चाहिए कि बच्चों में पेंटिग, संगीत, डांस तथा दूसरी कलाओं में दिलचस्पी विकसित करें।

12. उच्च आदर्श स्थापित करना : समाज को चाहिए कि वह उच्च आदर्शों की स्थापना करें जैसे ईमानदारी, सहयोग, सहनशीलता, त्याग तथा आत्म-सम्मान। यह वातावरण को अधिक नैतिक बनाने के साथ-साथ संसार में शान्ति, खुशी तथा स्मृद्धि बनाने में सहायक होते हैं।

शिक्षा के समाज के प्रति कर्त्तव्य
(Duties of Education Towards Society)

1. शिक्षा अपनी संस्कृति तथा सभ्यता (Civilization) को संरक्षित करे। किसी भी संस्कृति के शिक्षण के लिए रीति रिवाज, धारणाएँ, आदर्श, भाषा, नैतिकता आधार हैं।

2. संस्कृति तथा सभ्यता बनाए रखना : शिक्षा समाज की संस्कृति को न केवल संरक्षित करे बल्कि उसे उचित ढंग से बनाए रखे।

3. संस्कृति तथा सभ्यता का विकास : शिक्षा न केवल संस्कृतिक धरोहर संरक्षित करे और बनाए रखे बल्कि संस्कृतिक धरोहर तथा सभ्यता की उपलब्धियों विकसित करे। यदि शिक्षा यह कार्य नहीं करती तो समाज स्थिर तथा बासी हो जाए

4. सामाजिक बदलाव को बढ़ावा देना : शिक्षा लोगों को मानसिक रूप से बात के लिए तैयार करें कि वह सामाजिक बदलावों का आसानी तथा खुशी से स्वागत तथा अपनाएं।

5. सामाजिक बुराईयों को हटाना : शिक्षा सामाजिक बुराईयों, अन्धे रीति रिवा को हटा कर स्वस्थ समाज का निर्माण करे और सामाजिक बदलाव तथा सुधार लाए।

6. सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति : शिक्षा समाज की आवश्यकताओं क पूर्ति करे क्योंकि समाज की आवश्यकताएं बदलते समय की परिस्थितियों के साथ बदल जाती है। इस निरन्तर चलने वाली क्रिया में शिक्षा इन योजनाओं तथा प्रोग्रामों को समझ तथा बनाने में सहायक हो।

7. सामाजिक भावनाओं का विकास : शिक्षा बच्चों में सामाजिक भावनाओं क विकास करे। मनुष्य सामाजिक प्राणी है। जीवन में हमारा उद्देश्य प्रचलित समाज के ट्रैंड को समझना तथा उन्हें मनुष्यता की भलाई के लिए बदलना है।

8. सृजनात्मक ताकत को विकसित करना : व्यक्तियों के लिए सृजनात्मक अवसर प्रदान करना शिक्षा का उद्देश्य है। इससे उनके व्यक्तित्व का पूर्ण रूप से विकास होगा।

शिक्षा के क्षेत्र में हमारा देश अभी भी पिछड़ा है। यहां के लोग अपने कर्त्तव्यों तथा अधिकारों में बहुत पिछड़े हैं। वह राष्ट्रीय तथा समाजिक पहलुओं को नज़र अन्दाज करते हैं। असमाजिक तथा अनैतिक कार्यों के विरुद्ध आवाज़ नहीं उठाते। इसके लिए शिक्षा का सहारा लेना आवश्यक है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. शिक्षा का समाज के प्रति क्या कर्त्तव्य है ?
2. समाज का शिक्षा के प्रति क्या कर्त्तव्य है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. समाज से क्या अर्थ है ? बाल विकास में यह कैसे सहायक है ?
2. "Educational Sociology शिक्षा तथा समाज के सम्बन्धों के मध्य वैज्ञानिक अध्ययन है" उल्लेख करें।

ଓ ଓ ଓ

CHAPTER 11

समाजीकरण (Socialization)

समाजीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा शिशु वह कलाएँ अपनाना शुरू कर देता है जो उसके समाज में कार्यकारी सदस्य के तौर पर पालन करने के लिए आवश्यक हैं तथा मनुष्यों के द्वारा अनुभव की जाने वाली सर्वाधिक प्रभावशाली सीखने की क्रिया है। बाकी Species के उल्ट मनुष्य को अपनी संस्कृति सीखने तथा जीने के लिए सामाजिक अनुभवों की आवश्यकता होती है। हालांकि संस्कृतिक विभिन्नताएं समाज के कार्यों, रीति रिवाजों तथा व्यवहार में दिखाई देती हैं, संस्कृति का आधारिय परिचय व्यक्तिगत स्तर पर ही प्राप्त होता है। यह हावभाव तभी प्रकट होता है जब व्यक्ति का अपने माता-पिता, परिवार, रिश्तेदारों तथा विस्तृत समाज के नेटवर्क द्वारा सामाजीकरण हो चुका हो। सीखने तथा शिक्षित करने की कर्मकर्ता (Reflexive) क्रिया यह है कि कैसे सांस्कृतिक तथा सामाजिक विशेषताएं निरन्तरता प्राप्त करते हैं। कई वैज्ञानिक कहते हैं कि सामाजीकरण पूरे जीवन पर्यन्त सीखने की प्रक्रिया है तथा यह बच्चों तथा बड़ों के व्यवहार, विचारों तथा कार्यों को केन्द्रिय रूप से प्रभावित करती है।

सामाजीकरण का अर्थ

शब्द कोष के अनुसार :

ऐसा व्यवहार करना जो समाज द्वारा स्वीकृत हो

(या)

सामाजीकरण के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवस्थित करना

चिकित्सकों के अनुसार :

यह क्रिया मनुष्य में शैशवावस्था से शुरू होती है और मनुष्य शिक्षा तथा व्यस्कों की ट्रेनिंग द्वारा आदतें, धारणा तथा ज्ञान प्राप्त कर लेता है।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार : सामाजिक जीवन की माँगों पर पूरा उतरने के लिए शैशवावस्था से व्यक्ति के व्यवहार का संशोधन।

समाजिक कार्यकर्ताओं के अनुसार : समाजीकरण का कार्य या समाजीकरण होने की अवस्था।

समाजीकरण का रोल : समाजीकरण का रोल व्यक्तियों को समाज या समाज के समूह के मापदण्डों से परिचित कराना है। समाजीकरण भविष्य के सदस्यों को दूसरे समूह के सदस्यों की आशाओं के बारे में पढ़ाकर उन्हें समूह में योगदान के लिए तैयार करता है।

समाजीकरण बच्चों के लिए महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है जो घर तथा स्कूल में समाजीकृत हो हैं। बच्चों के लिए यह क्रिया उन्हें पढ़ाती है कि उनसे क्या आशा की जाएगी जब वह व हो जाएंगे तथा समाज के पूर्ण सदस्य बन जाएंगे। विस्तृत रूप से देखा जाए तो समाजीक मापदण्डों, मूल्यों, विश्वास तथा व्यवहार को भविष्य के सदस्यों तक पहुँचाने की क्रिया

समाजीकरण का लक्ष्य

Arnett ने समाजीकरण के तीन लक्ष्य दिए हैं :-

— आवेग पर नियन्त्रण तथा चेतना का विकास

— भूमिका के लिए तैयारी तथा प्रदर्शन, इसमें व्यवसायिक भूमिका, लिंग भूमि तथा संस्थाओं में भूमिका जैसे शादी तथा माता-पिता वनना सम्मिलित है।

— अर्थ को या जो महत्त्वपूर्ण हो, मूल्यावान हो या जिसके लिए हम जीते हों उस स्त्रोत का उत्पादन करना।

संक्षिप्त में समाजीकरण वह क्रिया है जो मनुष्य को सामाजिक जीवन में क्रिया के लिए तैयार करती है।

समाजीकरण के प्रकार
(Types of Scocialization)

1. प्राइमरी समाजीकरण : वालक के लिए प्राइमरी समाजीकरण वहुत महत्त्वपू है क्योंकि इसी पर भविष्य का सामाजीकरण निर्भर करता है। यह उस समय होती है ज वालक किसी विशेष संस्कृति के सदस्यों के उपयुक्त रवैया, मूल्य तथा क्रियाएँ सीख लेत है। वह नज़दीक के परिवार तथा मित्रों द्वारा प्रभावित होता है। उदाहरणतय: यदि बालक माँ को अल्पसंख्यक समूह के प्रति गल्त रवैया अपनाते देखता है तो वह सोच सकता है कि यह व्यवहार स्वीकृत है तथा वह आगे भी अल्पसंख्यकों के बारे में यही धारणा बना कर रखेगा।

2. सकैण्डरी समाजीकरण : वह क्रिया जो बड़े समाज के छोटे समूह के सदस्य के तौर पर उचित व्यवहार सीखना सिखाती है, सकैण्डरी सामाजीकरण है। आधारिय तौर पर यह व्यवहार समाज के समाजीकरण करने वाले लोगों द्वारा थोपा जाता है। सकैण्डरी सामाजीकरण घर के वाहर होता है। यहां पर वच्चे तथा व्यस्क जिन परिस्थितियों में वह हैं वहाँ पर उचित व्यवहार करना सीख लेते हैं। स्कूल में बच्चों का व्यवहार घर से बिल्कुल विभिन्न होना चाहिए। यहाँ बच्चों को नियमों का पालन करना होता है। नए अध्यापकों को विद्यार्थियों से विभिन्न ढंग से व्यवहार करना होता है, यह बात वह आसपास के लोगों से सीख लेते हैं। सकैण्डरी समाजीकरण किशोर तथा व्यस्कों से जुड़ा होता है, तथा यहां प्राइमरी समाजीकरण की अपेक्षा कम बदलाव की आवश्यकता होती है। इसकी उदाहरण नए व्यवसाय में प्रवेश या नए वातावरण अथवा नए समाज में जाना हो सकता है।

3. पूर्वानुमानित समाजीकरण : इसमें व्यक्ति भविष्य में पाए जाने वाले व्यवसाय की पोजीशन तथा सामाजिक सम्बन्धों के बारे में पूर्वाभ्यास करता है। उदाहरणतय: शादी से पूर्व जोड़ा एक दूसरे के साथ घूमे, ताकि उन्हें पता चल जाए कि शादी के बाद वह इकट्ठे कैसे रह सकते हैं। **Kenneth J. Levine** तथा **Cynthia A. Hoffner** के अनुसार नौकरी तथा कैरियर के सन्दर्भ में माता-पिता पूर्वानुमानित समाजीकरण का प्रमुख स्त्रोत हैं।

फिर से समाजीकरण (Re-Socialization) : फिर से समाजीकरण से भाव पहले व्यवहार के पैटर्न तथा सजगता (reflexes) को छोड़ना तथा नए को जीवन में परिवर्तन के तौर पर स्वीकृत करना। यह जीवन पर्यन्त चलता रहता है। यह एक तीव्र अनुभव है जहाँ व्यक्ति को अपने भूतकाल से तेज़ी से छुटकारा मिलता है तथा बिल्कुल विभिन्न नियमों तथा मूल्यों को सीखने की आवश्यकता उत्पन्न होती है। इसकी उदाहरण एक संस्था हो सकती है जहाँ लोग बाकी के समाज से कट जाते हैं तथा वहाँ के प्रशासन का स्टाफ ही नियन्त्रण रखता है। पूरे संस्थान के द्वारा फिर से समाजीकरण दो चरण की प्रक्रिया है (1) स्टाफ नए व्यक्ति की पहचान को उखाड़ देता है (2) स्टाफ नए व्यक्ति के लिए नई पहचान बना देता है। इसकी उदाहरण एक व्यक्ति का मिलिट्री में जाना है या अपने धर्म को छोड़कर धर्म परिवर्तन करना।

संगठनात्मक समाजीकरण (Organizational Socialization) : इस क्रिया में एक कर्मचारी संगठन के रोल को अपनाने के लिए ज्ञान तथा कलाओं को सीखता है। जैसे-जैसे नए लोगों का समाजीकरण होता है वह संगठन, उसके इतिहास, मूल्यों, शब्दजाल, संस्कृति तथा विधियों के बारे में सीखते हैं। कर्मचारी का नए कार्य के वातावरण के सम्बन्ध में इक्ट्ठा किया गया ज्ञान उनके कार्य के प्रति प्रयोग की जाने वाली कलाओं और योग्यताओं को प्रभावित करता है। कर्मचारी कितनी तीव्रता से संगठन के सम्बन्ध में जानकारी इकट्ठा करता है, उसके समाजीकरण की क्रिया को प्रभावित करती है। उसे अपने कार्य, समूह, साथ काम करने वाले विशिष्ट लोगों की दैनिक दिनचर्या, उनकी संगठन में भूमिका, नौकरी के लिए आवश्यक कलाओं, औपचारिक प्रक्रियाओं तथा अनौपचारिक मापदण्डों का पता चलता है। नियन्त्रण सिस्टम में समाजीकरण का कार्य यह है कि नए लोग ज्ञान को पा लेते हैं तथा संगठन के मूल्य तथा प्रथाओं का पालन करते हैं।

समूह समाजीकरण : समूह समाजीकरण एक थ्योरी है कि व्यस्कता में व्यक्ति का मित्र समूह न कि माता-पिता उसके व्यक्तित्व तथा व्यवहार को प्रभावित करते हैं। किशोर माता-पिता की अपेक्षा अपने साथियों के साथ अधिक समय बिताता है। इसलिए व्यक्तित्व विकास में मित्रों का अधिक सम्बन्ध होता है। उदाहरणतय: जुड़वे भाई, जिनका आनुवंशिक मेकअप एक समान होता है, उनका व्यक्तित्व अलग होगा क्योंकि उनका मित्र समूह अलग है।

कॉलेज में जाना किशोर के जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि इस समय प
पिता का नियन्त्रण समाप्त हो जाता है। जीवन की नई चुनौतियों का सामना करते
किशोर माता-पिता की अपेक्षा अपने साथियों से चर्चा करते हैं।

लिंग समाजीकरण (Gender Socialization) : **Henslin** के अनुसार समाजीक
का महत्त्वपूर्ण हिस्सा सांस्कृतिक रूप से परिभाषित लैंगिक रोल के बारे में सीखना
लिंग समाजीकरण से भाव एक लिंग के लिए उचित व्यवहार तथा मनोभाव को सीख
है। लड़के पुरुष होना तथा लडकियाँ स्त्री होना सीखती हैं। यह सीखने की प्रि
समाजीकरण के विभिन्न एजेन्टों द्वारा होती है। परिवार लिंग रोल को लागू करने में ब
महत्त्वपूर्ण है, परन्तु इसी प्रकार मित्र, स्कूल, कार्य तथा संचार मीडिया हैं। लिंग रोल
अनगनित सूक्ष्म ढंगों द्वारा लागू किया जाता है।

बच्चे के जीवन में माता-पिता शुरू से ही उपस्थित होते हैं, बच्चे के समाजीकरण
उनका प्रभाव बहुत महत्त्वपूर्ण है, खासकर लिंग रोल के मामले में। समाजशास्त्रियों ने च
रास्तों की पहचान की है जिससे माता-पिता लिंग रोल का समाजीकरण कर सकते है
खिलौने तथा क्रियाओं द्वारा लिंग सम्बन्धी अभिवृत्तियों को आकार देना, बच्चे के लिंग के
आधार पर अपनी प्रतिक्रिया अलग करना, प्राइमरी लिंग मॉडल की भान्ति सर्व करना तथ
लिंग आदर्श तथा आशाओं का संचार करना।

जातीय समाजीकरण (Racial Socialization) : जातीय समाजीकरण से भाव
वह विकासिय क्रिया है जिससे बच्चे किसी खास जाति समूह के व्यवहार, अनुभूति, मूल्य
तथा अभिवृत्तियों को अपना लेते हैं तथा स्वयं तथा दूसरों को समूह का सदस्य समझते हैं
उपलब्ध साहित्य जातीय समाजीकरण को कई प्रकार के आयाम से देखता है। अनुसन्धान
करने वालों ने पाँच आयाम पहचाने हैं जो जातीय समाजीकरण में देखे जाते हैं : सांस्कृतिक
समाजीकरण, पक्षपात की तैयारी, सन्देह को बढ़ाना, समतावाद तथा दूसरे आयाम। सांस्कृतिक
समाजीकरण से भाव है बच्चों को पालने का ढंग जो बच्चों को उनकी जातीय इतिहास या
धरोहर के बारे में बताता है तथा कई बार इसे गर्व विकास कहते हैं। पक्षपात के लिए
तैयारी से भाव पालने का वह ढंग है जो बच्चों को पक्षपात के बारे में जागरुक होने तथा
उनसे निपटने के ढंगों की तैयारी के बारे में केन्द्रित होता है। सन्देह को बढ़ाना से भाव
बच्चों का समाजीकरण करने का पालने के ढंगों का दूसरी जातियों के लोगों से सावधान
करना है। समतावाद से भाव इस विश्वास के साथ बच्चों का समाजीकरण करना है कि
सभी लोग समान हैं तथा उनके साथ एक समान मानवता से व्यवहार किया जाए।

प्राकृतिक समाजीकरण (Natural Socialization) : प्राकृतिक समाजीकरण तब
होता है, जब शिशु तथा बच्चे अपने ईद गिर्द सामाजिक संसार को ढूंढते, खेलते तथा
enjoy करते हैं। योजनाबद्ध समाजीकरण सिर्फ मनुष्य मात्र में ही देखा जाता है। पूरे

इतिहास में लोग दूसरों को पढ़ाने तथा ट्रेनिंग देने की योजना बनाते है। प्राकृतिक तथा योजनाबद्ध समाजीकरण के अच्छे तथा बुरे कारक होते हैं। इसी में बुद्धिमता है कि प्राकृतिक तथा योजनाबद्ध समाजीकरण को बुद्धिमता से सीखा जाए तथा अपनी जिन्दगियों में बुना जाए।

सकारात्मक समाजीकरण (Positive Socialization) : सकारात्मक समाजीकरण, आनन्ददायक तथा उत्तेजनाजनक अनुभवों पर आधारित होता है। हम उन्हीं लोगों को पसन्द करते हैं जो हमारे समाजिक सीखने की प्रक्रियाओं पर पूरा उतरते हैं उनमें सकारात्मक प्रोत्साहन, प्यार भरी देखभाल तथा ईनाम देने वाले अवसर प्राप्त होते हैं।

नकारात्मक समाजीकरण (Negative Socialization) : नकारात्मक समाजीकरण तब होता है जब दूसरे सज़ा, तीखी आलोचना या गुस्से का प्रयोग करके हमें कुछ सिखाते है। अधिकतर हम नकारात्मक समाजीकरण तथा थोंपने वाले लोगों को ना पसन्द करते हैं। सकारात्मक तथा नकारात्मक समाजीकरण दोनों ही प्रकार का मिश्रण होता है। हम खुश होते है खासकर यदि हम लाभदायक सूचना को पाते हैं जो हमें जीवन की चुनौतियों से लड़ने में सहायता करती है। नकारात्मक समाजीकरण अधिक होने से व्यक्ति दु:खी, हारा हुआ तथा जीवन में निराशावादी बन जाता है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. समाजीकरण का Concept।
2. नकारात्मक समाजीकरण।

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. समाजीकरण से क्या भाव है ? इसके प्रकार का उल्लेख करें।
2. बालक के विकास में समाजीकरण का क्या रोल है ?

ଓ ଓ ଓ

CHAPTER

12 समाजीकरण की एजेन्सियाँ (Agencies of Socialization)

शिक्षा को दूसरों तक पहुँचाने के लिए किसी एजेन्सी की आवश्यकता होती है सभी समाजों ने अपनी संस्कृति तथा सामाजिक धरोहर अगली पीढ़ी तक पहुँचाने के लि कुछ एजेन्सियां बनाई हैं। एजेन्सियां विशिष्ट संस्थाएं होती हैं जो शिक्षा का कार्य करती हैं वह प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तौर पर बच्चे की शिक्षा से जुड़ी होती हैं।

एजेन्सियाँ के प्रकार : समाजीकरण की एजेन्सियों को निम्नलिखित ढंग से वर्गीकरण कर सकते हैं :

1. समाजीकरण की औपचारिक एजेन्सियाँ : यहां सभी कुछ औपचारिक ढंग से किया जाता है। यह पूर्व-आयोजित होता है। इसके विशिष्ट उद्देश्य होते हैं तथा इन्हीं उद्देश्यों से यह कार्य होता है। यहाँ भली प्रकार परिभाषित तथा स्पष्ट पाठ्यक्रम होता है यह एजेन्सियाँ समाज द्वारा विकसित की जाती है ताकि वह स्पष्ट नियमों द्वारा उसकी ज़रूरतों को पूरा कर सके जैसे स्कूल/कालिज, अजायबघर, चर्च इत्यादि।

2. समाजीकरण की अनौपचारिक एजेन्सियाँ : यह एजेन्सियाँ प्राकृतिक ढंग से कार्य करती हैं। यहां स्पष्ट नियम नहीं होते, कुछ भी नियोजित नहीं होता। यह शिक्षा के कार्य को अप्रत्यक्ष तौर पर करते हैं। अनौपचारिक शिक्षा व्यवहार का वह बदलाव है तो आवश्यक तौर पर बगैर किसी सोची समझी कोशिश के स्वयं से हो जाता है। उदाहरणतय: परिवार/घर, समुदाय या समाज, मित्र समूह, संचार मीडिया।

समाजीकरण के औपचारिक तथा अनऔपचारिक एजेन्सियों के मध्य अन्तर

औपचारिक एजेन्सियाँ	अनौपचारिक एजेन्सियाँ
1. यहां औपचारिकताएं देखी जाती हैं।	1. कोई औपचारिकता नहीं होती।
2. यह अधिकतर मानव की सृजना होती है ताकि कोई विशिष्ट उद्देश्य प्राप्त किया जा सके।	2. यह प्राकृतिक है तथा अपने आप से ही होती है।
3. यहां औपचारिक प्रकार के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हैं।	3. कोई औपचारिक उद्देश्य नहीं होते।

औपचारिक एजेन्सियाँ	अनौपचारिक एजेन्सियाँ
4. यहां औपचारिक साधन प्रयोग किए जाते हैं।	4. कोई औपचारिक साधन प्रयोग नहीं किए जाते।
5. Serious कोशिशों करने के कारण दिमागी दबाव होता है।	5. प्राकृतिक होने के कारण दबाव नहीं होते।
6. इसके लिए सिर्फ पढ़े लिखे अध्यापक कार्य करते हैं।	6. कोई भी शिक्षा प्रदान कर सकता है।
7. अध्यापक तथा विद्यार्थी दोनों ही की जाने वाली कोशिशों के लिए जागरूक होते हैं।	7. न ही अध्यापक तथा न ही पढ़ने वाला शिक्षा की क्रिया के प्रति जागरूक होता है।
8. इसके लिए निश्चित स्थान होता है जो स्कूल, कॉलिज या कक्षा हो सकती है।	8. कोई निश्चित स्थान नहीं होता।
9. यहां शिक्षा एक दिन में पूरी हो जाती है।	9. यहां कभी खत्म न होने वाली शिक्षा होती है।
10. इसके पीछे एक संगठन होता है।	10. इसके पीछे कोई व्यवस्था या संगठन नहीं होता।
11. यहां प्रस्तावित प्रोग्राम होता है।	11. कोई प्रस्तावित प्रोग्राम नहीं होता।

घर
(Home)

घर का अर्थ : घर शिक्षा की सबसे पुरानी तथा महत्त्वपूर्ण अनौपचारिक क्रियाशील एजेन्सी है। यह सभी सामाजिक संस्थाओं का आधार है। घर या परिवार शिशु के जीवन में महत्त्वपूर्ण रोल अदा करता है। माता-पिता तथा परिवार के दूसरे सदस्यों की संगति में बच्चा अधिक क्रियाशील, दबंग, साहसी, सामाजिक हो जाता है।

घर या परिवार की परिभाषा :

1. **Pestalozzi** के शब्दों में, "घर, प्यार तथा स्नेह का केन्द्र है जो शिक्षा का सर्वोत्तम स्थान तथा बच्चे का प्रथम स्कूल होता है।"
2. **Friobelsays** के अनुसार, "माँ सबसे आदर्श अध्यापक है तथा घर में दी जाने वाली अनौपचारिक शिक्षा सबसे अधिक प्रभावशाली तथा प्राकृतिक है।"
3. **Handerson** के अनुसार, "बच्चे की शिक्षा घर में शुरू होती है।"

4. Rousean के शब्दों में, "माता सच्ची नर्स और पिता सच्चा अध्यापक
है।"

परिवार के कार्य

1. शारीरिक विकास में सहायक : परिवार का एक महत्त्वपूर्ण कार्य अच्छे शारी
विकास के लिए उचित अवसर प्रदान करना है। घर की जिम्मेदारी पौष्टिक भोजन, उ
कपड़े, आराम, खेल, स्वास्थ्य सहायता प्रदान करना है। माता-पिता बच्चों को कार्य व
के समय कार्य करने देते हैं तथा फिर उन्हें खेलने देते हैं। इस प्रकार घर या माता-
अपने बच्चों की शारीरिक वृद्धि तथा विकास में सहायता करते हैं।

2. बौद्धिक विकास में सहायक : परिवार का दूसरा महत्त्वपूर्ण कार्य बच्चे
बौद्धिक विकास के लिए अवसर प्रदान करना है। जैसे भाषा का विकास, स्वस्थ दिलचिस
का विकास इत्यादि। यदि परिवार में उच्च बौद्धिक वातावरण हो तो बच्चे का बौद्
विकास तीव्र होता है। यदि परिवार का वातावरण ठीक न हो तो बच्चे के बौद्धिक विक
में रुकावटें आती हैं।

3. स्नेह का स्थान : प्रत्येक घर बच्चों के लिए स्नेह का स्थान होता है। परिवार
मुखिया दूसरों को स्नेह प्रदान करता है।

4. सामाजिक बनाना : प्रत्येक घर बच्चों को अधिक से अधिक सामाजिक बन
है। घर में परिवार के विभिन्न सदस्यों के बीच प्रतिक्रियाएं होती है। बाहर आस-पड़ोस
विभिन्न लोग आपस में मिलते-जुलते रहते है जिससे वह एक दूसरे से मिलना सीख ज
हैं। बच्चे साथी समूह में रह कर अधिक सामाजिक बनते हैं।

5. मनोरंजन प्रदान करना : बच्चे की वृद्धि ओर विकास के लिए मनोरं
आवश्यक है, घर में मनोरंजन के साधन होते हैं। घर में रेडियो, टी.वी. तथा मनोरंजन
दूसरे साधन मौजूद होते हैं।

6. शिक्षा प्रदान करना : घर प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष तौर पर बच्चे को शिक्षित कर
है। पढ़े लिखे माता-पिता स्वयं बच्चे को शिक्षा देते हैं तथा अनपढ़ माता-पिता अप्रत्य
ढंग से शिक्षित करते हैं। शिक्षा का अर्थ बच्चे का पूर्ण विकास है।

7. नैतिक शिक्षा प्रदान करना : घर में रह कर बच्चे सच्चाई, ईमानदारी इत्या
नैतिक गुण सीखते है। अच्छी संगति का भी प्रभाव पड़ता है। नैतिक ट्रेनिंग परिवार
आधारिय कार्य है।

8. आर्थिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करना : घर परिवार की आर्थि
आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करता है। अच्छा घर पैसे का वास्तविक मूल्य सीखने
सहायता करता है। यह बच्चे को ठीक ढंग से कैसे कमाने तथा उपयोग करने में सहाय
होता है।

9. **संवेगात्मक विकास में सहायक :** बच्चे का संवेगात्मक विकास बच्चे की उचित वृद्धि तथा विकास के लिए महत्त्वपूर्ण है। घर में बालक संवेगात्मक स्थिरता सीखता है। घर बच्चे की स्वस्थ तथा सकारात्मक संवेगों के विकास में सहायता करता है जैसे सहानुभूति, स्नेह, हौंसला इत्यादि।

10. **धार्मिक विकास में सहायक :** धर्म तथा धार्मिक मान्यताएं बच्चे के व्यक्तित्व विकास में सहायक होती हैं। धार्मिक मान्यताओं का आधार घर पर बनता है। परिवार ही वह संस्था है जहां बच्चे धार्मिक विकास में पक्का होता है।

स्कूल (School)

स्कूल शिक्षा की क्रियाशील तथा औपचारिक एजेन्सी है। यह विशिष्ट एजेन्सी है जो सांस्कृतिक तथा सभ्यताओं की बढ़ती जटिलताओं में अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

स्कूल की परिभाषाएं :

1. **Ottaway** के अनुसार, "स्कूल एक सामाजिक खोज है जो समाज को सर्व करता है ताकि छोटे बच्चों का विशिष्टिकरण शिक्षण हो सके।"
2. **John Dewey** के अनुसार, "स्कूल एक विशेष वातावरण है जहां कुछ प्रकार की क्रियाएं तथा व्यवसाय प्रदान किए जाते हैं ताकि इच्छित दिशा में बच्चे का विकास हो सके।"
3. **Herbert Johnson** के शब्दों में, "स्कूल घर का सहायक (auxiliary) है जो माता-पिता द्वारा बनाया जाता है ताकि वह अपनी माता-पिता की जिम्मेदारियां पूरी होने में सहायता करे।"

शैक्षणिक एजेन्सी के तौर पर स्कूल की उत्पत्ति : भूतकाल में लोगों का जीवन बहुत सरल था। बच्चों की शिक्षा धार्मिक स्थलों तथा घरों में दी जाती थी। बच्चे अपने माता-पिता के साथ जीवन गुज़ारते थे। परिवार बच्चों को सभी क्रियाएं तथा अनुभव प्रदान करता था जो व्यक्तित्व के विकास तथा समाजीकरण के लिए आवश्यक है। जैसे-जैसे समाज जटिल बना तथा उसका ज्ञान का भण्डार बढ़ा, एक औपचारिक एजेन्सी जैसे स्कूल की आवश्यकता महसूस हुई। आधुनिक युग में स्कूल की शिक्षा जनता के लिए ज़रूरी समझी जाती है न कि मात्र उच्च स्तर के लिए।

स्कूल का महत्त्व तथा कार्य :

1. **व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए :** स्कूल व्यक्ति के पूर्ण विकास के लिए आवश्यक है- शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक, सामाजिक सौन्दर्यात्मक, Co-curricular, नैतिक तथा धार्मिक, अपनी पाठ्यक्रम तथा क्रियाओं जैसे बहस, declamation, excursions

तथा ट्रिप, प्रदर्शनी, variety प्रोग्राम, खेलों तथा games में स्कूल विकास के पूर्ण विक में सहायक होता है।

2. संस्कृति का स्थानांनतरण तथा समृद्धता : स्कूल सांस्कृतिक रिति-रिवाजों मुक्तिदाता है। यह समाज के सांस्कृतिक मूल्यों को विद्यार्थी में स्थानांनतरण करता है। संस्कृतिक को समृद्ध करने तथा संशोधित करने का कार्य करते हैं। इसके लिए विभि समारोह तथा त्योहार मनाए जाते हैं ताकि उन्हें संस्कृति का पूरा ज्ञान दिया जा सके। प्रकार यह बेहतर तथा खुशहाल समाज बना सकते हैं।

3. सामाजिक क्षमता को बढ़ावा देना : स्कूल सामाजिक सदाचारों का प्रमु केन्द्र माना जाना है। यह समाज का आईना है। यह समाज के उचित कार्य के लिए आद स्थापित करता है। अपने कर्त्तव्य तथा अधिकारों का सन्तुलन बना कर समाजिक क्षमता बढ़ाता है। यह प्रजातान्त्रिक सरकार में प्रभावकारी योगदान के लिए ट्रेनिंग प्रदान कर है।

4. उच्च मूल्य विकसित करना : स्कूल का अगला कार्य उच्च मूल्य विकसि करना है। नैतिकता विकसित करना आवश्यक है ताकि विद्यार्थी ठीक और गलत में अन्त कर सकें। स्कूलों में सत्यम, शिवम्, सुन्दरम के लिए सच्ची भावना विकसित कर आवश्यक है।

5. स्कूल के बाद समायोजन करना : ब्राउन के शब्दों में "स्कूलों की बालक व स्कूल के बाद समायोजन करने की तैयारी करने की सीधी जिम्मेदारी है।" स्कूल व नागरिक तैयार कर सकते हैं जो शारीरिक रूप से फिट, बौद्धिक रूप से जागरूव संवेगात्मक रूप से सन्तुलित, व्यावसायिक रूप से क्षमतावान तथा सामाजिक रूप अच्छी प्रकार व्यवस्थित हो। स्कूल के बाद का समायोजन व्यक्ति तथा समाज की भला के लिए आवश्यक है।

6. व्यवसायिक ट्रेनिंग देना : स्कूल का अगला कार्य व्यवसायिक ट्रेनिंग देना है **John Dewey** के अनुसार, "हम बच्चे को स्कूल में व्यवस्थित ढंग से व्यवसाय के लि सीखने के लिए भेजते है।" स्कूल व्यक्ति की आवश्यकताओं, योग्यताओं तथा अभिवृत्तियं के अनुसार ही व्यवसायिक ट्रेनिंग प्रदान करता है।

7. अन्तर्राष्ट्रीय समझ विकसित करना : स्कूल विद्यार्थियों के मनों में राष्ट्रीय समझ पैदा करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय समझ से भाव है मानवीय अधिकारों तथा कर्त्तव्यों के प्रति आदर, मनुष्यता के प्रति वचनबद्धता, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग तथा एक दूसरे के साथ मिलजुल कर रहना।

8. नेतृत्व के लिए ट्रेनिंग : स्कूल लीड़रशिप के लिए तैयार करने का अपना कर्त्तव्य निभाता है। एक देश तभी तरक्की करेगा यदि उसके पास सामाजिक, आर्थिक,

सांस्कृतिक, कलात्मक, औद्योगिक, नैतिक, धार्मिक तथा राजनीति के क्षेत्रों में योग्य लीडर

हैं।

9. माता-पिता को शिक्षा देना : स्कूल माता-पिता को शिक्षा देता है ताकि वह घर को बेहतर ढंग से चला सकें। स्कूल का कार्य अधूरा होगा यदि घर अनुकूलन वातावरण न बना सकें या बालक के पूर्ण विकास में सहायक न हो।

10. साथियों के प्रति अच्छा व्यवहार : स्कूल में बच्चे माता-पिता से दूर होते हैं तथा सुरक्षा तथा स्नेह ढूंढते हैं। वह अपनी कक्षा के साथियों का संग ढूंढते हैं। मित्रता की भावना घर की सुख सुविधाओं को भूलने में सहायक होती है।

11. शिक्षा की विभिन्न एजेन्सियों का समंज्वय : स्कूल को अपना कार्य अच्छी प्रकार करने के लिए एक ओर परिवार के सदस्यों के साथ तथा दूसरी ओर राज्य या सरकार के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध बनाने आवश्यक है। दोनों का पूर्ण सहयोग तथा सहारा आवश्यक है।

घर स्कूल की सांझेदारी
(Home School Partnership)

विनोबा भावे ने कहा है, "आदर्श स्थिति में घर को स्कूल तथा स्कूल को घर बनना चाहिए।" घर के सहयोग के बिना स्कूल अपना कार्य नहीं कर पाता। बालक पाँच से छः घण्टे स्कूल में तथा बाकी समय घर में बिताता है। स्कूल में आने से पूर्व ही घर में उसके व्यक्तित्व का आधार बनना शुरू हो जाता है।

ब्राउन के शब्दों में स्कूल का घर के प्रति तीन प्रकार से कर्त्तव्य है :

(*i*) पहले उसे बच्चे के घरेलू पृष्ठभूमि का पता होना चाहिए।

(*ii*) उसे बालक में सामाजिक प्रक्रिया के समूचे पैटर्न में परिवार के योगदान के प्रति गहरी प्रशंसा पैदा करनी चाहिए।

(*iii*) स्कूल परिवार के साथ सहयोग दे।

घर तथा स्कूल के मध्य सहयोग पैदा करने के उपाय
(Means of Securing Co-operation between Home and School)

1. Parents day : कम से कम एक बार माता-पिता को स्कूल में निमन्त्रण दें। विद्यार्थी स्वयं उन्हें स्कूल तथा वहां की क्रियाएं दिखाए। इस दिवस विभिन्न क्रियाएं जैसे ड्रामा, कविता तथा गीत सुनना इत्यादि व्यवस्थित करनी चाहिए।

2. माता-पिता अध्यापकों की संस्थाएं : यह संघ घर तथा स्कूल के मध्य आपसी समझ विकसित करने में सहायक होते हैं। घर तथा स्कूल को नज़दीक लाने का यह प्रमुख

साधन है। यह संघठन समय-समय पर मिलते रहें तथा शैक्षणिक समस्याओं पर चर्चा
माता-पिता के सम्मुख प्रस्तुत करने से पूर्व नए आदर्शों या सकीमों की योजना बना
चाहिए। इन संघठनों को आपसी मित्रता तथा साख को मजबूत बनाने की कोशिश

3. मैनेजिंग कमेटी में माता-पिता के प्रतिनिधित्व हों : माता-पिता के
कमेटी के सदस्य होने के कारण स्कूल के कार्यों में उनकी दिलचस्पी बढ़ जाती है

4. अध्यापकों का विद्यार्थियों के घर में मिलने आना : स्कूल के कुछ अध्या
की ड्यूटी होनी चाहिए कि वह विद्यार्थियों के घर जाएं। यह अध्यापक माता-पित
बच्चे की पूर्ण जानकारी प्रदान करें। वह घरेलू दशाओं का अंदाजा लगा सकते हैं
बच्चे की क्रियाओं और विकास को बेहतर बनाने के लिए माता-पिता को सलाह दे स
हैं। बाल-अपराध, पिछड़े, अपंग तथा समस्याग्रस्त बालकों के माता-पिता से बहुत
सम्पर्क बनाना चाहिए। यह भेंट बच्चों की बेहतर शिक्षा के लिए लाभदायक हो स
है।

5. माता-पिता को रिपोर्ट भेजना : माता-पिता का सहयोग पाने के लिए उ
पास बच्चों की पढ़ाई, खेलों, शारीरिक, बौद्धिक, संवेगात्मक, नैतिक तथा सामा
विकास, उसकी दिलचस्पियों, अभिवृत्तियों तथा आदतों इत्यादि की रिपोर्ट भेजनी आवश
है। इससे वह बच्चे के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं के विकास के बारे में जान स
हैं।

6. माता-पिता से रिपोर्ट के बारे में पूछना : माता-पिता को चाहिए कि वह घ
बच्चों की रिपोर्ट स्कूल में भेजे। इन रिपोर्टों में बच्चे की घर की दशाएं, खेल, भो
उसका माता-पिता, भाईयों, बहनों, दूसरे सम्बन्धियों तथा संगी-साथियों के साथ सम्ब
सम्मिलित होता है। स्कूल घर में बच्चों के जीवन को सुधारने के सुझाव दे सकते हैं

7. शैक्षणिक कॉन्फ्रैन्स : शैक्षणिक मीटिंग तथा कान्फ्रैंस इसकी मीटिंग की यो
इस प्रकार बनाएं जिसमें माता-पिता, अध्यापक, राज्य के अधिकारी योगदान डालें।
कान्फ्रैंसों में बच्चों के जीवन को बेहतर बनाने के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं।

8. माता-पिता के लिए विशेष मनोरंजन के प्रोग्राम : स्कूलों को चाहिए
माता-पिता के लिए विशेष मनोरंजन के प्रोग्राम व्यवस्थित करें। ड्रामों द्वारा कई सामाजि
तथा शैक्षणिक समस्याएं दर्शाई जा सकती हैं।

9. माता-पिता को स्कूल के कार्यक्रमों तथा समारोहों में नियन्त्रित करना
स्कूल को चाहिए कि वह माता-पिता को विभिन्न स्कूल के समारोहों के लिए निमन्त्रि
करें। जैसे गणतन्त्र दिवस, स्वतन्त्रता दिवस, मानवीय अधिकार दिवस, UNO दिवस
ईनाम वितरण दिवस, खेलों का दिवस, Parents day इत्यादि। इस प्रकार माता-पिता क

पता चलता है कि उनके बच्चे co-curricular क्रियाओं में कितना भाग लेते हैं। इससे घर-स्कूल सहयोग भी बढ़ता है।

सारांश में घर तथा स्कूल शिक्षा की विभिन्न एजेन्सियां हैं। स्कूल औपचारिक प्रकार की तथा घर अनौपचारिक प्रकार की एजेन्सी है। दोनों ही बालक के व्यवहार को बदलना चाहते हैं। इससे अच्छे घर तथा अच्छे समाज का निर्माण होता है। दोनों के मध्य समंवजय पूर्ण स्थिति को बेहतर बना देता है।

राज्य (औपचारिक एजेन्सी)

शिक्षा हमारे प्रजातान्त्रिक देश में राज्य का विषय है। यह राज्य का कर्त्तव्य तथा जिम्मेदारी है कि वह लोगों को ठीक प्रकार की शिक्षा प्रदान करे। राज्य की सरकारें स्कूल खोलती हैं तथा इस संस्था के समतल कार्य के लिए सुविधाएं प्रदान करती है। राज्य वहां रहने वाले लोगों की भलाई के लिए प्रत्येक कार्य करती है।

राज्य का अर्थ

Kandel के मतानुसार, "राज्य एक व्यवस्थित राजनीतिक समुदाय है जिसकी सरकार लोगों द्वारा मान्यता प्राप्त है।"

John Dewey के अनुसार, "राज्य लोगों का संगठन है जो अफसरों द्वारा प्रभावित होता है ताकि उसके सदस्यों द्वारा बाँटी जाने वाली दिलचस्पियों की सुरक्षा हो सके।"

Aristotle कहता है, "राज्य परिवारों तथा गांवों का समूह है जिनका जीवन अपने आप में सम्पन्न तथा आत्म-निर्भर होता है जिसके द्वारा हम खुशहाल तथा सम्मानित जीवन जीते हैं। राज्य अच्छे जीवन के लिए होता है न कि मात्र जीवन के लिए।"

सारांश में राज्य की निश्चित सीमा होती है तथा उस सीमा में रहने वाले मनुष्यों के बीच मेल मिलाप होता है। सरकार तथा राजकीय सत्ता की व्यवस्थित संरचना होती है। राज्य के महत्त्वपूर्ण अंग है :

1. क्षेत्र
2. जनसंख्या
3. सरकार
4. राजकीय सत्ता

Bertrand Russel के शब्दों में, "आधुनिक राज्यों का कार्य कुछ हद तक आन्तरिक तथा कुछ हद तक बाहरी है। विस्तृत तौर पर कहा जाए तो राज्य के आन्तरिक उद्देश्य अच्छे हैं जिनमें सड़के, प्रकाश, शिक्षा, पुलिस, कानून, पोस्ट-आफिस इत्यादि मुद्दे हैं। क्योंकि पूरे समुदाय के बच्चों को शिक्षा प्रदान करना बहुत महंगा पड़ता है, राज्य इसमें बहुत सहायता कर सकता है।"

राज्य के कार्य
(Functions of the State)

1. उचित स्कूल की सुविधा देना : राज्य को चाहिए कि वह विभिन्न प्रका स्कूल स्थापित करे जैसे प्राइमरी, सैकण्डरी तथा तकनीकी इत्यादि जैसे वहां के लोगों आवश्यकता हो।

2 प्राइमरी शिक्षा को ज़रूरी करना : राज्य को चाहिए कि वह प्राइमरी स्तर शिक्षा को फ्री, सबके लिए तथा ज़रूरी करे। वह माता-पिता पर बच्चों को स्कूल भे के लिए जोर दे। पंजाब में ज़रूरी प्राइमरी शिक्षा एक्ट 1960 में पास किया गया।

3. आर्थिक सहायता प्रदान करना : राज्य को चाहिए कि वह शिक्षा के लि आर्थिक योजनाएं बनाए। प्राइमरी तथा सैकण्डरी स्कूल बनाने के साथ-साथ उच्च शि के लिए युनिवर्सिटी तथा व्यवसायिक कॉलिज भी स्थापित करने की आवश्यकता राज्य मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति तथा आर्थिक सहायता प्रदान करके सहायता कर सक है। प्रत्येक राज्य के पास आर्थिक साधन मौजूद होते है।

4. शिक्षा के लक्ष्य तथा उद्देश्य प्रदान करना : राज्य शिक्षा से सम्बन्धित लक्ष्य त उद्देश्य बनाने के लिए पॉलिसी बनाता है। इन पॉलिसियों को शैक्षिक संस्थाओं द्व अपनाना पड़ता है। भारत जैसे प्रजातान्त्रिक देश में शिक्षा का उद्देश्य राष्ट्रीय अखण्डता त अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना विकसित करना, व्यवसाय में निपुणता प्राप्त करना, नेतृत्व लिए ट्रेनिंग देना तथा व्यक्तित्व का निर्माण करना है।

डॉ. राधाकृष्णन के शब्दों में, "हमारा शैक्षिक सिस्टम उन सिद्धान्तों को ढूंढे सामाजिक सिस्टम के लिए निर्देश देने का कार्य करें जो सभ्यता वह तैयार करना त बनाना चाहते हैं।"

5. पाठ्यक्रम की योजना बनाना : राज्य सरकारों को शिक्षा के विभिन्न स्तरों लिए पाठ्यक्रम फ्रेम करना चाहिए। इसके लिए शिक्षा से जुड़े निपुण व्यक्तियों व सहायता ली जा सकती है। पाठ्यक्रम की योजना विकसित हो रहे समाज की आवश्यकताओ के अनुसार बनाई जाती है।

6. कमीशन तथा कमेटियां नियुक्त करना : शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर वर्तमान की दशाओं का अध्ययन करने के लिए राज्य कमीशन तथा कमेटियां नियुक्त करता है। यह कमीशन तथा कमेटियां शिक्षा के विभिन्न पहलूओं का विकास करने के लिए उचित चरणों का सुझाव देती है जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, अध्ययन की विधियां, परीक्षा का सिस्टम, co-curricular कार्य इत्यादि।

7. शिक्षा के अनुसन्धान तथा प्रयोग प्रदान करना : राज्य शिक्षा के अनुसन्धान तथा प्रयोगात्मक कार्य के लिए शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उचित व्यवस्था करता है। जैसे

पाठ्यक्रम, शिक्षण की विधियां, मूल्यांकन की विधियां, निर्देश तथा कौन्सलिंग इत्यादि। हमारे देश में इस दिशा में महत्त्वपूर्ण योगदान करने वाली संस्था है। National Council of Educational Research and Training (NCERT) जिसे शिक्षा की केन्द्रिय मिनिस्ट्री सहायता देती है।

इसके इलावा राज्य सैमिनार तथा वर्कशाप की व्यवस्था भी करता है। अनुभवी तथा गुणी अध्यापक, सामाजिक तथा प्रौढ़ शिक्षा प्रदान करना भी राज्य का कार्य है। आर्थिक ट्रेनिंग, सांस्कृतिक ट्रेनिंग, सामाजिक ट्रेनिंग, राजनीतिक ट्रेनिंग का उद्देश्य शिक्षा से सम्बन्धित दूसरी एजेन्सियों के साथ सहयोग बनाए रखना है।

साथी समूह

लड़के तथा लड़कियां अपना समूह बना लेते है। एक एजेन्सी के तौर पर साथी समूह का कोई महत्त्व नहीं है, परन्तु सच्चाई यह है कि इसका शिक्षा में बहुत महत्त्व है। साथी समूह में बेहतर अध्ययन होता है।

कक्षा की स्थिति में अध्यापक तथा विद्यार्थी के पद में बहुत अन्तर होता है। इस समय अध्यापक को विद्यार्थी के स्तर तक आना पड़ता है ताकि सीखने की क्रिया बेहतर हों।

साथी समूह की विशेषताएं

1. साथी समूह में सभी का पद एक समान होता है।
2. वह और साथी सम्मिलित करने के लिए आज़ाद होते है।
3. अभिव्यक्ति की आज़ादी होती है।
4. अपनी भावनाओं को खुले ढंग से प्रकट कर सकते हैं।
5. वह आपस में एक समान दिलचस्पियों से जुड़े होते हैं।

साथी-समूह के कार्य

1. समाजीकरण : साथी समूह में सभी एक दूसरे के साथ ढंग से व्यवहार करना, समूह में अच्छे ढंग से रहना तथा अपने समूह को मजबूत बनाना सीख जाते हैं। इस प्रकार अच्छी बातचीत (interaction) बनती है।

2. व्यवहार का सुधार : साथी समूह में स्वतन्त्र वातावरण होने से सभी अपने आपको व्यक्त कर सकते हैं। स्वयं-निर्मित वातावरण में प्रत्येक बेहतर व्यक्ति बनकर उभरता है।

3. समूह की भावना : बालक अपने आपको समूह का सदस्य मानता है तथा सुरक्षित महसूस करता है। इस प्रकार समूह की भावना विकसित होती है।

4. पूर्ण विकास में सहायक : स्वतन्त्र वातावरण होने से सभी अपने आपको व
कर सकते हैं, इकट्ठे सीखते हैं, इकट्ठे खेलते हैं। इससे उनका पूर्ण विकास होता है।

5. स्वतन्त्र ढंग से कार्य करना सिखाता है : साथी समूह बालकों को जीने का
सिखाता है जहाँ वह स्वयं पर निर्भर हो जाते हैं।

6. स्वस्थ अभिवृत्ति बनाने में सहायक : साथी समूह में प्रत्येक बच्चे को दू
का सहयोग मिलता है जिससे उनमें स्वस्थ अभिवृत्तियां जैसे धैर्य, प्यार, स्नेह, बलि
इत्यादि का विकास होता है।

7. व्यक्तित्व विकास : साथी समूह व्यक्ति के पूर्ण विकास में सहायक होते

8. साथी समूह किशोर की सृजनात्मक सोच को विकसित करता है।

कई बार साथी समूह पर कोई नियन्त्रण न होने के कारण भारी नुकसान हो सक
है। अध्यापक द्वारा बनाए गए साथी समूह जो आपसी चर्चा, सीखने, गृह कार्य क
इत्यादि के लिए बनाएं जाते हैं, अच्छे नतीजे देते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. समाजीकरण की औपचारिक तथा अनऔपचारिक एजेन्सियों के मध्य अन्तर
2. साथी समूह के कार्य।

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. बच्चे के विकास में समाज का क्या प्रभाव रहता है ?
2. समाजीकरण की विभिन्न एजेन्सियों का उल्लेख करें।

ॐ ॐ ॐ

CHAPTER 13

सामाजिक तथा सांस्कृतिक बदलाव तथा इसका बाल विकास पर प्रभाव (Social and Cultural Change and their Impact on Child Development)

सामाजिक बदलाव का अर्थ

मानवीय समाज में सभी प्रकार के बदलाव आते रहते हैं। जब यह बदलाव मनुष्य के जीवन में होता है तथा सामाजिक सम्बन्ध प्रभावित होते हैं, इन बदलावों को सामाजिक बदलाव कहते हैं। सामाजिक बदलाव से भाव लोगों के जीवन शैली में आने वाले संशोधन हैं। यह इसलिए होता है क्योंकि सभी समाज असन्तुलन की अवस्था में हैं। सामाजिक बदलाव से अर्थ किसी समय में सामाजिक प्रक्रिया में देखे जाने वाले बदलाव हैं।

सामाजिक बदलाव से भाव समाज में बदलाव है तथा समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। इसलिए सामाजिक बदलाव सामाजिक सम्बन्धों में बदलाव है। सामाजिक सम्बन्ध सामाजिक प्रक्रियाएं, सामाजिक पैटर्न तथा सामाजिक बातचीत है। इनमें समाज के विभिन्न हिस्सों की आपसी क्रियाएं तथा सम्बन्ध हैं। इस प्रकार सामाजिक बदलाव से भाव सामाजिक क्रियाओं, सामाजिक पैटर्न, सामाजिक बातचीत या सामाजिक व्यवस्था में बदलाव हैं। सामाजिक बदलाव को परिभाषित करने के लिए कह सकते है कि यह सामाजिक व्यवस्था में बदलाव है जिसमें समाज की संरचना तथा कार्य आते हैं। जब हम देखते हैं कि बड़ी संख्या में लोग अपने पूर्वजों से भिन्न क्रियाएं कर रहे हैं तो उसे सामाजिक बदलाव कहेंगे।

सामाजिक बदलाव की थ्योरी देने वाले यह मानते हैं कि बदलाव में सभी सामाजिक सिस्टम बदल रहे हैं। जीवन चक्र में जनसंख्या की संरचना बदलती है तथा इसी प्रकार व्यवसाय या रोल बदलते हैं। समाज के सदस्यों में शारीरिक बदलाव आते है ; सदस्यों के बीच लगातार बातचीत होने से आशाएं तथा मनोवृत्तियां बदल जाती हैं। नया ज्ञान लगातार प्राप्त होता रहता है तथा आगे चलता रहता है।

सामाजिक बदलाव की परिभाषाएं

Kingsley Davis कहते हैं कि सामाजिक बदलाव में वह बदलाव आते हैं जो सामाजिक व्यवस्था में होते है यह हैं समाज की बनावट तथा कार्य।

Maclver तथा **Page** के शब्दों में, ''सामाजिक बदलाव वह क्रिया है जो प्रकार के बदलावों के प्रति प्रतिक्रिया करता है, व्यक्ति के जीवन में आने वाली दश में बदलाव, व्यक्ति की अभिवृत्ति तथा विश्वास में बदलाव, वह बदलाव जो मनुष्य नियन्त्रण से आगे है जैसे चीज़ों के जैविक तथा भौतिक बदलाव।''

Morris Ginsberg ने परिभाषा दी है कि सामाजिक बदलाव सामाजिक संर में बदलाव है। उदाहरणतय: समाज के आकार, संरचना, उसके हिस्सों के सन्तुलन में संगठन के प्रकार।

Merril तथा **Eldrege** के अनुसार, ''बदलाव से भाव है कि बहुसंख्या में त उन क्रियाओं से भिन्न क्रियाओं में संलगन हैं जिनमें कुछ समय पहले उनके पूर्वज संल थे।''

Anderson तथा **Parker** ने परिभाषा दी है, ''सामाजिक बदलाव प्रक्रियाओं सामाजिक रूपों की संरचना या कार्य प्रणाली में बदलाव है।''

M.D. Jenson के अनुसार, ''सामाजिक बदलाव से भाव कार्य करने के ढंग त लोगों की सोच में संशोधन है।''

H.T. मजूमदार कहते हैं, ''सामाजिक बदलाव को नया फैशन या mode जो पुर को संशोधन करके या उसका स्थान लेकर बनता है, लोगों के जीवन में या समाज संचालन में होता है।''

सभी परिभाषाओं का विश्लेषण करने के बाद हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि प्रकार के बदलावों को सामाजिक बदलाव कह सकते हैं। दो प्रकार के बदलाव हैं (i) समाज की संरचना में बदलाव (ii) सामाजिक मूल्य तथा मापदण्डों में बदलाव ज लोगों को जोड़े रखता है तथा सामाजिक व्यवस्था बनाए रखने में सहायक होता है। इ दोनों बदलावों को अलग नहीं देखना चाहिए क्योंकि एक बदलाव अपने आप दूसर बदलाव ला देता है।

उदाहरणतय: लोगोंकी अभिवृत्ति में बदलाव सामाजिक संरचना में बदलाव ला देता है। उन्नीसवीं सदी के शुरू में यूरोप में छोटे परिवार का प्रचलन चला। जो लोगों ने इच्छा से अपनाया। इस प्रकार लोगों की अभिवृत्ति में बदलाव सामाजिक संरचना बदलने के लिए उत्तरदायी होता है। दूसरी ओर सामाजिक संरचना में बदलाव समाज के सदस्यों की अभिवृत्ति में बदलाव ले आता है।

ग्रामीण समाज के औद्योगिक समाज में बदलाव समाज की संरचना में बदलाव नहीं है, उदाहरणतय: अद्यौगीकरण ने उत्पादन के घरेलू सिस्टम को नष्ट कर दिया है। इससे स्त्रियां घर से फैक्टरी तथा ऑफिस में पहुँच गई हैं। स्वतन्त्रता स्त्रियों के व्यक्तित्व की

सांस्कृतिक बदलाव आपस में इतने जुड़े हुए हैं कि इनको अलग करना कठिन बन गई है। इसलिए दोनों प्रकार के बदलावों का अलग नहीं बल्कि इकट्ठा ही अध्ययन करना चाहिए।

सामाजिक बदलाव की समस्या समाजशास्त्र जाँच का केन्द्र है। यह इतना जटिल है कि व्यक्ति के जीवन में महत्त्वपूर्ण है कि हमें सामाजिक बदलाव की क्यों तथा कैसे पड़ना पड़ता है।

सामाजिक बदलाव की विशेषताएं

सामाजिक विज्ञान के कई अनसुलझी समस्याओं सामाजिक बदलाव के तथ्य ने कई चुक दिमागों को मोहित किया है तथा समाज विज्ञान में कई बगैर सुलझी समस्याएं है। माज बदलाव की घटना सरल नहीं अपितु जटिल है। यह अनसुलझी समस्याएं हमारे पर दबाव डालती हैं कि उचित उत्तर ढूंढा जाए। सामाजिक बदलाव को समझने के लिए, समाज बदलाव की प्रकृति को जाँचना आवश्यक है जो इस प्रकार हैं :

1. सामाजिक बदलाव सामाजिक है : समाज सामाजिक सम्बन्धों का जाल है। सामाजिक बदलाव से भाव सामाजिक सम्बन्धों के सिस्टम में बदलाव है। सामाजिक सम्बन्धों को सामाजिक प्रक्रियाएं, सामाजिक बातचीत तथा सामाजिक संगठन की शर्तों में समझा जाता है। उसी बदलाव को सामाजिक बदलाव कहा जा सकता जिसका प्रभाव समुदाय में महसूस किया जा सकता है। वह बदलाव जिसका सबके लिए महत्त्व हो या जो जनसंख्या का महत्त्वपूर्ण हिस्सा हो उसे सामाजिक बदलाव कहते हैं।

2. सामाजिक बदलाव सार्वभौमिक है : बदलाव कुदरत का कानून है। सामाजिक संरचना, सामाजिक संगठन तथा सामाजिक संस्थाएं सभी बदलती रहती हैं। सभी समाज बदलते रहते हैं। कोई भी समाज स्थिर नहीं रहता। कोई भी समाज चाहे कितना भी परम्परागत तथा रूढ़िवादी क्यों न हो, बदलता आवश्यक है। व्यवस्थाएं होनी शुरू हो जाती हैं तथा संघर्ष समाप्त हो जाता है। यहां क्रान्ति आती है तथा सहमति बनती है।

3. सामाजिक बदलाव ज़रूरी कानून की भांति होता है : बदलाव कुदरता का कानून है। सामाजिक बदलाव भी प्राकृतिक है। बदलाव न रोका जा सकता है तथा न ही बदला जा सकता है। प्राकृतिक रूप से हम बदलाव चाहते हैं तथा इसके लिए सामाजिक बदलाव आवश्यक है। **Green** के अनुसार, "बदलाव की उत्साही प्रतिक्रिया हमारे जीवन का हिस्सा होती है।"

4. सामाजिक बदलाव निरन्तर होता है : समाज में अंतहीन बदलाव आते है। हम बदलावों को रोक नहीं सकते। समाज के बदलाव बनते है तथा समाप्त हो जाते हैं। समाज सामाजिक सम्बन्धों का सिस्टम है, परन्तु यह सामाजिक सम्बन्ध स्थायी नहीं हैं। समाज को हम अजायबघर में संरक्षित नहीं कर सकते। इतिहास के शुरू से इस दिन तक समाज

का तांता लगा हुआ है। सामाजिक बदलाव मानवीय इतिहास के विभिन्न स्तरों में निरंतर है। पुराने पत्थर युग का सिस्टम आज के कम्प्यूटर सिस्टम से बिल्कुल भिन्न है।

5. सामाजिक बदलाव में मूल्यहीन निर्णय होते हैं : सामाजिक बदलाव नैतिक अनैतिक नहीं होते। 'क्या होना चाहिए' इसका प्रश्न सामाजिक बदलाव की प्रकृति में होता है। सामाजिक बदलाव नैतिक रूप से तटस्थ होता है। अनुभव सिद्ध सच्चाई लिया गया सही निर्णय इस बात से अलग होगा जो क्या होना चाहिए के बारे में निर्णय लिया गया है।

6. सामाजिक बदलाव समय के कारकों से बंधा है : सामाजिक बदलाव तीव्र होते हैं। यह समय से होते हैं क्योंकि समाज समय अनुक्रमी के रूप में मौजूद है। इस लिए समय के कारकों का समझना आवश्यक है। जैसे जाति सिस्टम जो परम्परा भारतीय समाज में बहुत मजबूत था, आधुनिकयुग में बदल रहा है। आज से 50 वर्ष के मुकाबले भारत में अधिक औद्योगिकरण हो गया है। यह सामाजिक बदलाव समय समय पर अलग होते हैं क्योंकि यह बदलने वाले कारक भी बदलते समय में एक सम नहीं रहते।

7. सामाजिक बदलाव की दर तथा गति असमतल है : प्रत्येक समाज के लि सामाजिक बदलाव आवश्यक है, इसकी दर तथा गति एक समान नहीं होती है। कु समाजों में यह दर तेज तथा कुछ में धीमी होती है। उदाहरणतय: आधुनिक अद्यौगिकर शहरी समाज में स्पीड़ तथा बदलाव अधिक होता है जबकि परम्परागत, कृषि तथा ग्रामी समाज में यह बदलाव बहुत कम तथा धीमा होता है।

8. सामाजिक बदलाव की निश्चित भविष्यवाणी करनी असम्भव है : य निश्चित करना बहुत कठिन है कि सामाजिक बदलाव कितना होगा। सदियों पहले ज समाज था वह आज नहीं था तथा सैकडों साल बाद कैसा होगा बताना असम्भव है उदाहरणतय: अद्यौगीकरण तथा शहरीकरण ने हमारे परिवार तथा विवाह के सिस्टम में क परस्पर सम्बन्धित बदलाव किए हैं। परन्तु हम यह नहीं कह सकते कि भविष्य सामाजिक सम्बन्ध का यह आकार कैसा होगा। इसी प्रकार भविष्य में हमारे विचा मनोवृत्ति तथा मूल्य क्या होंगे, यह भी बताना कठिन है।

9. सामाजिक बदलाव शृंखला : अभिक्रिया का अनुक्रम है :- समाज आपसी सम्बन्धी भागों का बदलने वाला सिस्टम है। एक भाग में होने वाला बदलाव दूसरे भागों में बदलाव शुरू कर देता है। उदाहरणतय: स्त्रियों को स्वतन्त्रता मिलने के साथ शिक्षित लड़कियां परम्परागत परिवार तथा विवाह को अपने अनुरूप पसन्द नहीं करतीं। उन्हें सास-ससुर के साथ रहना मुश्किल लगता है। उन्हें अलग घर चाहिए। शादियों में स्थिरता नहीं रही। स्त्रियों के बदलते मूल्यों ने पुरूषों के मूल्य भी बदल डाले हैं। इस प्रकार समाज के एक पहलू में बदलाव दूसरे पहलू में बदलाव ला देता है।

10. **सामाजिक बदलाव : बहु-संख्यक कारकों द्वारा होता है :-** सामाजिक बदलाव कई कारकों मे होता है। कई कारक मिल कर बदलाव का कारण बनते हैं। M. Ginsberg के अनुसार, "बदलाव कई कारकों का जमावड़ा है जो एक दूसरे के साथ interaction करते हैं।" इस प्रकार कई कारक मिल कर सामाजिक बदलाव लाते हैं।

11. **सामाजिक बदलाव अधिकतर संशोधनो या प्रतिस्थापनों का होता हैं :** सामाजिक बदलाव को संशोधन या प्रस्थिापन भी कह सकते हैं। यह भौतिक वस्तुओं या सामाजिक सम्बन्धों का संशोधन है। जैसे हमारे खाने के ढंग बदल गए हैं। अब Ready-to-eat सामग्री जैसे कार्नफ्लेक, ब्रेड, पिज़ा, पास्ता आ गए है। इसी प्रकार सामाजिक सम्बन्ध हैं। उदाहरणतय: बड़ी सत्तावादी परिवार छोड़ा equalitarian परिवार बन गया है। आज हमारी मनोवृत्ति स्त्रियों के स्तर, अधिकार, धर्म, रीति-रिवाजों सह-शिक्षा के प्रति संशोधित हो चुका है।

12. **मामाजिक बदलाव** : छोटे स्तर या बड़े स्तर पर हो सकता है : छोटे स्तर के बदलाव से भाव समूह तथा संगठनों के भीतर का बदलाव जबकि बड़े स्तर के बदलाव समाजों, संस्कृति तथा सभ्यता में होते हैं।

W.E. Moore के अनुसार, "छोटे स्तर के बदलाव से भाव सामाजिक संरचना की विशेषताओं में बदलाव जो सामान्य सिस्टम में शामिल होने के साथ समाज के रूप में पहचान योग्य है तथा इसका सामान्य सरचना (समाज) पर प्रमुख तौर पर तत्कालीन तथा मुख्य तौर पर प्रभाव नहीं पड़ता।"

13. **छोटी अवधि तथा बड़ी अवधि के बदलाव :** बदलाव के परिमाण में बदलाव की अगली विशेषता समय अवधि है। छोटे-स्तर पर होने वाला बदलाव लम्बे समय तक चलते बड़े-स्तर पर पहुँच जाता है जैसे 1960 से भारत में मृत्यु दर घटी है।

14. **सामाजिक बदलाव शान्त या हिंसात्मक हो सकता है :** शान्त से भाव धीमी गति है। जबकि हिंसात्मक से भाव सामाजिक बदलाव केलिए शारीरिक ताकत या धमकी का प्रयोग है। जल्दी होने वाले बदलाव प्रभावित समाज की भावनाओं, मूल्यों तथा आशाओं के लिए हिंसात्मक हो सकते हैं।

W.E. Moore के अनुसार, "एक सच्ची तबदीली, संगठन तथा समाज के मापदण्डों में तेज तथा आधारीय बदलाव, परिभाषा से तेज, सतत् तथा हिंसक होती है परन्तु अच्छी प्रकार व्यवस्थित, अनियमितता से विपरीत हो सकती है।" शांति से भाव यह बदलाव है जो सहमति, स्वीकृति तथा प्राप्ति से प्राप्त होता है और जो समाज के मापदण्डों की मजबूरी से लागू किए जाते हैं।

15. **सामाजिक बदलाव योजनाबद्ध या बगैर योजना के हो सकते हैं :** सामाजिक बदलाव प्राकृतिक प्रकार से या मनुष्य द्वारा किए जा सकते हैं। बगैर योजना के बदलाव

प्राकृतिक आपदाओं द्वारा होते है जैसे सूखा पड़ना, बाढ़ आना, भूकम्प, लावा फट इत्यादि। इस प्रकार सामाजिक बदलाव प्राकृति का न बदलने वाला नियम है। प्रकृति क भी आराम नहीं करती।

योजनाबद्ध बदलाव मनुष्य के द्वारा योजना, प्रोग्राम तथा प्रोजैक्ट बना कर किए ज हैं ताकि बदलाव को तय तथा नियन्त्रण किया जा सके।

मनुष्य प्रकृति से जिज्ञासु होता है। उसकी जिज्ञासा कभी शान्ति नहीं होती। मनु की आवश्यकताएं प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लि उसे बदलाव चाहिए।

16. सामाजिक बदलाव अंतजार्त या बहिजार्त हो सकता है : अंतजार्त सामाजि बदलाव वह बदलाव हैं जो समाज द्वारा या उसके सिस्टम द्वारा लागू किए जाते उदाहरणतय: संघर्ष, संचार, क्षेत्रियवाद इत्यादि।

बहिजार्त सामाजिक बदलाव समाज को आधारिय रूप से स्थिर, भली प्रकार एकीकृ सिस्टम देखता है जो मात्र बाहरी ताकतों से ही बदलता है जैसे संसार की स्थिति, यु सूखा इत्यादि या दूसरे समाजों द्वारा व्यवस्था में लागू होने वाले नए कारक। उदाहरणत तकनीकी स्थानांनतरण तथा प्रतिभा पलायन, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक साम्राज्यवाद व समाजों की संस्कृतियों को आपस में मिला देते हैं।

17. व्यवस्था के भीतर तथा व्यवस्था का बदलाव : Talcott Persons विभिन्न प्रकार के बदलाव में व्यवस्था के भीतर तथा व्यवस्था के बदलाव का विश्लेष किया है। यह व्यवस्था की चारदिवारी के भीतर चल रहे बदलाव की व्यवस्थित प्रक्रि है यह उसके विपरीत है जिसमें व्यवस्था की संरचना में बदलाव आते हैं। संघर्ष की थ्यो देने वालों ने कहा है कि व्यवस्था के भीतर बदलाव आने से पूरी व्यवस्था ही बदल जा है।

सारांश में कुछ अधिकतर होने वाले बदलाव के कारण हैं, बदलाव का परिमा (छोटे-स्तर, बड़े-स्तर पर बदलाव), समय की योजना, दिशा, बदलाव की दर, हिंसा क मात्रा। इन आयामों को गुणों की भांति नहीं लेना चाहिए बल्कि यह अबाध क्रम में एक चरण से दूसरे की ओर चलता है (जैसे क्रांतिकारी बनाम विकासवादी) बदलाव की दूसरी श्रेणियां हैं : सतत् बनाम अकड़ा हुआ, व्यवस्थित बनाम अनियमित तथा प्रभावित होने वाले लोग या बदलाव में शामिल लोग। बदलाव के कोई कड़े तय किए हुए नियम नहीं है।

सामाजिक बदलाव के कारक : बदलाव का सामाजिक उल्लेख मात्र बदलाव की संरचना को ही नहीं बल्कि इस बदलाव को प्रभावित करने वाले कारकों को भी लेना है। सामाजिक बदलाव सभी समाजों में तथा सभी प्रकार के समय में होता है। इसलिए हमें बदलाव लाने वाले कारकों का पता होना चाहिए।

1. **तकनीक कारक :** तकनीक सामाजिक बदलाव का महत्त्वपूर्ण कारक है। जब वैज्ञानिक ज्ञान को जीवन की समस्याओं में प्रयोग किया जाता है, वह तकनीक बन जाती है। अपनी इच्छाओं, आवश्यकताओं को पूरा करने तथा जीवन को सुविधाजनक बनाने के लिए मनुष्य सभ्यता का विकास करता है। प्रत्येक तकनीक तेजी से बढ़ कर कम से कम समय में अधिक से अधिक नतीजे उपलब्ध कराना सम्भावित करती है।

W.F. Ogburn के शब्दों में, "तकनीक हमारे वातावरण जिसमें हम व्यस्थित होते हैं, बदल कर समाज को बदल देती है। भौतिक वातावरण तथा इन बदलावों के साथ की गई व्यवस्था सामान्य तौर पर हमारे रीति-रिवाजों तथा संस्थाओं को सुनियोजित कर देती है।"

समाज में आने वाला बदलाव तकनीकी बदलाव की दर से जुड़ा होता है। तकनीकी विकास से ही आधुनिक सभ्यता का विकास हुआ है। इससे समाजों का औद्योगीकरण करने, शहरीकरण करने, विशिष्टीकरण करने, Bureaucratize करने तथा आधुनिक समाज की विशेषताएं विकसित करने में सहायता मिलती है।

आधुनिक समाज नई तकनीकों, नए अविष्कार, सृजनात्मकता की नई विधियां तथा जीवन के स्तरों पर अधिक से अधिक निर्भर होने लग गया है। इस प्रकार तकनीक वरदान है जो हमारे जीवन को सुविधाजनक बनाता है। इससे नए व्यवसाय तथा नौकरियां विकसित हुई हैं।

तकनीक द्वारा सामाजिक संरचना में लाए जाने वाले बदलाव

1. **फैक्टरी व्यवस्था का जन्म :** मशीनों तथा उद्योगों से व्यक्तिगत सृजनात्मकता समाप्त होती जा रही है। इससे बड़ी फैक्टरियों की सृजना हुई है जहाँ हज़ारों लोगों को व्यवसाय मिलता है तथा अधिकतर कार्य मशीनों द्वारा ही हो जाता है।

2. **शहरीकरण :** बड़ी-बड़ी फैक्टरीयां लगने से बड़े शहर बन गए हैं। ग्रामीण क्षेत्रों के लोग रोज़गार के लिए शहरों की ओर आ रहे हैं। इसके साथ सारी Civic सुविधाएं जैसे मैडिकेट केन्द्र, स्कूल, कालेज, हस्पताल तथा मनोरंजन के क्लब भी बन गए हैं।

3. **नई कृषि तकनीकों का विकास :** उद्योग में मशीनरी आने से कृषि में नई तकनीकों का विकास हुआ है। कृषि का उत्पादन नए रसायनिक ऊर्वकों के प्रयोग से बढ़ गया है। इन सभी कारकों से देश में उत्पादन बढ़ा है। भारत में तकनीक का प्रभाव बहुत अधिक दिखाई देता है क्योंकि भारत कृषि प्रधान देश है।

4. **यातायात तथा बातचीत के साधनों का विकास :** तकनीक विकसित होने से यातायात तथा बातचीत के साधन तीव्र गति से विकसित हुए है। इन साधनों द्वारा विभिन्न

संस्कृतियों में आपसी अदल-बदल संभव हुआ है। समाचार पत्र, रेडियो, टी. वी. विश्व के समाचार लाते हैं, उधर यातायात के साधनों ने विश्व छोटा कर दिया है। फलस्वरूप राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तेजी से उन्नत हुआ है।

5. नई श्रेणियों का विकास : उद्योगीकरण तथा शहरीकरण ने आधुनिक समा नई श्रेणियों को जन्म दिया है। जब समाज विभाजित होता है तो विपरीत दिलचस्पी वाली श्रेणियों में संघर्ष शुरू हो जाता है।

6. नई धारणा तथा अन्दोलन : नए अन्दोलन शुरू होने से प्रचलित सोच के धाराओं को उत्पन्न किया है जैसे व्यापार संघ, अन्दोलन, तालाबन्दी, हड़ताल, जा 'कलम नीचे' क्योंकि कुछ लोग अपनी श्रेणियों की दिलचस्पियों को आगे लाना च हैं। यह धारणाएं तथा अन्दोलन आर्थिक क्रिया का नियमित रूप बन गया है।

तकनीक से मुख्य सामाजिक संगठनों पर निम्नलिखित प्रकार से प्रभाव पड़ता

परिवार : तकनीक ने परिवार संगठन को कई प्रकार से बदला है।

— पहले पुराने सत्तावादी संयुक्त परिवार की अपेक्षा छोटा एकल परिवार बन है जिसका आधार प्यार, समानता तथा स्वतन्त्रता है। परिवार नियोजन विधियां आने से परिवार छोटे हो गए हैं।

— दूसरे अद्यौगिकरण ने उत्पादन की घरेलू प्रणाली समाप्त करके स्त्रियों को घ फैक्टरियों में पहुँचा दिया है। स्त्रियाँ अधिक स्वतन्त्र हो गई हैं। उनके लिए मनोभावनाएं तथा विचार बने हैं।

— तीसरे तकनीक के कारण विवाह जैसे संगठन की पवित्रता समाप्त हो गई। यह धार्मिक संस्कार के स्थान पर Civil समझौता हो गया है। रोमांटिक शादि अर्न्तजातिय शादियां तथा बड़ी आयु में शादियां तकनीक का प्रभाव है। तला छोड़ देना, अलग हो जाना, टूटते परिवार बढ़ रहे हैं।

— आखिर में हालांकि तकनीक ने स्त्रियों का स्तर ऊँचा किया है, घर में स्त्री त पुरूष के सम्बन्धों में तनाव व दबाव बढ़ा है। परिवार के सदस्यों का समाजीकर करने की क्रिया में परिवार का महत्त्व कम हुआ है।

धर्म : तकनीक ने धर्म में कई परिवर्तन किए है। कई धार्मिक रीति रिवाज जो व्यक्ति तथा सामाजिक जीवन का अहम् भाग थे, अब छोड़ दिए हैं। वैज्ञानिक ज्ञान तथा आधुनिक शिक्षा का विकास होने से लोगों की पुरानी धार्मिक मान्यताओं तथा क्रियाओं में विश्वास घटा है।

आर्थिक जीवन : तकनीकी विकास का सबसे महत्त्वपूर्ण बदलाव आर्थिक व्यवस्था में बदेलाव है। घरेलू उद्योग समाप्त हो रहा है। कई प्रकार की धार्मिक व्यवस्थाएं जैसे

फैक्टरियां, स्टोर, बैंक, स्टॉक एकस्चेंज, स्टॉक कम्पनियां तथा कारपोरेशन आ गई हैं। इससे पूंजीवाद का जन्म हुआ है जिसकी अपनी बुराइयाँ हैं।

श्रम का विभाजन, कार्य की विशेषता, तकनीक के सभी उत्पादनों का भेदभाव तथा एकीकरण इन सबसे जीवनशैली उच्च हुई है। परन्तु इससे आर्थिक मंदी, बेरोज़गारी, गरीबी, उद्यौगिक संघर्ष तथा संक्रमक बिमारियाँ भी बढ़ी हैं।

राज्य पर प्रभाव : तकनीक ने राज्यों को कई प्रकार से प्रभावित किया है। राज्य के कार्य विस्तृत हो गए हैं। परिवार के कई कार्य जैसे शिक्षा, मनोरंजन, स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्य राज्य को स्थानान्तरित कर दिए गए है।

राज्य सामाजिक भलाई कार्यक्रम भी तकनीक का ही हिस्सा है। यातायात तथा बातचीत के साधन कार्यों को लोकल सरकार से केन्द्रिय सरकार पर स्थानांनतरित कर रहे हैं।

सामाजिक जीवन : तकनीकी अनुसंधानों ने सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन का पूरा स्वर ही बदल दिया है। फैक्टरी सिस्टम की आधुनिक तकनीकी दशाओं ने जातिवाद को कमज़ोर करके अद्यौगीकरण को मजबूत किया है। शहरीकरण ने संवेगात्मक तथा मानसिक तनाव, अस्थिरता तथा आर्थिक असुरक्षा को पैदा किया है।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी सच्ची भावनाएं छुपाना चाहता है। सामाजिक तौर पर शहर में प्रत्येक व्यक्ति सबके बीच में भी अकेला है। सब ओर मानवीय मशीने हैं जिनमें गति तो हैं परन्तु उनमें ईमानदारी नहीं, जीवन है संवेग नहीं, हृदय है परन्तु भावनाएं नहीं। तकनीक ने व्यक्तिवाद को ढक दिया है। इसने हाथ के कार्य के स्थान पर दिमागी कार्य को प्राथमिकता दे दी है।

ऊपर के उल्लेख से पता चलता है कि तकनीक ने हमारे जीवन के ढंग तथा सोच को बहुत प्रकार से बदल दिया है। परन्तु इसे सामाजिक बदलाव का एकमात्र कारण नहीं समझना चाहिए। मनुष्य मशीन का सेवक ही नहीं स्वामी भी है। उसमें उन परिस्थितियों को बदलने की योग्यता होती है जो उसके लिए तकनीकों को विकसित करने के लिए उत्तरदायी होती हैं।

सामाजिक बदलाव के सांस्कृतिक कारक

सभी कारकों में सामाजिक बदलाव का सांस्कृतिक कारक बहुत महत्त्वपूर्ण है। संस्कृति जड़ नहीं होती, यह हमेशा प्रवाह में होती है। संस्कृति न सिर्फ बदलती तकनीकों के प्रति उत्तरदायी होती है, बल्कि यह सामाजिक बदलाव लाने की ताकत भी है।

संस्कृति समाज की आन्तरिक जीवन ऊर्जा है। यह अपने आप सृजना करती है तथा खुद ही विकसित होती है। सामाजिक धरोहर कोई लिपि नहीं है जिसे लोग बगैर सोचे समझे अपनाते हैं। संस्कृति सामाजिक व्यवहार के लिए Cues तथा निर्देश प्रदान करती है।

तकनीक तथा भौतिक अनुसन्धान सामाजिक बदलाव को प्रभावित करते हैं
इसकी दशा तथा डिग्री सांस्कृतिक परिस्थितियों पर निर्भर करती है। संस्कृति अ
मूल्यांकन का क्षेत्र है। मनुष्य पूरे संसार की व्याख्या करता है। वह अपनी तकनीक
अनुसन्धान का सेवक तथा मास्टर है।

MacIver की उपमा देते हुए तकनीकी साधनों को किश्ती की भांति प्रस्तुत
सकते हैं जो विभिन्न समुद्री तट तक जा सकती है, परन्तु किस तट पर वह जाएगी यह
सांस्कृतिक चुनाव है। किश्ती के बगैर हम चप्पू नहीं चला सकते। किश्ती की विशेषत
अनुसार हम लम्बे या छोटे समुद्री रास्ते पर किश्ती तेज या धीमे चला सकते हैं।

हमारी जिन्दगियां भी किश्ती के बोर्ड की दशा के अनुसार समायोजित होती है
हमारे अनुभव भी उसी अनुसार विस्तृत करते है, परन्तु जिस दिशा में हम जाएंगे
किश्ती के डिजाइन पर निर्भर नहीं करता, एक सांस्कृतिक चुनाव है। जिस तट की
हम जाते हैं, जिस दिशा में हम यात्रा करते हैं यह एक सांस्कृतिक चुनाव है। मात्र तकन
समाज में बदलाव नहीं ला सकती। प्रभावशाली होने के लिए तकनीक को उ
सांस्कृतिक सहारा होना आवश्यक है। जब सांस्कृतिक कारक तकनीकी बदलावों के स
प्रतिक्रिया करते हैं तो सामाजिक बदलाव की दिशा तथा विशेषता प्रभावित हो जाते

संस्कृति तथा तकनीक के मध्य सम्बन्ध जानने के लिए **'संस्कृति अंतराल'** (Cultu
lag) को समझना आवश्यक है। यह संकल्पना समाजशास्त्रियों की बहुत पसन्दीदा है।
एक अभिव्यक्ति है जो ऐसी आयु में खास अपील रखती है जब कई प्रकार का अनुसन्धा
खोज पुराने जीने के ढंगों को लगातार परेशान करता है। इस प्रकार यह उस सिद्धान्त
लागू करता है कि सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया में सांस्कृतिक दशाएं महत्त्वपूर्ण एजेन्सि
है।

W.F. Ogburn ने सर्वप्रथम 'संस्कृति अंतराल' की संकल्पना को बनाया। अंतरा
से भाव है अपंग गति। इस प्रकार संस्कृति अंतराल से भाव संस्कृति की वह अवस्था है
उन अवस्थाओं से पीछे रह जाता है जो आगे चलते रहते हैं।

तकनीकी तथा सामाजिक बदलाव पर विवाद करने के लिए 'सांस्कृतिक अंतराल
एक महत्त्वपूर्ण संकल्पन है।

सामाजिक बदलाव के जनसांख्यिकीय कारक

जनसांख्यिकीय कारक सामाजिक बदलाव में महत्त्वपूर्ण निर्णयात्मक कारक होते
हैं। जनसांख्यिकी का मात्रात्मक पहलू उन पहूलओं को लेता है जो जनसंख्या को निश्चित
करते हैं, उसका आकार, संख्या, रचना, घनत्व तथा स्थानीय विवरण इत्यादि। प्रत्येक
समुदाय की जनसंख्या संख्या तथा रचना में बदलती रहती है। जनसंख्या में बदलाव समाज
पर बहुत दूर तक प्रभाव डालता है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. सामाजिक बदलाव की विशेषताएं क्या हैं ?
2. सामाजिक बदलाव का संकल्पन क्या है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. सामाजिक बदलाव में सामाजिक आकार तथा प्रक्रियाओं की संरचना या कार्य प्रणाली में अन्तर आ जाता है। उल्लेख करें।
2. सामाजिक बदलाव को प्रभावित करने वाले कारकों का उल्लेख करें।

ω ω ω

CHAPTER

14 आर्थिक बदलाव : शहरीकरण त
आर्थिक बदलाव का बाल विकास पर प्रभा

(Economic Change : Impact of Urbanizati
and Economic Change on Child Developmen

आर्थिक विकास या बदलाव से भाव उस क्रिया से है जिसके फलस्वरूप
व्यक्ति आय बढ़ने के साथ-साथ असमानता, गरीबी, अनपढ़ता तथा बिमारियों में गि
आती है, लोगों की आर्थिक भलाई तथा जीने के ढंग में बढ़ोतरी होती है। इस प्र
आर्थिक विकास में आर्थिक वृद्धि तथा आर्थिक भलाई दोनों सम्मिलित हैं। यह स्पृ
तथा बेहतर जीवन का सूचक है।

परिभाषाएं : पीटरसन के अनुसार, "आर्थिक बदलाव वह क्रिया है जिसमें ल
समय तक प्रति व्यक्ति आय तथा आर्थिक भलाई में बढ़ोतरी होती है।"

संक्षिप्त में, आर्थिक विकास वह क्रिया है जिससे लम्बे समय में प्रति व्यक्ति अ
ही नहीं बढ़ती बल्कि धन तथा आय के असमान विवरण में गिरावट आती है तथा आर्थि
बेहतरी बढ़ती है।

शिक्षा तथा अर्थशास्त्र के बीच सम्बन्ध : शिक्षा तथा अर्थशास्त्र के बीच गह
सम्बन्ध है। शिक्षा का स्तर आर्थिक विकास के बगैर विकसित नहीं होता, इसी प्रव
शिक्षा के बगैर आर्थिक विकास सम्भव नहीं है। इस प्रकार एक दूसरे के बगैर नहीं
सकता।

किसी भी देश की शिक्षा का स्तर उसके आर्थिक विकास पर निर्भर करता
विकसित देशों में बहुत मात्रा में धन शिक्षा के ऊपर खर्चा जाता है क्योंकि इसे निवेश त
उत्पादन का तत्व मानते हैं।

इसी प्रकार शिक्षा आर्थिक विकास का सूचक है। शिक्षा बेहतर, कुशल तथा यो
मानवीय मूलधन का उत्पादन करता है जो आर्थिक विकास में हिस्सा डालते हैं।

आर्थिक विकास/बदलाव के लिए शिक्षा के पहलू
(Aspects of Education for Economic Development/Change)

आधुनिक शिक्षा का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य आर्थिक विकास है। शिक्षा न बल्कि बौद्धिक
सामाजिक, सांस्कृतिक तथा संवेगात्मक विकास में सहायता करता है बल्कि आर्थिक वृ

में भी सहायक होता है। यह लोगों का जीवन स्तर ऊँचा करता है। अर्थशास्त्रियों ने देश की शिक्षा प्रणाली को बेहतर बनाने पर जोर दिया है।

आर्थिक विकास के लिए शिक्षा के उद्देश्य

विभिन्न दर्शनशास्त्रियों, समाज सुधारकों तथा शिक्षाविदों ने व्यक्तियों तथा समाज के लिए शिक्षा के विभिन्न उद्देश्य तैयार किए हैं। आर्थिक विकास के लिए शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हैं :

1. ज्ञान का उद्देश्य : आधुनिक युग में अर्थशास्त्रियों, शिक्षाविदों तथा शास्त्रियों ने ज्ञान अर्थव्यवस्था पर ज़ोर दिया है। प्रत्येक व्यक्ति के लिए ज्ञान महत्त्वपूर्ण है। इस स्पर्द्धा वाले युग में अच्छे तथा आधुनिक ज्ञान वाला व्यक्ति ही बच सकता है जो शिक्षा द्वारा ही मिल सकता है।

2. व्यवसायिक उद्देश्य : शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है। यह व्यक्ति को अपने पैरों पर खड़ा होना तथा रोज़ी रोटी कमाने के लिए तैयार करता है। व्यवसायिक ज्ञान व्यक्ति में व्यवसायिक क्षमता लाता है तथा उसके सामाजिक-आर्थिक स्तर को ऊँचा करता है।

3. आधुनीकरण की क्रिया को तेज करना : देश में आधुनीकरण करने की क्रिया तेज करने की बड़ी आवश्यकता है ताकि हम विकसित देशों के साथ चल सकें। शिक्षा व्यक्ति को तेजी से बदलते समय में लोगों को विकसित होने में सहायक होता है।

4 चरित्र निर्माण का उद्देश्य : यह शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य है। अच्छे चरित्र का व्यक्ति अपने आदर्शों तथा सिद्धान्तों के अनुसार ही चलेगा। व्यवसाय में आने से पूर्व, यह आवश्यक है कि व्यक्ति का चरित्र अच्छा हो।

5. वैज्ञानिक विकास का उद्देश्य : अधिक युग विज्ञान तथा तकनीक का युग है। इस दुनिया में बचने तथा तरक्की करने के लिए विज्ञान तथा तकनीक का ज्ञान आवश्यक है।

6. व्यक्तित्व का विकास : अच्छे व्यक्तित्व के व्यक्ति को समाज में सम्मान मिलेगा। वह किसी भी व्यवसाय में सफलता प्राप्त कर सकता है। शिक्षा मनुष्य के शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक, संवेगात्मक तथा नैतिक पहलूओं में व्यक्तित्व का निर्माण करता है।

आर्थिक सशक्तिकरण के लिए शिक्षा
(Education for Economic Empowerment)

1. एक समय था जब शिक्षा मात्र शिक्षा के लिए थी। शिक्षा तथा आर्थिकता में कोई सम्बन्ध नहीं था। शिक्षा के लिए ग्रांट देना अनुत्पादक खर्चा माना जाता था। आधुनिक युग में सबने शिक्षा के महत्त्व को पहचान लिया है तथा बड़ा खर्चा शिक्षा पर ही किया जाता है।

2. शिक्षा उत्पादन तत्व के रूप में : यदि हम शिक्षा को उद्योग समझे तो
लेने वाले अव्यस्क विद्यार्थी निवेश हैं जबकि शिक्षा प्राप्ति के बाद सफल उपल
उत्पादन कहते हैं। शिक्षा श्रमशक्ति की क्षमताओं तथा योग्यताओं को बढ़ाकर व्यक्ति
देश के आर्थिक विकास में सहायता करती है।

3. उच्च स्तर जीवनशैली के लिए शिक्षा : उच्च जीवनशैली के लिए
आर्थिकता होनी चाहिए जो शिक्षा तथा ट्रेनिंग से ही प्राप्त होता है। ज्ञान तथा क्षमता
भरपूर व्यक्ति साधारण कार्य करने वाले से बेहतर कमा सकते हैं। इसी प्रकार वि
तथा विकसित हो रहे देशों में शिक्षित लोग उच्च जीवन शैली जीते हैं। आधारिय आवश्य
भोजन, कपड़े तथा आवास सन्तुष्टि के साथ-साथ वह कई प्रकार की सुविधाओं
आनन्द उठा सकते हैं।

4. तकनीकी विकास के लिए शिक्षा : शिक्षा ने विज्ञान तथा तकनीक के क्षे
महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। लगातार अनुसन्धान तथा नए-नए प्रयोग तकनीक के क्षे
क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं। विकसित देशों में तकनीकी विकास तेजी से हो रहा है। वि
के द्वारा ही उद्योगकर्त्ता अपने उत्पादनों में आधुनिक तकनीकों का प्रयोग कर रहे हैं

5. शिक्षा तथा सतत् (Sustainable) विकास : सतत् विकास आर्थिक वि
की क्रिया है जो प्राकृतिक साधनों तथा वातावरण को हानि पहुँचाए बगैर चलती है।
विकास की वह क्रिया है जो भविष्य की पीढ़ी की योग्यता को बगैर नुकसान पहुं
वर्तमान की पीढ़ी की आवश्यकताएं पूरी करती है। शिक्षा सतत् विकास का सूचक
शिक्षा काबिल, योग्य तथा सक्ष्म मानवीय साधनों को उत्पन्न करती है जो वर्तमान ही
भविष्य का आधार भी बनते हैं।

सारांश में शिक्षा बालक के पूर्ण विकास में सहायता करती है।

ॐ ॐ ॐ

CHAPTER 15

शहरीकरण (Urbanization)

शहरीकरण से भाव है ग्रामीण क्षेत्र से शहरी क्षेत्र की ओर जनसंख्या का स्थानान्तरण होना, शहरी क्षेत्र में धीरे-धीरे लोगों का अनुपात धीरे-धीरे बढ़ना तथा वह ढंग जिसमें प्रत्येक समाज बदलाव में व्यवस्थित हो जाता है। मुख्यत: यह क्रिया है जिसके द्वारा क्सबे तथा शहर बनते हैं तथा बढ़ते जाते हैं क्योंकि अधिक लोग केन्द्रिय क्षेत्रों में रहने तथा कार्य करने लग गए हैं। शहरीकरण तब होता है जब लोग ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की तरफ बढ़ते जाते हैं जिससे शहरों में जनसंख्या का अनुपात बढ़ता है जबकि शहरी क्षेत्रों में यह अनुपात घटता है। पिछली शताब्दी में संसार में तेजी से शहरीकरण हुआ है। वर्ष 1900 में 13% लोग शहरों में रहते थे, 1950 में यह अनुपात 29% पहुँच गया। अनुमान के अनुसार वह 2030 में यह अनुपात 60% हो जाएगा। शहरीकरण, आधुनीकरण तथा अद्यौगीकरण के साथ होता है। इसका प्रमुख कारण आर्थिक है। इन कारकों से लोग शहरों की तरफ खिंचे चले जाते हैं।

शहरीकरण के लिए दूसरा term 'ग्रामीण उड़ान' भी प्रयोग करते हैं। आधुनिक समय में यह उड़ान अधिकतर उन क्षेत्रों से होता है जहां खेती-बाड़ी में उद्यौगीकरण हो चुका है वहां कृषि के लिए कम व्यक्तियों की आवश्यकता पड़ती है। कृषि सेवाओं तथा उद्योग आपस में सम्बन्धित हैं। यह कारक छोटे तथा मध्यम फार्मों के आर्थिक स्तर को प्रभावित करते हैं तथा ग्रामीण लेबर मार्किट के आकार को कम कर देते हैं। ग्रामीण उड़ान और भी खराब हो जाती है जब वहां की जनसंख्या कम हो जाती है जिससे ग्रामीण सेवाओं का नुकसान हो जाता है। अधिक से अधिक लोग गांवों को छोड़कर शहरों में रहने चले जाते हैं, शहरों पर दबाव बढ़ता है। शिकांगो तथा मुम्बई जैसे शहरों में तेजी से वृद्धि हो रही है। आने जाने के झंझट को कम करने, नौकरियों, शिक्षा, गृह, मनोरंजन तथा यातायात के अधिक अवसर उपलब्ध होने के कारण शहरीकरण बढ़ता जा रहा है।

यहां परिवारों तथा व्यक्तियों को नज़दीक आने, विभिन्नताओं तथा प्रतिस्पर्धा के अवसर बढ़ जाते हैं। अधिक जनसंख्या में लोग अपने जैसे समाजिकता वाले व्यक्ति ढूंढ लेते हैं।

शहरीकरण के आर्थिक तथा पर्यावरण प्रभाव
(Economic and Environmental Effects of Urbanization)

शहरीकरण का शहरों तथा आस-पास के क्षेत्रों पर आर्थिक तथा पर्यावरण प्रभाव दिखाई देते हैं। जैसे शहर की जनसंख्या बढ़ती है, सभी प्रकार के पदार्थों तथा सेवाओं की

मांग बढ़ती है जिससे इनकी कीमत अधिक हो जाती है। इसमें जमीन की कीमत बढ़ जाती है, इस क्रिया को gentrification कहते हैं।

बढ़ते हुए शहरों से वातावरण भी बदल रहा है। उदाहरणतया: शहरीकरण 'गर्म शहर बना रहा है। यह तब बनते हैं जब उद्योग तथा शहरी क्षेत्र बढ़ने से वनस्पति के स्थान घटता जा रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में वनस्पति से ढकी या खाली जमीन में व तथा मिट्टी से पानी वाष्पित होकर सूर्य की ऊर्जा का प्रयोग कर लेता है। इस वाष्पि से ठंडक का एहसास होता है। परन्तु शहरों में जहां न ही वनस्पति है न ही खाली वहां सूर्य की ऊर्जा मकानों के सीमेंट तथा कंकरीट में समा जाती है। दिन के समय में शहर का तापमान बहुत बढ़ जाता है क्योंकि यहां वाष्पीकरण द्वारा ठंडक का एह बहुत कम होता है। इसके साथ वाहनों तथा फैक्टरियों से निकलती गर्मी अद्यौगिक धरातू ताप के यूनिट गर्मी छोड़ते हैं। यह प्रभाव शहर के तापमान को 2 से 10 फाहरनहीट (या 1 से 6 डिग्री सैल्सियस)

Suburbanization and Counterurbanization

आधुनिक समय में विकास देशों में समाजशास्त्रियों ने Suburbanization Counterurbanization या शहरों से दूर गति का विचार दिया है। यह पैटर्न यातायात बुनियादी ढांचे या सामाजिक कारकों जैसे जातिवाद के कारण शुरू हुआ है। विकि देशों में, लोग शहरों के बाहर जाकर रहते हैं वहाँ उन्हें शहर की सुविधाएं उपलब्ध हो है। (उदाहरणतय: विकसित बातचीत तथा यातायात के साधन) Counter urbanizati मध्य तथा उच्च श्रेणियों में अधिक सामान्य है जो अपना घर खरीद सकते हैं।

अमरीकी suburbanization में जातिवाद ने महत्त्वपूर्ण भाग अदा किया है। प विश्व युद्ध में अफ्रीकी अमरीकी लोगों ने दक्षिण से सामूहिक प्रवास करके subur क्षेत्रों में घर लिए शहर खतरनाक अपराध से भरपूर होते जा रहे हैं जबकि उपनगर त तथा परिवार बनाने के लिए बहुत सुरक्षित रहते है। इस सामाजिक रूझान को 'सफे उड़ान' कहते हैं।

Suburbanization नई शहरी प्रकार हो सकती है। बहुत घने तौर पर जनसंख्या के बजाए शहर अधिक विस्तृत हो जहाँ छोटे-छोटे कस्बे आपस में जुड़े हो। आधुनि अमेरिकी अनुभव ने पिछले 50 वर्षों में तृतीय पैटर्न को अपनाया है, जिसमें ग्रामीण से शुरू हो कर, शहरी देश तथा बाद में अधिकतर suburban जनसंख्या।

शहरीकरण के आर्थिक प्रभाव : शहर बढ़ने से स्थानीय कार्य करने वाली की पहुँच बढ़ती हुई कीमतों से परे हो गई है। विकासशील देशों में वहाँ आर्थिक व्यव अच्छी हो रही है, वृद्धि अधिकतर अनियमित हो गई है तथा छोटी संख्या में उद्योगों निर्भर करती है। इन देशों में छोटे लोगों के लिए बाधाएं होती हैं जैसे आर्थिक सुविधा

...कार के सम्बन्धी निर्देश देने की सुविधाएं में कमी, व्यापार शुरू करने के लिए ऋण ...ता, व्यवसायी योग्यताओं की कमी इत्यादि कठिनाईयाँ पाई जाती हैं इससे उन्हें इन ...ों को शुरू करने के अवसर नहीं मिलते। आर्थिक अवरोध को समाप्त करने के लिए ...क है कि मानवीय पूंजी में निवेश किया जाए ताकि जवान बच्चों के पास गुणी ...था बुनियादी ढाँचे की पहुँच हो।

...करण : कारण तथा प्रभाव

...भारतीय समाज में शहरीकरण आम हो गया है। उद्योग बढ़ने से शहर बढ़े हैं। ...ार ढूंढने के लिए लोग शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इससे शहरों और कस्बों ...द्धि हुई है :

– शहरीकरण का मतलब है शहरी केन्द्रों का भूमि में बाधक ग्रामीण केन्द्रों की ओर प्रभाव का प्रसार।

– शहरीकरण से भाव है किसी विशेष क्षेत्र में जनसंख्या की एकाग्रता की क्रिया।

– Mitchell के अनुसार शहरीकरण से भाव शहरी बनना, शहरों की ओर चलना, कृषि को छोड़ कोई दूसरा धंधा करना जो उस शहर में सामान्य हो।

शहरीकरण के कारण : कई कारणों से शहरों की वृद्धि हुई है।

1. अद्योगीकरण : ग्रामीण लोगों ने बेहतर रोज़गार के अवसर पाने के लिए शहरों ...लायन किया है क्योंकि वहां बड़े उद्योग स्थित हैं।

2. सामाजिक कारक : कई सामाजिक कारक जैसे शहरों का आकर्षण, बेहतर ...न स्तर, बेहतर शैक्षणिक सुविधाएं, ऊँचे स्तर की आवश्यकता लोगों को शहरों में ले ...ती है।

3. रोज़गार के अवसर : ग्रामीण लोग मुख्यतय: कृषि पर निर्भर करते हैं। भारत में ...षि मौनसून पर आधारित है। यहां सूखे जैसी अवस्था या प्राकृतिक आपदाएं होने से ...षि खराब हो जाती है। इसलिए ग्रामीण लोग शहरों की ओर पलायन करते हैं।

आधुनीकरण : शहरी क्षेत्रों में जटिल तकनीक होने से बेहतर बुनियादी ढाँचा, ...संचार के साधन, स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध है। लोगों को लगता है कि वह शहरों में ...विधाजनक जीवन जी सकते हैं। लोगों को लगता है कि वह शहरों में सुविधाजनक ...वन जी सकते हैं। इसलिए शहरों की ओर पलायन करते हैं।

ग्रामीण शहरी परिवर्तन : दिलचस्प बात यह है कि न सिर्फ शहर के बड़े हुए हैं ...लेकि ग्रामीण समुदाय ने भी शहरी संस्कृति को अपना लिया है। अब ग्रामीण समुदाय की ...ी वास्तविक अद्भुत ग्रामीण संस्कृति समाप्त हो गई है। ग्रामीण लोग भी शहरी लोगों की ...लेकि संस्कृति को अपना रहे हैं। यह बदलाव निम्नलिखित क्षेत्रों में हुआ है :

शिक्षा का विस्तार : ग्रामीण लोगों में शिक्षा दर बढ़ी है। यह अधिक आय हो गए हैं :

(*i*) पोशाक में बदलाव

(*ii*) आधुनिक तकनीक को अपनाना

(*iii*) स्त्रियों का जागरूक होना

(*iv*) आधुनिक यातायात तथा संचार के साधन जैसे मोबाईल फोन

(*v*) राजनीति में क्रियाशील योगदान

(*vi*) बुनियादी ढाँचे में वृद्धि जैसे बैंक, डाकघर

(*vii*) ग्रामीण उपभोक्ताओं में जागृति

(*viii*) परिष्कृत पदार्थों की माँग बढ़ना जैसे सौन्दर्य प्रसाधन।

इस प्रकार कह सकते हैं कि ग्रामीण लोगों के जीवनशैली में महत्त्वपूर्ण बदल गए हैं। भारतीय ग्रामिणों ने शहरी संस्कृति तथा शहरी जीवनशैली को अपना लिया है बदलाव सभी गांवों में नहीं आया। मात्र कुछ गांव जो शहरों के नज़दीक है, उन बदलाव आए हैं।

शहरीकरण के प्रभाव : तेजी से शहरीकरण होने से महत्त्वपूर्ण बदलाव आ शहरीकरण के निम्नलिखित प्रभाव हैं :

सकारात्मक प्रभाव

1. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर पलायन
2. शहरी क्षेत्रों में रोज़गार के अवसर
3. यातायात तथा बातचीत के साधन
4. शिक्षा की सुविधाएं
5. जीवन स्तर बेहतर होना।

उचित सीमा तक शहरीकरण होने से सकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। विस्तृत शहरीक होने या शहरों की अविवेकी वृद्धि होने से नकारात्मक प्रभाव भी पड़ते हैं जो इस प्र है :

1. अति जनसंख्या की समस्या : शहरों में जनसंख्या की घनता बढ़ना समस्या है। इससे आवास की समस्या, मलिन बस्तियों की वृद्धि इत्यादि।

2. संयुक्त परिवारों का बिखरना : जीवन व्यापन मंहगा होने से संयुक्त परि शहरों में नहीं रह सकते। लोग एकल परिवारों में रहना चाहते हैं।

3. दर्शनशास्त्र का क्षेत्र : सामाजिक भरती तथा भेदभाव और व्यक्तिगत तर की क्रियाओं में विशेषज्ञता।

4. राजनीतिक क्षेत्र : प्रजातान्त्रिक मूल्यों तथा सिद्धान्तों के लिए खड़े हो

5. पारिस्थितिक क्षेत्र : इसमें शहरीकरण की विशेषताएं सम्मिलित हैं।

6. कृषि क्षेत्र : कृषि में आधुनीकरण से सम्बन्ध हरित क्रान्ति से है।

7. दैनिक खेती : इसमें सफेद क्रान्ति सम्मिलित है।

8. सांस्कृतिक क्षेत्र : सांस्कृतिक क्षेत्र आधुनीकरण से भाव साक्षरता धर्मनिरपेक्ष शिक्षा, नई सांस्कृतिक सोच का उत्पन्न होना है।

9. शिक्षात्मक क्षेत्र : इस क्षेत्र में आधुनीकरण से भाव नए तथा विस्तृत विविधता तथा लचकीला पाठ्यक्रम, अध्ययन के उन्नत तथा अभिनव विधियां मूल्यांकन प्रक्रियाएं तथा निरीक्षण के नए विचार तथा अनुशासन।

आधुनीकरण की परिभाषाएं

सामान्य मनुष्य के अनुसार, "आधुनीकरण का अर्थ अद्यौगीकरण तथा स्वचाल

Moore, "आधुनीकरण का अर्थ है क्रान्तिकारी बदलाव जो परम्परागत तथा आधु समाज के पहले के राजनीतिक स्थिर समाज को आर्थिक रूप से उन्नत तथा स बनाए।"

आधुनीकरण की विशेषताएं

1. सामाजिक गतिशीलता : सामाजिक गतिशीलता आधुनीकरण का अजीब है।

2. सामाजिक भेदभाव : इस क्रिया में सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थि क्रियाओं में जटिलता बढ़ जाती है तथा विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्ति की क्रियाओं में उन्न होती है।

3. संरचना में भेदभाव तथा बदलाव : आधुनीकरण में संरचनात्मक भेदभाव सतत् बदलाव होते रहते हैं।

4. पहचान की क्रिया : आधुनीकरण अनुसरण या नकल करने की क्रिया नहीं अपितु विकसित देशों के साथ सामग्री में समृद्ध तथा भौतिक प्रचूरता के मामले में पहच की क्रिया है।

5. विज्ञान तथा तकनीक : आधुनीकरण में आधुनिक राष्ट्र के उभरते हुए पैटर्न वैज्ञानिक तथा तकनीकी विशेषताओं को अपनाना या अनुकूलन करना होता है।

6. उचित व्यवहारिक व्यवस्था का विकास करना : आधुनीकरण से भाव सतही विशषता को अपनाना ही नहीं बल्कि उचित व्यवहारिक व्यवस्था का विकास है जिसमें शहरी क्षेत्रों की विशेषताओं को मिलाना होता है।

1. मूल्य में बदलाव : आधुनीकरण की कोई भी क्रिया सफल नहीं हो सकती जब सामाजिक मूल्य व्यवस्था में उग्र संशोधन न किए जाएं।

2. सम्पत्ति में समृद्धि : उन्नत होता हुआ समाज समृद्ध सामग्री को प्राप्त करता है जिससे उत्पादन तथा तकनीक का उपयोग हो सके।

3. वैज्ञानिक अभिवृत्ति : आधुनीकरण में वैज्ञानिक स्वभाव तथा मनोभावों का विकास करना आवश्यक है।

4. अद्यौगीकरण : वैज्ञानिक आधारित तकनीक तथा मशीनीकरण अपनाना अद्यौगीकरण की ओर ले जाता है।

5. शहरीकरण : शहरीकरण तथा आधुनीकरण जुड़े हुए हैं।

6. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग : आधुनीकरण का उद्देश्य अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग का विकास करना है।

7. शिक्षा : व्यापक तथा बहु-पक्षीय शिक्षा आधुनीकरण की महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

8. दूसरों के गौरव का मान रखना : आधुनीकरण सभी मनुष्यों का गौरव बनाए रखता है।

9. वर्तमान तथा भविष्य पर दबाव : आधुनीकरण वर्तमान में जीने तथा भविष्य के लिए योजना बनाने में विश्वास रखता है। आधुनिक व्यक्ति अपने वर्तमान को बेहतर बनाता है ताकि उज्जवल तथा सुरक्षित भविष्य बनाया जा सके।

आधुनीकरण के लाभ

सामान्य लाभ : आधुनीकरण का सामान्य भाव उस क्रिया है जिसमें कम विकसित समाज अधिक विकसित समाजों की विशेषताओं को अपनाता है।

1. उद्योग, कृषि, डेरी फ्रार्मिंग में वैज्ञानिक तकनीक अपनाने तथा आर्थिक व्यवस्था का अद्यौगीकरण करने से इन्हें अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।
2. विचारों की धर्म निरपेक्षता जो संस्कृति में धर्म निरपेक्ष तर्कसंगत मानदण्डों का सामना है।
3. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शिक्षा को फैलाना।
4. जिम्मेदारी माने हुए से प्राप्त हुए स्तर में परिवर्तन।
5. जीवन के भौतिक स्तर में वृद्धि।
6. भूगौलिक, सामाजिक तथा व्यवसायिक गतिशीलता में वृद्धि।
7. जन्म के समय जीवन की अधिक आशा।

8. समाज में गतिशीलता के बढ़ने से शहरीकरण, साक्षरता का प्रसार तथा मीं का योगदान विस्तृत होता है।

9. प्राइमरी उत्पादन की अपेक्षा माध्यमिक तथा तृतीय उत्पादन में कार्य करने लोगों का अधिक अनुपात।

10. राजनीति में लोगों का योगदान अधिक होना।

विभिन्न क्षेत्रों में लाभ होना : विकासशील समाजों में आधुनीकरण के निम्नलि लाभ हैं।

A. आर्थिक क्षेत्र :

1. अद्यौगीकरण : उद्योगों का विकास होकर संस्कृति का स्थान ले रहे हैं।

2. शहरीकरण : शहरीकरण अद्यौगीकरण का नतीजा है।

3. स्त्रियों में सुधार : आधुनीकरण ने स्त्रियों को विशेष ताकत दी है।

B. सामाजिक क्षेत्र :

1. एकल तथा नियोजित परिवार : संयुक्त परिवार के स्थान पर एकल परिवार गए हैं।

2. समाजीकरण : परिवार का प्रमुख कर्त्तव्य समाजीकरण के कारक के तौर केन्द्रित है।

3. जाति तथा बदलाव : भारत में जाति के सम्बन्धों की कड़िया टूटनी शुरू हो हैं।

4. सामाजिक जागरूकता : कई सामाजिक कुरीतियां समाप्त हो रही हैं।

5. रोज़गार : उद्यौगीकरण के कारण अधिक रोज़गार उपलब्ध है।

6. उत्तरदायित्व स्थानान्तरित होना : परिवार ने अपने कई उत्तरदायित्व स्कूल त आर्थिक संस्थाओं को सौंप दिए हैं।

राजनीतिक क्षेत्र

1. प्रजातान्त्रिक व्यवस्था : चुनावों द्वारा जीती गई प्रजातान्त्रिक सरकार कार्य कर है।

2. भेदभाव की समाप्ति : राजनीति व्यवस्था जाति, लिंग, स्तर इत्यादि पर आधारि नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति को वोट का अधिकार है।

3. राजनीतिक स्वतन्त्रता : प्रत्येक व्यक्ति को राजनीतिक स्वतन्त्रता है।

4. बहुपार्टी व्यवस्था : आधुनीकरण के कारण बहुपार्टी व्यवस्था का जन्म हुआ है

शिक्षा का क्षेत्र

1. सार्वभौमिक, मुफ्त तथा अनिवार्य शिक्षा।
2. अनपढ़ता को हटाना तथा व्यस्क साक्षरता को बढ़ावा देना।
3. सामान्य स्कूल व्यवस्था।
4. विज्ञान आधारित शिक्षा।
5. योग्यता के आधार पर दाखिला।
6. शिक्षा व्यवस्था में उचित मूल्य तथा मनोवृत्तियों को बढ़ावा देना।
7. विविधतापूर्ण पाठ्यक्रम।
8. शिक्षा का व्यवसायीकरण करना।
9. शिक्षा को आर्थिक विकास के साथ सम्बन्धित करना।
10. सामाजिक शिक्षा को अनौपचारिक शिक्षा के द्वारा फैलाना।
11. प्रजातान्त्रिकता की शिक्षा देना।
12. राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय एकीकरण की शिक्षा देना।

भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक क्षेत्र

I. संस्थाओं पर प्रभाव : आधुनीकरण के संस्थान व्यवस्था पर निम्नलिखित लाभ देखाई देते हैं :

(i) शिक्षा व्यवस्था : आधुनीकरण ने लोगों के दृष्टिकोण को विस्तृत कर दिया है। वह अपने अधिकारों तथा स्वतन्त्रता के प्रति जागरूक हो गए हैं।

(ii) कानूनी व्यवस्था : आधुनीकरण के कारण, भारत एक सामान्य कानूनी व्यवस्था के अन्तर्गत कार्य करता है।

(iii) नयी स्कीमों का परिचय : संयुक्त परिवारों, स्थानीय समुदाय, जातिवाद के स्थान पर नई संगठन व्यवस्थाएं आ रही हैं। जैसे भलाई स्कीम, जीवन बीना स्कीम, सामाजिक सुरक्षा स्कीमें इत्यादि। यह आवश्यकता पड़ने पर लोगों को सुरक्षा प्रदान करती हैं।

II. तकनीकी क्षेत्र में चकत्कारपूर्ण बदलाव : आधुनीकरण ने भारतीय उद्योग, तकनीक, कृषि तथा व्यवसाय में बदलाव करके आर्थिक विकास किया है।

III. नए मूल्य तथा विचारधाराएं बनी हैं :

(i) मानवीयता : Dogma के अनुसार यह विश्वास की व्यवस्था है जो कारणों द्वारा नियन्त्रित होती है, अधिकार द्वारा नहीं।

(ii) धर्म निरपेक्षता : इस विचारधारा के अनुसार राज्य की नैतिकता, शिक्षा इत्यादि धर्म से स्वतन्त्र होना चाहिए।

(iii) समानता : यह सिद्धान्त इस बात पर लागू होता है कि लिंग, श्रेणी, जाति धर्म सभी बराबर हैं।

4. राजनीतिक मूल्यों का पुर्नगठन : राजनीतिक मूल्यों के पदक्रम (hierar का पुर्नगठन हुआ है। साम्राज्यवाद समाप्त होकर प्रजातन्त्र की स्थापना हुई। सं संविधान, विधान तथा अदालती व्यवस्था आगे आई। भारतीय लोगों में राष्ट्रीयवाद भावना प्रबल हुई।

5. नया जीने का ढंग : आधुनिक युग में भारतीयों ने पश्चिमी सभ्यता की न करते हुए वैसा ही पहरावा तथा भोजन खाना शुरू कर दिया है।

आधुनीकरण की हानियां

1. भौतिकवादी मनोवृत्ति : तकनीक तथा वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोग अद्यौगीकरण के पश्चिमी मॉडल ने लोगों के दिमागों में नई आकांक्षाओं तथा महत्त्वकाक्ष को पैदा किया है।

2. नकल : आधुनीकरण के कारण जीवन का पश्चिमी तरीका इतना आकर्षक गया है कि पढ़े लिखे भारतीय पश्चिमी सभ्यता की बगैर सोचे समझे नकल करते पश्चिम की प्रत्येक वस्तु अच्छी समझी जाती है जैसे पश्चिमी मूल्य, रीति-रिवाज, स्व चुनाव, पसन्द इत्यादि।

3. गन्दी बस्तियाँ : अद्यौगीकरण की क्रिया शहरों तथा कस्बों की वृद्धि से जुड़ी जिसने ग्रामीण इलाकों से लोगों को आर्कषित किया है।

4. सामाजिक क्षेत्र :

(i) परिवारिक बन्धन ढ़ीले होना : संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

(ii) तलाक दर बढ़ गए हैं तथा विवाह से पूर्व के सम्बन्ध बढ़ गए हैं।

(iii) पहले परिवार बच्चों को नैतिक तथा लिंग शिक्षा प्रदान करता था। यह उत्तरदायित्व अब स्थानान्तरण हो गए हैं।

(iv) बाल श्रम : कानून के बावजूद अधिक से अधिक बच्चे घर से बाहर कार्य करते हैं।

(v) प्रतिभा पलायन : अधिक से अधिक किशोर पश्चिमी देशों में अच्छे भविष्य बनाने के लिए पलायन कर जाते हैं।

5. आर्थिक क्षेत्र :

(i) प्रतिस्पर्धा तथा व्यापार संघ : पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था में प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। व्यापार संघ उठ गए हैं तथा इससे विरोध और हड़तालें शुरू हो गई हैं।

(ii) आर्थिक व्यवस्था सामाजिकवाद से पूंजीवाद की ओर मुड़ गई है।

(iii) आधुनिक पूंजीवाद प्रकार की आर्थिक व्यवस्था ने गांवों की आत्म-निर्भर आर्थिकता को करारा झटका दिया है।

(iv) **राजनीति क्षेत्र :** राजनीति में बहुसंख्यक राजनीतिक व्यवस्था ने आधुनीकरण को जन्म दिया। इस प्रकार एक पार्टी को स्पष्ट बहुमत नहीं मिलता।

(v) **मानवीय मूल्यों में गिरावट :** आधुनिक युग में सामाजिक नैतिक तथा धार्मिक मूल्य छिन्न-भिन्न हो गए हैं। ज्ञान तथा ताकत को स्वार्थ के लिए प्रयोग किया जाता है।

6. शिक्षा के क्षेत्र :

(i) **औपचारिक शिक्षा आवश्यक है :** शिक्षा, आधुनीकरण, विज्ञान तकनीक तथा उद्योग में तरक्की साथ-साथ चलते हैं।

(ii) आधुनिक स्कूल, कॉलिज तथा यूनिवर्सिटियां विद्यार्थियों को जीने का ढंग नहीं सिखाती।

(iii) अध्ययन की सामग्री बहुत भारी हो गई है।

(iv) पुराने जीवन मूल्य खो गए है।

प्रोफैसर राम अहूजा के अनुसार आधुनीकरण की निम्नलिखित सीमाएं हैं :

1. आधुनीकरण के अनुसार समाज को एकदम बदल जाना चाहिए। परन्तु वृद्धि की यह नियमित तथा समन्वय पैटर्न आयोजित तथा अमल में नहीं लाया जा सकता। कुछ मात्रा में सामाजिक अशांति तो अवश्य होगी। उदाहरणतय: सामूहिक शिक्षा तथा रोज़गार के अवसरों के मध्य विसंगति।
2. आधुनीकरण के समय, संरचना के बदलाव एक समान नहीं होते। उदाहरणत: उद्योग आधुनिक हो सकते हैं परन्तु धार्मिक व्यवस्था, परिवार की व्यवस्था रूढ़िवादी ही रहते हैं।
3. सामाजिक तथा आर्थिक संस्थाओं के आधुनीकरण ने जीवन के परम्परागत जीवनशैली के साथ संघर्ष को उत्पन्न किया है।
4. बहुत बार लोगों द्वारा अपनाए गए रोल आधुनिक होते हैं, उनके मूल्य परम्परागत होते हैं। उदाहरणतय: नए उद्योग तथा फर्मों का उद्घाटन परम्परागत महूर्त रिवाजों द्वारा ही किया जाता है।
5. जिन संस्थाओं तथा व्यवस्थाओं का आधुनीकरण हो रहा है तथा जो आधुनीकरण हो चुके हैं उनमें सहयोग नहीं होता। यहां सांस्कृतिक अंतराल की समस्या की भांति ही है।
6. आखिर में आधुनीकरण ने लोगों की आशाओं को ऊपर उठा दिया है परन्तु सामाजिक संरचना से अमल में लाने के लिए व्यवस्था नहीं करती। इससे निराशावाद तथा सामाजिक अशांति को जन्म दिया है।

सारांश में कह सकते है। आधुनीकरण आर्थिक व्यवस्था में बदलाव तथा
सम्बन्धित सामाजिक मूल्यों में बदलाव है। आधुनीकरण से भाव क्रान्तिकारी
जिससे परम्परागत समाज को आर्थिक रूप से समृद्ध राजनीतिक स्थिर समाज में
है।

अद्यौगिकरण तथा आधुनीकरण के मध्य सम्बन्ध

अद्यौगिकरण तथा आधुनीकरण की विशेषताएं लगभग एक समान होने से
बीच का अन्तर धुंधला दिखाई देता है। तर्कशक्ति, वैज्ञानिक स्वभाव, व्यक्तिवाद,
निरपेक्षता, उन्नति तथा गतिशीलता का स्वभाव अद्यौगिकरण तथा आधुनीकरण के
सांस्कृतिक विशेषताओं को परिभाषित करते हैं।

आधुनीकरण से भाव नए सांस्कृतिक मूल्य हैं जो नव जागृति तथा उद्यौगिक
के साथ यूरोपियन समाज में उत्पन्न हुए तथा जिन्होंने पारम्परिक सामाजिक,
तथा राजनीतिक मापदण्डों का स्थान लिया जैसे हस्तशिल्प के स्थान पर उद्योग,
कानूनों के स्थान पर कानूनी व्यवस्था आ गई। लोग संसार के नज़रिए से अधिक
हो गए हैं तथा समुदाय के मौलिक अधिकारों के दमन से छूट कर अपने
व्यक्तिगत हो रहे हैं।

अद्यौगिक विकास से शहरीकरण बहुत तेजी से बढ़ा, समुदाय के जीवन में
तथा सांस्कृतिक बदलाव आ गए जो आधुनीकरण की समानता रखते हैं।

समूह की एकजुटता, समुदाय के जीवन और पारम्परिक बड़े परिवार
हैं। व्यक्तिवाद तथा छोटे परिवार तथा विजातीय समुदाय में स्वायत्त व्यक्तित्व का
यह शहरी तथा आधुनिक जीवन में देखी जाने वाली विशेषताएं हैं। विश्ववन्धत्व,
मानवतावाद धर्म निरपेक्षता तथा प्रजातान्त्रिक शहरी संस्कृति से जुड़ी हैं। यह
शहरी केन्द्रों पर ही नहीं ग्रामीण क्षेत्रों में भी देखा जा सकता है जहाँ आधुनीकरण
अद्यौगीकरण, शिक्षा, संचार तथा यातायात पाया जाता है।

समाजवाद शहरीकरण को विस्तृत ढंग से देखता है जहाँ सामाजिक-सांस्
बदलावों की लम्बी लिस्ट है।

शहरीकरण का रहने वाले लोगों की जीवन गुणता पर प्रभाव : सामाजिक बदलाव तथा आधुनीकरण की संकल्पना

शहरीकरण का लोगों के जीवन पर सकारात्मक तथा नकारात्मक प्रभाव
लोगों को शहरी क्षेत्रों के जीवन को अपनाना पड़ता है जो एक समान आर्थिक
लोगों से मित्र तथा दूसरों से अमित्र हैं, समय के बारे में जागरूक तथा सामाजिक
बदले हैं। शहरीकरण का भोजन की सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रशासन तथा सुरक्षा,

नए बदलाव के अनुसार ढलना पड़ता है ताकि वह सुविधाजनक जीवन व्यतीत कर
शहरों में नए अनुभव, भाषाएं तथा विस्तृत संस्कृति से सामना होता है जो उनके
जीवन को प्रभावित करता है। शहरीकरण एक सतत् क्रिया है जो विज्ञान तथा तकनी
बेहतर होती रहती है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. आर्थिक बदलाव की विशेषताएं क्या हैं ?
2. शहरीकरण की संकल्पना क्या हैं ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. बाल विकास पर शहरीकरण तथा आर्थिक बदलाव के प्रभाव का उल्लेख
2. शहरीकरण तथा आधुनीकरण के मध्य क्या सम्बन्ध हैं ?

ॐ ॐ ॐ

इकाई - IV : समकालीन मुद्दे

16. लिंग, सामाजिक श्रेणी, गरीबी के विशेष संदर्भ में सीमांत तथा रूढ़िबद्धता

(Marginalization and Stereotyping with Special Reference to Gender, Social Class, Poverty)

17. सीमांत तथा रूढ़िबद्धता का बाल विकास तथा सम्बन्धित परिणामों पर प्रभाव

(Impact of Marginalization and Stereotyping on Child Development and Related Outcomes)

18. अनुभूतियों का निर्माण तथा विखंडना करने और उनसे व्यवहार करने में मीडिया की भूमिका

(Role of Media in Constructing and Deconstructing Perceptions and Ways of Dealing)

CHAPTER 16

लिंग, सामाजिक श्रेणी, गरीबी के विशेष संदर्भ में सीमांत तथा रूढ़िबद्धता

(Marginalization and Stereotyping with Special Reference to Gender, Social Class, Poverty)

सीमांत (Marginalization)

सीमांत वह अनुभव है जो संसार में करोड़ों लोगों को प्रभावित करता है। वह लोग जो हाशिए पर रहते हैं, उनका अपनी जिन्दगियों तथा उपलब्ध साधनों पर बहुत कम नियन्त्रण होता है। वह समाज में अपना योगदान डालने में विकलांग हो जाते हैं। इस प्रकार दूषित चक्र शुरू हो जाता है जहां सकारात्मक तथा सहायक सम्बन्ध की कमी हो जाती है अर्थात् उन्हें स्थानीय जीवन में योगदान डालने से रोक दिया जाता है, जिससे वह और अधिक अकेले हो जाते हैं। इसका मनुष्य तथा पूरे समाज पर बहुत प्रभाव पड़ता है। विकास का उद्देश्य एक योग्य वातावरण का विकास करना है जहां लोग सृजनात्मक, स्वस्थ तथा सृजनात्मक जीवन व्यतीत कर सकें। इस प्रकार सीमांत के पहलू पर चर्चा करनी आवश्यक है। विकास को विस्तृत तौर पर समूह योगदान के तौर पर देखा जाता है। सीमांत के कारण विशाल संख्या में लोग विकास में हिस्सा नहीं ले पाते। यह जटिल समस्या है तथा कई कारक इसके लिए जिम्मेदार हैं। इसके लिए पॉलिसी बनाई जानी चाहिए।

सीमांत समूह का अर्थ तथा सीमांत

सीमांत मानवीय समाज की क्रियाएं या प्रवृत्तियां है जहां लोग जिन्हें अवांछनीय या लाभदायक नहीं समझ जाता, उन्हें छोड़ दिया जाता है या उन्हें सीमांत कर दिया जाता है। ऐसा समूह या समुदाय जिन्हें उनकी सुरक्षा तथा एकीकरण के लिए अलग कर दिया जाता है। 'सीमांत समूह' कहलाते हैं। इस प्रकार उनके जीवित रहने के अवसर तथा साधन कम हो जाते हैं। Peter Leonard ने सीमांत को परिभाषित किया है, "उत्पादन क्रिया के मुख्य धारा से तथा/या सामाजिक उत्पादन क्रिया से बाहर।"

पब्लिक स्वास्थ्य के विश्वकोष ने सीमांत समूह को परिभाषित किया है, "सीमांत से भाव सीमा में रखना तथा केन्द्र पर पाए जाने वाले विशेषाधिकार तथा ताकत से बाहर कर देना।" Latin ने कहा है, "सीमांत, आर्थिक उन्नति, मानवीय गौरव तथा शारीरिक सुरक्षा के लिए बिल्कुल नीचा दिखाने वाला है। सीमांत समूह प्रमुख समूह के सदस्यों द्वारा

पहचाना जा सकता है तथा यह स्थिर भेदभाव का सामना करता है। यह परिभाषाएं सीमांत की नाजुक तथा बहुपरती धारणा है। सीमांत समाजशास्त्र, आर्थिक शास्त्र तथा राजनीतिक विवाद का विषय है। सीमांत कई प्रकार से प्रकट होता है जैसे नर संहार/ethinic सफाई तथा विस्तार के दूसरी ओर अज्ञात व्यक्रिमीत क्रियाएं, व्यक्ति/परिवार स्तर पर आधारिय आर्थिक तथा सामाजिक मुश्किलें।

सीमांत कई प्रकार से होता है- सामान्य तौर पर समाज के विकास के स्तरों से जुड़ा, सांस्कृतिक रूप से आर्थिकता से सम्बन्धित। कह सकते हैं कि तीसरे विश्व युद्ध में अधिक सीमांत समूह होंगे। यह भूख, बीमारी तथा युद्ध से मरने के लिए छोड़ दिए जाएंगे। इस चुने हुए सीमांत को "सामाजिक बौनापन" कहा जाता है।

सीमांत समूह की निम्नलिखित विशेषताएं होती हैं :

1. यह भेदभाव तथा आश्रित होता है।
2. इनमें वह भौतिक तथा/या सांस्कृतिक गुण होते हैं जो उन्हें अलग करते हैं तथा जिन्हें प्रमुख समूह ठुकरा देता है।
3. इनमें सामूहिक पहचान तथा सामान्य बौद्ध की भावना होती है।
4. इनमें सामाजिक नियम होते हैं जो यह तय करे हैं कि कौन उस सदस्य का हिस्सा है तथा कौन नहीं।
5. यह समूह के भीतर ही विवाह करते हैं।

विभिन्न सीमांत समूह तथा उनकी समस्याएँ

यह समूह हैं :

1. स्त्रियां : विभिन्न आर्थिक दशाओं में तथा विशिष्ट ऐतिहासिक सांस्कृतिक, कानूनी तथा धार्मिक कारकों के प्रभाव के नीचे लिंग सीमांत का एक कारक है। स्त्रियों को कुछ नौकरियों, व्यवसायों से दूर रखा जाता है। प्रत्येक देश तथा संस्कृति में पुरूषों के मुकाबले से हमेशा अलग रही हैं। पुरूषों के सामान दिलचस्पी, योग्यताएं होते हुए भी यह उनके समान नहीं है। अच्छे स्तर की स्त्रियों की अपेक्षा छोटे स्तर, छोटी जात, अनपढ़ता तथा गरीब क्षेत्रों से आने वाली स्त्रियों का सीमांत क्षेत्र अलग होता है।

2. विकलांग लोग : विकलांगता सदियों से ही based मान्यताओं, हानिकारक रूढ़िबद्धता तथा तर्कहीन डरों का कारण रही है। विकलांगता के कलंक ने सामाजिक तथा आर्थिक सीमान्ता को जन्म दिया है। इससे यह लोग और भी दरिद्र हो जाते हैं। भारत में विकलांगों की संख्या कुल जनसंख्या का 2.13 प्रतिशत है। विभिन्न राज्यों तथा क्षेत्रों में इनका अनुपात अलग है। इन लोगों को स्वास्थ्य तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाएं भी प्राप्त नहीं होती। विकलांग स्त्रियों के मध्य बच्चे तथा बुजुर्ग अधिक मेद्य हैं जिन्हें अधिक आकर्षण की आवश्यकता होती है।

3. दलित : जातिवाद सामाजिक व्यवस्था का वह कलंक है जिसने सदियों तक दलितों का कुचला है। जातिवाद की श्रेणियों में ब्राह्मण सबसे ऊपर हैं तथा दलित सबसे नीचे। दलितों के सीमांत को उनके सभी पहलूओं को प्रभावित किया है, उनसे आधारिय अधिकार छीने हैं जैसे नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक। अधिकतर दलित तथा निम्न जाति वाले लोग जीवनयापन के लिए दूसरों पर निर्भर करते हैं। दलित का भाव जाति नहीं है बल्कि यह वह समूह है जिसमें सामाजिक अयोग्यता की अवस्था है तथा जो असहाय तथा गरीब हैं। यह कम पढ़े लिखे हैं, खरीद नहीं सकते, घर कच्चे और गन्दे हैं, इन्हें अपने अधिकारों को पता नहीं। इस समूह के विपरीत संरचना असमानता में शारीरिक, मनोवैज्ञानिक, संवेगात्मक तथा सांस्कृतिक कलंक है जिस पर सामाजिक संरचना तथा सामाजिक व्यवस्था का कानून लागू है। ग्रामीण क्षेत्रों में इन्हें गन्दी तथा अमानवीय परिस्थितियों में अलग रहना पड़ता है। इन सभी का उनके स्वास्थ्य के स्तर तथा जीवन की गुणता पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इनमें अधिक कुपोषण, मृत्यु दर तथा अनीमिया जैसी स्थितियां पाई जाती हैं। इन्हें स्वास्थ्य सम्बन्धी सुविधाएं प्राप्त नहीं होती क्योंकि वह उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के लिए है।

जाति आधारित सीमांत से भारत वर्ष में 26 करोड़ लोग प्रभावित हैं। इनके लिए सामाजिक तथा आर्थिक अलगवाद, पब्लिक तथा प्राइवेट सेवाओं में निषेध तथा कुछ खास प्रकार के कार्य अनिवार्य हैं जिससे इन पर आधुनिक दासता लादी गई है। परन्तु आधुनिक युग में कानूनी सुरक्षा तथा कड़े नियम होने से सीमांत कम हो गया है।

4. अनुसूचित जातियां : इन पर भी दलितों जैसे अलगवाद लागू होता है। यह जातियां सामाजिक तथा आर्थिक रूप से पिछड़ी हैं। इनका प्रतिशत प्रत्येक राज्य में भिन्न है। यह अधिकतर भूमिहीन हैं जिनका ज़मीन, जंगल, पानी पर कोई नियन्त्रण नहीं हैं। यह अधिकतर कृषि मज़दूर, अनौपचारिक श्रमिक, बिजाई करने वाले श्रमिक, उद्योगिक श्रमिक हैं। इनमें गरीबी, निम्न शिक्षा, खराब स्वास्थ्य तथा निम्न स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध है।

5. बुजुर्ग : बूढ़ा होने जीवन की अटल तथा निर्दयता पूर्ण क्रिया है। भारत में बुजुर्गों की संख्या बढ़ रही है। बुजुर्गों की असहायता उनकी बिमारी तथा अयोग्यता ही नहीं बल्कि दूसरों पर उनकी आर्थिक निर्भरता भी है। आर्थिक निर्भरता होने के कारण उन्हें भोजन, वस्त्र तथा स्वास्थ्य देखभाल नहीं मिलती। दवाईयाँ भी महंगी हैं। इस समय कई प्रकार की बिमारियां आ जाती है।

6. बच्चे : बच्चों में मृत्यु तथा अवस्थता गरीबी, उनके लिंग तथा जाति के आधार पर और अधिक हो जाती है।

इनका उनके पौष्टिक ग्रहण, स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवाओं की प्राप्ति, वातावरण, शिक्षा पर प्रभाव पड़ता है। गरीबी का मृत्यु दर तथा अस्वस्थता पर सीधा प्रभाव पड़ता भारत में लड़कियों को पौष्टिक भोजन नहीं दिया जाता तथा लिंग अनुपात भी कम है। है। लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जाता है। इसके साथ बाल श्रम, बच्चों को बेच बच्चों से वेश्यावृत्ति कराना तथा दूसरी हिंसा तथा गल्त व्यवहार भी सम्मिलित है। में सर्वाधिक बाल श्रम हैं। सैक्स वर्कर के बच्चों का जीवन और भी अधिक कठिन है। है। बड़ी संख्या में बच्चों को अपहरण करके दूसरे देशों में भेज दिया जाता है। दर्शाते हैं कि बच्चों को विशिष्ट सुरक्षा की आवश्यकता है।

7. लैंगिक अल्पसंख्यक : पृथक होने वाला अगला समूह लैंगिक अल्पसंख्यक है। यह है gay, lesbian, trangender, bisexual, हिजड़े। हमारा समाज heteronormative लैंगिक सम्बन्धों को ही स्वीकारता है जिन व्यक्तियों की उसी सैक्स के लिए आकर्षण होता है समाज उन्हें दुत्कारता है तथा उसका परिवार उसे बाहर निकाल देता है, उनके पास सीमित सहारा देने वाले समुदाय होते हैं। उन्हें स्वास्थ्य पॉलिसी तथा प्रोग्राम से भी बाहर निकाल दिया जाता है।

अनुसूचित जन जातियों में सीमांत

भारतीय समाज में अनुसूचित जन जातियों को पृथक दृष्टि से देखा जाता है। पूरे विश्व में पूरी जनसंख्या का लगभग चार प्रतिशत अनुसूचित जनजातिय हैं। भारत में प्रत्येक राज्य में इसका प्रतिशत अलग है। भारत की 50 प्रतिशत जनजातिय जनसंख्या देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में रहती है जो अपने सामाजिक तथा आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों पर हैं तथा विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न समस्याएं पाई जाती हैं।

ऐतिहासिक रूप से देखे तो यह सामाजिक शोषण बहुत बुरी किस्म का है। इनके पास धरती नहीं, साधन जैसे भूमि, जंगल, पानी नहीं, शिक्षा नहीं, स्वास्थ्य सेवाएं नहीं, पैसा नहीं। वह आधुनिक सभ्य समाज से बहुत पीछे हैं। इनकी हालात दलितों से भी बहतर है। इनमें बाल मृत्यु-दर बहुत पाई जाती है। दलितों में यह दर 83 प्रति 1000 जन्म जबकि अनुसूचित जातियों में यह 84.2 प्रति 1000 जन्म है।

इन जातियों में स्त्रियां, बच्चे, एड्स से पीड़ित, मानसिक रूप से बिमार तथा विकलांग बहुत खराब हालात में है। इन्हें बेहतर स्वास्थ्य स्तर प्राप्त नहीं होता। स्त्रियों के ऊपर घर तथा बाहर अत्याचार होता है। अशिक्षिता सामान्य है।

छोटी आयु में विवाह, बेचना, वेश्यावृत्ति तथा दूसरे प्रकार के अत्याचार सामान्य है। उच्च जाति वाले लोग इनकी स्त्रियों से रेप, मानसिक जुल्म तथा बेइज्जती करते हैं।

भारतीय संविधान ने अनुसूचित जन जातियों की सहायता के लिए नए कानून तथा पॉलिसी बनाई है जिनका सख्ताई से अमल करना आवश्यक है।

...ों, गरीबी के विशेष संदर्भ में सीमांत एवं भूमिहीन

...है कि सीमांत समूह कौन से स्तर पर है। कुछ सुधार अवश्य हुआ ...ने को बहुत कुछ करना बाकी है।

...मीन तथा उनत पहुँच

...सी सर्वाधिक तथा उनत पहुँच

...ों एवं विस्थापन उन्हें अपनी आय बढ़ाने के साधनों (कृषि सम्बन्धी भूमि एवं ...) तक पहुँचने नहीं देता। यह गरीबी का ही निर्माण करते हैं, बेरोजगार रहते ...ों पर नहीं कर पाते। इसके लिए आवश्यक है कि ऐसी परिस्थितियाँ बनाई जाएँ जो ...ल बनाने वाले पूंजी के साधन रोजगार, मानवीय साधन तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी ...ों के लिए तैयार कर सकें तथा उन्हें मार्केट तथा पब्लिक सैक्टर में हिस्सा लेने के ...ित करें।

...ोजन में राज्य का सक्रिय योगदान : बड़ी संख्या के सीमांत समूह के लिए राज्य ...क्षेप आवश्यक है। योजनाबद्ध विकास के लिए आर्थिक तथा सामाजिक योजना ...आवश्यक होती है। इसलिए योजनाबद्ध राज्य हस्तक्षेप आवश्यक है ताकि देश के ...संतुलित तथा आर्थिक विकास में राज्य हिस्सा ले सके।

पूंजी (Capital) तक पहुँच : अनुसूचित जाति तथा अनुसूचित जनजातियों में ...ब का 30% तथा 40% होता है जबकि बाकी जातियों में यह 18% होता है। ग्रामीण ...ों का 33% अनुसूचित जातियों में तथा 41% अनुसूचित जनजाति जबकि 21% ...य जातियों में पाई जाती है। स्वयं का रोजगार करने वालों के लिए उचित पूंजी, ...ल, सर्वेक्षण तथा मार्केट तक पहुँच आवश्यक है। यह जनजातीय लोगों की बुरी दशा ...है कि उनके पास यदि जमीन है भी तो भी उनके पास कृषि का उत्पादन विकसित ...ने की सक्षमता नहीं है।

पब्लिक तथा प्राइवेट सैक्टर का रोजगार उनत होना : ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों ...विकास मजबूत करने आवश्यक हैं। विशेषतर सूखे तथा गरीबी से भरे इलाके। बड़े ...ोजन के साधन उपलब्ध कराने से ग्रामीण दशा तथा उत्पादन पूंजी तक पहुँच विकसित ...ा सकती है। इससे गरीबी घटेगी तथा आर्थिक विकास होगा।

शिक्षा तथा मानवीय साधन विकास : अनुसूचित जनजातीय लोगों के निम्न शिक्षा ...र तथा शैक्षणिक संस्थानों में उनसे भेदभाव समस्या को बढ़ा देता है। सरकार का कर्तव्य ...है कि वह ग्रामीण तथा दूर के क्षत्रों में इन लोगों के लिए शिक्षा के अतिरिक्त प्रयास करे ...ब सीमांतीयां बनाए। सरकार शिक्षा तथा व्यवसाय की ट्रेनिंग के लिए अलग से साधन ...ए। दूर के क्षेत्रों के गरीब बच्चों तक लोन की स्कीमें भी नहीं पहुँचती। युनिवर्सिटी ...र पहुँच के अन्दर, एक सामान तथा अच्छी गुणता वाली शैक्षणिक व्यवस्था होनी ...आवश्यक है। पब्लिक शैक्षणिक व्यवस्था हमारी ताकत है जो और मजबूत करनी चाहिए।

भोजन सुरक्षा प्रोग्राम : पब्लिक में बाँटने वाली व्यवस्था को पुनर्जीवित ताकतवर बनाना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्रों में उचित कीमत वाली दुकानों पर चाहिए कि पब्लिक वितरण व्यवस्था तथा मिड-डे आहार स्कीम में अनुसूचित लोगों को प्राथमिकता दे न कि भेदभाव करे।

पब्लिक स्वास्थ्य व्यवस्था : ग्रामीण क्षेत्रों में पब्लिक स्वास्थ्य व्यवस्था ध्यान नहीं दिया गया। ग्रामीण क्षेत्रों में प्राइमरी स्वास्थ्य व्यवस्था तथा व्यवस्था दुबारा से शुरू करके अधिक फण्ड इनके लिए देने चाहिए।

छूतछात तथा भेदभाव : छूतछात तथा दलितों के साथ होने वाले भेदभाव तल चल रहे हैं क्योंकि अफसर जो विशेष कानून लागू करने के लिए जिम्मेदार भेदभाव रखते हैं तथा ध्यान नहीं देते जैसे Protection of Civil Rights Act (PCR) तथा Prevention of Atrocities Act (POA)। सरकार को इस मामले में अर्थपूर्ण देकर दलितों पर होने वाले अत्याचार रोकने के लिए कदम उठाने चाहिए।

रूढ़िबद्धता
(Stereotypes)

रूढ़िवाद एक व्यक्ति या समूह के प्रति सामान्य धारणा है। हम रूढ़िवाद करते जब हम वह सूचना को प्राप्त नहीं कर पाते या नहीं करना चाहते जो हमें व्यक्ति परिस्थितियों के बारे में ठीक निर्णय करने के लिए आवश्यक है। पूरा चित्र साफ न पर रिक्त स्थान रह जाते है। समाज कई बार भोलेपन में ही धारणाओं को विकसित लेते हैं परन्तु यही धारणाएं कई बार अनुचित भेदभाव तथा उत्पीड़न पैदा करती है। समय यह रूढ़िवाद बहुत हानि कर सकता है।

उदाहरणतय: हम रात को पार्क में टहल रहे है। हम कोट पहने हुए तथा लाठी हुए बुजुर्ग व्यक्ति को देखते हैं हमें उनसे डर नहीं लगेगा। परन्तु जैकेट पहने हुए के लड़कों से हम डर जाएंगे। ऐसा क्यों है क्योंकि हमने धारणाएं बनाई हुई हैं। धारणाओं की जड़ें हमारे अनुभवों में होती हैं, या जो हमने अखबारों, मैगज़ीन या में पढ़ा है, फिल्में या टी. वी. पर देखा कर या जो हमारे मित्रों या सम्बन्धियों के साथ है। कई बार यह धारणाएं ठीक होती है। परन्तु बहुत बार इन अनुभवों और धारणाओं हम बगैर सोचे समझे दूसरी परस्थितियों पर लागू कर देते हैं। इस प्रकार हम एक या समूह के साथ कुछ विशेषताएं जोड़ देते है। कई बार हम उस समूह के किसी व्यक्ति को भी वैसा ही मानते हैं चाहे उसके साथ हमारा कभी सम्पर्क न भी हो।

टी. वी., किताबें, कॉमिक स्ट्रिप तथा फिल्में रूढ़िबद्धता बनाने के प्रमुख स्रोत उदाहरणतय: इतिहास देखे तो फिल्मों में अफ्रीकी-अमरीकी लोगों को कम बुद्धि

हिंसा, सामाजिक श्रेणी, तथा रूढ़िबद्धता

आलसी तथा हिंसा फैलाने वाला माना है। इन फिल्मों को देखकर अफ्रीकी-अमरीकी लोगों के विरुद्ध भेदभाव बढ़ गया है। इसी प्रकार अधिक सुन्दर स्त्रियों को कम बुद्धिमान तथा यौन अनेक (sexually/romiscuous) माना जाता है।

रूढ़िवादी अल्पसंख्यक समूह के प्रति व्यक्तियों के अनुभव से भी पैदा होती है। जैसे अधिकतर लोगों की धारणा है कि मानसिक रूप से बिमार व्यक्ति हिंसा-प्रवृत्ति वाले होते हैं। यह उस सांख्यिकीय डाटा (statistical data) को नकारता है और बताता है कि मानसिक रूप से बिमार लोग सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक हिंसा प्रवृत्ति के नहीं होते। कुछ इक्का-दुक्का केसों ने ही इस गल्त धारणा को जन्म दिया है। यह गल्त है कि समूह के थोड़े से लोगों के व्यवहार को नोट करके पूरे समूह के बारे में गल्त धारणा बनाई जाती है।

भेदभाव (Discrimination) : जब लोगों और समूह को अपनी गल्त सोच, धारणाओं तथा रूढ़िवादी व्यवहार से जाँचते है यह भेदभाव कई रूप ले लेता है। हम सूक्ष्म या उपरोक्ष दवाब बनाते हैं जो प्रत्येक अल्पसंख्यक समूह को पड़ोस में रहने की अनुत्साहित करना है। स्त्रियां तथा अल्पसंख्यक रोज़गार, शिक्षा तथा सामाजिक सेवाओं में पीड़ित तथा भेदभाव किए जाते है। हम मानसिक बिमारियों वाले लोगों से परे रहते हैं क्योंकि हमें डर है वह हमें हानि पहुँचाएंगे। स्त्रियों तथा अल्पसंख्यकों को व्यापार जगत की उच्च श्रेणी पोज़ीशन से दूर रखा जाता है। कई क्लबों की मैंबरशिप पॉलिसियां यहूदियों, अफ्रीकी-अमरीकी स्त्रियों को इज़ाजत नहीं देती।

कई बार भेदभाव के कारण सिवल तथा आपराधिक न्याय व्यवस्था पूरी प्रकार लागू नहीं की जाती। कई अध्ययनों ने बताया है कि यदि किसी अफ्रीकी-अमेरीकी ने हत्या की है तो उसे मृत्यु दण्ड अवश्य मिलेगा जबकि श्वेत लोगों को यह सजा नहीं मिलेगी।

जातिवाद (Racism) : Anlhropotogrsts, वैज्ञानिक जो मानव तथा उसकी उत्पत्ति का अध्ययन करते हैं। यह मानते हैं कि मानवीय जाति को उनके भौतिक तथा आनुवांशिक make up के आधार पर races में श्रेणीकरण कर सकते हैं, परन्तु सभी वैज्ञानिक मानते हैं कि कोई भी विश्वसनीय वैज्ञानिक आधार नहीं है कि एक race सांस्कृतिक या मनोवैज्ञानिक रूप से दूसरे भिन्न है तथा एक race दूसरे से उच्च है। पुराने अध्ययन जो इस नतीजे पर पहुँचे उनकी अध्ययन की विधि बहुत गल्त या biased थी।

इतने अध्ययन के बावजूद कुछ लोग मानते है कि उनकी जाति सबसे उच्च है। इन लोगों को सामूहिक तौर पर racists कहते हैं यह लोग दूसरी उनके द्वारा समझी जाने वाली नीची races के प्रति अलगवाद, पक्षपात तथा हिंसा करते हैं।

उन्नीसवीं सदी में यूरोप में यहूदियों को नीची race माना जाता था। कुछ लोग सोचते थे कि यदि यहूदी राजनीतिक तथा सामाजिक स्वतन्त्र प्राप्त करते हैं तथा विस्तृत समाज में समा जाते हैं तो उनकी अलग शारीरिक तथा व्यक्तित्व विशेषताएं समाप्त हो

जाएंगी। कुछ समझते है कि यह गुण जन्म जात है तथा बदले नहीं जा सकते।
वालों ने यहूदियों को बाहरी तत्व माना जो वहां के लोगों को सांस्कृतिक तथा
तरफ से दूषित कर देगा। यहूदी वहां के लोगों को सांस्कृतिक तथा राजनीतिक
कर लेंगे। इस लम्बे समय की धारणा ने Nazi विचारधारा तथा नरसंहार को

उत्तरी अमरीका में, अफ्रीकी-अमेरिकन लोगों को अफ्रीका से गुलाम
लाया जाता था तथा उन पर जुल्म किए जाते थे। सिविल युद्ध के समय गुलामों
किया गया तथा नागरिकता दी गई। दक्षिण के 'Jim Crow' कानून के अनुसार
अमरीकी लोगों के लिए अलग बाथरूम, बसें तथा हस्पताल थे।

अल्पसंख्यकों के लिए अलग से Poll टैक्स तथा साक्षरता के लिए टैस्ट
सदियों के बाद आज भी उन लोगों के लिए स्कूल व्यवस्था अलग है।
अमरीकन घर, रोज़गार तथा शिक्षा में आज भी भेदभाव भुगत रहे है।

स्थानीय, राज्य तथा federal स्तर पर सिविल अधिकार कानून पारित किए
ताकि racism बढ़ाने वाली अभ्यासों को रोका जा सके। संविधान का प्रथम
प्रत्येक का शान्तीपूर्वक इकट्ठे होने तथा स्वतन्त्रता से बोलने का अधिकार देता है,
मैसेज की भी समाज के उत्तरदायी सदस्यों द्वारा निन्दा की जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय
ब्रह्मान्डिय स्तर पर दक्षिणी अफ्रीका की इन रंगभेद पॉलिसियों की निन्दा करता है।

Sexism : स्त्रियों के लिए समान अधिकार की धारणा बहुत पुरानी है।
दार्शनिक प्लेटो ने भी स्त्री-पुरुष की समानता पर ज़ोर दिया है। कई सभ्यताओं ने
पर ज़ोर दिया। परन्तु सिर्फ आधुनिक युग में ही स्त्रियों को कानूनी अधिकार प्राप्त
जो पहले मात्र पुरूषों के लिए थे। कुछ सोचते हैं कि समाज में वास्तविक समानता
भी कानूनी स्वतन्त्रता से बहुत पीछे है।

अमेरिका में 1800 ई. के शुरूआत में स्त्रियों के लिए कानूनी अधिकारों
उठी। Pennsylvania पहला राज्य था जहां स्त्रियों के लिए medical school था।
उन्नीसवीं सदी के मध्य तक स्त्रियों को कानूनी पढ़ाई करने की आज्ञा नहीं थी। किं
स्त्री ने 1820 तक यह पढ़ाई नहीं की। मध्य 1800 तक स्त्रियों को सम्पत्ति का
नहीं था।

1920 में, संविधान के 19वें संशोधन के अन्तर्गत स्त्रियां को वोट डालने
अधिकार मिला। 1933 में एक स्त्री Frances Perkins ने राष्ट्रपति के कैबिनेट में
किया।

1964 के सिविल अधिकार एक्ट ने रोज़गार में लैंगिक भेदभाव के विरुद्ध
उठाई। प्रत्येक राज्य में प्रयुक्त कानून कहता है कि स्त्रियों को एक समान कार्य के
एक समान वेतन मिलना चाहिए जो कि कुछ वर्ष पहले सोचा भी नहीं जाता था

में तुलनात्मक मूल्य कानूनों का सुझाव दिया गया जिससे स्त्रियों की दबंगता वाले
(जैसे शिक्षण, नर्सिंग तथा secretarial कार्य) तथा तुलनात्मक अवस्थाओं जहां
का अधिकार था, में तनख्वाह में भेदभाव समाप्त किया गया।

हालांकि समाज के सभी स्तरों पर sexual भेदभाव अभी भी है, स्त्रियां सरकार,
तथा व्यवसायों के ऊँचे पदों तक भी पहुँची हैं, परन्तु पुरूषों से अभी भी पीछे

पूर्वाग्रहों तथा रूढ़िबद्धता के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया

पूर्वाग्रह, बलि का बकरा बनाना, रूढ़िबद्धता तथा भेदभाव को समाप्त करने के लिए
इन्हें समझना आवश्यक है। हम सभी की उन सदस्यों के विरुद्ध पूर्वाग्रह होते हैं जो हमारे
से उलग हैं। हमें यह समझना चाहिए कि यदि हम इन रूढ़िबद्धता तथा पूर्वाग्रहों के कारण
लोगों से भेदभाव कर रहे हैं तो यह ठीक नहीं है।

1963 में "मेरा यह स्वप्न है" भाषण में सिविल अधिकार कार्यकर्ता डॉ. मार्टिन
लूथर किंग ने कहा, "मेरा यह स्वप्न है कि मेरे चारों बच्चे एक दिन ऐसे राष्ट्र में रहेंगे जहां
वह त्वचा के रंग से नहीं पहचाने जाएंगे बल्कि उनका चरित्र उन्हें तय करेगा।" डॉ. किंग
जीवन पर्यन्त कट्टरता तथा पूर्वाग्रह के विरूद्ध लड़ते रहे। उनकी लड़ाई सभी दबी हुई
अल्पसंख्यक जातियों के लिए थी। उनके विरूद्ध व्यक्तिगत इतना अन्याय हुआ कि उनकी
हत्या कर दी गई। उसके भाईचारे के सन्देश, समझ, आपसी बातचीत, संयुक्त राष्ट्र
निर्माण, अन्याय के विरूद्ध अहिंसा से विरोध अडिंग हैं।

यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम अन्याय, भेदभाव, रूढ़िवाद तथा scapegoating के
विरूद्ध खड़े हों जिसने उत्पीड़न हिंसा तथा नरसंहार (genocide) को जन्म दिया है।

रूढ़िबद्धता तथा पूर्वाग्रह

रूढ़िबद्धता लोगों के एक खास समूह में आधारित उनकी सदस्यता के बारे में राय
है। रूढ़िबद्धता सकारात्मक, जातीयता या तटस्थ हो सकती है। रूढ़िबद्धता लिंग, जातियता
या व्यवसार्य के ऊपर आधारित होती है तथा कई समुदायों में सामान्य है।

उदाहरणतय: लोग स्त्रियों को पालन करने वाली या पुरानी कार बेचने वालों को
बेईमान ही मानते हैं।

रूढ़िबद्धता की स्थिरता : निम्नलिखित कारणों के कारण रूढ़िबद्धता बदली नहीं
जा सकती :

जब व्यक्ति किसी विशेष समूह से असुविधा के उदाहरण का सामना करता है तो
यह धारणा बना लेता है कि उदाहरण उस समूह का एक प्रकार का हिस्सा ही है।

उदाहरण : समलैंगिक पुरूष खिलाड़ी नहीं होते जब कोई समलैंगिक खिला मिलता है तो सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि यह खिलाड़ी gay लोगों का प्रतिनिधि नहीं करता।

— लोगों की धारणाएं उनकी आशाओं से प्रभावित होती हैं।

उदाहरण- लिज की धारणा है कि बुजुर्ग लोग मानसिक रूप से स्थिर नहीं होते। जब वह बुजुर्ग व्यक्ति को पार्क में जोर से बोलते सुनती है तो सोचती है कि वह अपने आप से बात कर रही है। वह यह नहीं देखती कि बुजुर्ग अपने फोन पर बात कर रहा था।

— लोग उन घटनाओं को चुनकर याद रखते हैं जो उनकी रूढ़िबद्धता को मजबूत बनाता है तथा रूढ़िबद्धता को कमज़ोर करने वाली घटनाओं को भूल जाते हैं।

उदाहरण- पॉल अपने लेटिन अमरीकी दोस्तों को शैक्षणिक प्रोत्साहन वाला नहीं देखता। वह कई उदाहरण देता जब उसके लेटिन अमरीकी साथी कक्षा सामग्री को पढ़ने में असमर्थ रहे। उस समय उसने यह याद नहीं रखा कि उसके लेटिन अमरीकी साथियों ने अपनी assignments अवश्य पूरी की थी।

रूढ़िबद्धता के कार्य

रूढ़िबद्धता के कई महत्त्वपूर्ण कार्य है :

— यह किसी घटना या व्यक्ति के बारे में नई जानकारी की तेजी से प्रक्रिया करने की अनुमति देते हैं।

— यह लोगों के भूतकाल के अनुभवों को व्यवस्थित करते हैं।

— यह व्यक्तियों तथा समूहों के मध्य अन्तर को अर्थपूर्ण ढंग से पहचानने में सहायक होते हैं।

— यह दूसरे लोगों के व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सहायक होते हैं।

रूढ़िबद्धता का प्रतिदिन का कार्य

रूढ़िबद्धता का अच्छे कारणों के साथ भी नकारात्मक अतिरिक्त अनुमान जोड़ दिया जाता है। विभिन्न समूह के प्रति लोगों की नकारात्मक रूढ़िबद्धता उन लोगों का जीवन नर्क बना देती है। कुछ लोग तो प्रतिदिन रूढ़िबद्धता पर निर्भर रहते हैं जो उन्हें समाज में रहने में सहायक होता है। उदाहरण- एक स्त्री रात को लेट घर आ रही थी। सामने से पाँच आदमी ऊँचे बातें करते हुए आ रहे थे। स्त्री रास्ता बदल कर एक स्टोर के भीतर चली गई। बहुत सारे लोग कहेंगे कि वह विवेकी थी चाहे वह अपने व्यवहार के लिए रूढ़िबद्धता पर निर्भर रही।

खतरा : रूढ़िबद्धता कई कारणों से वास्तविकता को बिगाड़ सकती है :

— यह लोगों को समूहों के बीच अलगावों को अधिक बढ़ा देती है।

— यह लोगों को उस सूचना को चुनकर केन्द्रित करने को मजबूर करते हैं जो रूढ़िबद्धता के साथ सहमति रखे तथा उस सूचना की नज़रअंदाज़ी करे जिसके साथ वह असहमत हों।

— यह लोगों को दूसरे समूहों को सजातीय पीढ़ी देखने पर मजबूर करते हैं। हालांकि लोग आसानी से देख सकते हैं कि जिस समूह से वह हैं वह विजातीय है।

विकासवादी परिप्रेक्ष्य : विकासवादी मनोवैज्ञानिकों ने अंदाज़ा लगाया है कि मनुष्य रूढ़िबद्धता की ओर झुकाव इसलिए होता है क्योंकि इसके उनके पूर्वजों को अनुकूल लाभ दिया। जल्दी से निर्णय लेना कि वह किस समूह से सम्बन्धित हैं उन्हें जीवन जीने का ढंग असानी से मिल जाता है। इस प्रकार उन्हें दोस्तों तथा दुश्मनों में फर्क भी पता चल जाता है।

विदेशियों के प्रति घृणा : कुछ विकासवादी मनोवैज्ञानिक विश्वास रखते हैं कि विदेशियों के प्रति घृणा, अनजान या अपने भिन्न लोगों से भिन्न लोगों का डर की अनवंशिक जड़े होती हैं। उनके अनुसार मनुष्य के किसी हद तक genes इस बात का प्रोग्राम करते हैं कि वह अनवांशिक रूप से एक समान लोगों के प्रति सकारात्मक तथा अनवांशिक रूप से भिन्न लोगों के प्रति नकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं।

पूर्वाग्रह : पूर्वाग्रह व्यक्तियों के खास समूह के प्रति नकारात्मक विचार या भावनाएं है। पक्षपात एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक चलता है।

कार्य : पूर्वाग्रह एक हानिकारक प्रक्रिया है तथा व्यापक है क्योंकि यह कई मनोवैज्ञानिक, सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करती है।

— पूर्वाग्रह लोगों को संदेह तथा डर से दूर रहने में सहायता करता है।

उदाहरण- सीमा के माता-पिता साधारण नौकरी पेशा हैं, व्यवसायी नहीं। सीमा नौकरी को नापसन्द करेगी क्योंकि वह नहीं चाहेगी कि ऐसा सम्बन्ध उसे उच्च-स्तर के सामाजिक लोगों से दूर कर देगा।

— पूर्वाग्रह समस्या के सदस्य दोष मड़ने के लिए लोगों को बलि का बकरा देती है।

उदाहरण- राजू अपनी बेरोज़गारी का दोष बाहर के लोगों को देता है जिन्हें वह अयोग्य समझता है तथा जो कम वेतन पर भी काम करने को राज़ी हैं।

— पक्षपात आत्म-सम्मान ऊँचा कर सकती है।

उदाहरणतय: एक थोड़ी जमीन वाला किसान अपने आपको मजदूरों से ... समझता है।

— विकासशील मनोवैज्ञानिक सुझाव देते हैं कि पक्षपात लोगों को अपने ... साथ जुड़ने में सहायक होता है। यह उसका अपने समूह के दूसरे समूह के ... तुलना करने के कारण होता है।

उदाहरण- बहुत सारे धार्मिक समूह दूसरे धार्मिक समूहों के साथ पक्षपात ... दृष्टिकोण रखते हैं क्योंकि वह अपने समूह के अधिक विशिष्ट समझता ...

— पूर्वग्रह पक्षपात को वैद्य ठहराता है क्योंकि यह एक समूह के दूसरे समूह ... प्रभुत्व को सही ठहराते हैं।

उदाहरणतय: अफ्रीकी-अमेरिकन को मानसिक रूप से निम्न मानकर ... लोगों ने उन्हें गुलाम बनाने की बात को सही ठहराया।

पूर्वाग्रहों को मापना : खोजकर्त्ता के अनुसार पूर्वाग्रहों को मापना कठिन होता ... इसका एक कारण यह है कि लोग अपने द्वारा पाले जाने वाले पूर्वाग्रहों में भिन्न-भिन्न ... हैं। उदाहरणतय एक व्यक्ति जो किसी विशेष जाति समूह के प्रति पूर्वाग्रह रखते ... अनजान या कट्टर हो सकते हैं। लोग अपने पूर्वाग्रह होने की बात भी नहीं मानते।

लोगों ने अधिकतर अंतर्निहित पूर्वाग्रह होते है। हालांकि उनमें सस्पष्ट पूर्वाग्रह ... हों। खोजकर्त्ताओं ने तीन प्रकार के अन्तर्निहित पूर्वाग्रह ढूंढे हैं :

— कुछ अनुसन्धानकर्त्ताओं ने मनोवृत्तियों को खोजा है जो पूर्वाग्रह का सुझाव ... है। जैसे सकारात्मक कार्य के प्रति मजबूत संवेगात्मक आपत्ति।

— कुछ खोजकर्त्ताओं ने मनोवृत्ति के बजाए व्यवहार को खोजा है। तनावपू ... स्थितियों में लोगों का व्यवहार अन्तर्निहित व्यवहार दर्शाने में खासतौर ... लाभदायक होगा।

— कुछ खोजकर्त्ताओं ने लोगों का विशेष समूहों के साथ अनिच्छित सम्बन्ध ... है।

समूह में तथा समूह के बाहर
(Ingroups and Outgroups)

लोगों की सामाजिक पहचान उन समूहों पर निर्भर करती है जहां वह पाए जाते ... लोगों के दृष्टिकोण से कोई भी समूह जहां वह सम्बन्धित हैं समूह में ingroup कहला ... है तथा कोई समूह जिसके साथ वह सम्बन्धित नहीं outgroup कहलाते हैं। लोगों ... अपने समूह के प्रति उच्च राय तथा दूसरे समूह के प्रति निम्न राय होती है। वह लोग ...

अपनी एक विशेष समूह के साथ पहचान बनाकर रखते हैं वह प्रतिस्पर्धी वाले समूह से ... पूर्वाग्रह रखेंगे।

लोग अधिकतर सोचते हैं कि उनके समूह में विभिन्न प्रकार के लोग है। इसी समय वह सोचते है कि outgroup में भी इसी प्रकार है। सम्पर्क परिकल्पना के अनुसार जब ingroup में लोग outgroup के लोगों के रीति-रिवाजों, मापदण्डों, संगीत, भोजन, मनोवृत्ति के बारे में जागरूक हो जाते हैं तो उनका पूर्वाग्रह कम ... जाता है। Outgroup लोगों के साथ सम्पर्क लोगों को उसके सदस्यों में भिन्नताएं देखने में सहायक होती है।

प्रतिस्पर्धा तथा सहयोग

जब ingroup तथा outgroup के बीच प्रतिस्पर्धा होती है तो उनमें शत्रुता बढ़ जाती है। खोजकर्त्ताओं के अनुसार जब एक सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए दोनों समूहों को सहयोग देना पड़ता है तो उनमें शत्रुता घट जाती है। उस स्थिति में दोनों समूहों के लोग अनुभव करते हैं कि वह दो गुटों की अपेक्षा एक बड़े समूह का हिस्सा है।

पूर्वाग्रह को कम करना

अनुसन्धान के अनुसार समूहों में पूर्वाग्रह तथा संघर्ष कम हो जाएगा यदि चार अवस्थाएं पूरी होती हैं :

— समूहों के पास कानूनी स्तर, आर्थिक अवसर तथा राजनीतिक ताकत के तौर पर एक समानता हो।

— प्राधिकारी एक समान अधिकारों का समर्थन करें।

— समूहों को औपचारिक तथा अनऔपचारिक रूप से एक दूसरे के साथ प्रतिक्रिया करने के अवसर प्राप्त हों।

— समूह सामान्य लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सहयोग दें।

सामान्य रूढ़िबद्धताएं

नस्लीय प्रोफाइलिंग : एक सामान्य रूढ़िबद्धता का उदाहरण है नस्ल के इर्द-गिर्द रूढ़िबद्धता। **उदाहरणतय:** यह कहना कि सभी काले लोग अच्छे खिलाड़ी होते हैं, एक रूढ़िबद्धता है क्योंकि यह नस्ल को एक समूह में इकट्ठा कर देता है। यह जताने के लिए कि नस्ल में प्रत्येक एक अच्छा एथलीट है।

लिंग प्रोफाइलिंग : स्त्री तथा पुरूषों की सामान्य रूढ़िबद्धता होती है। जैसे-

— आदमी ताकतवर होते हैं तथा प्रत्येक कार्य कर सकते है।

— पुरूष रीढ़ की हड्डी है।

— स्त्रियां पुरूषों जैसी स्मार्ट नहीं होती।

— स्त्रियां पुरूषों की भांति अच्छा कार्य नहीं कर सकती।

— लड़कियां खेलने में अच्छी नहीं होती।
— लड़के गन्दे तथा अव्यवस्थित होते हैं।

संस्कृति : रूढ़िबद्धता संस्कृति तथा पूरे देश में भी होती है। इसके उदाहरण

— सभी गोरे अमरीकी मोटे, आलसी तथा मंद अक्ल है।
— सभी मैक्सीकन आलसी तथा अमरीका में अवैधनीय तरीके से है।
— सभी अरब तथा मुस्लिम आतंकवादी हैं।
— इंग्लैंड में रहने वाले सभी लोगों के दांत खराब हैं।
— इटली या फ्रांस के लोग सबसे अच्छे प्यार करने वाले हैं।
— अमरीका के बाहर सभी काले लोग गरीब हैं।
— सभी यहूंदी लालची हैं।
— सभी एशियाई लोग हिसाब में अच्छे हैं। वह चावल खाना पसन्द करते है कार धीमे चलाते है।
— सभी इरिश लोग शराब पीते हैं आलू खाते है।
— सभी अमरीकी लोग मित्रता से भरपूर, बड़े दिल वाले, सहनशील अधीर तथा घमंडी हैं।

व्यक्तियों के समूह : दूसरे प्रकार की रूढ़िबद्धता व्यक्तियों का समूह है स्केटिंग करने वाले, गैंगस्टर इत्यादि है। यह स्कूलों में होता है जैसे-

— Goth काले कपड़े, काला मेकअप पहनते हैं, उदासीन होते हैं तथा समाज नफरत करता है।
— सभी राजनीतिक अपने मतलब तथा लाभ की सोचते हैं।
— सभी blonds बुद्धिहीन होते हैं।
— सभी लाइब्रेरियन बूढ़ी स्त्रियां होती है, चश्में पहनती है, ऊँचा जूड़ा करती तथा उनके चेहरे पर गुस्सा रहता है।
— सभी किशोर विद्रोही होते हैं।
— सभी बच्चों को पौष्टिक भोजन अच्छा नहीं लगता।
— सिर्फ न खाने वाली स्त्रियां मॉडल बनती हैं।
— बड़ों में स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्यायें होती हैं और वह बच्चों जैसा व्यवहार हैं।

यौन सम्बन्धी रूढ़िबद्धता : यौन सम्बन्धी रूढ़िबद्धता प्रस्तावित करती है कि सभी पुरुष (gay) तथा सभी स्त्री समलैंगिक (Lesbian) होते हैं।

रूढ़िबद्धता में विश्वास करने वाले समलैंगिकता को अनैतिक, गलत तथा घृणात्मक मानते हैं।

रूढ़िबद्धता बुरी क्यों है ? रूढ़िबद्धता न सिर्फ कष्ट देती है पर दुखदायी भी है। चाहे रूढ़िबद्धता किसी प्रकार से ठीक भी हो तो भी आपकी सोची धारणाओं के कारण वह दूसरे को नीचा ही दिखाती है तथा उन्हें सफलता के लिए उत्साहित नहीं करती। रूढ़िबद्धता छोटे बच्चों में बदमाशी उत्पन्न करते हैं। ऐसा व्यवहार उनके प्रौढ़ होने तक चलता रहता है।

रूढ़िबद्धता लोगों को नफरत में जीने की ओर ले जाता है तथा रूढ़िबद्धता से प्रभावित शिकार हमेशा डर में जीते है। उदाहरणतय: समलैंगिक लोग अपने सम्बन्धों को मानने तथा सबके सामने आने से डरते हैं ताकि लोग उनके बारे में गलत मत सोचे।

रूढ़िबद्धता के प्रकार

लैंगिक रूढ़िबद्धता : लैंगिक रूढ़िबद्धता एक सामान्यीकरत नजरिया या उन विशेषताओं या मनोवृत्तियों का पूर्वग्रह है जो स्त्रियों तथा पुरुषों द्वारा अपनाए जाने चाहिए या वह रोल जो उन्हें निभाना चाहिए। लैंगिक रूढ़िबद्धता हानिकारक है जब वह स्त्री तथा पुरुष की व्यक्तिगत योग्यताओं को विकसित करने की क्षमता, अपने व्यवसाय के कैरियर को बढ़ाने तथा जिन्दगी तथा जिन्दगी की योजनाओं को सीमित कर देती है। हानिकारक रूढ़िबद्धता नकारात्मक हो सकती है (उदाहरणतय: स्त्रियां तर्कहीन होती है) या सौम्य दिखती हैं (जैसे स्त्रियां पोषित करती हैं)। स्त्रियों के प्रति ऐसा विचार रखने से कि वह बेहतर पोषित करती हैं, बच्चा पालने की सारी जिम्मेदारियां उन पर छोड़ दी जाती है।

लैंगिक रूढ़िबद्धता व्यक्तिगत स्त्रियों या पुरुष की विशिष्ट योग्यताओं, विशेषताओं या रोल की जिम्मेदारी लेना है मात्र इसलिए कि वह सामाजिक समूह के सदस्य है। लैंगिक रूढ़िबद्धता गलत है जब वह मानवीय अधिकारों तथा आधारिय स्वतन्त्रता का उल्लंघन करना। उदाहरणतय: वैवाहिक जीवन में पति द्वारा रेप को अस्वीकार न मानना क्योंकि स्त्री पुरुष की यौन सम्पत्ति है।

लैंगिक रूढ़िबद्धता जब इकट्ठी हो जाएं तो इसका स्त्रियों के कुछ समूह, जैसे में कट स्त्रियों, कानूनी पेच में फंसी स्त्रियां, अल्पसंख्या या स्वदेशी समूह की स्त्रियां, विकलांग स्त्रियां, निम्न जाति की स्त्रियां, निम्न आर्थिक स्तर की स्त्रियां, प्रवासी स्त्रियां इन पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

अन्तर्राष्ट्रीय मानवीय कानून राज्यों पर कानूनी पाबन्दी लगाता है कि स्त्रियों और पुरुषों के बीच फर्क न रखा जाए। Convention on the Elimination of All Forms of Discrimination against Women ने अपने article 5 में कहा है, "राज्य पार्टियों को उचित कदम उठाने चाहिए ताकि पुरुषों तथा स्त्रियों के सामाजिक तथा सांस्कृतिक

पैटर्न को सुधारा जा सके जिससे पूर्वाग्रह तथा रीति-रिवाजों तथा दूसरी practices रोका जा सके जो स्त्रियों तथा पुरूषों को रूढ़िबद्धता में बाँधती है।"

परम्परागत लैंगिक रूढ़िबद्धता

स्त्रीत्व	पुरूषत्व
आक्रामक नहीं	आक्रामक
निर्भर	स्वतन्त्र
शीघ्र प्रभावित होती है	जल्दी प्रभावित नहीं होते
विनम्र	प्रबल
निष्क्रिय	क्रियाशील
घरेलू	संसारी
संवेदनशील	असंवेदनशील
अस्थिरचित	स्थिरचित
अधिक बोलने वाली	कम बोलने वाला
सौम्य	सख्त
दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील	दूसरों की भावनाओं के प्रति संवेदनशील
सुरक्षा चाहने वाली	सुरक्षा का इच्छित नहीं
अधिक रोती है	बहुत कम रोता है
भावुक	तर्कयुक्त
भौखिक	विश्लेषणात्मक
दयालु	कठोर
विनम्र	स्पष्टवादी
पोषण देने वाला	पोषण न देने वाला

लैंगिक रूढ़िबद्धता की लिस्ट

लैंगिक रोल सामान्य तौर पर न ही सकारात्मक तथा न ही नकारात्मक होते हैं पुरूष तथा स्त्री की विशेषताओं का गलत सामान्यीकरण होता है। प्रत्येक पुरुष व्यक्तिगत इच्छाएं, विचार तथा संवेदनाएं होती है। यह रूढ़िबद्धता प्रत्येक लिंग के व्यक्ति की विशेषताएं नहीं बताते। कुछ लैंगिक रूढ़िबद्धताएं इस प्रकार हैं यह सभी या स्त्रियों पर लागू होता है।

स्त्रीत्व लैंगिक रूढ़िबद्धताएं : लैंगिक रूढ़िबद्धताएं उसी समय शुरू हो जाती हैं जब शिशु के लिंग का पता चलता है। लड़कियों को गुलाबी रंग, फ्राकों, फरिल्लों गुड़ियों, डी-सैट इत्यादि से सजाया तथा लुभाया जाता है। इस समय लड़कियों को कपड़े पहनना, भोजन सर्व करना, शिशुओं की देखभाल करना सिखाना शुरू हो जाता है। यह रूढ़िबद्धताएं स्त्रियों पर उसी समय बननी शुरू हो जाती हैं।

गुड़िया से खेलते समय भी छोटी लड़की को पता है कि उसे घर में रह कर बच्चों की देखभाल करनी है जबकि पति को घर के बाहर कार्य करना है। दूसरी रूढ़िबद्धताएं इस प्रकार हैं :

- स्त्रियों को साफ नौकरियां ही करनी चाहिए जैसे सैकेटरी, अध्यापक तथा लाइब्रेरियन।
- स्त्रियों को नर्स होना चाहिए, डाक्टर नहीं।
- स्त्रियों को पुरूषों से कम कमाना चाहिए।
- स्त्रियों को घर में रहना चाहिए।
- उन्हें उच्च शिक्षा नहीं प्राप्त करनी चाहिए।
- उन्हें खेलना नहीं चाहिए।
- वह राजनीतिज्ञ नहीं हो सकती।
- उन्हें खामोश रहना चाहिए।
- उन्हें संकोची तथा विनम्र होकर जैसा कहा जाए वैसा कार्य करना चाहिए।
- उन्हें खाना बनाना तथा गृह कार्य ही करना होता है।
- स्त्रियों पर बच्चों को पालने की जिम्मेदारी होती है।
- स्त्रियों के पास तकनीकी कला नहीं होती। वह ऐसे प्रोजैक्ट के काबिल नहीं जैसे कार ठीक करना।
- स्त्रियों को संकट में युवती ही रहना चाहिए पुरूष नहीं बनना चाहिए।
- उन्हें सुन्दर दिखना चाहिए।
- स्त्रियों को गाना तथा डांस करना अच्छा लगता है।
- उन्हें वीडियो खेलें नहीं खेलनी चाहिए।
- स्त्रियां इश्कबाज होती हैं।
- उन्हें चार्ज नहीं देना चाहिए।

पुरूष लैंगिक रूढ़िबद्धता : लड़का होने पर सारी नर्सरी को नीले रंग से सजाया जाता है। जीन, पोलो शर्ट, बूट से अलमारी भरी जाती है जिन पर जंगली जानवर या

डायनोसार बना होता है। लड़कों के खिलौनों में ट्रक, डायनोसार, action figures
वीडियो गेम होती है। शुरू में ही लड़को को रक्षक बनना सिखाया जाता है।
बताया जाता है कि डैडी बाहर काम पर जाते हैं तथा मम्मी घर का काम करती है
लड़के के लिए मौज मस्ती तथा लड़कियों के लिए सारा दिन काम है।

इसी प्रकार बर्तन धोना लड़कियों का काम है। लड़के घास काटेंगे या ऐसा
करेंगे जहां अधिक शक्ति चाहिए। दूसरी प्रकार की रूढ़िबद्धताएं है :

— सभी पुरूष कारें चलाना पसन्द करते हैं।
— पुरूष डाक्टर होते हैं न कि नर्सें।
— पुरूष गन्दा शक्ति वाला कार्य करते हैं जैसे निर्माण करना, मकैनिक इत्यादि।
— पुरूषों के लिए घर का कार्य करना या बच्चों की देखभाल करना जिम्मेदारी
है।
— वीडियो गेम्स खेलते हैं।
— खेलें खेलना पसन्द है।
— उन्हें बाहरी क्रियाएं जैसे कैम्पिंग, फिशिंग तथा हाइकिंग पसन्द है।
— वह घर के मुखिया होते हैं।
— सभी पति पत्नियों को बताते हैं कि उन्हें क्या करना है।
— पुरूष आलसी तथा अव्यवस्थित होते है।
— उनका Math अच्छा होता है।
— वह विज्ञान, इंजीनियरिंग तथा दूसरे तकनीकी क्षेत्रों में कार्य करते हैं।
— वह न खाना बनाते है, न सिलाई तथा न ही क्राफ्ट करते हैं।

यह सभी रूढ़िबद्धताएं एक स्त्री या पुरूष के व्यक्तित्व पर पूरी उतर सकती है परन्तु
सभी के लिए नहीं। यही रूढ़िबद्धताएं मापदण्ड बन जाती है तथा प्रत्येक स्त्री या पुरुष
द्वारा इसकी ही आशा की जाती है। स्त्री तथा पुरूष व्यक्ति ही हैं वह स्त्री या पुरुष
अधिक हैं। हमारा लिंग, हमारा एक हिस्सा यह एक व्यक्ति की परिभाषा नहीं है।

सामाजिक श्रेणियां
(Social Classes)
ग्रामीण भारत में सामाजिक श्रेणियां

अंग्रेज़ों के भारत में ज़मीदारों की नई प्रकार विकसित हुई जिसे टैक्स इकट्ठे करने के
लिए प्रयोग किया गया। ज़मीदारों को स्वामित्व का अधिकार दिया गया। इस समझौते से
पहले राज्य को पट्टे के आधार पर ज़मीन को नीलामी करने का अधिकार तथा इसके बा

ज़मीदार सिर्फ राजस्व इकट्ठा करते थे। स्थाई ज़मीन के समझौते बाद ज़मीदार हमेशा के
लिए उस ज़मीन के मालिक हो गए। उन्हें मात्र अंग्रेज़ों को राजस्व इकट्ठा करके देना होता
था। दो प्रकार के ज़मीदार थे- (i) ज़मीदार ताल्लुकदार (पुराने ज़मीनदार) (ii) साहूकार
जो पैसे ऋण पर देते थे। जिनके पास इस कार्यकाल के अधिकार होते थे उन्हें मध्यवर्ती
कहते थे।

आज़ादी के समय मध्यवर्ती श्रेणी के पास ज़मीन का हक था जबकि किसानों के
पास कुछ नहीं। 1950 में जमीदारी व्यवस्था समाप्त कर दी गई। इसके प्रभाव रहे कि और
श्रेणियां बन गई। उस समय जमीदारों ने अपने आपको ज़मीन का मालिक घोषित कर
दिया तता जिन्हें पट्टे पर देकर वह खेती करवाते थे, उन्हें ज़मीन बाहर कर दिया जो ज़मीन
के बगैर मजदूर बन गए। भूमि सुधार के बाद ज़मीदार किसानों से टैक्स वसूल नहीं कर
सकते। इस प्रकार वह छोटे भूमि के मालिक रह गए।

हरि क्रान्ति आने से ज़मीदारों को बहुत फायदा हुआ। जो किसान पढ़े लिखे थे तथा
जिनके पास कृषि थी वह काफी आगे निकल गए।

ब्रिटिश द्वारा दूसरा किया गया समझौता Ryutaro समझौता था जिसमें ज़मीन खेती
वालों को ही दी गई। कुछ की सामाजिक-आर्थिक हालत तो सुधर गई परन्तु कुछ दुबारा
से पहले स्थान पर ही आ गए तथा किराएदार या मज़दूर बन कर ही रह गए। आज़ादी के
बाद किसान मालिकों की संख्या बढ़ गई है। इन्हें तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है :-
(i) अमीर किसान (ii) मध्यम किसान (iii) गरीब किसान।

(i) अमीर किसान : इनके पास काफी ज़मीन होती है। यह स्वयं खेती नहीं करते
परन्तु उत्पादन का निरीक्षण करते हैं। यह भूमि व्यवस्था तथा विकास में व्यक्तिगत
दिलचस्पी लेते हैं। यह ताकतवर पूंजीवादी समूह है।

(ii) मध्यम किसान : इनके पास मध्यम आकार की ज़मीन है। यह आत्म-निर्भर
होते हैं। वह परिवार के सदस्यों के साथ श्रम करके खेती करते हैं।

(iii) गरीब किसान : इनके पास ज़मीन तो होती है परन्तु वह अपने परिवार की
पालना नहीं कर पाते। उन्हें दूसरों की ज़मीन किराए पर लेनी पड़ती हैं या उन्हें लेबर की
तरह कार्य करके परिवार की आय बढ़ानी पड़ती है। यह किसानों की जनसंख्या का प्रमुख
हिस्सा है।

खेती न करने वाले ज़मीदार, किसान खेती के मालिक तथा किराएदार कृषि का
प्रमुख हिस्सा बनाते हैं। कृषि सम्बन्धी श्रमकों की संख्या भी बढ़ी है। कुछ छोटी सी भूमि
के साथ-साथ लोगों के खेतों पर भी काम करते हैं तथा इसके बदले उन्हें बहुत कम पैसे
मिलते है। इनकी दशा बहुत बुरी होती है। कुछ लोग बन्धुआँ मज़दूरों की भांति ही कार्य
करते है जैसे Dublas तथा Halis गुजरात में तथा Padials तामिलनाडु में।

कई लोगों ने इस श्रेणी के सन्दर्भ में अध्ययन किया है। जैसे Andre Beteille, Hemsa Alavi, Daniel Thorner, A.R. Desai.

Andre Beteille ने अपने कार्य 'The Case of the Jotedars' में कहा है कि ग्रामीण समाज में, लोग अपने सामाजिक संसार को जाति के आधार पर ही नहीं बल्कि आर्थिक श्रेणी के आधार पर बांटते हैं। पहली प्रकार की श्रेणी को 'समुदाय प्रकार' कहा है। दूसरी श्रेणी को 'दर्जा प्रकार' कहा है।

T.K. Oommen ने पांच श्रेणियां दी है :

(*i*) ज़मीदार जिनके पास भूमि तो है परन्तु कृषि नहीं करते यह लेबर को किराए पर लेते हैं या अपनी ज़मीन किराए पर देते हैं।

(*ii*) अमीर किसान जो कृषि को व्यवसाय की भांति देखते हैं, मार्किट तथा लाभ के लिए उत्पादन करते है, वह लेबर रखते है तथा स्वयं कृषि करने के बजाए निरीक्षण करते है।

(*iii*) मध्य किसान अपनी खेती करते है तथा कुछ ही समय के लिए तथा कुछ कार्य के लिए लेबर रखते है।

(*iv*) गरीब किसान, जिनके पास थोड़ी आर्थिक समर्थता है वह पार्ट-टाइम लेबर के तौर पर या बटांईदार (share-croppers) की भांति या किराएदार की भांति काम करते हैं।

(*v*) भूमिहीन कृषि श्रमिक जो अपना श्रम देते तथा अपनी जीविका के लिए प्रत्यक्ष तीन श्रेणियों पर निर्भर करते हैं।

भारतीय साम्यवादी पार्टियों ने पांच प्रकार की श्रेणीकरण दिया है :

(*i*) ज़मीदार (सामंती तथा पूंजीवादी) जो हाथ से काम नहीं करते।

(*ii*) अमीर किसान जो हाथ से काम तो करते हैं परन्तु श्रमिकों को भी कार्य पर रखते हैं।

(*iii*) मध्य किसान जिनके पास ज़मीन है या किराए पर लेते हैं तथा अपने परिवार तथा श्रमिकों के साथ खेती करते हैं।

(*iv*) गरीब किसान जिनकी मुख्य आय किराए पर ली हुई भूमि से प्राप्त होती है परन्तु वह कोई श्रमिक नहीं रखते।

(*v*) कृषि लेबर वह कृषि या सम्बन्धित व्यवसाय में काम करके जीविका कमाते हैं।

Hamsa Alvi ने तीन श्रेणी के किसानों को लिया है- अमीर, मध्य तथा गरीब किसान।

शिल्पी (The Artisans) : ग्रामीण क्षेत्रों में शिल्पी समुदाय का महत्त्वपूर्ण भाग है। यह बढ़ई, लोहार, कुम्हार इत्यादि है।

ग्रामीण शिल्पियों की ब्रिटिश राज में बहुत बुरी हालत थी। वह फैक्टरियों से बनने वाले उत्पादन का मुकाबला नहीं कर सकते थे। कुछ ने अपना हुनर छोड़ कर खेतीबाड़ी में काम करना शुरू कर दिया। जिससे खेतों में श्रमिकों की संख्या और बढ़ गई।

आज़ादी के बाद भारतीय सरकार ने शिल्पकारों की दशा सुधारने का जिम्मा उठाया। इन शिल्पकारों में भी कुछ अधिक कुशल तथा कुछ कम कुशल है। इस प्रकार सामाजिक तौर पर इन्हें एक ही व्यवसाय के अन्तर्गत नहीं लिया जा सकता।

शहरी क्षेत्रों में सामाजिक श्रेणियां

शहरी क्षेत्रों में सामाजिक श्रेणियां में (i) पूंजीवादी (व्यवसायिक तथा ओद्यौगिक) (ii) पेशेवर (iii) छोटे व्यापारी तथा दुकानदार (iv) नौकरी करने वाले हैं।

1. पूंजीवादी तथा ओद्यौगिक श्रेणी : अंग्रेजी राज में उन व्यापारियों की संख्या में वृद्धि हो गई जो आयात-निर्यात के व्यापार में लगे थे। इसके साथ वाणिज्य-सम्बन्धी मध्य श्रेणी अस्तित्व में आई। इसने अपनी पूंजी बड़ी स्केल के निर्माण करने वाले आधुनिक उद्योगों में लगाई। भारतीय समाज में मिल मालिकों, खानों के मालिकों का नया समूह शामिल हुआ। आर्थिक और सामाजिक रूप से यह समूह अधिक ताकतवर श्रेणी थी।

आज़ादी के बाद मुख्य क्षेत्र जैसे कृषि, उद्योग तथा व्यापार प्राइवेट व्यक्तियों के हाथों में चले गए। बड़े भारी उद्योगों के बुनियादी ढांचे तथा संस्थान को राज्य सैक्टर ने ले लिया। इस प्रकार के आर्थिक ढांचे ने पूंजीपतियों द्वारा नियन्त्रित उद्योगों की वृद्धि की। इस प्रकार व्यवसायिक श्रेणियां उत्पन्न हुई। कुछ व्यापारिक श्रेणियों के पास अत्यधिक सम्पत्ति, साधन तथा आय है। जैसे रिलायंस, टाटा, बिरला, डालमिया इत्यादि।

2. पेशेवर श्रेणी : ब्रिटिश राज में कुछ उन्नत पेशेवर श्रेणी आई। इसका सम्बन्ध आधुनिक उद्योग, कृषि, कार्मस, वित्तीय, प्रशासन, प्रैस तथा सामाजिक जीवन के दूसरे क्षेत्र। इस पेशेवर क्षेत्र में वकील, डॉक्टर, अध्यापक, मैनेजर तथा दूसरे कामर्शियल तथा उद्यमों में कार्यरत इंजीनियर, तकनीकी कृषि वैज्ञानिक। आज़ादी के बाद तीव्र उद्यौगीकरण तथा शहरीकरण ने बड़े-स्तर के रोज़गार के अवसरों को उद्योगों, व्यापारों, निर्माणात्मक, यातायात की सुविधाएं इत्यादि में रास्ता खोल दिया है।

इसी प्रकार राज्य ने पूरे देश में बड़ी उद्यौगिक संरचनाओं को सैट किया है। आज़ादी के बाद नौकरशाही, प्रबन्धन कार्यकारी, टेक्नोक्रेट, डाक्टर, वकील, अध्यापक तथा पत्रकार इत्यादि बहुत बढ़ गए हैं। परन्तु यह श्रेणी एक समान नहीं है। इस श्रम न करने वाली श्रेणी में गहरा अनुक्रम होता है। उच्च पदों पर उच्च वेतन पाने वाले तथा निचले स्तर पर कम वेतन पाने वाले होते हैं। इनकी जीवनशैली अलग होती है।

3. छोटे व्यापारी, दुकानदार तथा अव्यवस्थित कार्य करने वाले : व्यापारियों तथा दुकानदारों की बहुत संख्या होती है। यह आधुनिक शहरों में हैं। यह वस्तुओं के उत्पादक तथा ग्राहक के बीच कड़ी है। यह वस्तुएं खरीदने के के बीच का लाभ कमाते हैं। शहरों की बढ़ती हुई आबादी की आवश्यकता सेवाओं की माँग बढ़ी रही है। छोटे व्यापारी ग्रामीण जनसंख्या की आवश्यक करते हैं।

शहरीकरण, संगठित तथा असंगठित आर्थिक सैक्टर में रोज़गार के अवस करता है। पलायन होने वाले बहुत से लोग शिक्षित नहीं होते वह आर्थिक असंगठित समूह में कार्य करते हैं। यह छोटे स्तर के उत्पादन यूनिट या शिल्प या हाथ द्वारा दी जाने वाली सेवाओं के रोज़गारों में कार्य करते हैं। उनका वेतन होता है तथा उन्हें पूरी सुविधाएं भी नहीं मिलती।

यह एक आकारहीन श्रेणी है जहां स्वयं-रोज़गार वाले छोटे दुकानदार, व्यापा वाले, हॉकर हैं तथा दूसरी ओर अनौपचारिक सैक्टर वाले अर्द्ध कुशल तथा अकुश करने वाले मौजूद हैं।

4. श्रमजीवी श्रेणी : यह आधुनिक श्रमजीवी श्रेणी है जो आधुनिक उद्योग तथा वृक्षारोपण का प्रत्यक्ष नतीजा है। यह श्रमजीवी गरीब किसानों तथा बर्बाद से ही बने।

आज़ादी के बाद श्रमजीवियों की श्रेणी बढ़ी। यह उद्योग के विभिन्न सेक्टरों में बिखरे हुए है। इस श्रमजीवियों की श्रेणी ने विभिन्न सेक्टरों के मध्य सम्बन्धों को जन्म दिया है। आज़ादी के बाद श्रमजीवियों के प्रति सरकार का रवैया अनुकूल हो गया है। कई एक्ट पारित हुए ताकि श्रमजीवियों को कुछ सुविधाएं आज़ादी के बाद ट्रेड यूनियन बनी। इन ट्रेड यूनियनों में नियन्त्रण, सेक्टर तथा क्षेत्र में कई विभाजन पाए जाते हैं।

सामाजिक श्रेणी रूढ़िबद्धता

निम्न श्रेणी : यह श्रेणी गरीब, घर के बगैर तथा बेरोज़गार होती है। शिक्षा नहीं, स्वास्थ्य की देखभाल नहीं, अच्छे घर, भोजन, कपड़े, सुरक्षा तथा ट्रेनिंग नहीं है। मीडिया इस श्रेणी को 'निम्न वर्ग' माना है जहां इन माताओं को करने वाली तथा पिताओं को नशेड़ी, अपराधी तथा समाज पर बोझ माना है।

श्रमजीवी श्रेणी : इस श्रेणी की बहुत कम शिक्षा होती है जो हाथ से तथा इनका कोई स्तर नहीं होता। अकुशल श्रमजीवियों- जैसे बर्तन धोने

घर में कार्य करने वाली, वेटर्स-कम वेतन पाते हैं तथा कैरियर विकास का कोई अवसर भी नहीं होता। यह गरीब श्रमजीवी कहलाते हैं। इस श्रेणी में कुशल श्रमजीवी जैसे बढ़ई, प्लंबर, इलैक्ट्रीशियन इन्हें blue collar वर्कर भी कहते हैं। यह मध्य श्रेणी के वर्कर्ज से अधिक कमा सकते है। जैसे सैक्रेटरी, अध्यापक तथा कम्प्यूटर तकनीशियन। परन्तु इनकी नौकरी अधिक श्रम वाली तथा खतरनाक होती है।

मध्य श्रेणी : मध्य श्रेणी को सैंडविच श्रेणी भी कहते हैं। इन White collar वर्कर्ज के पास अधिक पैसे होते है। उनकी अपेक्षा जो सामाजिक सीढ़ी में नीचे होते हैं। इन्हें दो प्रकार से विभाजित कर सकते हैं। निम्न मध्य श्रेणी कम शिक्षित होती है जिनकी कम आय होती है जैसे मैनेजर, छोटे व्यापारी, अध्यापक, सैक्रेटरी। उच्च मध्य श्रेणी वाले अधिक पढ़े लिखे व्यापारी तथा उच्च आय वाले पेशेवर जैसे डाक्टर, वकील, स्टॉकब्रोकर तथा CEOs हैं।

उच्च श्रेणी : यह दो प्रकार से विभाजित है निम्न उच्च तथा उच्च-उच्च श्रेणी। निम्न उच्च श्रेणी के पास नया पैसा या निवेश, सट्टेबाजी इत्यादि से पैसा आता है। उच्च-उच्च श्रेणी में भव्य तथा उच्च समाज के परिवार होते हैं जिनके पास पीढ़ियों से पैसा होता है। यह बहुत अमीर होते है।

कैसे भी आय हो, यह दोनों श्रेणियां ही बहुत अमीर होती है। इनके पास अपने खर्चे से अधिक पैसा होता है जिसे वह अपनी कई दिलचस्पियों पर अपने आराम के लिए खर्च कर सकते हैं। वह उच्च कालोनियों में रहते हैं। महंगे सामाजिक कल्बों में जाते है तथा अच्छे से अच्छे स्कूलों में बच्चे भेजते है। राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इनका बहुत प्रभाव होता है।

गरीबी रूढ़िवद्धता : गरीबी थका देने वाला न खत्म होने वाला संघर्ष है। यहां दैनिक दबाव होता है कि किसका चुनाव किया जाए देने वाले किराए का, बिजली का बिल या बिजली का बिल देना। इस समय यह देखना पड़ता है कि कौन सी आवश्यकता को छोड़कर आशा से विपरीत बिल को अदा किया जाए। गरीबी से सुरक्षा की भावना तथा आत्म-विश्वास समाप्त हो जाता है, भविष्य की योजनाएं तथा आशाएं समाप्त हो जाती है।

गलत धारणा : गरीब लोगों को प्रोत्साहन नहीं होता तथा उनमें कार्य के प्रति कमज़ोर नैतिकता होती है।

सच्चाई : गरीब लोगों में अमीरों से कम कार्य नैतिकता या निम्न स्तर का प्रोत्साहन नहीं होता। हालांकि गरीब लोगों को आलसी कहा जाता है, निम्न स्तर के 83% बच्चों के लगभग माता या पिता कार्य करते होते हैं। 60% बच्चों के माता या पिता पूरा वर्ष पूरा समय कार्य करते हैं।

Economic Policy Institute के अनुसार, गरीब कार्यरत लोग अमीर लोगों
अधिक समय तक कार्य करते हैं।

गलत धारणा : गरीबों को अधिक सरकारी सहायता मिलती है।

सच्चाई : गरीबों तक सरकार की पूरी योजनाएं पहुँचती ही नहीं।

गलत धारणा : जो सहायता पर रहते है, उन्हें सहायता ही मिलती है।

सच्चाई : जिन गरीबों को सहायता मिलती है आधी से अधिक साल के
70% दो सालों में तथा 85% चार सालों में समाप्त हो जाती है।

गलत धारणा : सामाजिक गतिशीलता मेहनत से सम्भव है।

सच्चाई : मात्र मेहनत से ही जीवनशैली ऊपर नहीं उठती। व्यक्ति का कार्य
तथा शिक्षित होना आवश्यक है।

गलत धारणा : गरीब बच्चों की शिक्षा की ओर ध्यान नहीं देते क्योंकि उन्हें
का मूल्य नहीं होता।

सच्चाई : शिक्षा के लिए गरीबों की भी अमीरों जैसी मनोवृत्ति होती है। परन्तु
पास शिक्षा देने के साधन नहीं होते, स्कूलों की कमी है, अच्छे स्कूल उन्हें दाखिला
देते। वह कई प्रकार के कार्य करते हैं, सायंकाल को काम करते हैं, छुट्टी करने पर
कटता है तथा बच्चों की देखभाल नहीं कर पाते।

गलत धारणा : गरीब अधिक सहायता के लिए अधिक बच्चे पैदा करते हैं।

सच्चाई : सरकार द्वारा दी गई सहायता अधिक बच्चे पैदा करने का प्रोत्साहन
होता।

गलत धारणा : गरीबी का बच्चों पर गहन प्रभाव पड़ता है।

सच्चाई : खोज कहती है कि गरीबी बच्चों की भलाई के लिए सबसे बड़ा
है। यह बच्चे की सीखने की योग्यता कम करती है तथा सामाजिक, संवेगात्मक
व्यवहारिक समस्याओं को जन्म देती है। गरीबी से शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य प्र
होता है, आत्म-विश्वास गिरता है। बच्चों के लिए रिस्क अधिक है जो बहुत छोटे
उनका अनुभव लम्बा तथा गहन है।

गलत धारणा : गरीबी एक छोटी समस्या है।

सच्चाई : यह छोटी समस्या नहीं है बल्कि सब जातियों को प्रभावित करती

गलत धारणा : गरीब लोग नशेड़ी तथा शराबी होते हैं।

सच्चाई : गरीब लोग अमीरों की अपेक्षा अधिक शराबी तथा नशेड़ी होते हैं
पदार्थों की सेल हालांकि गरीबों में अधिक दिखाई देती है, परन्तु सभी वर्गों में यह
है। अध्ययनों के अनुसार उच्च मध्य वर्ग में शराब की खपत अधिक होती है तथा
गरीबों की अपेक्षा अधिक शराब पीते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. लिंग रूढ़िबद्धता क्या है ?
2. रूढ़िबद्धता के क्या कार्य हैं ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. सीमांत का रूढ़िबद्धता का बाल विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है ?
2. रूढ़िबद्धता से क्या भाव है ? विभिन्न रूढ़िबद्धताओं का उल्लेख करें।

ଓ ଓ ଓ

CHAPTER

17

विलगन तथा कुसमायोजन का प्रभाव तथा सम्बन्धित परिस्थितियों पर प्रभाव

Impact of Maladjustment and Deviation on Child Development and Related Situations

शिक्षा मनोविज्ञान विकास का बड़ा हिस्सा है। शिक्षा के ही एक विषय के रूप में हम बच्चों के विकास पर चर्चा करते आये हैं। बच्चा एक व्यक्ति है, वह समाज का एक हिस्सा है, वह एक राष्ट्र का नागरिक है। वह जो है उसमें बहुत कुछ उसके परिवेश की देन है। उसके व्यक्तित्व का विकास उसके परिवेश से प्रभावित होता है। उसके व्यक्तित्व के विकास में उसके परिवेश की भूमिका महत्वपूर्ण होती है।

परिचय

वातावरण एक अनुभव है जिससे बच्चे कई तरह प्रभावित होते हैं। वे कई तरीके से इनका सामना करते हैं। वातावरण बच्चों पर कोई नियन्त्रण नहीं होता। वह उन्हें प्रभावित करने की स्वतन्त्रता रख देता है। यह दोनों ही तरह से हो सकता है। वह सकारात्मक तरीके से भी प्रभावित कर सकता है और नकारात्मक तरीके से भी। बच्चे भी प्रतिक्रिया करते हैं। इसका व्यक्ति तथा समाज के विकास पर बहुत प्रभाव पड़ता है। विकास का संदर्भ व्यक्ति के लिए बिल्कुल व्यावहारिक है। विकास से भाव बढ़ने, विकास करने, जीवन की वृद्धि, वातावरण का नियन्त्रण इत्यादि आवश्यक है। विकास से भाव बढ़ने, विकास होने का भी है। वातावरण का नियन्त्रण है। वातावरण बच्चे के संसार को विकास में सहायता करने के लिए है। जटिल संसार है जिसके संदर्भ में परिस्थिति बनानी चाहिए।

कठिनाइयों का पहला प्रभाव

बच्चे कठिनाइयों के प्रति छोटे आयु में ही जागरूक हो जाते हैं। Melanie Weinstein (2003) ने अध्ययनों में देखा कि 6 से 10 वर्ष की आयु में बच्चे कठिनाइयों को पहचानने के योग्य हो जाते हैं तथा इन कठिनाइयों का उन्हें दस वर्ष की आयु तक अधिकतर बच्चे दूसरों की कठिनाइयों समझ लेते हैं। यह सच है जैसे लड़कियों बातों में अच्छी होती हैं, गणित में नहीं। इसीलिए यह भी आवश्यक तथा लेटरल बच्चे कठिनाइयों की जानी जाती हैं। बच्चे में यह सर्वाधिक प्रभाव होता कि यह बहुत छोटी आयु में ही महसूसता आयु की सीमाओं को मान लेते हैं जो आयु बढ़ने के साथ बढ़ती जाती हैं। इनकी स्कूल की शुरुआत हो जाती है तथा मध्य स्कूल तक पहुँचते इनके व्यवहार में समायोजन आ जाते।

लिंग रोल कठिनाइयों का स्कूल के विषयों पर प्रभाव

पुरुषों में दर्शन व्यवहार को स्वीकृत करना तथा उत्साहित करना इन्हें सभी [illegible] करने की स्वतन्त्रता देता है। उदाहरणतया: विज्ञान कक्षा में लड़के प्रश्न [illegible]

[illegible] कठिनाइयों का बहुत विकास तथा सम्बन्धित परिस्थितियों पर प्रभाव [illegible]

[illegible] तथा लड़कियों को पढ़ने देना के लिए बहुत का ही देना आवश्यक [illegible] पहले बहुत निर्णायक या कार्य करना के बहुत बहुत आवश्यक [illegible] कि लड़कियों लड़कों का विकास है निर्धारित एक व [illegible] बहुत का पूरा ध्यान की नहीं दे पाती।

Sundaram (2006) ने देखा कि बहु विषय की पढ़ाई के लड़कियों का [illegible] करती हैं जो उनके लिए अनुपयुक्त होता है। लड़कों व दूसरों विषयों में बहुत [illegible] करने में महत्व होता है। अधिकतर विद्यालय का वातावरण [illegible] पढ़ाया जाता है। लड़कों को पढ़ने, गणित, बहस जैसे विषयों में बहुत ध्यान तथा बहुत [illegible] लड़कियों के लिए अधिक उपयुक्त समझा जाता है।

कठिनाइयों के प्रोत्साहक तथा व्यवहारिक मॉडल

सीमांत प्रकार की कठिनाइयों के सामान्य व्यवहार की तरह मॉडलिंग भी लड़कों का एक व्यवहार, अभिव्यक्ति, चिन्तन-दृष्टान तथा गतिविधियों का संयोग करना, [illegible] दूसरों की आवश्यकताओं को अपनों से पहले पढ़ना यह विद्यार्थी तथा अध्यापकों का विरोधी नहीं होता। बच्चा में कोई यह भी नहीं देखता कि इन प्रकार के व्यवहार के विद्यार्थियों के प्रोत्साहन तथा व्यवहार पर क्या प्रभाव पड़ता है। उदाहरणतया: लड़कियों दूसरों की आवश्यकताओं को अपने से अधिक महत्व देती हैं। इनका इनकी मनोवृत्ति का मूल्य की सामान्यता में प्रभाव पड़ता है। लड़कियों की मूल्य में समानता के लिए प्रोत्साहन इस बात से सम्बन्धित होता है कि दूसरों को कैसे खुश किया जा, जैसे माता-पिता तथा अध्यापक न कि स्वयं को प्रसन्न करना। यह कक्षा में अच्छा प्रदर्शन करती हैं क्योंकि इनका अध्यापकों के साथ व्यक्तिगत तथा सकारात्मक सम्बन्ध होता है। इन सम्बन्ध का इनके कोर्स के चयन पर भी प्रभाव पड़ता है। उदाहरणतया: यदि लड़की अध्यापक को पसन्द नहीं करती तो वह गणित या विज्ञान का चुनाव नहीं करेगी। जब लड़कियां अपनी पढ़ाई की सामग्री से संघर्ष करती हैं। अध्यापक इनकी अधिक सहायता कर देते हैं जिससे इनमें असहायता की भावना बढ़ती है। दूसरे शब्दों में जब इनमें इतना निर्भर बना है तो इन्हें लगता है कि यह सीखने के काबिल नहीं है।

सभी शिक्षकों का सामान्य लक्षण होता है कि स्कूल जैसा हो वो शिक्षण उपलब्धियों को संचित करे। सांगठनिक तथा संरचनात्मक सुविधा प्रदान करे तथा सभी विद्यार्थियों का स्वागत करे। शिक्षक होने के नाते इसे चाहिए कि वह विद्यार्थियों को अपनी दिलचस्पियों को प्रकट करने में तथा उनकी सराहना में आत्मविश्वास दूंढे।

कक्षा में शिक्षकों के लिए विचार

1. विद्यार्थियों को अपनी योग्यताएं विस्तृत करने में सहायक बनें : शिक्षा, कला तथा संगीत में तथा देखें कि लड़का या लड़की करने के कार्य सीखे।

— पूरी कक्षा को सम्बोधित करने के लिए सुलभ प्रयोग करें "Good morning, everyone" या "Good morning scholars" अपनी कक्षा को एक नाम दें

— बच्चों को इस प्रकार से समूह करें जो लिंग पर निर्भर न हो जैसे उन विद्यार्थियों को समूह करना जिनके नाम A–H या I–Z में हों या विद्यार्थी जो कक्षा में किसी हिस्से में बैठे हों। उन परिस्थितियों को रोकें जो बच्चों को लिंग के आधार पर करने की जबरदस्ती करे जैसे लड़कियां यहां खड़ी हों, लड़के यहां खड़े हों।

— कक्षा के मैसेज को इस प्रकार विकसित करें कि सम्मिलित term पर दबाव डाले जैसे 'सभी बच्चे' न कि 'लड़के ऐसा करें', 'लड़कियां ऐसा करें।'

— सभी बच्चों के लिए रोल मॉडल प्रदान करें जो सभी लोगों के लिए उपलब्धि तथा संवेग दर्शाए। कक्षा में ऐसी किताबें लाएं जो अच्छे रोल मॉडल को सम्मिलित करें। विद्यार्थियों को ऐसी आत्मकथाएं पढ़ने या लिखने के लिए यहां उन लोगों को सम्मिलित किया गया हो जिन्होंने परम्परागत रोल से उठकर चुने गए क्षेत्र में ऊँचाईयां प्राप्त हों।

— रोल मॉडल बने। जब भी सम्भव हो ऐसी उदाहरणें दें कि कैसे आप या आपके द्वारा जाने गए लोगों ने लिंग रूढ़िबद्धता के बाहर कार्य किया। उदाहरणार्थ यदि आप स्त्री है जिसे बढ़ईगिरी पसन्द है, लकड़ी के कार्य से सम्बन्धित गणित की समस्या सुलझा सकती है। यदि आप पुरूष हैं जिसे खाना बनाना पसन्द है सामग्री को मापने से सम्बन्धित गणित की समस्या बनाए।

— विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करें ताकि वह सभी साथियों की गुणवत्ता को देखे। उन्हें रूढ़िबद्धता की सीमाएं देखने में सहायता करें।

— जब किसी को अनावश्यक सताया गया हो तो उस विद्यार्थी को देखें कि क्या क्यों हुआ, इसका क्या प्रभाव रहा तथा इसे कैसे रोका जा सकता है।

— लिंग के आधार पर किसी का नाम न रखें या उसे तंग न करें। बच्चों को ऐसा करने से रोकें, उनके साथ विवाद करें।

— विद्यार्थियों को ऐसी क्रियाएं करने के लिए उत्साहित करें जहां उन्हें चुनौती मिलती है तथा उनकी दिलचस्पियों का आदर करें। इस प्रकार वह उसी प्रकार की दिलचिस्पयों वाले दूसरे विद्यार्थियों से जुड़ जाएंगे तथा समाज में फिट होंगे।

— ध्यान रखें कि विद्यार्थी कक्षा के अन्दर तथा बाहर दोनों ओर सुरक्षित महसूस करे। खाना खाते समय, recess में, खेलते समय, स्पैशल कक्षाओं में, bathroom बस में सब तरफ सुरक्षा हो।

— उन परिवारों की सहायता करें जिनके बच्चे लिंग मापदण्ड फैलाते हैं। माता-पिता को अपने बच्चों की ताकतें पहचानने में सहायता करें- शिक्षण, काम, खेल, ड्रामे तथा आपसी सम्बन्धों में।

विद्यालय के लिए सुझाव

व्यवसायिक विकास आवश्यक है। स्कूल से सम्बन्धित सभी को ट्रेनिंग दे- अध्यापक, सहायक, कौंसलर, प्रशासन का स्टाफ, बस ड्राइवर, कैंटीन में कार्य करने वाले इत्यादि।

स्कूल में बड़ों को चाहिए कि सरल मुहावरों के साथ लिंग teasing व bullying को रोकें। जब बच्चे एक दूसरे को लिंग के आधार पर सीमांत करें तो बड़े बीच में दखल दें और उन्हें बताएं कि ऐसा गलत और दुखाने वाला क्यों है।

— स्टाफ तथा माता-पिता की कमेटी बनाए जो देखे कि स्कूल में देखभाल करने वाले तथा सम्मानित समुदाय का विकास हो। यह समूह स्कूल की वर्तमान स्थिति तथा व्यवस्थाओं का अनुमान लगाए, व्यवसायिक विकास की व्यवस्था करें, परिवार की शिक्षा के events व्यवस्थित करे इत्यादि।

— प्रशासन को चाहिए कि शिक्षकों तथा दूसरों को सहारा दे जो अध्ययन वातावरण का स्वागत करने की कोशिशें करते हैं।

— बच्चे के लिंग की अभिव्यक्ति करते समय व्यवसायिक तथा विकासशील ढंग से उचित भाषा का प्रयोग करें।

— बच्चे के लिंग का महत्त्व तथा जटिलता समझाने के लिए स्कूल के समुदाय में माता-पिता तथा अभिभावकों के लिए सायंकाल में स्पर्धाओं का आयोजन करे। परिवारों को बताएं इस विषय पर कैसे बात करें जो पुष्टि करे, समावेशी हो तथा विकास के तौर पर उचित हो।

— कारिडोर, खेल के मैदान तथा कैंटीनों पर निरीक्षण रखे ताकि सुरक्षा बढ़े और दबंगता तथा गलत नामों से बुलाना बन्द हो। व्यस्कों द्वारा निर्देशित क्रियाएं प्रदान करें ताकि recess में बच्चे व्यस्त रहें। बच्चों को सम्मिलित तथा सहयोग देने वाली खेलें सिखाएं तथा उत्साहित करें। खेल के मैदान का मापदण्ड बनाए, "आप कह नहीं सकते, आप खेल नहीं सकते।"

— एक विशिष्ट लिंग की ड्रेस निर्धारित किए बगैर ऐसी ड्रैस का चुनाव करें जो दोनों लिंग के बच्चे डाल सकें।

— दबंगता समाप्त करने के लिए पॉलिसियां बनाए।

— स्त्रियों को हमेशा प्राथमिकता देनी सुरक्षा प्रदान करने की महत्त्वपूर्ण विशेषता है। इसका नतीजा यह होता है कि लड़कियां सफलता से डरती हैं। कई लड़कियां शिक्षण उपलब्धियां प्राप्त करने में इस लिए सफल नहीं होती क्योंकि ऐसा करना उनके स्त्रीत्व के विरूद्ध होगा तथा उनका लड़कों के प्रति आकर्षण कम हो जाएगा।

— पुरूषों में जिनकी उपलब्धियां उनकी प्राकृतिक बौद्धिकता से जोड़ी जाती है। समस्या उस समय उत्पन्न होती है जब प्राकृतिक योग्यता सफलता की गारंटी नहीं बनती। उस समय लड़के अपने आपको फेल मानते है तथा अपने विषय बदल लेते है ताकि वह फेल न हों न कि अपने पढ़ने की आदतों तथा पैटर्न का दुबारा से निरीक्षण करें।

— लिंग रूढ़िबद्धता का विद्यार्थी की अपनी योग्यताओं और उपलब्धियों की धारणा पर भी प्रभाव पड़ता है। अध्ययनों ने बताया है कि अध्यापकों तथा

माता-पिता की विद्यार्थी की योग्यताओं, उपलब्धियों तथा व्यवहार के
आशाएं लिंग रोल रूढ़िबद्धताओं से प्रभावित होती है। यह रूढ़िबद्धताएं
सक्ष्म होती हैं तथा पहचानी या चुनौती नहीं जा सकती। यह मानना कि ल
स्कूलों में स्त्रीत्व के गुण जैसे दूसरों की देखभाल करना, चुपचाप तथा
रहना व्यवहार सीख लेती है, इसका अर्थ है कि वह अपनी शिक्षा
आवश्यकताओं को दूसरों के लिए एक साइड पर रख दे। लड़कों के पु
लिंग रोल से सुझाव मिलता है कि उनमें उपलब्धियां प्राप्त करने की प्राकृतिक
होने से उन्हें तर्कसंगत तार्किक ऊँचा तथा घमंडी व्यवहार दर्शाना चाहिए।

— लिंग रोल रूढ़िबद्धताओं का समाज, स्कूल तथा कक्षा में मज़बूत प्रभाव
है। यह असमानताएं दिखाई नहीं देती क्योंकि यह बहुत व्यापक होती
शिक्षकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती है कि वह कक्षा का वातावरण ऐसा
कि एक समूह को दबाकर दूसरों को समर्थन प्राप्त न हो।

— लिंग रूढ़िबद्धताएं प्रत्येक लिंग के रोल के बारे में सामान्यकरण हैं। लिंग
न सकारात्मक होते हैं न ही नकारात्मक। यह पुरूष तथा स्त्री के गुणों के
सामान्यकरण हैं। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी इच्छाएं, विचार तथा भावनाएं
हैं। इस पर लिंग का कोई प्रभाव नहीं होता। इसलिए यह रूढ़िबद्धताएं
लिंग के प्रत्येक व्यक्ति का उल्लेख नहीं करती।

— हालांकि कई व्यक्ति मानते हैं कि यह रूढ़िबद्धताएं सच्ची नहीं हैं, परन्तु
लिंग के आधार पर धारणाएं बना लेते है। कई रूढ़िबद्धताओं के प्रति हम
है जैसे सभी स्त्रियां शादी करके बच्चे पैदा करना चाहती हैं तथा सभी
खेलों को पसन्द करते हैं।

माता-पिता का विश्वास तथा व्यवहार

परिवार एक शुरूआत का हिस्सा है तथा यही महत्त्वपूर्ण स्थान है जहां बच्चे
रूढ़िबद्धता विकसित करना शुरू कर देते हैं। कैरियर विकसित करने में माता-पिता
महत्त्वपूर्ण भाग है क्योंकि वह अवसर, पारिवारिक सम्बन्ध प्रदान करते हैं तथा
विश्वास और विचारों का आधार बनाते हैं। माता-पिता तथा बच्चे एक समान
लक्ष्य तथा मूल्य चाहते हैं। जब हमारा बच्चों के साथ सम्बन्ध मज़बूत होता है
अपने मूल्य, विचार तथा दिलचस्पियां उन्हें स्थानांतरण कर देते है। इस तरह
कैरियर के चुनाव तथा सफलता में योगदान करते हैं। माता-पिता के नाते हम उन्हें
देते है। उस समय हम आज़ाद होते हैं कि उन्हें बगैर परम्परागत कैरियर के लिए
जैसे लड़कियों के लिए इंजीनियरिंग या कम्प्यूटर साईंस तथा लड़कों के लिए
टीचर बनना।

माता का बच्चों पर प्रभाव सर्वाधिक होता है। जो बच्चे मां के साथ
बनाते हैं वह स्कूल को अधिक महत्त्व देते हैं, उनमें आत्म-सम्मान अधिक होता
उनकी उच्च शिक्षा की आशाएं अधिक होती हैं। पिता की भूमिका दूसरे स्थान पर

स्पष्ट है कि माता-पिता का बच्चे के कैरियर विकास पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव होता है।
माता-पिता शिक्षा का मूल्य करते है वह बच्चों के लिए व्यवसायिक कैरियर लक्ष्य
करते हैं तथा जो माता-पिता खेलों को मूल्यवान समझते है। उनके बच्चे खेलों सम्बन्धी
कैरियर के लक्ष्य बनाते है।

हमारे मूल्य बच्चों की दिलचस्पियों, उनमें विकसित स्पर्धाताओं को तथा आत्मविश्वास
को प्रभावित करते हैं जो कैरियर के चुनाव में महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरणतय: यदि हम साईंस
को अधिक मूल्य देगे तो हमारे बच्चे भी विज्ञान में दिलचस्पी लेंगे, अपनी वैज्ञानिक
योग्यताओं में आत्म-विश्वासी होगे तथा इसकी विषय में उच्च शिक्षा लेंगे। किसी भी
विषय को अधिक महत्त्व देना तथा उससे आशाएं रखना बच्चे में उसी के लिए उच्च मूल्य
पैदा कर देता है तथा वह उसी विषय से सम्बन्धित कैरियर को चुनेगा।

हम बच्चे के कैरियर चुनाव को लिंग रूढ़िबद्धता से गुजर कर प्रभावित करते है।
बच्चों तक पहुँचने वाली यह रूढ़िबद्धताएं सक्ष्म परन्तु सिलसिलेवार होती हैं जो साफ
संदेश देती हैं कि लड़के तथा लड़कियों को किस क्षेत्र का चुनाव करना है। माता-पिता
बच्चों के स्कूल के गृह कार्य में लिंग रूढ़िबद्धता के साथ सहायता करते हैं जैसे डैडी
गणित में सहायता करेगा, मम्मी भाषा या आर्ट के कार्य में। माता-पिता यह भी मानते हैं
कि कुछ विषय एक लिंग के लिए उपयुक्त हैं जैसे गणित लड़कों के लिए, आर्ट लड़कियों
के लिए। उनका विश्वास है कि उनके बच्चों की कुछ क्षेत्रों में योग्यताएं जैसे गणित,
संगीत, खेलें इत्यादि बच्चों के लिंग से प्रभावित हुई हैं न कि वास्तविकता यो यता से।

हमारे अपने विश्वास हमारे व्यवहार को प्रभावित करते हैं जो बच्चे के आत्म-
सम्मान, दिलचस्पिययों तथा कैरियर लक्ष्य को प्रभावित करते है। हमारे विश्वास इस बात
को प्रभावित करते है कि हम अपने बच्चे की सफलता का कैसे उल्लेख करेंगे, हम बच्चे
की उपलब्धियों के प्रति संवेगात्मक रूप से क्रिया करेंगे, कुछ क्रियाओं में बच्चे की
उपलब्धियों को कैसे मूल्यांकित करेंगे जैसे- खेलें, गणित, डांस इत्यादि तथा कौन सी
क्रियाएं, खिलौने तथा अनुभव हम बच्चों के लिए चुनते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. सीमांत की परिकल्पना।
2. रूढ़िबद्धता में माता-पिता का विश्वास।

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. लिंग रोल रूढ़िबद्धता का स्कूल के विषयों पर प्रभाव।
2. रूढ़िबद्धताओं में स्कूल के रोल का उल्लेख करें।

ଓଓ ଓଓ ଓଓ

CHAPTER

18 अनुभूतियों का निर्माण तथा विखंडना करने और उनसे व्यवहार करने में मीडिया की भूमिका

(Role of Media in Constructing and Deconstructing Perceptions and Ways of Dealing)

मीडिया से भाव संचार मीडिया है जैसे प्रसारण मीडिया, प्रिंट मीडिया तथा वेब मीडिया। रेडियो, टी. वी. को प्रसारण मीडिया जबकि समाचार पत्रों, मैगजीन तथा पत्रिकाओं को प्रिंट मीडिया और इन्टरनेट खबरों को वेब मीडिया कहते हैं। मीडिया सूचना का महत्त्वपूर्ण साधन है क्योंकि यह खबरों, मनोरंजन देता है तथा विचार, सुझाव तथा टिप्पणियों का आदान प्रदान भी हो सकता है। आज के युग में मीडिया की विभिन्नताएं उपलब्ध है। इन्टरनेट आने से हमें खबरों तथा मनोरंजन की विभिन्नताएं उपलब्ध हो गई हैं। इन्टरनेट ने उपभोक्ताओं में सृजनात्मकता को विकसित किया है उन्होंने व्यक्तिगत बेबसाईट, ब्लॉग इत्यादि बना लिए हैं। इस प्रकार इन्टरनेट से कॉपी करने के अवसर भी प्राप्त हो गए है। इन्टरनेट बीसवीं सदी की देन है। परन्तु इसकी हानियाँ भी हैं। हम अधिकतर खबरें मीडिया से प्राप्त करते हैं। क्योंकि हमारे पास किताबें तथा समाचार पत्र पढ़ने का समय बहुत कम है, यह खबरें पक्षपाती भी हो सकती हैं। 2003 में ईराक युद्ध के दौरान अमरीकी सैनिकों की मृत्यु संख्या तो बताई गई पर ईराकी नागरियों तथा उनके सैनिकों की मृत्यु संख्या का जिकर ही नहीं किया गया। बेबसाईड पर रिपोर्ट की गई खबरें अधिक विश्सनीय तथा पारदर्शी होती हैं हालांकि इनके तथ्यों की सच्चाई का पता करने में सावधानी प्रयोग करनी आवश्यक है। मीडिया की खबरें कुछ लोगों की दिलचस्पियों या ताकत में आए अधिकारियों के लक्ष्यों को ही पूरा कर सकती हैं। कई एशियाई देशों में प्रैस की स्वतन्त्रता नहीं है। हालांकि प्रैस खबरें तथा अपनी अनुभूतियां दे सकता है परन्तु ऐसी खबरें नही दे सकता जिससे अशान्ति तथा दंगा फैले।

सरकार ने Official Secrets Act तथा Internal Security Act बनाया हुआ है जिसके अनुसार कोई भी मीडिया में कार्य करने वाला जातिय या धार्मिक हिंसा नहीं भड़का सकता। कट्टर देशों में प्रैस की स्वतन्त्रता की डिग्री इससे भी कम है।

मीडिया से पूरे संसार की खबरें प्राप्त होती हैं तथा पढ़ने वाले इसके प्रति अपने विचार तथा योगदान दे सकते हैं। इसके साथ मीडिया मनोरंजन का भी साधन है। अपने पसन्द अनुसार फिल्में तथा दूसरे मनोरंजन के प्रोग्राम या खबरें सुनी देखी जा सकती हैं

मीडिया के बगैर हम 'पत्थर युग' की ओर मुड़ सकते हैं, आवश्यक है कि इसे ठीक ढंग से चलाया जाए कि यह खबरें पक्षपाती न हों।

मीडिया तथा आधुनिक समय में इसका योगदान

संचार मीडिया सूचना, परिकल्पना तथा विचारों को पढ़ने वाले, सुनने वाले तथा देखने वालों को पहुँचाता है। यह समाज तथा संस्कृतियों में संचार का आदान प्रदान करने का ज्ञान फैलाने का कार्य करते हैं।

संचार माध्यमों से समाज के लक्ष्यों को निर्धारित करके वास्तविकता का रूप दिया जाता है। जैसे स्वास्थ्य के बारे मे शिक्षित करना। विवेकी समाज संचार मीडिया पर अपनी पहुंच पहुँचाने के लिए निर्भर करता है। Marshall McLuhan ने ठीक ही मीडिया को ज्ञान का विस्तार (Extension) बताया है। G.L. Kreps तथा B.C. Thornton ने कहा कि मीडिया लोगों की सम्पर्क की योग्यता को, दूर दराज के लोगों से बात करने, मैसेज सुनने तथा images देखने को सम्भव करता है जो मीडिया के बगैर उपलब्ध नहीं होगा।

विभिन्न प्रकार की सूचनाओं के प्रसार से, संचार माध्यम ने जागरूकता पैदा की है, ज्ञान को उत्पन्न किया है तथा ज्ञान फैलाया है।

यह संस्कृति के बनने तथा संरक्षण के लिए आवश्यक है। संचार माध्यम अकेले में नहीं चलता बल्कि समाज में तथा समाज के लिए कार्य करता है। सभी समाजों की अपनी संस्कृति होती है। आधुनिक काल में समाज बहुसंस्कृति वाले बन गए है। इस प्रकार संचार माध्यम अधिक जटिल हो गए हैं।

संचार माध्यम का दर्शकों पर कम अवधि वाले, मध्य-अवधि वाले तथा लम्बे समय तक रहने वाले प्रभाव पड़ते हैं। छोटी-अवधि वाले उद्देश्यों में दर्शकों को विचारों विकल्पों से नावृति करायी जाती है, जागरुकता तथा ज्ञान दिया जाता है, अप्रचलित ज्ञान को बदला जाता है, दर्शकों का कुछ विज्ञापनों या घोषणाओं, प्रचार या प्रोग्रामों को याद रखना भी सम्मिलित है।

मध्यम-अवधि वाले उद्देश्यों में ऊपरी सभी के साथ-साथ अभिवृतियों, व्यवहार तथा सामाजिक मापदण्डों की संवेदना में बदलाव भी सम्मिलित है।

लम्बी-अवधि वाले उद्देश्यों में ऊपरी कार्यों के साथ-माने गए सामाजिक मापदण्ड तथा व्यवहार के बदलाव की प्रक्रिया की पुनर्गठन केन्द्रित है।

संचार माध्यम के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए इन तीनों उद्देश्यों की प्राप्ति आवश्यक है। इस प्रकार संचार माध्यम समाज में कई महत्त्वपूर्ण कार्य करता है जैसे संस्कृति को बनाना तथा संरक्षित करना, मनोरंजन, शिक्षा, पब्लिक सम्बन्ध को आकार देना, एक खास पॉलिसी या दृष्टिकोण का सुझाव देना।

मनोरंजन के तौर पर संचार माध्यम बहुत प्रसिद्ध है। शिक्षा के तौर पर यह जाने है इसके साथ यह सामाजिक उपयोगिता वाली क्रियाओं को बढ़ावा देते हैं। सम्बन्धों में मीडिया पब्लिक राय रखने वाले लीड़रों की साख तथा इज्जत बनाए रखने सहायक होता है। सुझाव देने के माध्यम में यह पॉलिसी बनाने, को विवादास्पद मुद्दों बहस को आकार देने तथा किसी विशेष दृष्टिकोण की समर्थन प्राप्त करने में सहायक होता है।

मीडिया रूढ़िबद्धता क्यों प्रयोग करते हैं

मीडिया लाभ-बनाने वाला उधमी है जो अधिक से अधिक दर्शक बटोरता है। दर्शक तथा सामाजिक जीवन के मध्य सम्बन्ध बनाता है। लोग वही देखते हैं जिसके में सोचते हैं। संचार माध्यम में रूढ़िबद्धता अक्सर प्रयोग की जाती है क्योंकि यह के बारे में व्यक्ति-निष्ठ चित्र प्रस्तुत करके दर्शक को संवेदनशील बना देता है।

लिंग रूढ़िबद्धता तथा मीडिया

स्त्री तथा पुरूषों मीडिया में सबसे ताकतवर तथा पाया जाने वाला प्रभाव है, हमारी चेतनता में सन्देश देता है। मीडिया के सभी प्रकार यौन की छवियों को करते हैं। जिनमें से कई अवास्तविक, टकसाली तथा सीमित अनुभूतियां हैं। प्रथम तौर पर महिलाओं को कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है जो जिसका असल मतलब निकलता है कि पुरुषों का सांस्कृतिक स्तर होता है तथा स्त्रियां तो महत्वपूर्ण तथा मायने नहीं रखती। दूसरे स्त्रियों तथा पुरुषों की रुढ़िबद्धता से तस्वीर खींची जाती जो समाज द्वारा लिंग का निरन्तर समर्थन किया गया प्रतिबिम्ब है। तीसरे स्त्री तथा पुरुष के सम्बन्ध पारम्परिक रोल का दर्शाते हैं तथा स्त्रियों के विरुद्ध हिंसा सामान्य है।

मीडिया द्वारा स्त्री तथा पुरूष के बारे में रूढ़िबद्धता की जाती है तथा उनका अलग ही चित्र खींचा जाता है

संचार माध्यम जैसे विज्ञापन समाचारों का उद्योग तथा मनोरंजन स्त्री तथा पुरुष रूढ़िबद्धता से प्रस्तुत करते हैं जहां स्त्रियों तथा लड़कियों को वंचित स्थिति में रखा है। उदाहरणतय: निष्क्रिय तथा विनम्र। स्त्रियों तथा लड़कों को अपने व्यवसाय के अधिक संरक्षक तथा सफल दिखाया जाता है। इस प्रकार संचार के माध्यमों से लिंग रोल तथा सम्बन्धों को लोगों के अचेतन में गहन उत्तर जाते हैं जिससे व्यक्तित्व तथा सामाजिक समानता का विकास सीमित हो जाता है। जब बच्चे टी.वी. विज्ञापन देखते है तो वह उन छवियों के प्रति उजागर हो जाते हैं जो रूढ़िबद्धता प्रतिनिधित्व करते हैं। जैसे छोटी लड़कियों को विज्ञापन में अपने कमरों में गुड़ियों खेलते दिखाया जाता है। परन्तु विज्ञापनों में लड़कों को अधिक स्वतन्त्रता होती है।

के तौर पर यह सोच जन्म लेती है कि लड़के तथा लड़कियों को अलग-अलग शिक्षित किया जाना चाहिए। लड़कियों को नम्र सुन्दर तथा प्रसिद्ध होना चाहिए जबकि लड़कों को अधिक हिंसक तथा अपनी दिखावट से अधिक अपने कैरियर पर ध्यान देना चाहिए। इस प्रकार बच्चे समाज की आशाओं से सोचना शुरू कर देते है न कि जो उन्हें अच्छा लगता है। इस समय माता-पिता बच्चे की लिंग जागरुकता बनाने में महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

माता-पिता को चाहिए कि वह लिंग-तटस्थ की भावना को जन्म देना चाहिए। Finello (2004) के अनुसार जो मैसेज माता-पिता अपने बच्चों को देना चाहिए उसे ध्यान से चुनना चाहिए जो लिंग रूढ़िबद्धता की स्थापना में प्रभाव डाल सकता है। माता पिता को लिंग के बारे में विशिष्ट भाषाएँ प्रयोग करने से रुकना चाहिए। उदाहरणतय: कुछ कविताओं में लड़के तथा लड़कियों को विभिन्न ढंग से पेश किया है जैसे लड़के रोते नहीं, लड़कियों को विनम्र तथा साफ होना चाहिए उचित नहीं। लड़के तथा लड़कियों के लिए विशिष्ट तथा जड़ स्तर बनाने की अपेक्षा उन्हें उनकी योग्यताओं, दिलचस्पियों तथा विशेषताओं से पहचानना चाहिए।

माता-पिता को चाहिए कि यह भी ध्यान रखे कि माता-पिता टी.वी. या इन्टरनेट से किस प्रकार का मैसेज ग्रहण कर रहे हैं। लड़कियों को बाहरी खेलों के लिए उत्साहित करें। कुछ महिला तथा शिक्षित व्यस्कों के इलावा बच्चों को लिंग-तटस्थ तरह से बच्चों को बढ़ा करना कुछ माता-पिता द्वारा स्वीकृत नहीं क्योंकि उन पर संस्कृति तथा परम्पराओं का ग्रहन प्रभाव होता है।

Knox, 1990 ने सिद्ध किया कि माता-पिता जो बच्चों को लिंग-तटस्थ रास्ते से शिक्षित करना चाहते हैं, पाते हैं कि यह आसान नहीं क्योंकि समाज के दूसरे तत्व भी बच्चों के ईर्द-गिर्द होते हैं, जो उन पर प्रभाव डालता है। पूरे समाज में देखें कि जिन माता-पिता में यह संवेदना होती है, वह बहुत छोटा समूह है जो विस्तृत तौर पर प्रभाव नहीं डाल सकते।

संचार माध्यमों का परिवारों, कार्य स्थलों तथा समाज में नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। Luo तथा Hao, 2007 के अनुसन्धानों के अनुसार स्त्रियों को रूढ़िबद्धता में बाँधा कर निम्न स्तर का, आधारित रोल या Sexual वस्तु की भान्ति चित्रण किया जाता है। स्त्रियों के लिए घर में बैठकर गृहकार्य करना ज्यादा उचित है न कि बाहर जाकर नौकरी करना।

कई कम्पनियों में ऊँची नौकरियां पुरुषों को दी जाती हैं न कि स्त्रियों को।

लिंग रूढ़िबद्धता की समस्याओं को सुलझाने के लिए शिक्षा ही प्रभावशाली तरीका है। संचार के तरीकों में भी लिंग विभिन्नताएं देखी जाती हैं। लड़के प्रश्न का उत्तर अधिक आत्मविश्वास से देते हैं। लड़कियाँ उत्तर देर से देती हैं। इसलिए लड़कियों के उत्तरों की अधिकता उपेक्षा देर से देती हैं। इसलिए लड़कियों के उत्तरों की अधिकता उपेक्षा कर दी

जाती है जिससे उनका आत्म विश्वास और गिर जाता है। अध्यापक को चाहिए कि
दोनों को एक समान उत्साहित करे तथा आत्म-विश्वास पैदा करने में सहायक
स्कूलों को लड़के तथा लड़कियों दोनों को एक जैसा कोर्स पढ़ाना चाहिए। दोनों को
ही कक्षा में मिला कर पढ़ाने से दोनों में बातचीत बढ़ेगी तथा दोनों एक दूसरे से
होंगे। दोनों लिंग मिलकर खेल सकते हैं। Sleeter तथा Grant (1999) ने कहा है
अध्यापक के लिए आवश्यक है कि वह कक्षा में समानता, इज्जत था प्रशंसा को
करे जिससे बच्चों में आत्म-विश्वास बढ़े तथा लड़कों और लड़कियों के मध्य
भेदभाव न रहे (Brown तथा Hood, 2002) के अनुसार अध्यापकों के व्यवहार को
बेहतर करने की आवश्यकता है।

रूढ़िबद्धता से छुटकारा पाने के लिए अध्यापकों के साथ-साथ समाज का भी
उत्तरदायित्व है ताकि बच्चों के कैरियर का पूरा विकास किया जा सके।

मीडिया तथा सामाजिक श्रेणी

करोड़ों लोग समूह उठ कर चाय की प्याली के साथ समाचार देखने या पढ़ने
कार्य करते हैं। इसका अर्थ है कि हम अपना विश्वास मीडिया को देते हैं तथा उनके
अनुसार ही सोचते हैं। इस समय मीडिया का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह सच्ची तथा
सन्तुलित खबरें दे। हम जिस समाज में रहते हैं वह संचार पर विश्वास करता है ताकि हम
आगे बढ़ते रहें तथा हमारा व्यक्तिगत जीवन तथा दूसरी की जाने वाले चीज़ें बेहतर हों।
समाचारों के साथ सहमत होने से पहले हमें अपने साधनों का पता हो, तुलना करें तथा
कुछ अनुसन्धान करें। संसार में मुख्य भिन्नताएं हैं परन्तु मीडिया इस विचार को चित्रित
नहीं करता कि मीडिया उद्योग में असमानताएं कई आकारों में रहती है।

मीडिया वास्तविक जीवन तथा औसत नागरिक को चित्रित नहीं करता। अधिकतर
मीडिया अमरीकी समाज को वास्तविक जीवन से अधिक अमीर दर्शाता है। यह विज्ञा
विज्ञापनों में दिखाई देता है। मीडिया में भिन्नताओं की कमी, असमानता, भेदभाव, निम्न
प्रतिनिधित्व, अल्प संख्यक समूहतथा सामाजिक श्रेणी में दिखाई देते हैं। टी.वी. प
अधिकतर विज्ञापन अमीर लोगों के लिए होते हैं जिन्हें लोग पैसा न होते हुए भी खरीदने
की कोशिश करते हैं। वह किश्तों, किराए पर सामान लेकर अपने सपने पूरे करते हैं।

अब मीडिया बदल रहा है। जो आज स्वीकृत है वह कल से अलग है तथा कल नहीं
रहेगा। जैसे समलैंगिक मामलों में। पहले यह खबरें पढ़ने सुनने में असुविधाजनक लगती
थीं। अब इस सन्दर्भ में विवाद शुरु हो गए हैं तथा समलैंगिकता पर अधिक विचार हो रहे
हैं। इस विषय को फिल्मों, मीडीया, विज्ञापनों, सीरीयलों में भी लिया जाने लगा है। हम
इसे संस्कृति में स्वीकृत करने लग गए हैं। दैनिक जीवन में अपनाकर और समलैंगिक
स्वीकृत होना सामान्य जीवन बन गया है।

घरों में हम लगातार मीडिया से प्रभावित होते है हम इन परिस्थितियों से अधिक
जागरूक हो गए हैं तथा समझ गए हैं कि इन विभिन्नताओं को अपनाना आवश्यक है।
मीडिया लगभग असली है, हमें याद रखना है कि यह असली जीवन है तथा जीवन बदल
रहा है। हमारे समाज में प्रतिदिन के होने वाले बदलावों को समझना तथा पेश करना
मीडिया की जिम्मेदारी है।

मीडिया तथा गरीबी रूढ़िबद्धता

मीडिया को आर्टत था साहित्व के साथ लोगों को गरीबी, बेरोज़गारी तथा दूसरी
सामाजिक कुरीतियों से लड़ने के लिए भी तैयार करना चाहिए।

टी.वी. पर हम क्या देखते हैं ? कुछ चैनल फिल्म स्टार, पॉप संगीत, डिस्को तथा
कम कपड़े पहने हुए लड़कियों की फैशन परेड दिखाते हैं अथवा उनके पास ज्योतिष तथा
क्रिकेट होती है। यह गरीबों के साथ क्रूर मज़ाक है कि इतना समय तथा पैसा क्रिकेट,
फिल्मी सितारे, डान्स या पॉप संगीत दिखाने पर खर्च हो रहा है। भारतीय मीडिया ने अपनी
जिम्मेदारी नहीं निभाई तथा वह उन लोगों की सहायता नहीं कर रहा जो गरीबी, बेरोज़गारी
तथा दूसरी सामाजिक बुराईयों से लड़ रहे हैं।

ऐतिहासिक तौर पर मीडिया का जन्म सामंती उत्पीड़न के विरुद्ध खड़े लोगों का
अंग बनने के उद्देश्य से हुआ। इसने सामंती समाज को आधुनिक में बदलने का महत्वपूर्ण
कार्य किया। प्रिंट मीडिया ने अमेरिकी तथा फ्रांस की क्रान्ति और ब्रिटेन में लोगों के लिए
बहुत कार्य किया। उस समय प्रिंट मीडिया था और लेखक जैसे Rousseau, Voltaire,
Thomas Paine, Junius तथा John Wilkes ने सांमतवाद तथा निराशावाद के विरुद्ध
संघर्ष किया। अमरीकी क्रान्ति के दौरान Thomas Paine की पुस्तिका Comman Sense
तथा इंग्लैंड में निराशावादी George III के राज्य में Junius की चिट्ठियों ने संघर्ष शुरु
किया।

उस समय मीडिया लोगों के हाथों में ताकतवर हथियार बन गया। यूरोप तथा
अमेरिका में मीडिया भविष्य की आवाज़ बना उन ताकतों के विरुद्ध जो सामंतवादी तथा
निराशावादी थी। बीसवीं सदी में दूसरे प्रकार की मीडिया अस्तित्व में आए।

मीडिया की भूमिका क्या हो ? आधुनिक काल में यह सबसे बड़ा प्रश्न है।

बड़ी जिम्मेदारी : भारत जैसे देश में मीडिया की बड़ी जिम्मेदारी है कि वह
जातिवाद तथा समुदायवाद जैसे पिछड़े विचारों के विरुद्ध लड़े तथा लोगों को गरीबी तथा
दूसरी सामाजिक कुरीतियों से लड़ने में सहायक हो। भारत की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा
अशिक्षतित तथा पिछड़ा है, इसके लिए आवश्यक है कि उनका आधुनिक विचारों से
अवगत कराया जाए तथा पिछड़ापन दूर किया जाए ताकि वह जागरूक भारत का हिस्सा
बने।

भारत जैसा विकास की ओर अग्रसर देश सामंतवाद समाज से आधुनिक
समाज की ओर बदल रहा है। यह बदलाव का समय अशान्ति उथल-पुथल
बौद्धिक विक्षोभ इत्यादि का होता है। भारत भी इसी दौर से निकल रहा है।
बिहार, हरियाणा इत्यादि राज्यों में 'Honour killing' जैसी वारदातें हो रही हैं,
से शादी करने वाले प्रेमियों को निर्दयाता से मार दिया जाता है। यह दशातां है कि
यहां जातिवाद तथा समुदायवाद कितना प्रबल है।

हमारा राष्ट्रिय उद्देश्य होना चाहिए कि हम इसे बदलाव के समय से शान्ति
जाएं और भारत को ताकतवर, अद्यौगिक देश बनाएं। इसी में भारतवासियों का
तरक्की होगी।

सांस्कृतिक संघर्ष की आवश्यकता

आज का समाज बहुत जालिम है। यह ताकत का सम्मान करता है जब चीन
जापान गरीब देश थे तब पश्चिमी देश उन्हें 'पीली जाति' कहते थे। परन्तु आज
मजबूत अद्यौगिक राष्ट्र हैं। इसी प्रकार यदि हमारा देश दूसरे देशों की मण्डली में
पाना चाहता है तो उसे उच्च श्रेणी को अद्यौगीकरण तथा स्मृद्धि प्राप्त करनी होगी।
लिए हमारे देश भक्त तथा आधुनिक तर्क वाले बुद्धिमान लोगों को ताकतवर सांस्कृतिक
संघर्ष छेड़ना होगा, ऐसा संघर्ष जो विचारों के क्षेत्र में हो। इस सांस्कृतिक संघर्ष
जातिवाद तथा समुदायवाद जैसे सांमति तथा पिछड़े विचारों से मुकाबला करके
होगा। इस सांस्कृतिक संघर्ष में कला, साहित्य तथा मीडिया की महत्त्वपूर्ण भूमिका
है पर क्या वह अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

आज भारत में मीडिया तथा जनसमुदाय की वास्तविकता के मध्य कोई सम्बन्ध
है। Magsaysay अवार्ड विजेता P. Sai Nath जो The Hindu के Rural Affairs
Editor हैं, उन्होंने संसद में सितम्बर 6, 2007 को Speaker's Lecture Series
चौंकाने वाले तथ्य दिए।

भारत में जहां 70 प्रतिशत लोग गांवों में रहते हैं ग्रामीण भारत पिछले चार दशकों
से सबसे बुरे समय पर है। पिछले 15 वर्षों में लाखों जिन्दगियां जा चुकी हैं क्यों
ग्रामीण क्षेत्रों का हिंसक व्यावसायीकरण हो रहा है तथा मानवीय मूल्य आदान-प्रदान
मूल्य तक गिर गए हैं। इसी के कारण लाखों किसानों ने आत्महत्या की तथा करोड़ों लोगों
ने ग्रामीण क्षेत्रों से रोज़गार के लिए शहर की ओर पलायन किया। वह उस स्तर को
मुड़ गए जहां वह न ही 'श्रमिक' तथा न ही 'किसान' रहे। कई घर के कार्य के लिए
नौकरी यहां तक अपराधी बन गए।

इस Corporate कृषि की ओर धकेल जा चुके हैं, वह क्रिया जिसके द्वारा कृषि को
किसानों के हाथों से लेकर Corporates के हाथों में सौंप दिया गया। यह कार्य लाठियों
या हथियारों से नहीं किया गया बल्कि इसके लिए निवेश वाली वस्तुओं जैसे बीजों,
खादों, बिजली आदि की कीमते बढ़ा कर अभिताव्यगी करके लाखों किसानों को कृषि के
लिए अयोग्य कर दिया गया।

भारत का मानवीय विकास अवधि में 126वां स्थान तथा डॉलर आरूपति में चौथा
स्थान है। इसका अर्थ है कि Bolivia जो दक्षिणी अमरीका का सबसे गरीब देश है या
Guatemala या Goban में गरीब होना भारत में गरीब होने से अच्छा है। भारत में 836
मिलियन लोग मात्र 20 रु. प्रतिदिन पर जीते हैं। राष्ट्रीय सैम्पल सर्वे के मुताबिक भारतीय
खेती वाले घरों का सामान्य खर्चा 503 रु. है जिसमें 55 प्रतिशत भोजन तथा 18 प्रतिशत
ईंधन, कपड़ों, जूतों पर खर्चा जाता है। यहां स्वास्थ्य तथा शिक्षा के लिए कुछ भी नहीं
बचता।

भूखमरी

भोजन तथा कृषि संस्थान की रिपोर्ट दिखाती है कि 1995-97 से 1999-2001 तक
भारत में इतने भूखे लोग पैदा किए हैं जो पूरे विश्व के भूखे लोगों से अधिक है। सामान्य
ग्रामीण परिवार अब पहले से कम खा रहा है। ऋण पहले से दुगने हो गए हैं। उत्पादन का
खर्चा बढ़ गया है, कृषि की आय समाप्त हो रही है जिससे किसान आत्महत्या कर रहे हैं।

लैक्मी फैशन वीक का कवर करने के लिए 512 मान्यता प्राप्त पत्रकार मौजूद थे
जबकि विदहारबाह में आत्महत्याओं को कवर करने के लिए मात्र छः पत्रकार। फैशन
वीक प्रोग्राम में मॉडल सूती कपड़ों की प्रदर्शनी कर रहे थे जबकि स्त्री पुरूष जो इन्हें
उगाते हैं वह नागपुर से एक घंटे की दूरी पर विदहारबाह क्षेत्र में आत्महत्याएं कर रहे थे।
किसी ने यह कहानी नहीं सुनाई मात्र स्थानीय एक या दो पत्रकारों ने।

क्या मीडिया को इसी भांति कार्य करना चाहिए। क्या मीडिया नेल्सन की आँखों से
उन सच्चाईयों को देख सकता है जहां 75 प्रतिशत लोग आर्थिक तंगी में रहते हैं तथा कुछ
गांवों पर ही केन्द्रित होते हैं जहां आकर्षण तथा तमाशे होते हैं। क्या भारतीय मीडिया
Queen Marie Antoinette की भांति व्यवहार नहीं कर रहा जहां यह कहे जाने पर कि
लोगों के पास ब्रेड़ नहीं है तो उसने कहा उन्हें केक खाना चाहिए।

इसमें शक नहीं कि मीडिया कई बार किसानों की आत्महत्या, बढ़ती मंहगाई का भी
जिक्र करता है पर यह कवरेज मात्र 5 से 10 प्रतिशत होता है। अधिकतर समय क्रिकेट,
फिल्मों, संगीत, फैशन परेड, ज्योतिष इत्यादि को दिया जाता है। यह दर्शाता है कि लोगों
का ध्यान असली मुद्दे से हटाकर दूसरी ओर लगाने का प्रयास किया जा रहा है।

लिए नशा

टी.वी. चैनल सारा दिन क्रिकेट दिखाते हैं जो बहुमत के लिए

न राजे कहते थे कि अगर आप लोगों को ब्रेड नहीं दे सकते, उन्हें

भारत में भी यही हाल है। लोगों को क्रिकेट में मस्त रखो तथा आर्थिक और

दुदर्शा भूल जाओ। यह महत्त्वपूर्ण नहीं कि कीमतें बढ़ रही है, बेरोजगारी है,

रहने के लिए घर या दवाएं नहीं है, बल्कि महत्त्व है कि भारत ने पाकिस्तान को

कोहली ने छतक लगाना, धोनी ने छक्के लगाए इत्यादि।

इस समय कला, साहित्य तथा मीडिया की भूमिका लोगों को गरीबी, बे

तथा सामाजिक बुराईयों से संघर्ष करने में सहायता करना होना चाहिए ताकि

आधुनिक, ताकतवर तथा अद्यौगिक राज्य बने।

इसके लिए वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना चाहिए। क्योंकि विज्ञान ही सब

का हल है, मात्र फिजिक्स, कैमिस्ट्री या बायोलोजी नहीं बल्कि वैज्ञानिक सोच

लोगों में विस्तार करना आवश्यक है। हमारे नागरिकों को तर्कसंगत, तार्किक तथा

वाला दिमाग विकसित करना तथा अंधविश्वास और पलायनवाद से बचें। इसमें

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

कई टी.वी. ज्योतिष के प्रोग्राम दिखाते रहते हैं जो अंधविश्वास है। यह अवै

है। मात्र सितारों और ग्रहों की चाल और स्थिति हमारे भविष्य को तय नहीं कर

राष्ट्र सामाजिक-आर्थिक संकट से गुज़र रहा है। इसके लिए वास्तविक मुद्दों पर

होना आवश्यक है।

अभ्यास के प्रश्न

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. संचार माध्यम पर नोट लिखें।
2. गरीबी रूढ़िबद्धता क्या है ?

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. रूढ़िबद्धता में मीडिया का क्या हाथ है ?
2. मीडिया रूढ़िबद्धता के घटन तथा विघटन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा उल्लेख करें।

ଓ ଓ ଓ

SUPPLEMENT WITH NEW SYLLABUS K.U. 2021-22

बाल्यावस्था एवं विकास

by : Dr. Sunita Kumar, Jyoti Narula, Ritu Kapur

Vijaya Publications, Ludhiana

UNIT-I : CHAPTER - 1	किशोरोवस्था की आवश्यकताएँ तथा समस्याएँ (Needs and Problems of Adolescence)	1
UNIT-I : CHAPTER - 2	परवरिश शैलियां-बचपन तथा किशोरवस्था के विकास के पहलुओं पर प्रभाव (Parenting Style....)	5
UNIT-I : CHAPTER - 3	व्यक्तित्व (Personality)	12
UNIT-III : CHAPTER - 1	बुद्धि (Intelligence)	20
UNIT-III : CHAPTER - 2	सृजनात्मकता (Creativity)	38
UNIT-III : CHAPTER - 3	चिंतन (Thinking)	42
UNIT-III : CHAPTER - 4	स्मृति (Memory)	55

UNIT-I

1 किशोरोवस्था की आवश्यकताएँ तथा समस्याएँ (Needs and Problems of Adolescence)

किशोरोवस्था की कुछ आवश्यकताएँ हैं, जिसकी सन्तुष्टि उसके शारीरिक तथा विकास के दूसरे पहलुओं के लिए आवश्यक है। आवश्यकता व्यक्ति के भीतर का तनाव है जिसकी सन्तुष्टि उसके ठीक रहने के लिए आवश्यक है। जब आवश्यकता की सन्तुष्टि हो जाती है तो तनाव समाप्त हो जाता है। ज़रूरतों को मुख्यतय दो भागों में बाँटा जाता है : (1) शारीरिक आवश्यकता (2) मनोवैज्ञानिक आवश्यकता

(1) शारीरिक आवश्यकताएँ : यह व्यक्ति के जीवित रहने के लिए आवश्यक हैं जैसे भूख, प्यास, ऑक्सीजन, आराम, नींद इत्यादि।

(2) सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ : यह व्यक्ति के सांस्कृतिक वातावरण से जुड़ी होती हैं जो सामाजिक सीखने की क्रिया द्वारा प्राप्त जाता है। इसकी सन्तुष्टि व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है।

महत्वपूर्ण सामाजिक-मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ इस प्रकार हैं :

(1) सुरक्षा की आवश्यकता (Need for security) : किशोरों को सुरक्षा के साथ-साथ संवेगात्मक, सामाजिक तथा आर्थिक सुरक्षा की भी आवश्य होती है। वह किशोर जिसमें सुरक्षा के अभाव की भावना घर जाए वह समाज कुव्यवस्थित हो जाता है।

(2) स्नेह की आवश्यकता (Need for love) : किशोरावस्था की सबसे महत्व आवश्यकता प्यार जा स्नेह हैं। इसके बगैर किशोर में उचित योग्यता तथा आत्म-विश्व विकसित नहीं होगा। उचित स्नेह व्यक्ति को सुरक्षा की भावना देता है।

(3) स्वीकृति की आवश्यकता (Need for approval) : किशोर चाहता कि उसे घर, विद्यालय तथा समाज में स्वीकृति मिले ताकि उसका अहम सन्तुष्ट सके। वह विपरीत लिंग के साथियों के बीच ध्यान का आकर्षण बना रहना चाहता है और समाज में अपनी योग्यताओं, बुद्धिमता तथा सामर्थ्य की स्वीकृति प्राप्त करना चाहता है। इस अवस्था में अध्यापक उसकी बहुत सहायता कर सकते हैं।

(4) स्वतन्त्रता तथा स्वावलंबन की आवश्यकता (Need for freedom and independence) : किशोरोवस्था में बालक अपने माता-पिता तथा बुजुर्गों से आज़ाद होना चाहता है। वह चाहता है कि उसे अपनी भावनाओं, संवेगों तथा विचारों की अभिव्यक्ति का अधिकार मिले। जब उसकी क्रियाओं को नियन्त्रित किया जाता है तब उसे गुस्सा आता है।

(5) अभिव्यक्ति तथा उपलब्धियों को प्राप्त करने की आवश्यकता (Need for self-expression and achievement) : प्रत्येक किशोर अपनी क्षमताओं को दर्शाना चाहता है। जब उसे सफलता मिलती है तो उसे सन्तुष्टि होती है तथा असफलता मिलने पर उसे उदासीनता तथा निराशा होती है। विद्यालय का पाठ्यक्रम ऐसा होना चाहिए कि बच्चे की योग्यताएँ पूर्ण रूप से विकसित हो सकें।

भारतीय सन्दर्भ में किशोरों की समस्याएँ
(Problems of Adolescents with special reference to Indian Context)

किशोरोवस्था में बचपन से प्रौढ़ावस्था के मध्य बदलाव का समय है। इस समय की प्रमुख समस्याएँ हैं :

(1) शारीरिक विभिन्नता के सन्दर्भ में विकलता (Perplexity with regard to Somatic Variation) : वय: सन्धि अवस्था में शरीर में बहुत से बदलाव

आते हैं। लड़कियों में मासिक धर्म शुरू होना तथा लड़कों में रात्रि में स्राव होना कई डर तथा तनावों को जन्म देता है। भारतीय समाज में किशोर शारीरिक बदलावों के बारे में कम जानकारी रखते हैं। लैंगिक स्वच्छता तथा शारीरिक क्रिया विज्ञान के वैज्ञानिक ज्ञान के अभाव में वह लैंगिक ज्ञान की जानकारी गल्त स्रोतों से पता करते हैं। इससे उनमें अपराध की भावना पनपती है तथा वह अर्न्तमुखी हो जाते हैं।

(2) लैंगिक चेतना की गहनता से सम्बन्धित समस्याएँ (Peroblems related with intensification of sex consciousness) : किशोरोवस्था में लैंगिक प्रवृति के आक्समिक प्रबोधन होने से लैंगिक चेतना बढ़ती है। किशोर सैक्स से सम्बन्धित सन्दर्भों के बारे में जानने को उत्सुक हो जाते हैं। परन्तु भारत में अधिकतर माता-पिता अनपढ़ हैं तथा बच्चों के साथ सैक्स सम्बन्धी समस्याओं की चर्चा करने में झिझकते हैं। उस समय किशोर अपनी जिज्ञासा को शाँत करने तथा सैक्स की आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए सामाजिक तौर पर अस्वीकृत रास्तों पर मुड़ जाते हैं जो उनके लिए काफी हानिकारक रहता है।

(3) माता पिता के साथ व्यवस्था में समस्याएँ (Adjustment difficulties with parents) : किशोरोवस्था में बच्चे स्वतन्त्र होना चाहते हैं। भारतीय सन्दर्भ में माता-पिता मित्र बनाने, शिक्षा का चुनाव करने, मनोरंजन की दिलचस्पियां, कपड़ों का और जीवन शैली के चुनाव में, घर में आने-जाने के समय तथा व्यवहार के ढंग का विरोध करते हैं। माता-पिता के व्यवहार का आदर्श तथा मित्रों के साथ सम्बन्ध के मध्य तनाव समस्याओं को जन्म देता है। माता-पिता के साथ सम्बन्ध खराब होने से किशोर बड़ों तथा अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह कर सकता है।

(4) बचपन-व्यस्कता के मध्य तनाव (Childhood-Adulthood Conflict) : हमारे समाज में किशोरों को न तो बच्चा तथा न ही व्यस्क समझा जाता है। उन्हें अपनी शारीरिक और संवेगात्मक आवश्यकताओं के लिए माता-पिता तथा बड़ों पर निर्भर होना पड़ता है, परन्तु इसके साथ ही वह व्यस्कों जैसे स्वतन्त्र विचार रखता है। वह अपने मामलों की भली प्रकार व्यवस्था कर सकता है तथा बड़ों की अनावश्यक दखलअंदाजी के विरुद्ध खड़ा होता है। वह अपने माता-पिता के द्वारा दिखाए गए ध्यान तथा सुरक्षा से शर्मसार तथा संकोची महसूस करता है। उसके माता-पिता तथा अध्यापक उसके साथ अस्पष्ट रूप से व्यवहार करते हैं। कई बार वह उसे बालक की भांति तथा कई बार बच्चे की भांति देखते हैं। इससे उनमें उलझन तथा तनाव हो जाता है।

(5) विद्यालय के अनुशासन के साथ व्यवस्था की समस्याएँ (Adjustment difficulties with school discipline) : बहुत सारे किशोर विद्यालय के अनुशासन के साथ व्यवस्थित होने में बहुत कठिनाई अनुभव करते हैं। कई बार स्कूल विद्यार्थियों से

बहुत ज्यादा आशा करते हैं। स्कूलों को विद्यार्थियों में निर्विवाद आज्ञाकारिता की आदतें नहीं डालनी चाहिए बल्कि उन्हें स्वतन्त्र बनाना चाहिए।

(6) समुदाय के साथ व्यवस्था की समस्या (Adjustment difficulties with Community) : बढ़ते हुए सामाजिक एकेलेपन तथा तीव्र तकनीकी बदलावों के भीतर किशोर को समाज में अपना स्थान बनाना होता है। यह बदलता हुआ समाज किशोर के जीवन के बारे में योजना बनाने को अधिक कठिन कर रहा है। इस समय किशोर खुशी तथा सन्तुष्टता पाने के लिए नशे तथा अपराधी वृति का सहारा लेने लगते हैं जहां उन्हें काम नहीं करना पड़ता तथा उनसे कोई आशा भी नहीं की जाती।

(7) आदर्शवादी तथा वास्तविक झगड़े (The Ideal and Reality Conflicts) : आदर्शवादी तथा वास्तविक परिस्थितियों के मध्य अन्तर से कुव्यवस्था तथा असंमजस बन सकता है कई बार वह अन्तर उन किशोरों के लिए प्रेरणा तथा प्रोत्साहन का स्रोत बन जाता है जो अपनी पहचान की तलाश करते हैं।

इस समय माता-पिता का महत्व बहुत बढ़ जाता है, उन्हें किशोरों को पूर्ण स्नेह देना चाहिए उनकी समस्याओं को समझें, घर में सौहदर्यपूर्ण वातावरण दें, किशोरों को घर की क्रियाओं में योगदान देने को प्रोत्साहित करें जब आवश्यक हो तथा कहा जाए तो व्यवस्थित सहायता प्रदान करें, नियमों में स्पष्टता रखें तथा किशोरों के आत्म-सम्मान पर साथियों के प्रभाव को समझें। उनके जीवन में मित्रों के महत्व को स्थान दें।

अभ्यास के प्रश्न

1. किशोरावस्था की क्या आवश्यकताएँ हैं?
2. किशोरावस्था में क्या समस्याएँ आती हैं?

ଓ ଓ ଓ

UNIT-I

परवरिश शैलियां-बचपन तथा किशोरवस्था के विकास के पहलूओं पर प्रभाव

2 (Parenting Style – Influencing developmental aspects of childhood and adolescence)

परवरिश शैली एक मनोवैज्ञानिक निर्माण है जो उन मानक रणनितियों का प्रतिनिधित्व करता है जो माता-पिता अपने बच्चों को पालने के लिए प्रयोग करते हैं। परवरिश की गुणना बच्चे के साथ बिताई गई मात्रा से अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। उदाहरणतय: माता-पिता पूरा दिन अपने बच्चे के साथ बिताते हैं, परन्तु दूसरे कार्य करते रहते हैं और बच्चे की ओर ध्यान भी नहीं देते। परवरिश शैलियाँ इस बात का प्रतिनिधित्व करती हैं कि वह बच्चे की ओर प्रतिक्रिया तथा सवाल कैसे करते हैं। परवरिश प्रथाएं विशिष्ट व्यवहार हैं जबकि परवरिश शैलियाँ परवरिश प्रथाओं का विस्तृत पैटर्न है।

बच्चे जीवन में विभिन्न स्तरों से गुज़रते हैं। इस समय उन विभिन्न कारकों को मिलाकर माता-पिता परवरिश की शैलियाँ बना लेते हैं जिन्हें बच्चे समय के साथ अपना व्यक्तित्व बनाना शुरु कर देते हैं। शैशवास्था में माता-पिता का बच्चे के साथ सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ होता है जबकि किशोरावस्था में माता-पिता दूसरी समस्याओं से जूझते हैं जैसे किशोरों का स्वतन्त्रता की इच्छा रखना।

अनुसंधानों से ज्ञात हुआ है कि जो माता-पिता अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करते हैं, स्वतन्त्रता देते हैं तथा दृढ़ नियन्त्रण रखते हैं, उनके बच्चों में उच्च स्तर की क्षमता होती है, सामाजिक रूप से योग्य तथा दक्ष होते हैं। इनके साथ ऐसे बच्चे दूसरों से अच्छे सम्बन्ध बनाते हैं, आत्म-निर्भर तथा स्वतन्त्र प्रवृति वाले होते हैं।

Baumrind की परवरिश व्याख्या है। Baumrind में तीन परवरिश शैलियां दी है : आधिकारिक परवरिश (Authoritative) सत्तावादी (authoritarian) तथा दयालु (permissive) परवरिश। Maccoby तथा Maritn ने Baumrind की परवरिश शैलियों को विस्तृत करके दो और श्रेणियां दीं : माँग करने वाले (Demanding) तथा उदार (undemanding)। इस प्रकार चार परवरिश शैलियां है-

Maccoby तथा Martin की चार परवरिश शैलियां

Baumrind की तीन परवरिश शैलियां

	माँग करने वाले	उदार
उत्तरदायी	आधिकारिक / प्रसारात्मक	कृपालु / दयालु
अनुत्तरदायी	सत्तावदी / अधिनायकवादी	बेपरवाह

Baumrind के अनुसार माता-पिता को न ही दंडात्मक (punitive) तथा न ही पृथक रहने वाली प्रकृति के होने चाहिए बल्कि उन्हें चाहिए कि वह बच्चों के लिए नियम बनाए तथा उन्हें स्नेह दें। माता-पिता का दबाव पड़ने से वह अपना व्यवहार बदल सकते हैं जैसे अननुरूपता (inconsistency), बढ़ता हुआ नकारात्मक संवाद, निरिक्षण करना, व्यवहार पर अस्पष्ट नियम या सीमाएं तय करना, अधिक प्रतिक्रियाशील (reactive) तथा कम सक्रिय (proactive) और अधिक अनुशासन प्रिय व्यवहार दर्शाते है।

आधिकारिक परवरिश (Authoritative Parenting) - ऐसे माता-पिता माँग करने वाले तथा उत्तरदायी (responsive) होते हैं। यह परवरिश बच्चे पर केन्द्रित होती है। यह व्यस्कता की ऊँची आशाएँ रखता है। यह माता-पिता समझ सकते हैं कि उनके बच्चे कैसा महसूस कर रहे है तथा उन्हें अपनी भावनाओं को नियन्त्रित करना सिखाते हैं। चाहे उनकी आशाएं उच्च होती हैं परन्तु वह छोटी कमियों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं। वह बच्चों की समस्याएं सुलझाने में सहायता करते हैं। यह माता पिता बच्चे को स्वतन्त्र होना सिखाते हैं परन्तु उनकी क्रियाओ पर नियन्त्रण रखते हैं। यह बच्चों को स्वतन्त्रता से explore करने की आज़ादी देते हैं और उन्हें अपने मुताबिक निर्णय लेने देते हैं। इनके बच्चे अधिक आत्म-निर्भर होते हैं।

अधिकारिक माता-पिता बच्चों के लिए स्पष्ट स्तर तय करते हैं, उनकी सीमाओं पर नज़र रखते हैं तथा बच्चों में स्वायत्तता (autonomy) विकसित करने की आज्ञा देते हैं। वह बच्चों से परिपक्व, स्वतन्त्र तथा आयु-उपयुक्त व्यवहार की आशा करते हैं। अभद्र व्यवहार के लिए तर्कयुक्त तथा नपातुली सज़ा देते हैं। बच्चे को बताया जाता है कि उसके इस व्यवहार के क्या नतीजे होंगे, उसका व्यवहार उचित नहीं तथा वह अपने व्यवहार को दोहराएं नहीं। वह उचित स्थानों पर सकारात्मक उत्साह देते हैं। बच्चे को पता है कि जब माता-पिता उसे सज़ा दे रहे हैं तो उसके पीछे कारण हैं। ऐसे बच्चे तथा किशोर सफल, दूसरों द्वारा अधिक पसन्द किए जाने वाले तथा स्वयं से फैसले करने के काबिल होते हैं।

विकास पर प्रभाव (Influence on development) -

- परवरिश का यह तरीका स्वतन्त्रता प्रदान करता है, उनकी क्षमताएँ विकसित होती हैं तथा वह वातावरण को पूरी तरह खंगाल सकता है। परन्तु इसके साथ बच्चे की सीमाएँ तय होती हैं इसलिए वह सीमाओं से परे जा कर कोई काम नहीं करते।

- इस परवरिश में बच्चों की बुनियादी आवश्यकताएं पूरी की जाती हैं जिससे वह सन्तुष्ट रहते हैं। यह बच्चे अपने प्रयासों से अपनी योग्यताओं को विकसित करने तथा अपनी मूलप्रवृत्तियों तथा संवेगों को सही दिशा प्रदान करने के भी काबिल बन जाते हैं।
- यह बच्चे अनुशासित, वफादार, आत्म-नियन्त्रित तथा कानून का पालन करने वाले होते हैं। उनकी ज़रूरतें पूरी होती हैं तथा उनकी स्वतन्त्र गतिविधियों पर माता-पिता की नज़र रहती है; इसलिए वह माता-पिता के प्रति कृतज्ञतापूर्ण भावनाएँ रखते हैं।
- बच्चों में उच्चस्तरीय उपलब्धियाँ, आत्मवृद्धि तथा आत्म-गौरव पाया जाता है।
- बच्चों के मस्तिष्क पर किसी दुर्घटना या दुखद स्मृति का प्रभाव नहीं होता।
- उनके व्यक्तित्व का पूर्ण विकास होता है। इसी कारण इस परवरिश को बेहतरीन माना जाता है।

सत्तावादी परवरिश (Authoritarian Parenting) - ऐसे माता-पिता अधिक माँग करने वाले होते हैं परन्तु उत्तरदायी नहीं होते। वह बच्चों की आवश्यकताओं, क्षमताओं, इच्छाओं और महत्वकांक्षाओं को स्वीकार नहीं करते। उन्हें अपनी इच्छा, आवश्यकता या महत्वकांक्षा को अभिव्यवस्त करने का मौका नहीं देते। अपना अधिकार जताते हुए कड़े अनुशासन को लागू करते हुए तथा नैतिक नियमों का वास्ता देते हुए अपनी इच्छाएं और महत्वकांक्षाएं बच्चों पर लादते हैं।

यह माता-पिता नियन्त्रण रखने वाले, भारी सज़ा देने वाले तथा बच्चों से आशा करते हैं कि वह उनके निर्देशों का अनुसरण करें, परन्तु बच्चों को इसका उल्लेख तथा विवरण नहीं देते। ऐसे माता-पिता शारीरिक सज़ा देने तथा चीखने का रास्ता अपनाते हैं। इस स्टाईल का लक्ष्य बच्चे को अच्छा व्यवहार सिखाना, इस कठोर तथा क्षमा न करने वाले समाज में प्रौढ़ों की भांति जीवित रहना सिखाना है। माता-पिता बच्चे को नकारात्मक प्रत्युतर जैसे गुस्सा तथा हिंसा के बारे में तैयार करते हैं जो उन्हें अनुचित व्यवहार दर्शाने पर मिलेगा। इन लोगों की धारणा होती है कि यदि माता - पिता बच्चे पर अत्याधिक दबाव डालते हैं तो वह बाहर के आक्रमणकारी झटके से कम आहत होगें!

प्रभाव (Effects)

सत्तावादी परवरिश के बच्चों पर निम्नलिखित प्रभाव पड़ते हैं-

- इस प्रकार की परवरिश में पले बच्चे में सामाजिक दक्षताएँ कम होती हैं क्योंकि माता-पिता ही बच्चे को बताते हैं कि उन्हें क्या करना है न कि बच्चा खुद चुनाव करें। इस प्रकार बच्चे छोटी अवधि वाले सीमित विकास में तो सफल रहते हैं, परन्तु माता-पिता का नियन्त्रण कम होने पर असफल हो जाते हैं।
- जीवन के बुनियादी पहलुओं में ज़रूरी अवसर व स्वतन्त्र सुविधाएं न मिलने से उनका स्वाभाविक विकास अविरुद्ध हो जाता है।
- इस प्रकार के बच्चे अनुपालन करने वाले, आज्ञाकारी, चुपचाप तथा नाखुश रहते हैं। इनमें उदासी तथा स्वयं को दोष देना देखा जाता है।

- यह व्यवहार बड़े होने तक चलता रहता है।
- जो बच्चे इस परवरिश से गुस्से होते हैं उनमें उच्च व्यवहारिक आत्म-विश्वास पाया जाता है जो किशोरावस्था में विद्रोह की शक्ल ले लेता है।
- बच्चों की मूल प्रवृत्तियों तथा संवेगों को ठीक दिशा नहीं मिल पाती। तानाशाही लालन-पालन में दबी हुई इच्छाएं, अपूर्ण अभिलाषाएं तथा वातावरण में गुलामों की भांति रहने से इनमें असहजता, परेशानी, गम्भीर व्यवहारात्मक तथा आचरण सम्बन्धी समस्या देखने को मिलती हैं।
- जो बच्चे गुस्से तथा विद्रोह के साथ-आत्म प्रभावकारिता तथा स्वयं को दोष देने की भावना पाल लेते हैं वह पलायनवादी व्यवहार (escapist) में चले जाते हैं जहां से वह मादक द्रव्यों के सेवन तथा आत्महत्या के प्रयास तक पहुंच जाते हैं।

कृपालु परवरिश (Indulgent Parenting) - ऐसे माता पिता न तो उत्तरदायी तथा न ही माँगे करने वाले होते हैं। इस परवरिश को अनुमोदक, अनिर्देशक या उदार भी कहते हैं। इसमें बच्चों से बहुत कम व्यवहारिक आशाएं होती हैं। इस प्रकार की परवरिश में माता-पिता अपने बच्चों के साथ सबद्ध रहते हैं परन्तु उनके ऊपर बहुत कम मांगे या नियन्त्रण रखते हैं। माता-पिता बच्चों से स्नेह करते हैं उन्हें स्वीकार करते हैं तथा बच्चे की आवश्कताओं तथा इच्छाओं के प्रति उत्तरदायी होते हैं। वह बच्चे से उचित व्यवहार की मांग नहीं करते। बच्चों को बड़े होने के साथ इस बात का अनुभव नहीं होता कि उन्हें अनुचित व्यवहार के लिए दूसरों का गुस्सा झेलना होगा। बड़े होने पर उनका परहेज किए जाने वाले व्यवहार पर ध्यान नहीं होगा जिससे उन्हें दूसरों का गुस्सा झेलना पड़ता है।

कृपालु माता-पिता बच्चों के साथ मित्रों जैसा व्यवहार करते हैं तथा माता-पिता की भूमिका नहीं अपनाते। बच्चों की आशाएं निम्न होती हैं तथा उनमें अनुशासन नहीं होता। माता-पिता बच्चों को स्वयं निर्णय लेने देते हैं तथा मित्रों की भांति सलाह देते हैं। यह नियम नहीं बनाते तथा न ही सज़ा देते हैं, जो बच्चे चाहते हैं वही देते हैं। कई कृपालु माता-पिता जो उन्हें बचपन में नहीं मिला वह स्वतन्त्रता तथा सामग्री अपने बच्चों को देते हैं। ऐसे बच्चे अव्यस्क ही रहते हैं अपने संवेगों पर नियन्त्रण नहीं होता तथा अपना उत्तरदायित्व नहीं निभाते। ऐसे बच्चे आवेगी तथा नशा करने की आदत वाले अधिक होते हैं। उनके व्यवहार पर किसी ने नियन्त्रण नहीं किया, इसलिए वह अपना रास्ता अपनाते हैं।

यदि सकारात्मक तरफ देखें तो यह बच्चे संवेगात्मक रुप से सुरक्षित स्वावलंबी, सीखने को उत्सुक तथा अपनी हार को स्वीकार करने वाले होते हैं। वह जल्दी प्रौढ़ होते है तथा दूसरों की सहायता के बगैर जीना सीख लेते हैं।

बच्चों के विकास पर नकारात्मक प्रभाव (Negative Effect on the Development) - कृपालु परवरिश में पले बच्चों पर इस प्रकार प्रभाव पड़ता है :

- बच्चों की सीमाएं तय नहीं होती, इसलिए यह अपने व्यवहार पर नियन्त्रण करना नहीं सीखते तथा मनचाहा प्राप्त करना चाहते हैं।

- यह व्यवहार में अपरिपक्व जल्दी उत्तेजित होने वाले तथा निर्णय लेने में तर्क का प्रयोग नहीं करते। इससे यह सामाजिक रूप से उत्तरदायित्व निभाने वाले नहीं बनते। बड़े होने पर यह अपराधिक प्रवृत्ति वाले तथा नशे के आदी हो सकते हैं। इनके व्यवहार में नैतिकता नहीं होती।
- माता-पिता का अत्यधिक प्यार मिलने के कारण यह अपनी ज़िन्दगी में स्वतन्त्र निर्णय नहीं ले पाते और दूसरों पर निर्भर रहते हैं।
- अत्यधिक लाड-प्यार से यह बिगड़ जाते हैं और भविष्य खराब कर लेते हैं।

बेपरवाह परवरिश (Neglectful parenting) - यह माता पिता न तो माँग करने वाले तथा न ही उत्तरदायी किस्म के होते हैं। इन माता पिता को अलिप्त (uninvolved), असलंग्न (detached) या खारिज (dismissive) प्रकार के कह सकते है। यह माता-पिता कम प्यार देने वाले तथा कम नियन्त्रण रखने वाले होते हैं। यह बच्चों के मामलों में दखल नहीं देते, माँग नहीं करते, उत्तरदायित्व निभाने में धीमे होते हैं तथा सीमाएं तय नहीं करते। माता - पिता बच्चों को संवेगात्मक रुप से सहारा नहीं देते परन्तु उनकी आधारीय आवश्यकताएं पूरी करते हैं। बेपरवाह परवरिश के कई कारण होते हैं जैसे माता-पिता का अपने आपको प्राथमिकता देना, माता-पिता का उत्साहित न होना, आर्थिक दबाव, सहारे की कमी तथा हानिकारक पदार्थों का आदी होना।

इन माता पिता के बच्चे यह धारणा बना लेते हैं कि उनके सिवाय माता-पिता के लिए दूसरी वस्तुएं अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। कई बच्चे समय से पूर्व ही प्रौढ़ हो जाते हैं तथा स्वयं पर निर्भर हो जाते हैं। माता-पिता तथा बच्चे विपरीत व्यवहार दर्शाते हैं। उन दोनों के बीच कभी समझौता नहीं होता क्योंकि बच्चों को माता-पिता के लिए गुस्सा होता है। ऐसे बच्चे सामाजिक परिस्थितियों से पीछे हट जाते हैं। इसका प्रभाव भावी जीवन पर भी पड़ता है। किशोरव्यवस्था में ये भगोड़े तथा बाल अपराधी बन जाते हैं। यह बच्चे बाहरी ढांचे तथा आन्तरिक अनुशासन से वंचित रहते हैं। उनमें प्यार की अभिव्यक्ति की कमी होती है इसलिए जिस साधन से भी मिले प्यार लेने की कोशिश करते हैं।

- इस परवरिश में बच्चों की सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ पूरी नहीं होती। इसलिए वह संवेगात्मक रूप से असन्तुष्ट तथा सामाजिक गुण विकसित नहीं कर पाते।
- ऐसे बच्चे असुरक्षित तथा अकेलापन महसूस करते हैं। इनमें उदासीनता, चिंता, निराशा तथा विद्रोह की भावना देखने को मिलती है।

Maccoby तथा Martin (1963) ने 14-18 वर्ष के किशोरों पर चार क्षेत्रों में अध्ययन किया-मनोसामाजिक विकास, विद्यालय में उपलब्धी, आन्तरिक संकट तथा समस्याग्रस्त व्यवहार। अध्ययन से पता चलता है कि जिनके बेपरवाह माता पिता हैं उन्होंने इन टैस्टों पर सबसे कम तथा जिनके अधिकारिक माता-पिता हैं व उन्होने सर्वाधिक अंक प्राप्त किए।

दूसरे परवरिश के तरीके

आसक्ति वाली परवरिश (Attachment Parenting) - मनोविज्ञान में आसक्ति से भाव है 'लोगों के बीच में सदा रहने वाला संवेगात्मक सबन्ध'। चार प्रकार की आसक्तियाँ होती हैं सुरक्षित, असुरक्षित - अलगाव, असुरक्षित - प्रतिरोधी तथा बेतरतीब आसक्ति।

सकारात्मक परवरिश (Positive Parenting) - यह अधिकारिक परवरिश से ऊपर होती है तथा विकास के स्तरों पर लगातार सहारा तथा निर्देश प्रदान करती है।

ठोस परवरिश (Concerted parenting) - यह सकारात्मक परवरिश है जिसमें बच्चे की प्रतिभाओं को व्यवस्थित (extra curricular) क्रियाओं जैसे संगीत की क्लासें, खेलें, एथलेटिक्स तथा शैक्षाणिक गतिविधियों से तेज़ किया जाता हैं।

आत्मकामी परवरिश (Narcissistic parenting) - इस परवरिश में माता-पिता आत्मकामी विचारों से ग्रसित होते हैं। यह माता-पिता बच्चों के बहुत निकट होते हैं, उनमें ईर्ष्या भी महसूस करते हैं तथा उनके स्वतन्त्र होने से डरते हैं। इसमें बच्चे को मात्र माता-पिता के फायदे के लिए ही रखा जाता है।

पोषण देने वाली परवरिश (Nurturant parenting) - इसमें माता-पिता के संरक्षण के अन्तर्गत बच्चे को अपना वातावरण जाँचने के लिए उत्साहित किया जाता है।

अत्याधिक परवरिश (Overparenting) - इसमें माता-पिता बच्चे के हर मामले में दखल देते हैं ताकि उनकी समस्याओं का हल निकल सकें। इस प्रकार उनकी स्वयं समस्याओं को सुलझाने की क्षमता को दबा देते हैं। हैलिकॉप्टर माता-पिता इक्कीसवीं सदी की उपज हैं। वह हर समय बच्चे पर मंडराते रहते हैं ताकि उनके रास्ते का हर काटां निकल सके खासकर विद्यालयों में, खासकर किशोरावस्था में जब उन्हें स्वतन्त्र होने और आत्म-निर्भर होने की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। आधुनिक संचार की तकनीकों ने यह सम्भव कर दिया है कि माता-पिता बच्चों पर पूरी नज़र रख सकें जैसे मोबाइल, ईमेल तथा शैक्षणिक ग्रेडों की आनलाईन जाँच।

धीमी परवरिश (Slow parenting) - यह बच्चों के लिए कम योजना तथ व्यवस्थाएं बनाकर उन्हें बचपन का आनन्द मनाने देते हैं। सीधे खिलौने दिए जाते है बच्चे को अपनी दिल्चस्पियां विकसित करने, परिवार के साथ समय बिताने तथा अपने निर्णय लेने को उत्साहित किया जाता है।

जहरीली परवरिश (Toxic Parenting) - गलत परवरिश ज़हरीले सम्बन्धों को जन्म देती है। इससे बच्चे की अपनी पहचान बनाने की योग्यता घटती है तथा आत्म-सम्मान कम होता है। बच्चे की आवश्यकताओं की तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। या बच्चे क्षति के साथ बड़े होते हैं तथा यही क्षति अपने बच्चों को देते हैं।

डॉलफिन परवरिश (Dolphin Parenting) - यह माता-पिता खेलने वाले सामाजिक तथा बुद्धिमान होते है। यह माता-पिता बच्चों के लिए समय पर हर क्रिय करना रोकते हैं, अत्याधिक सुरक्षा प्रदान नहीं करते, व्यवहार की आशा रखते समय तथ शैक्षणिक सफलता में उनकी इच्छाओं तथा लक्ष्यों का ध्यान रखते हैं।

अभ्यास के प्रश्न
(Study of Questions)

लघु प्रश्न (Short Questions)

1. परवरिश शैलियों से आप क्या समझते हैं ?
   (What do you mean by parenting styles?)
2. परवरिश शैलियों के प्रकार लिखें।
   (Classify parenting styles.)
3. अधिकारिक परवरिश से क्या भाव है ? इसके क्या लाभ हैं।
   (What do you mean by Authoritative parenting? Explain its advantages.)

दीर्घ प्रश्न (Long Questions)

1. निम्नलिखित परवरिश शैलियों के लाभ तथा कमियां लिखें।
   (Explain Advantages and disadvantages of following parenting styles.)
   - सत्तावादी परवरिश (Authoritarian parenting)
   - कृपालु परवरिश (Indulgent Parenting)
   - बेपरवाह परवरिश (Neglectful parenting)
   - अत्याधिक परवरिश (over Parenting)
2. किस प्रकार की परवरिश को सर्वोत्म माना गया है ?
   (Which kind of parenting has been adjusted the best ?)
3. परवरिश के नए तरीके कौन से हैं?
   (Which are the latest parenting styles?)

ꕥ ꕥ ꕥ

3 व्यक्तित्व (Personality)

व्यक्तित्व शब्द लैतिन शब्द 'परसोना' (Persona) से लिया गया है जिसका अर्थ है मास्क जो ग्रीक एक्टर एक्टिंग के समय पहनते थे। आधुनिक काल में व्यक्तित्व शब्द का अर्थ विभिन्न ढंग से लिया जाता है। व्यक्तित्व एक स्थिर अवस्था नहीं है परन्तु यह बदलता हुआ रूप है जो वातावरण के साथ सम्बन्ध के साथ बदलता रहता है। व्यक्तित्व हमारे आचरण, व्यवहार, क्रियाओं, गतिशीलता और व्यक्ति से सम्बन्धित सभी वस्तुओं का मिश्रण है। यह वातावरण के साथ एक प्रकार का सम्पर्क है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करता है।

व्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए बहुत से प्रयत्न किए गए हैं। इनमें से आवश्यक परिभाषाएं इस प्रकार हैं–

वारेन (Warren, H.C., Elements of Psychology) के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति का सम्पूर्ण मानसिक संगठन है जो उसके विकास की किसी भी अवस्था में होता है।" (Personality is the entire mental organization of human being at any stage of his development.)

रैक्स रॉक (Rex Rock) की व्याख्या, "व्यक्तित्व समाज द्वारा मान्य तथा अमान्य गुणों का सन्तुलन है।" (Personality is the balance between socially approved and disapproved traits.)

आलपोर्ट (Allport) ने व्यक्तित्व की 49 विभिन्न परिभाषाओं की समीक्षा करने के बाद अपने विचार प्रकट किए, "व्यक्तित्व व्यक्ति में मनोवैज्ञानिक व्यवस्थाओं का गतिशील संगठन है जो कि वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।" (Personality is a dynamic organisation within the individual of those psycho-physical system that determine his unique adjustment to his environment.)

आर०बी० कैटल (R.B. Cattell) के अनुसार, "व्यक्तित्व के द्वारा हम यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति किसी परिस्थिति में क्या करेगा।" (Personality is that which permits a prediction of what a person will do in a given situation.)

आईज़ैन्क (Eysenck) के अनुसार, "व्यक्तित्व व्यक्ति के चरित्र, स्वभाव, बुद्धि तथा शारीरिक बनावट का थोड़ा बहुत ऐसी स्थायी और स्थिर संगठन है जो वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता है।" (Personality is the more or less stable and enduring organisation of a person's character, tempera-

ent, intellect and physique, which determine his unique adjustment to e environment.)

Ciccarelli तथा Meyer, 2016 के अनुसार लोगों द्वारा सोचने, महसूस करने तथा वहार करने का यह एक अद्वितीय और अपेक्षाकृत स्थिर तरीका होता है।

क्तित्व की प्रकृति
Nature of Personality)

समाज में प्रत्येक व्यक्ति का अलग-अलग स्तर होता है जिससे उनके रोल, सोचने ढंग, स्वभाव, प्रवृति तथा चरित्र विभिन्न होते हैं।

व्यक्तित्व की प्रवृति इस प्रकार होती है :

(1) व्यक्तित्व शारीरिक, मानसिक, आदर्शों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, योग्यताओं था दिलचस्पियों का मिश्रण होता है। इसमें शारीरिक गुण जैसे लम्बाई, भार, लिंग त्यादि; मानसिक गुण जैसे मानसिक क्षमता, स्मरण शक्ति तथा सोचने की क्षमता; ोग्यताएं जैसे मानसिक कला तथा दिलचस्पियाँ सम्मिलित हैं।

(2) अद्वितीय (Unique) : व्यक्तित्व गुणों का अद्वितीय संगम होता है जो एक यक्ति को दूसरे से भिन्न करता है। प्रत्येक व्यक्ति के हंसने, मुस्कुराने या रोने का, बोलने, स्वागत करने या अभिवन्दन करने का ढंग उसके व्यक्तित्व की निशानी है। यक्तित्व के कुछ पहलू कुछ व्यक्तियों में एक जैसे हो सकते हैं परन्तु प्रत्येक व्यक्ति में अलग-अलग लक्षण होते हैं। किसी एक व्यक्ति में इतनी योग्यता नहीं होती कि वह दूसरे व्यक्ति की विशेषताओं की नकल कर सके या पुन: पेश कर सके।

(3) व्यक्तिगत विभिन्नताओं का प्रतिविंब (Reflects Individual Differ-ences) : कोई दो व्यक्ति एक समान नहीं हो सकते क्योंकि उसकी विशेषताएँ या गुण भिन्न होते हैं हांलाकि व्यक्तित्व के कुछ गुणों में वह एक दूसरे के समान हो सकते हैं।

(4) आनुवंशिकता तथा वातावरण का नतीजा (Result of Heredity and Environment) : व्यक्तित्व आनुवंश तथा वातावरण का समूह है। वंशागति वह गुण हैं जो हम अपने पूर्वजों से प्राप्त करते हैं। वातावरण जैसे शारीरिक, जैविक तथा सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का गहरा प्रभाव पड़ता है और जीवन-पर्यन्त रहता है। हम दाएं या बाएँ हाथ से काम करते हैं, सोने की आदतें कैसी हैं, खाना कैसे खाते हैं- यह सभी वशांगति द्वारा वंशाणु से प्राप्त करते हैं।

(5) व्यक्तित्व पूर्ण व्यवहार की संरचना तथा प्रतिरूप है (It is structure and pattern of total behaviour) : व्यवहार की संरचना तथा प्रतिरूप व्यक्ति की संस्कृति तथा जीने के ढंग द्वारा प्राप्त होती है, यही व्यक्तित्व का आधार है।

(6) यह सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक प्रभाव है (It is social and Psychological impact) : सामाजिक कारक जैसे परिवार, धर्म, शिक्षा, आर्थिक, व्यवसायिक तथा राजनैतिक व्यवस्था व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। मनोवैज्ञानिक कारक जैसे ध्यान, अनुभूति, सीखने की क्रिया, सोचना, यादाश्त तथा बुद्धि का भी व्यक्तित्व पर प्रभाव पड़ता है।

(7) व्यक्तित्व व्यक्ति के दृढ़ गुणों को खास तौर पर संदर्भित करता है (Personality refers particularly to persistent qualities of an individual) व्यक्तित्व प्रमुख तौर पर स्थाई या दृढ़ गुणों से बना होता है जो सामाजिक व्यवस्था के रूप में अपने आपको प्रकट करता है तथा वातावरण के साथ व्यवस्थित होने की कोशिश करता है।

(8) व्यक्तित्व में वह गुण भी होते हैं जो सीखे जाते हैं तथा प्राप्त होते हैं (Personality is composed of traits which are learned and acquired) व्यक्तित्व हमारे परिवार के उन सदस्यों द्वारा भी सीखा जाता है जो हमारे आस पास रहते हैं। यह सामाजिक स्थितियों से रह कर भी प्राप्त होता है जैसे लोगों का निरिक्षण करके और उनके साथ संवाद करके। एक समन्वित तथा सन्तुलित व्यक्तित्व वह है जो वातावरण विशेष रूप से सामाजिक वातावरण के साथ सुखद संशोधन करता है।

(9) गतिशील (Dynamic) : व्यक्तित्व की लगातार वृद्धि होती रहती है परन्तु यह व्यवस्थित रहता है। यह व्यक्ति के अपने अनुभव देखने का नाज़रिया तथा उसके वास्तविक सामाजिक तथा अन्त: व्यक्तिगत अनुभव के बीच पारस्परिक सम्बन्ध होता है।

(10) व्यक्तित्व व्यक्ति का वातावरण के साथ गतिशील अभिविन्यास को दर्शाता है। (Personality represents a dynamic orientation of organism to environment) : व्यक्तित्व सीखने की क्रिया को दर्शाता है। यह वातावरण के सन्दर्भ में निखरता है। हम एक दम से व्यक्तित्व के सभी गुण ग्रहण नही कर सकते।

व्यक्तित्व परीक्षण की विधियाँ (Methods of Personality Assesment)

मानव विकास के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व का निर्धारण करना एक समस्या रही है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण व्यक्तित्व का मूल्यांकन आवश्यक नहीं माना जाता है बल्कि किसी प्रायोजन हेतु व्यक्तित्व का मापन आवश्यक होता है। अत: व्यक्तित्व मापन की विभिन्न विधियाँ अलग-अलग प्रायोजनों में प्रयोग की जाती हैं।

व्यक्तित्व मापन की प्रमुख तीन विधियाँ हैं

(1) व्यक्तिनिष्ट (Subjective) (2) वस्तुनिष्ट (Objective)

(3) प्रक्षेपी (Projective)

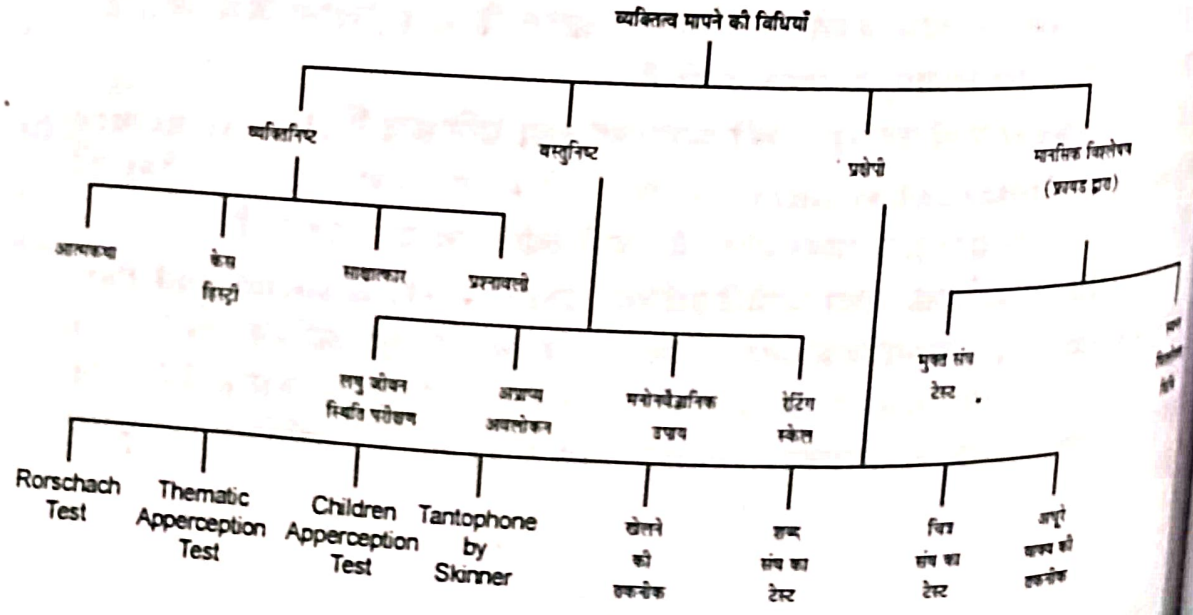

व्यक्तिनिष्ट विधि (Subjective Test)

व्यक्तिनिष्ट विधियाँ वह हैं जिसमें व्यक्ति को वह सब बताने के लिए कहा जाता है जो वह अपने बारे में जानता है तथा जहाँ तक वह अपना निरिक्षण कर सकता है। यह टैस्ट पक्षपाती होते हैं क्योंकि व्यक्ति को अपनी विशेषताओं, प्रवृतियों, व्यक्तिगत अनुभव, उद्देश्य, आवश्यकताओं तथा दिलचस्पियों के बारे में बताना होता है। इस विधि द्वारा मात्र 10% व्यक्तित्व के गुणों के बारे में ही पता चलता है क्योंकि व्यक्ति स्वयं ही उत्तर देता है। यह विधि पक्षपात रहित नहीं हो सकती।

इस विधि में निम्नलिखित विधियां सम्मिलित हैं :

(1) अन्त: दर्शन (Introspection) : खुद में झांकने की यह सबसे पुरानी विधि है। व्यक्ति को उनके स्वयं के बारे में प्रश्न दिए जाते हैं तथा उसे इन प्रश्नों के उत्तर हाँ या ना में देने होते हैं।

(2) आत्म-कथा (Autobiography) : इस विधि में व्यक्ति को अपने जीवन के बारे में लिखना होता है।

(3) जीवनी (Biography) : इसमें व्यक्ति किसी दूसरे के जीवन के बारे में लिखता है।

(4) प्रश्नावली (Questionare) : इसमें प्रश्नों की लिस्ट होती है। यह प्रश्न निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं।

- खुले-अंत वाले - उदाहरणतय: जब मुझे गुस्सा आता है तो .....
- (Open-ended) इसमें वह कुछ भी लिख सकता है।
- बंद-अंतवाला (Close-ended) - इसमें उत्तर हाँ या ना में दिया जाता है।
- व्यक्तिगत सूची (Personal Inventory) – गुणों के संदर्भ में पूछा जाता है तथा उत्तर हाँ या नां में होते हैं।

उदाहरणत: क्या आप बहुत चिंता करते हो ..... हाँ/नहीं

क्या आपको अक्सर गुस्सा आता है.....हाँ/नहीं

(5) साक्षात्कार (Interview) : अनपढ़ व्यक्ति के बारे में जानने का यह उचित साधन है।

- **स्ट्रक्चर्ड (Structured) :** जब पूर्व-नियोजित प्रश्न पूछे जाते हैं।
- **अनस्ट्रक्चर्ड (Unstructured) :** जब प्रश्नों को बिना सोचे समझे बगैर तैयारी के पूछा जाता है।
- **केस-स्टडी (Case Study) :** इसमें व्यक्ति का विस्तृत अध्ययन किया जाता है यह जानकारी उसके परिवार के सदस्यों, अध्यापकों, डॉक्टरों, मित्रों, मैडिकल इतिहास से ली जाती है।

व्यक्तिनिष्ट विधि के कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व परीक्षण की विधियां हैं :

1. माइनेसोटा मल्टीफेजिक पर्सनालिटी टेस्ट (MMP1-2)

- इस टेस्ट को हाथावे तथा मैककिनले ने 1940 में निर्माण किया।
- इस परीक्षण के मौलिक प्रारुप में 550 एकांश है, और प्रत्येक एकांश के तीन उत्तर हैं - सत्य, असत्य, कह नहीं सकते।
- इन तीनों में से किसी एक का जो दिए गए प्रश्न के संदर्भ में सही लगता है, चयन किया जाता है।
- यह अविष्कारिका दो प्रकार की होती है- व्यक्तिगत तथा सामूहिक

2. बेल समायोजन सूचि (Bell Adjustment Inventory) : इस अविष्कारिका का निर्माण बेल ने 1934 में किया। इसका उद्देश्य व्यक्ति में समायोजन सम्बन्धी कठिनाइयों का पता लगाना होता है। व्यक्ति कहाँ व्यवस्थित होता है तथा कहाँ नहीं होता।

- इसके दो फार्म होते हैं
- विद्यार्थी फार्म में कुल 140 अंश है,
- व्यावसायिक फार्म में 140 + 20 = 160 अंश हैं।

यहां हाँ या नाँ में ही उत्तर देता हैं।

3. कैटल 16 व्यक्तित्व-कारक प्रश्नावली (Cattell 16 Personality factor Questionhaire) : इस परीक्षण का निर्माण कैटल ने कारक विश्लेषण के आधार पर किया है। इस प्रश्नावली के कई फार्म हैं जिनके द्वारा 17 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों के 16 शील गुणों को मापा जाता है।

- कैटल ने तीन तरह के शील गुणों व चित्र प्रकृति (temperament), क्षमता (ability) तथा गत्यात्मक (dynamic) शीलगुण का समावेश किया है।

वस्तुनिष्ट परीक्षण (Objective Test)

ये विधियां भी सचेतन का ही मूल्यांकन करती हैं, परन्तु पक्षपात रहित होती हैं। यह मानकीकृत टैस्ट हैं।

पक्षपात को हटाने के लिए व्यक्तित्व परीक्षण की निम्नलिखित वस्तुनिष्ट विधियां हैं :

(i) रेटिंग स्केल (Rating scale) : रेटिंग स्केल को व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों, समायोजन, संवेगों, दिलचस्पियों, प्रवृतियों, उपलब्धियों को रेट करने के लिए प्रयोग किया जाता है। रेटिंग स्केल 5, 7, 9 हो सकती है।

(ii) चैक लिस्ट (Check list) : चैक लिस्ट को सावधानीपूर्वक तैयार करके व्यक्ति का डेटा इकट्ठा किया जाता है।

- नियन्त्रित अवलोकन (Controlled observation) : प्रयोगशाला या नियन्त्रित दशाओं में व्यक्तित्व के कुछ पहलू स्टडी किए जाते हैं।

- **समाजशास्त्र (Sociogram) :** समाजिक दशाओं में विद्यार्थी के सम्बन्ध जानने के लिए समाजशास्त्र प्रयोग किया जाता है।

कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तित्व परीक्षण विधियाँ हैं :

(iii) कैलिफार्निया टैस्ट आफ पर्सनैलिटी
(iv) वुडवर्थ पर्सनल डेटा शीट
(v) मिनेसोटा काउसंलिंग परीक्षण
(vi) थर्सटन टेमपरामैंट शैड्यूल
(vii) इसनिंक पर्सनैलिटि परीक्षण
(viii) सक्सैना पर्सनल परीक्षण
(ix) मित्तल एड्जसटमैंट परीक्षण

(3) प्रक्षेपी विधियाँ

प्रक्षेपण का अर्थ होता हैं अनिश्चित, अर्थहीन और रचनाहीन उद्दीपक द्वारा अचेतन मन की बातों को ज्ञात करना। अचेतन मन में दबी भावनाओं, आकाँशाओं का प्रतिविंब प्रक्षेपी विधियों द्वारा प्राप्त होता है। उदाहरणत: कोई तस्वीर है ही नहीं परन्तु आप अपने अचेतन मन से बता देंगे कि यह है जो यह दर्शाएगा कि आपके मन में क्या दबा हुआ है।

(i) थीमैटिक एपरसैपशन टैस्ट (Thematic Apperception Test-TAT): इस परीक्षण को मॉरगन तथा मुर्रे ने 1935 में बनाया। इसमें व्यक्ति को चित्र देखना होता है तथा एक कहानी द्वारा उसकी व्याख्या करनी होती है। उससे पूछा जाता है कि चित्र में इस सीन का क्या अर्थ है, यह घटनाएँ क्यों घटी और इसके नतीजे क्या हुए? TAT किसी भी व्यक्ति के विचारों के पैटर्न, प्रवृतियों, निरिक्षण की योग्यता तथा संवेगात्मक प्रतिक्रिया का मूल्यांकन अर्थहीन परीक्षण सामग्री द्वारा करता है।

इस परीक्षण में 31 कार्ड होते हैं जिसमें 30 पर मानवीय आकृतियां होती हैं तथा एक खाली होता है, 10 कार्ड पुरुष के लिए तथा 10 स्त्री के लिए तथा 10 दोनों के लिए होते हैं। परीक्षण देने वाले को प्रत्येक कार्ड के बारे में बताना होता है। परीक्षण देने वाले से पूछा जाता है :

क्या हो रहा है ?
इसका कारण क्या है ?
अब क्या होगा ?
ध्यान देने योग्य बातें,
कहानी का हीरो - बच्चा, पुरुष या स्त्री है
शीर्षक - सकारात्मक, नकारात्मक, सुखद या असुखद है।
अवधारणा/छोड़ा गया
लिखते समय व्यवहार-व्यक्ति उदास है उत्साहित है, खुश है
समाप्ति

(ii) चिल्ड्रन एपरसैपशन टेस्ट (Children Apperception Test CAT) : इ परीक्षण को लियोपोल्ड बिलाक ने बनाया। इस परीक्षण में 3-10 साल के बच्चों के लि दस चित्र होते हैं। एक के बाद दूसरा चित्र दिखाया जाता है तथा उनकी प्रतिक्रियाएँ नो की जाती हैं तथा व्याख्या की जाती है।

(iii) रोरचेहच का ईंक-ब्लॉट टैस्ट (Rorschach's Ink-Blot Test) : इ परीक्षण को हरमन रोस्चेहच ने 1921 में बनाया। इसमें दस सफेद कागज़ पर अनियमि स्याही के धब्बे प्रयोग किए जाते हैं। प्रत्येक स्याही के धब्बे को एक नियमित संख्या में विभिन्न ढंगों से दिखाया जाता है तथा परीक्षण लेने वाले से पूछा जाता है कि उसे क्य दिखाई देता है। इसमें 10 कार्ड तैयार किए जाते हैं।

5 कार्ड सफेद तथा काले रंग के संख्या 1, 4, 5, 6, 7 में
5 कार्ड सफेद तथा लाल रंग के संख्या 2, 3 में
विभिन्न रंग के 3 कार्ड संख्या 8, 9 तथा 10 में

(iv) प्रक्षेपण प्रश्नावली (Projective Questionnaire) : इस तकनीक में परीक्षण देने वाले को अपने ढंग से प्रश्नों के उत्तर देने होते हैं। इस प्रश्नावली द्वारा व्यक्ति के संवेगात्मक जीवन, उसके मूल्यों, उसकी प्रवृतियों तथा भावनाओं की जानकारी प्राप्त की जाती है।

(v) वाक्य पूर्ण करने का टेस्ट (Sentence Completion Test) : परीक्षण देने वाले को एक या अधिक शब्दों में अधूरे वाक्य पूरे करने को कहा जाता है।

उदाहरणतय: मैं चिन्तित हूँ क्योंकि .....
मैं गर्व महसूस करता हूँ जब .....
मैं आशा करता हूँ कि .....
मुझे डर है कि .....

(vi) साइको ड्रामा (Psychodrama) : इसमें किसी विशिष्ट परिस्थिति में परीक्षण देने वाले को दिया गया रोल अनायास ही निभाना होता है। साइकोड्रामा व्यक्ति के अन्तर्-व्यक्तिगत सम्बन्धों तथा कुसमायोजन की समस्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करता हैं।

(vii) ड्राईंग, पेंटिंग तथा मूर्तिकला (Drawing, Painting and Sculpture) : प्रक्षेपण विधियों में कलाकारों के उत्पादनों का प्रयोग किया जाता है।

मानसिक विश्लेषण विधि
(Psycho-Analytic Methods)

(i) शब्द संधि परिक्षण (Word Association Test) : इस परीक्षण में परीक्षण देने वाले को एक समय पर शब्दों की लिस्ट दी जाती है तथा उससे कहा जाता है कि जो शब्द पहले मस्तिष्क में आए, उसे बताए। परीक्षण देने वाले का उत्तर तथा उसके द्वारा लिया गया समय रिकार्ड करके व्याख्या की जाती है। यह परिक्षण सिगमंड फ्रायड द्वारा

विकसित किया गया। उसने कोई प्रश्नावली नहीं बनाई। बेंग ने इस परीक्षण का संशोधन किया।

(ii) स्वतंत्र संबंध परीक्षण (Free Association Test) : इस परीक्षण में परीक्षण देने वाले को घण्टों तक बोलने दिया जाता है, इसी से उसके कुछ गुणों तथा व्यवहारिक समस्याओं को नोट कर लिया जाता है।

(iii) स्वप्न विश्लेषण (Dream Analysis) : इस तकनीक में परीक्षण देने वाले के स्वप्नों का विश्लेषण किया जाता है तथा अचेतन व्यवहार की व्याख्या की जाती है।

प्रक्षेपी परीक्षणों की कमियाँ (Draw backs of Projective Tests) :

(i) परीक्षा लेने वाले का या टेस्ट की परिस्थितियों का व्यक्ति के उत्तर पर प्रभाव पड़ सकता हैं।

(ii) स्कोर देना पक्षपात पूर्ण हो सकता है।

(iii) टेस्ट की विश्वसनीयता कम होती है।

(iv) टेस्ट की वैधता भी नहीं होती।

(v) वस्तुनिष्ट टैस्टों में पक्षपात नहीं होता और इनकी वैधता अधिक होती है।

(vi) वस्तुनिष्ट टैस्ट परिक्षा देने वाले के बारे में अतिरिक्त सूचना प्रदान नहीं कर सकते।

अभ्यास के प्रश्न

1. व्यक्तित्व से क्या भाव है ?
2. व्यक्तित्व की प्रकृति या विशेषताएँ क्या हैं ?
3. व्यक्तित्व परीक्षण की विभिन्न विधियाँ कौन सी हैं ?
4. निम्नलिखित विधियों से व्यक्तित्व मापन कैसे किया जा सकता है :-

(i) व्यक्तिनिष्ट विधियाँ

(ii) वस्तुनिष्ट विधियाँ

(iii) प्रक्षेपी विधियाँ

5. निम्नलिखित पर छोटे नोट लिखें :-

(i) मिनेसोटा मल्टीफेसिक पर्सनैलिटी टैस्ट (MMPI-2)

(ii) बैल अडजैसटमैंट इन्वैन्टरी

(iii) कैटल 16 व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली

(iv) थिमैटिक एपरसैप्शन टैस्ट (TAT)

(v) चिल्ड्रन एपरसैप्शन टैस्ट (CAT)

(vi) रोरस्वेहच स्याही-धब्बे का टैस्ट

6. विभिन्न टैस्टों में क्या कमियाँ देखने को मिलती हैं ?

ଓଓ ଓଓ ଓଓ

1 बुद्धि (Intelligence)

साधारण शब्दों में ज्ञान की प्राप्ति तथा प्रयोग करने की योग्यता बुद्धिमता है। मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धिमता को अपने-अपने ढंग से परिभाषित किया है। पिछले पचास वर्षों में बुद्धिमता की प्रकृति तथा मापने के ढंगों पर काफी अध्ययन किया गया है। इस term की अस्पष्टता होने के कारण इसकी परिभाषाओं के बारे में कई आलोचनाएं की गई हैं।

विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने निम्नलिखित ढंगों से बुद्धिमता की परिभाषाएं दी हैं-

स्टर्न (Stern) के अनुसार, "बुद्धि व्यक्ति की वह सामान्य क्षमता है जिसके द्वारा यह सचेत होकर नवीन आवश्यकताओं के अनुसार चिन्तन करता है। यह जीवन की नवीन समस्याओं एवं स्थितियों के अनुसार अपने आपको ढालने की एक सामान्य मानसिक योग्यताएं है।" (Intelligence is a general capacity of an individual consciously to adjust his thinking to new requirements. It is general manual adaptability to new problems and conditions of life.)

टरमैन (Termon) के अनुसार, "व्यक्ति जिस अनुपात में अमूर्त चिन्तन करने के योग्य होता है, उसी अनुपात में वह बुद्धिमान कहलाता है।" (An individual is intelligent in proportion as he is able to carry on abstract thinking.)

डेविड वैक्सलर (David Wechsler) के अनुसार, "बुद्धि व्यक्ति की वह संयुक्त और समग्र क्षमता है जिसके द्वारा वह उद्देश्यपूर्ण कार्य करता है, विवेकपूर्ण चिन्तन करता है और अपने वातावरण का प्रभावशाली ढंग से सामना करता है।" (Intelligence is the aggregate or global capacity of an individual to act purposefully, to think rationally, and to deal effectively with his environment.)

ऊपर दी गई परिभाषाओं से हम निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि 'बुद्धि' में निम्नलिखित योग्यताएं सम्मिलित हैं-

1. बुद्धि स्वयं को नई परिस्थितियों में ढालने का नाम है।
2. बुद्धि सीखने की योग्यता है।
3. यह अमूर्त चिन्तन की योग्यता है।

इससे निष्कर्ष निकाल कर इन बुद्धिपूर्ण-व्यवहार को दो वर्गों में बांटा जा सकता है-

1. सैद्धान्तिक व्यवहार अथवा अमूर्त (abstract) चिन्तन।

2. व्यवहारिक व्यवहार अथवा मूर्त (concrete) चिन्तन।

रैक्स तथा मारग्रेट (Rex and Margaret) ने सफलता या असफलता में ज्ञानात्मक और मानसिक योग्यताओं के महत्त्व को देखते हुए कहा कि, "बुद्धि एक ऐसा तत्त्व है जो सभी मानसिक योग्यताओं में सामान्य रूप से विद्यमान होता है।" (Intelligence is a factor that is common to all mental abilities.)

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि किसी की बुद्धि का अनुमान इस बात से लगा सकते हैं कि उसके कार्य का क्या मूल्यांकन है, किसी स्थिति के प्रति वह कैसे प्रतिक्रिया करता है। आसान शब्दों में हम बुद्धि को इस प्रकार परिभाषित कर सकते हैं-

"बुद्धि में व्यक्ति की वह मानसिक एवं ज्ञानात्मक योग्यताएं शामिल हैं जो उसे जीवन की वास्तविक समस्याओं को सुलझाने में सहायता देती हैं और उसके आनन्दपूर्ण एवं सन्तुष्ट जीवन व्यतीत करने में सहायक होती हैं।" (Intelligence consists of an individual's those mental or cognitive abilities which help in solving his actual life-problems and leading a happy and well contented life.)

बुद्धि-मापन में प्रयोग होने वाले कुछ महत्त्वपूर्ण प्रत्यय [Important concepts used in Intelligence Testing]

1. बुद्धि परीक्षण (Intelligence Test) : बुद्धि परीक्षण विस्तृत परिस्थितियों में उपयोग के लिए डिज़ाइन किया जाता है तथा इनकी प्रमाणिकता (validity) पहले से ही निकाल ली जाती है। बुद्धि परीक्षण के द्वारा एक अकेला स्कोर जैसे बुद्धि लब्धि प्रदान किया जाता है जो व्यक्ति के सामान्य बुद्धि स्तर तथा विभिन्न विशिष्ट योग्यताओं को प्रकट करता है। इस प्रकार के परीक्षण में परीक्षक को विभिन्न प्रकार के कार्य दिए जाते हैं। यह कार्य महत्त्वपूर्ण बौद्धिक तत्त्वों को कवर करते हैं।

2. मानसिक आयु (Mental Age) : मानसिक आयु का प्रत्यय बिने (Binet) ने प्रदान किया था। मानसिक आयु के प्रत्यय के द्वारा बुद्धि परीक्षणों से प्राप्त होने वाले अंकों को अर्थपूर्ण बना देते हैं। मानसिक आयु व्यक्ति की क्रियाओं के रूप में उपलब्ध विकास की सीमा है जिसे व्यक्ति एक निश्चित आयु में प्राप्त कर लेता है, मानसिक आयु वास्तव में बालक की उस मानसिक परिपक्वता को दर्शाती है जो बालक किसी दी गई आयु में प्राप्त करता है अर्थात् जिस बालक को मानसिक आयु 4 वर्ष है वह 4 वर्ष के लिए निश्चित परीक्षण को सफलता से पूरा कर लेता है चाहे उसकी शारीरिक आयु 4 वर्ष से अधिक या कम है। यदि 7 वर्ष का बालक 7 वर्ष के बालकों के लिए निर्धारित परीक्षा को पूर्ण कर पाता है तो उसकी मानसिक आयु 7 वर्ष की समझी जाती है, परन्तु यदि यह

बालक 6 वर्ष के बालकों के लिए निर्धारित बुद्धि परीक्षाओं को हल कर पाता है तो उसकी मानसिक आयु 6 वर्ष ही मानी जाती है।

बच्चे की शारीरिक वृद्धि होने के साथ-साथ उसकी मानसिक परिपक्वता में भी वृद्धि होती जाती है। बिने मानसिक योग्यता को निरन्तर तथा लगभग एक समान गति से पूर्ण परिपक्वता तक विकसित होने वाली योग्यता मानते हैं। पूर्ण परिपक्वता की निश्चित आयु के बारे में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने 14 से 22 वर्ष के बीच परिपक्वता की सीमा तय की है।

बुद्धि लब्धि (Intelligence Quotient) : 1912 में स्टर्न ने मानसिक लब्धि (Mental Quotient) शब्द का प्रयोग किया था। बालक की शारीरिक आयु (Chronological Age) तथा बुद्धि परीक्षाओं द्वारा ज्ञात की गई व्यक्ति की मानसिक आयु का अनुपात बुद्धि लब्धि का अंक प्रदान करता है।

बुद्धि लब्धि का फार्मूला निम्नलिखित है-

$$\text{बुद्धि लब्धि} = \frac{\text{मानसिक आयु}}{\text{वास्तविक आयु}}$$

टर्मन ने सर्वप्रथम बुद्धि लब्धि का फार्मूला तैयार किया। साधारणतय: गणित में दशमलव बिन्दु को हटाने एवं सुगमता को देखते हुए इसे 100 से गुणा किया जाता है। अत:

$$\text{बुद्धि लब्धि (I.Q.)} = \frac{M.A}{C.A} \times 100$$

इसमें (I.Q.) = Intelligence Quotient (बुद्धि लब्धि)

M.A. = Mental Age (मानसिक आयु)

C.A. = Chronological Age (वास्तविक आयु)

उदाहरणतय: यदि एक बालक की मानसिक आयु 10 वर्ष है और वास्तविक आयु 8 वर्ष है तो उसका I.Q. $= \frac{10}{8} \times 100 = 125$

बुद्धि लब्धि = 125 होगा।

वर्ष (Class)	बुद्धि लब्धि (I.Q.)
1. प्रतिभाशाली (Gifted)	140-ऊपर
2. असामान्य (Extra ordinary)	130-139.5
3. अत्यन्त उच्च (Very superior)	120-129.5
4. उच्च (Superior)	110-119.5
5. सामान्य (Normal)	90-109.5

6. पिछड़े हुए (Backward)	80-89.5
7. अत्यन्त पिछड़े (Very backward)	70-79.5
8. सीमा पर (Border line)	60-69.5
9. मूर्ख (Moron)	50-59.5
10. मन्द बुद्धि (Feeble)	40-49.5
11. जड़ बुद्धि (Idiot)	30 से नीचे

बुद्धिमता की थ्योरी
(Theories of Intelligence)

कुछ अनुसन्धानकर्ताओं ने माना है कि बुद्धिमता एक सामान्य कारक है जबकि कुछ मानते हैं कि बुद्धिमता विशेष कलाओं या योग्यताओं से मिलकर बनती है। कुछ मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि बुद्धि अनुवांशिक है जबकि कुछ कहते हैं कि आसपास का वातावरण इसे प्रभावित करता है। नतीजे के तौर पर मनोवैज्ञानिकों ने बुद्धिमता की कई विपरीत थ्योरी विकसित की हैं जो इस प्रत्यय को मापने की कोशिश करती हैं। चार्ल्स स्पियरमैन ने 1904 में बुद्धि की द्वि-कारक थ्योरी को बनाया। उसकी तकनीक को कारक विश्लेषण भी कहते हैं।

कारक विश्लेषण वह विधि है जिसमें सम्बन्धित चर (Variables) के मध्य सह-सम्बन्ध (Correlation) का मूल्यांकन किया जाता है ताकि आधारभूत कारक का पता चल सके जो सह-सम्बन्ध की व्याख्या करता है।

उसके अनुसन्धान ने g कारक के प्रत्यय जिसे साधारण बुद्धि या general intelligence कहते हैं, इसके साथ विशिष्ट बौद्धिक योग्ताओं के S-कारक को विकसित किया। आगे आने वाली सभी थ्योरी स्पियरमैन की थ्योरी पर ही आधारित हैं, उसने बिने की एक-कारक थ्योरी को भी नकारा। यदि किसी व्यक्ति की एक विशेष योग्यता में बहुत मजबूत गुण हैं तो यह उसकी विशेष योग्यता है जैसे साइना नैहवाल बैडमिंटन खेलती है यह उसकी विशिष्ट योग्यता है (S-factor)। विराट कोहली क्रिकेट के साथ फुटबाल भी खेलता है यह फुटबाल खेलना उसकी साधारण योग्यता है (g-factor)।

सभी विशिष्ट योग्यताओं में g कारक सामान्य होता है। उदाहरणतय: किसी व्यक्ति की संख्यात्मक (numerical) बुद्धिमता जानने के लिए आवश्यक है कि वह गणना करने की योग्यता रखता हो यह S-कारक है तथा उसे अंग्रेज़ी का भी ज्ञान है यह g कारक है।

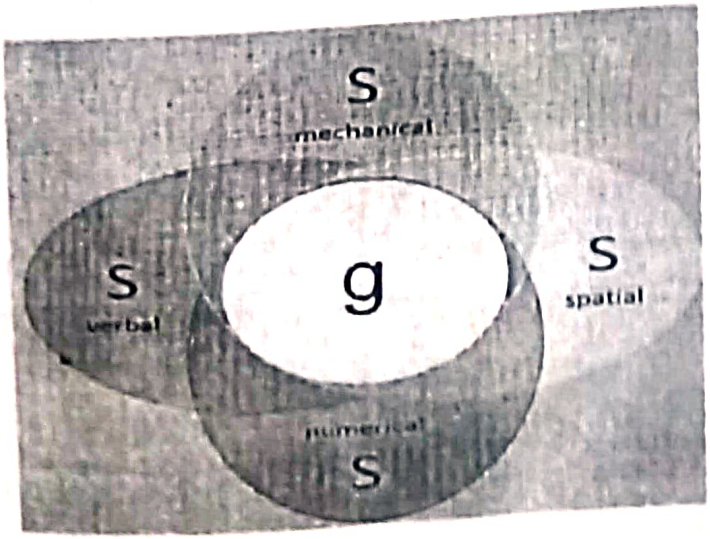

थर्सटन का समूह कारक बुद्धि का सिद्धान्त
(Group factor theory of Intelligence by Thurston)

थर्सटन (1938) के अनुसार बुद्धि न तो सामान्य कारकों (G-factor) का न ही विशिष्ट कारकों (S-factor) का प्रदर्शन है। उसके अनुसार बुद्धि वह मानसिक शक्ति है जो वस्तुओं और तथ्यों को समझने, उनमें आपसी सम्बन्ध खोजने तथा तर्कपूर्ण ज्ञान प्राप्त करने में सहायक होती है। यह भावना और अन्त: प्रज्ञा (inituition) से भिन्न है।

बुद्धि में कुछ मानसिक प्रक्रियाओं या योग्यताओं का एक सामान्य प्रधान कारक होता है जो उन सभी मानसिक प्रक्रियाओं को आपस में एक सूत्र में बाँधे रखता है। जो जोड़ने का कार्य है वह प्रधान कारक करता है तथा छोटी-छोटी सीमित योग्यताएँ उसी प्रधान कारक के साथ जुड़ी होती है। इसी प्रकार कई समूह बन जाते हैं। इसके अनुसार एक समूह की वस्तुएँ दूसरे समूह की वस्तुओं से सह-सम्बन्धित नहीं होगी। दोनों की विशेषताएं भिन्न होती है, परन्तु समूह के अन्दर की वस्तुओं में समानताएं होती हैं। थर्सटन ने अपने सिद्धान्त को कारक विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत किया है।

- उनके अनुसार बुद्धि की संरचना कुछ मौलिक कारकों के समूह से होती है।
- दो या अधिक मूल कारक मिलकर एक समूह का निर्माण कर लेते हैं। जो व्यक्ति के किसी क्षेत्र में उसकी बुद्धि का प्रदर्शन करते हैं।
- थर्सटन ने कहा कि बुद्धि कई प्रकार की योग्यताओं का मिश्रण है जो विभिन्न समूहों में पाई जाती है।
- मानसिक योग्ताएँ क्रियात्मक रूप से स्वतन्त्र हैं फिर भी जब ये समूह में कार्य करती हैं तो उनमें परस्पर सम्बन्ध या समानता पाई जाती है।
- कुछ विशिष्ट योग्यताएँ एक ही समूह की होती हैं और उनमें आपस में सह-सम्बन्ध पाया जाता है।

जैसे विज्ञान विषयों के समूह में भौतिक, रसायन, गणित तथा जीव विज्ञान भौतिकी एवं रसायन आदि।

इसी प्रकार संगीत कला को प्रदर्शित करने के लिए तबला, हारमोनियम, सितार आदि बजाने में परस्पर सह-सम्बन्ध रहता है।

थर्सटन ने कहा कि बुद्धि सात प्रकार की योग्यताओं का मिश्रण है। इन योग्यताओं को मापने के लिए PMA टैस्ट का प्रयोग किया जाता है।

1. आंकिक योग्यता (Numerical Ability) : यह तीव्र आंकिक परिकंलन तथा सरल गणित शाब्दिक समस्याओं को सुलझाने की योग्यता है।

2. मौखिक समझ योग्यता (Verbal comprehension factor) : बोलना, भाषण देना मौखिक समझ योग्यता है। शब्दों व वाक्यों का अर्थ समझने के लिए इस योग्यता की आवश्यकता होती है। इस योग्यता की समझ के लिए शब्दावली और पढ़ने का बोध टैस्ट अपनाए जाते हैं।

3. स्थान सम्बन्धी योग्यता (Spatial ability visualization) : यह योग्यता आकारों के मानस दर्शन (Visualization), वस्तुओं के वर्तन (Rotation), तथा पहेली के टुकड़ों को आपस में जोड़ने से सम्बन्धित है। यह योग्यता किसी स्थान या वस्तु की दूरी, उसके आकार या काल्पनिक रूप से वस्तुओं के परिचालन (manipulation) की क्षमता है।

4. स्मरण शक्ति योग्यता (Memory factor) : यह अपने भीतर याद रखने की क्षमता तथा पुन: दोहराने की क्षमता है।

5. शब्द प्रवाह योग्यता (Word fluency ability) : यह योग्यता तेजी से शब्द, वाक्य या दूसरी मौखिक सामग्री को बोलने की क्षमता से जुड़ी है।

इस क्षमता को मापने के लिए एक विशेष वर्ण दिया जाता है तथा व्यक्ति को कहा जाता है कि वह निश्चित समय में उस वर्ण से शुरु होते हुए अधिक से अधिक शब्द बोले।

6. तर्क शक्ति योग्यता (Reasoning ability) : यह दो प्रकार की होती है- अभिसारी तर्क योग्यता (Inductive reasoning ability) : यह योग्यता सामान्यकरण से सम्बन्धित है जो विशिष्ट से शुरु होकर सामान्य तक चलती है।

यह योग्यता उन टैस्टों से मापी जाती है जैसे वर्णमाला, संख्या माला, शब्द वर्गीकरण इत्यादि, इसमें परीक्षा देने वाले को बताना होता है कि कौन सा शब्द दूसरों के साथ मेल नहीं खाता।

अपसारी तर्क योग्यता (Deductive reasoning) : यह सामान्यकरण नतीजों को सही ढंग से प्रयोग करने की योग्यता है।

7. प्रत्यक्षणात्मक गति योग्यता (Perceptual speed Ability) : आप प्रत्यक्ष रूप से चीज़ को कितना जल्दी हल कर सकते हैं। यह Proof reading की योग्यता तथा वर्ण और नम्बरों को तेजी से पहचानने की क्षमता है।

इसे मापने के लिए टैस्ट दिया जाता है जिसमें व्यक्ति को बाईं ओर के कई चित्रों में से उस चित्र को पहचानना होता है जो दाईं तरफ के चित्र के समान हो।

यह सभी क्षमताएँ आपस में स्वतन्त्र हैं, इनका आपस में बहुत कम सम्बन्ध है। परन्तु आगे आने वाले मनोवैज्ञानिकों ने कहा है कि थर्सटन की प्रमुख कारक योग्यता स्पियरमैन के g कारक की ही भांति है। यही इस थ्योरी की कमी है अन्यथा इस थ्योरी का काफी श्रेष्ठ स्थान है।

बुद्धि का मापन
[Measurement of Intelligence]

बुद्धि का मापन करने के लिए बुद्धि परीक्षाओं (Intelligence tests) का प्रयोग किया जाता है। सभी बुद्धि परीक्षाओं को चार वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-

1. व्यक्तिगत भाषात्मक परीक्षाएं (Individual verbal tests)
2. व्यक्तिगत क्रिया परीक्षाएं (Individual performance tests)
3. सामूहिक भाषात्मक परीक्षाएं (Group verbal tests)
4. सामूहिक अशाब्दिक परीक्षाएं (Group Non-Verbal tests)

I. व्यक्तिगत भाषात्मक परीक्षाएं (Individual Verbal Tests) : ये परीक्षाएं प्रत्येक बालक पर व्यक्तिगत रूप से ली जाती हैं और इनमें भाषा का प्रयोग भी किया जाता है।

(a) बिने-साईमन परीक्षाएं (Binet-Simon Tests) : 1905 में फ्रांस में मनोवैज्ञानिक बिने तथा साईमन ने बुद्धि परीक्षाओं की एक स्केल बनाई जिसे बिने-साईमन स्केल कहा गया। इस स्केल में 30 कार्य हैं जो आसान से शुरू होकर जटिल होते जाते हैं। इस स्केल का उद्देश्य मंद बुद्धि बालकों की पहचान करना था। 1908 तथा 1911 में इस स्केल का संशोधन किया गया। इस स्केल में उसे 15 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों की परीक्षाएं सम्मिलित थीं।

3 वर्ष की अवस्था के लिए-(i) मुंह के विभिन्न भागों की ओर इशारा करना जैसे नाक, कान आंख आदि।

(ii) दो अंकों (digits) को दोहराना।

(iii) किसी चित्र की वस्तुओं को गिनना।

(iv) परिवार के सदस्यों के नाम बताना।

(v) छः शब्दों के वाक्य को दोहराना।

चार वर्ष की अवस्था-(i) अपना लिंग (sex) बताना।

(ii) चाबी, चाकू, पैसों के नाम बताना।

(iii) तीन अंकों (digits) को दोहराना।

(iv) दो पंक्तियों की तुलना करना।

आठ वर्ष की अवस्था-(i) बीस तक गिनना।

(ii) चित्र में अनुपस्थित चीज़ों को बताना।

(iii) दिन और तिथि बताना।

(iv) पांच अंकों को दोहराना।

12 वर्ष की अवस्था-(i) दिए हुए तीन शब्दों से वाक्य बनाना।

(ii) तीन मिन्टों में 60 शब्दों के नाम लेना।

(iii) कुछ अमूर्त शब्दों (Abstract words) वाक्य को पहचानना।

(iv) अस्त-व्यस्त (disarranged) वाक्य को पहचानना।

15 वर्ष की अवस्था-(i) सात अंक दोहराना।

(ii) बीस शब्दों के वाक्य को दोहराना।

(iii) चित्रों की व्याख्या करना।

(iv) दिये हुए तथ्यों की व्याख्या करना।

(b) स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि मापन (The Stanford-Binet Intelligence Scale) : इस बुद्धि मापन को संसार में विभिन्न भाषाओं में अनुवाद (translate) किया गया। 1986 में इस मापन को revise किया गया। यह मापन 2 से 18 वर्ष की आयु तक के लिए उपयुक्त है।

बिने के मापकों को भारत में भी अपनाया गया है। सर्वप्रथम 1922 में Dr. C.H. Rice ने 'Hindustani Binet Performance Point Scale' को अपनाया। इसमें भारतीय वातावरण के अनुकूल कुछ चीजों को सम्मिलित किया गया। उत्तर प्रदेश की राष्ट्रीय मनोवैज्ञानिक शाला ने स्टैनफोर्ड बिने मापन का हिन्दी में अनुवाद किया। यह मापन विभिन्न आयु वर्गों में विभाजित किया गया है, इसका नाम बुद्धि परीक्षण अनुशिलान रखा गया। अन्य बुद्धि परीक्षण State Bureau of Educational and Vocational Guidance के द्वारा तैयार किया गया जो William Stephenson के टैस्ट का भारतीय अनुवाद है। इसका नाम सामान्य बुद्धि परीक्षा है।

साधारण मानसिक योग्यता
[General Mental Ability]

- भाषात्मक तर्क (Verbal Reasoning) (4 उप मापक)
  - शब्दावली (Vocabulary)
  - व्यापकता (Comprehension)
  - (Absurdities)
  - (Verbal Relations)
  - भाषात्मक सम्बन्ध
- मात्रा से सम्बन्धित तर्क (Quantitative Reasoning) (3 उपमापक)
  - मात्रा (Quantitative)
  - संख्यात्मक सीरीज (Number Series)
  - समीकरण विकास (Equation building)
- अमूर्त तर्क (Abstract Reasoning) (4 उपमापक)
  - Pattern Analysis
  - नकल (copying)
  - (Matrics)
  - पेपर को तह करना तथा काटना (Paper folding and cutting)
- अल्पावधी यादाश्त (Short-Term Memory) (4 उपमापक)
  - गोलियों को याद रखना (Bead Memory)
  - वाक्य को याद रखना Memory for sentences)
  - अंकों को याद करना (Digit Memory)
  - वस्तुओं को याद रखना (Memory for Objects)

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण की विशेषताएँ-

1. धोखा देने की कम सम्भावना-व्यक्तिगत परीक्षण में परीक्षक और परीक्षार्थी का सीधा सम्पर्क रहता है। अतः इसमें परीक्षार्थी के धोखा देने की सम्भावना कम होती है।

2. व्यवहार का अध्ययन-परीक्षक परीक्षार्थी के व्यवहार का अध्ययन कर सकता है। अतः इसमें परीक्षार्थी के गुणों तथा दोषों का ठीक अध्ययन किया जा सकता है।

3. व्यक्तिगत परीक्षण के आधार पर व्यावसायिक निर्देशन-क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण के आधार पर छात्रों के मानसिक एवं शैक्षणात्मक गुण व दोषों का अध्ययन करके उनको व्यक्तिगत रूप से निर्देशन दिया जा सकता है।

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षण की कमियाँ-

1. प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता-व्यक्तिगत परीक्षणों को कार्य में लाने के लिए प्रशिक्षित मनोवैज्ञानिक की आवश्यकता होती है। इसमें परीक्षण के प्रत्येक पद तथा उसकी सम्भावनाओं का ज्ञान आवश्यक है।

2. असम्बन्ध बुद्धि का मापन सम्भव नहीं-व्यक्तिगत परीक्षणों से व्यक्ति की सम्बन्ध बुद्धि का ही मापन सम्भव है। विशेष योग्यताओं के मापन की सम्भावना इनमें नहीं होती।

3. वातावरण का प्रभाव-इस प्रकार के परीक्षण की सफलता अच्छे वातावरण पर निर्भर करती है। यदि वातावरण अच्छा है तो परीक्षा के परिणाम अच्छे होंगे, नहीं तो परीक्षण की validity प्राप्त नहीं होगी।

4. श्रम तथा समय-व्यक्तिगत परीक्षण में श्रम तथा समय अधिक व्यय होता है।

III. व्यक्तिगत क्रिया परीक्षाएँ (Individual performance Tess) : इन परीक्षाओं में परीक्षा सामग्री तथा उसके उत्तर (responses) क्रियाओं के रूप में होते हैं। इनमें शब्दों का प्रयोग नहीं किया जाता। इनमें गत्यात्मक क्रियाएँ (motor activities) सम्मिलित की जाती हैं। सामान्यतः निम्नलिखित क्रियाएँ इन परीक्षाओं में देखने को मिलती हैं-

(a) क्यूब का निर्माण करना या भवनों का निर्माण (Block building or Cube building) : इसमें परीक्षार्थी को क्यूब द्वारा कुछ निर्माण करने को कहा जाता है। निर्माण कितना पूरा और सही है, उसके अनुसार अंक दिए जाते हैं। मैरिल-पामर ब्लाक बिल्डिंग (Merril Palmer Block Building), कोह की ब्लाक डिजाइन परीक्षा (Koh's Block Design Test), हेलेकर्लेन्डर का पास-एलांग टेस्ट (Alexander's Pass-along test) आदि इस परीक्षा के उदाहरण हैं।

(b) चित्र को व्यवस्थित या पूरा करना (Picture arrangement or Picture completion) : चित्र व्यवस्था में चित्र को एक क्रमांक में व्यवस्थित करना होता है,

अधूरे चित्र पूरा करने में बालक को प्रत्येक चित्र के विभिन्न टुकड़े दिए जाते हैं। इन टुकड़ों की सहायता से बालक उस चित्र को पूरा करता है। Healy pictorial completion test इसका अच्छा उदाहरण है।

(c) छेदों में ब्लॉक लगाना (To fit the blocks in the Holes) : इस परीक्षा में कुछ ब्लॉक तथा छेदों से युक्त बोर्ड होता है। परीक्षार्थी को इन सम्बन्धित छेदों में सम्बन्धित ब्लॉक लगाने को कहा जाता है। सैगुइन फार्म-बोर्ड परीक्षा (Seguin Form Board test) तथा गोडार्ड फार्म बोर्ड परीक्षा (Goddard Form Board Test) इस प्रकार की परीक्षाएं हैं। छेदों में ब्लॉक लगाते समय की गई गलतियों और उसके द्वारा लगाए गए समय को नोट किया जाता है। इसके अनुसार अंक दिए जाते हैं।

(d) भूल-भुलैया में मार्ग खोजना (Tracing a Maze) : इस परीक्षा में क्रमानुसार कटिंग होती हुई भूल-भुलैया सम्मिलित होती हैं। यह परीक्षाएं अलग-अलग कागज पर छपी होती हैं। परीक्षा देने वाले को भीतर से प्रवेश से निकास तक का रास्ता ढूंढना होता है। पोर्टियस भूल-भुलैया परीक्षा (Porteus Maze Test) इसका उदाहरण है।

प्रमुख भाषा सहित व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षाएं इस प्रकार हैं-

(i) मैरिल-पालमर स्केल (Merril-Palmer Scale) : इसमें 38 परीक्षाएं हैं। यह परीक्षा पूर्व-स्कूल आयु के बच्चों 13 महीने से 5½ साल तक के लिए बनाई गई हैं।

(ii) पिन्टर-पैटरसन कार्य स्केल (Pinter-Paterson Performance Scale) : इस परीक्षा का निर्माण 1917 में बहरे तथा भाषा में पिछड़े बच्चों के लिए किया गया। इसमें 16 आकार-बोर्ड (Form board) परीक्षाएं सम्मिलित की गईं। इस टैस्ट में mare's tail picture board, Seguin form board, the five figure board, the two figure board, the casuist board, the triangle test, the diagonal test, Healy form board, puzzle test, Manikin test, the feature profile-test, the adaptation board तथा cube test सम्मिलित हैं। यह परीक्षा 4 से 16 वर्ष के बच्चों के लिए है। इस परीक्षा का ढांचा रूप पिन्टर और मिलड्रेथ (Pinter and Mildreth) द्वारा दिया गया।

(iii) मिनीसोटा की पूर्व-स्कूल स्केल (The Minnesota Pre-School Scale) : यह स्केल 18 महीने से 5 वर्ष के बच्चों के लिए है।

(iv) गुड-एनफ ड्रा' एक आदमी का चित्र बनाना-परीक्षा' (Good Enough's "Draw a man Test") : इस परीक्षा में बच्चे के द्वारा बनाए गए आदमी के चित्र की विशेषताओं के मूल्यांकन से उसकी बुद्धि की परीक्षा की जाती है।

(v) गैसेल विकास सूची (Gassell Development schedule G.D.S.) : यह बच्चे के विकास का हर वर्ष मूल्यांकन करने के लिए अच्छी विधि है। यह शिशुओं और

पूर्व-स्कूल बच्चों की परिपक्वता के कई तत्त्वों का मूल्यांकन करती है।

(vi) Alexander's Pass-Along Test : इस टैस्ट का निर्माण 1932 में किया गया। यह मापक 7 से 18 वर्ष के बच्चों पर उपयुक्त रहता है। यह क्रियात्मक परीक्षण पढ़े-लिखे, अनपढ़, बहरे, गूंगे तथा किसी भी भाषा के बच्चों पर किया जा सकता है। इस परीक्षण में लकड़ी की 4 विभिन्न आकार की छोटी-छोटी ट्रे हैं, जिनमें से प्रत्येक का एक किनारा लाल तथा दूसरा नीला है। इनमें विभिन्न आकार के आयताकार अथवा वर्गाकार 13 लकड़ी के गुटके हैं। ये लकड़ी के गुटके भी लाल तथा नीले रंग हैं। परीक्षण देने वाले को इन 13 लकड़ी के गुटकों तथा 4 लकड़ी की ट्रे की सहायता से 9 डिज़ाइन तैयार करने होते हैं। इन गुटकों को खिसका कर डिजाइन बनाना होता है।

(vii) भाटिका क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण (Bhatia's Performance Intelligence) : इस परीक्षण को डॉ० चन्द्रमोहन भाटिया ने 1955 में तैयार किया। इस टैस्ट को खासकर भारतीय जनता के लिए बनाया गया। यह परीक्षण 11 से 16 वर्ष के बालकों के लिए है। इसमें कुल पांच परीक्षण हैं-

(i) Koh's Block Design
(ii) Alexander's Pass Along Test
(iii) Figure Drawing Test
(iv) Immediate Memory Test for Digits
(v) Picture construction Test

(viii) टर्मन तथा स्टेन्फर्ड बिने बुद्धि परीक्षण 1960 भारतीय हिन्दी अनूकूलन (Adaption of Terman-Stanford Intelligence Test for India) : इस परीक्षण का भारतीय हिन्दी अनुकूलन डॉ० एस०के० कुलश्रेष्ठ ने किया है। परीक्षण के उन्हीं उप-परीक्षणों में परिवर्तन किया गया है जिसमें भारतीय परिस्थितियों में परिवर्तन आवश्यक था। इस परीक्षण में बहुत छोटे बच्चों के लिए छोटे खिलौने तथा लकड़ी के टुकड़े हैं। इस परीक्षण में 2-18 वर्ष की आयु के लिए मानक उपलब्ध हैं।

(ix) वैश्स्लर बुद्धि मापन (The Wechsler Intelligence Scales) : Wechsler Intelligence Scale for Children (WISC) सर्वप्रथम 1949 में प्रकाशित किया गया और बाद में 1974 में इसे revise किया गया। जिसे WISC-R के नाम से पुकारा गया। Wechsler Preschool and Primary Scale of Intelligence (WPPSI) को 1967 में प्रकाशित किया गया। यह स्टैनफोर्ड बिने टैस्ट से भी अधिक प्रसिद्ध हुआ। WISC-R6 से 16 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए उचित है जबकि WPPSI 4 से 6½ वर्ष की आयु के बच्चों के लिए ठीक है।

Wechsler के दोनों टैस्टों में भाषात्मक तथा क्रियात्मक उप-मापक सम्मिलित हैं।

दोनों मापक मिलकर पूरी बुद्धि का मापन करते हैं। भाषात्मक बुद्धि-लब्धि (Intelligent Quotient) विद्यालय की उपलब्धि को मापता है जबकि क्रियात्मक बुद्धि-लब्धि द्वारा भाषात्मक रूप से कमजोर बच्चे भी अपनी बौद्धिक योग्यता दर्शा सकते हैं।

बुद्धि लब्धि (IQ)

शाब्दिक परीक्षण (Verbal Scale IQ)	क्रियात्मक परीक्षण (Performance Scale IQ)
6 उपमापक	6 उपमापक
सूचनाएं (Information)	चित्र को पूरा करना (Picture Completion)
समानताएं (Similarities)	चित्र को व्यवस्थित करना (Picture Arrangement)
गणितीय तर्क (Arithmetic Reasoning)	खण्ड अभिकल्प (Block Design)
शब्दावली (Vocabulary)	वस्तु संकलन (Object Assembly)
सामान्य अर्थग्रहण (Comprehension)	कोड़ करना (Coding)
अंक विस्तार (Digit Span)	चक्र व्यूह (Mazes)

Wechsler Intelligence Scale for Children Revised (WISC-R)

क्रियात्मक परीक्षण के लाभ : (1) ये परीक्षण गूंगे, बहरे या भाषा न जानने वाले बच्चों पर लागू किए जा सकते हैं।

(2) क्रियात्मक परीक्षण का उपयोग मानसिक समस्याओं को हल करने और चिकित्सालयों में सुझाव प्रस्तुत करने में किया जा सकता है।

(3) मानसिक रूप से कमज़ोर व्यक्तियों पर भी लागू किया जा सकता है।

(4) इस परीक्षण के द्वारा व्यक्ति के गुणात्मक (Qualitative) व्यवहार क अध्ययन किया जा सकता है।

(5) इस प्रकार के परीक्षणों में परीक्षार्थी को भय नहीं रहता। पूर्व परीक्षण क प्रभाव भी कम पड़ता है।

(6) यह परीक्षण लिखित तथा शाब्दिक परीक्षणों के पूरक रूप में कार्य करते क्रियात्मक परीक्षणों की सहायता से मूल्यांकन अधिक वैध सिद्ध होता है।

(7) क्रियात्मक परीक्षण छोटे बच्चों के लिए उपयोगी रहते हैं।

क्रियात्मक परीक्षण के दोष : (1) इन परीक्षणों पर अभ्यास तथा प्रशिक्षण प्रभाव अधिक पड़ता है। इसमें अधिकांश सामग्री ऐसी होती है जो आसानी से उपल हो जाती है और उसका अभ्यास कराया जा सकता है।

(2) क्रियात्मक परीक्षण उच्च मानसिक योग्यता के बालकों के लिए उपयोगी है। इनका उपयोग सामान्य व्यस्कों के लिए भी अधिक नहीं है।

ामूहिक भाषात्मक बुद्धि परीक्षाएं
The Group Verbal Intelligence Tests]

यह परीक्षाएं एक साथ कुछ व्यक्तियों के समूह में ली जाती हैं और इनमें भाषा का योग किया जाता है।

मानसिक योग्यता की टरमैन समूह परीक्षा (Terman Group Test of Mental Abil-ty) : इसका प्रकाशन 1920 में हुआ। इसमें निम्नलिखित 10 उप-परीक्षाएं सम्मिलित थीं-

v. â ê Ûæ(Information)

2. लोकोक्तियों तथा वास्तविक तथ्यों की व्याख्या (Interpretation of prov-erbs and matters of fact)

3. शब्दों के अर्थ तथा उनके विपरीतार्थक (Word meanings and opposites)

4. गणित की समस्याएं (Logical selection)

5. तार्किक-चुनाव (Arithmetical meaning)

6. वाक्यों का अर्थ (Sentence meaning)

7. समानताएं (Analogies)

8. अव्यवस्थित वाक्य (Scrambled sentence)

9. वर्गीकरण (Classification)

10. अंक-अनुक्रमिकाओं की पूर्ति (Number series completion)

यह परीक्षा शैक्षणिक सफलता का पूर्वानुमान करने तथा सामान्य वर्गीकरण के लिए बहुत उपयोगी है।

टरमैन-मैकनिमर की मानसिक योग्यता परीक्षा (Terman-McNemar Test of Mental Ability) : इस परीक्षा का प्रकाशन 1941 में हुआ। इसमें सात उप-परीक्षाएं (भाषात्मक एवं भाषा रहित) सम्मिलित हैं।

एस०आर०ए० प्रारम्भिक मानसिक योग्यता परीक्षाएं (भाषात्मक एवं भाषा रहित) (S.R.A. Primary Mental Ability Test-Verbal and Non-Verbal) : इन परीक्षाओं में भाषात्मक अर्थ (verbal meaning), स्थान (space), तर्क (reasoning), संख्या (number), शब्द-गति (word fluency), प्रत्यात्मक गति (perceptual speed) एवं स्मृति (memory) से सम्बन्धित पूर्तियां सम्मिलित हैं।

भारत में कुछ प्रसिद्ध परीक्षाएं इस प्रकार हैं-

1. प्रो० उदय शंकर द्वारा रचित सी०आई०ई० (C.I.E.) 'सामूहिक भाषात्मक बुद्धि परीक्षा (हिन्दी)'।

2. डॉ० एस० जलोटा द्वारा निर्मित 'सामूहिक योग्यता परीक्षा (हिन्दी)'।

3. मनोविज्ञान ब्यूरो इलाहाबाद द्वारा निर्मित 'सामूहिक बुद्धि परीक्षा' हिन्दी।

4. प्रयाग मेहता कृत 'सामूहिक बुद्धि परीक्षा'-यह परीक्षण 'मनोरायन' द्वारा प्रकाशित किया गया।

5. पंजाब विश्वविद्यालय के डॉ० पी०एस० दुग्गल द्वारा निर्मित 'सामान्य मानसिक योग्यता परीक्षा'।

भाषा रहित सामूहिक बुद्धि परीक्षाएं
[The Group Non-Verbal Intelligence Tests]

इन परीक्षाओं में भाषा प्रयोग की आवश्यकता नहीं होती और इनके द्वारा एक साथ कई व्यक्तियों की बुद्धि का परीक्षण किया जा सकता है।

व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों की निरन्तर बढ़ती हुई सफलता के कारण उनकी मांग में बहुत अधिक वृद्धि हो गई। 1917 में प्रथम विश्व युद्ध के समय सामूहिक बुद्धि परीक्षण की आवश्यकता महसूस की गई। American Psychological Association ने R.M. Yerkes की अध्यक्षता में एक समिति बनाई। समिति ने 1921 में 'आर्मी अल्फा' परीक्षण तैयार किया। इस परीक्षण में प्राप्त अंकों के आधार पर सैनिकों की भर्ती, अधिकार ट्रेनिंग के लिए चुनाव तथा अन्य कार्यों के लिए व्यक्तियों के चुनाव में सहायता ली जाती थी। आर्मी अल्फा में परीक्षण के 8 भाग थे और उन सब परीक्षणों के आधार पर एक अंक प्राप्त किया जाता था जो व्यक्ति की बुद्धि का परिचायक माना जाता था। इस परीक्षण की सब परीक्षाएं शाब्दिक एवं संख्यात्मक थीं। अनपढ़ तथा अंग्रेजी भाषा न जानने वाले व्यक्तियों का परीक्षण करने के लिए 'आर्मी बीटा' परीक्षण तैयार किया गया। इस परीक्षण में क्रियात्मक तथा अशाब्दिक परीक्षाएं थीं।

भाषा रहित बुद्धि परीक्षाओं में 'शब्दों' या 'अंकों' को सम्मिलित नहीं किया जाता, परन्तु इनमें चित्र, रेखा गणित-सम्बन्धी चित्र आदि सम्मिलित होते हैं। परीक्षार्थी को कुछ रिक्त स्थान भरने होते हैं। कुछ साधारण तस्वीरें बनानी होती हैं। समानताओं और विषमताओं को परखना होता है। इस प्रकार के कुछ अन्य उदाहरण निम्नलिखित हैं-

शिकागो भाषा रहित परीक्षा (Chicago Non-Verbal Test) : यह परीक्षा 12 और 13 वर्ष के बच्चों के लिए बहुत उपयोगी है।

रेवेन कृत प्रोग्रेसिव मैट्रिक्स टैस्ट (Raven's Progressive Matrices Test) यह परीक्षा इंग्लैंड में विकसित की गई। यह परीक्षा बहुत ही लोकप्रिय है। इस परीक्षा में निम्नलिखित योग्यताओं का परीक्षण किया गया-

1. रेखा-गणित के चित्रों का डिजाइनों में परस्पर सम्बन्ध देखना।

2. डिज़ाइन के ढांचे को समझना ताकि उसे पूरा करने के लिए उसके उचित भाग को चुना जा सके।

सी०आई०ई० भाषा रहित सामूहिक बुद्धि परीक्षा (C.I.E. Non-Verbal Group Test of Intelligence) : इसका निर्माण J.W. Jenkins ने किया। यह परीक्षण निम्नलिखित प्रकार से प्रयोग किया जाता है-

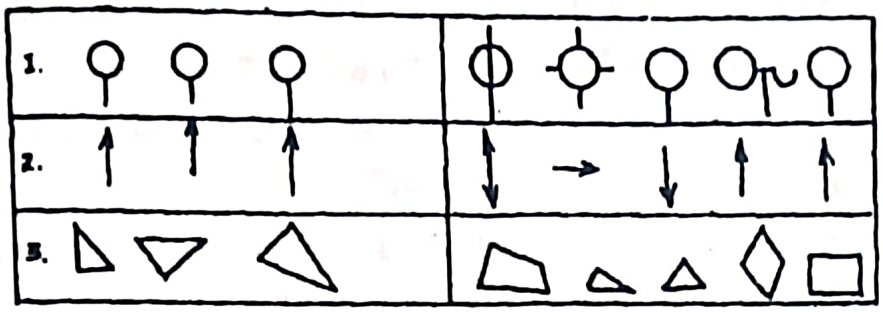

C.I.E. भाषा रहित सामूहिक बुद्धि परीक्षण

आजकल व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षाओं की अपेक्षा इन परीक्षाओं का उपयोग अधिक किया जाता है। इन परीक्षणों के उपयोगी होने के कारण हैं-

1. इन परीक्षणों के द्वारा बुद्धि मापन में यह आवश्यक नहीं है कि परीक्षण कर्ता अधिक कुशल और प्रशिक्षित ही हों।

2. इन परीक्षाओं का प्रशासन और मानवीकरण अधिक कठिन नहीं होता है।

3. इसमें धन और समय अधिक व्यय नहीं होता है क्योंकि एक समय में एक से अधिक व्यक्तियों की बुद्धि का मापन किया जा सकता है।

4. इस प्रकार के परीक्षणों का उपयोग निर्देशन के क्षेत्र में वर्गीकरण तथा व्यक्तियों के चयन के क्षेत्र में बुद्धि को मापने के लिए किया जाता है। इन परीक्षाओं की कुछ सीमाएं भी हैं जो इस प्रकार हैं-

(1) समस्याग्रस्त और कम आयु के बच्चों पर इनका प्रयोग नहीं किया जा सकता।

(2) व्यक्तिगत बुद्धि परीक्षणों की भांति इन परीक्षाओं की सहायता से बुद्धि का गहन अध्ययन नहीं किया जा सकता।

(3) इन परीक्षणों से मापी गई बुद्धि की विश्वसनीयता तथा वैधता अधिक नहीं होती है।

सामूहिक बुद्धि परीक्षण की कमियां-

1. सामूहिक परीक्षण लिखित होते हैं। अनपढ़ व्यक्ति इसे करने में समर्थ नहीं होते। छोटे बच्चों की भाषा का उचित विकास न होने के कारण वह इसे पूरा नहीं कर पाते।

2. इन परीक्षाओं द्वारा बालक के व्यवहार का अध्ययन नहीं किया जा सकता।

3. सामूहिक परीक्षणों में नकल, अनुमान आदि के कारण धोखा भी हो सकता है।

बुद्धिमता टैस्टों का प्रयोग
(Application of Intelligence Tests)

आधुनिक काल में बुद्धिमता टैस्टों का प्रयोग आंकलन बैटरी की भांति किया जाता है ताकि पता चल सके कि बच्चों तथा व्यस्कों में सीखने की कम दर, सीखने की अयोग्यताओं, विकास दर में कमी या प्रतिभाशाली होने का ज्ञान हो सके। कई स्थानों पर नौकरी देने से पूर्व भी बुद्धिमता टैस्टों का प्रयोग किया जाता है।

- कई स्कूलों में बुद्धिमता टैस्टों का प्रयोग किया जाता है ताकि पता चल सके कि बालक निर्देश प्राप्त करने के लिए तैयार है या नहीं।

- विश्व विद्यालय में दाखिले से पूर्व शैक्षिक योग्यता टैस्ट दिया जाता है।

- बुद्धिमता व्यस्कता के आधार पर छात्रवृति दी जाती है।

- मनोवैज्ञानिक, मानसिक स्वास्थ्य विज्ञानी तथा चिकित्सक रोगियों के मानसिक स्तर को जाँचने के लिए, मानसिक वृद्धि के पूर्वानुमान (prediet) के लिए, उपचारात्मक उपाय बनाने के लिए तथा अपराधि और बाल अपराधी मामलों के स्वभाव के समझने के लिए बुद्धिमता टैस्टों का प्रयोग करते हैं।

- किसी भी उद्योग, सिविल सेवाओं या व्यवसाय में प्रवेश के लिए चाहे वह व्यवसाय नर्सिग, औषधि या अध्ययन हो, इन सबके लिए सामान्य मानसिक योग्यता की आवश्यकता होती है जो मानसिक रुचि परिक्षा द्वारा पता की जाती है।

- बुद्धिमता टैस्ट शैशवावस्था से प्रौढ़ अवस्था तक की मानसिक वृद्धि का अध्ययन करता है। यह मानसिक और शारीरिक गुणों के बीच सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रयोग किया जाता है। बुद्धिमता टैस्ट आयु, लिंग तथा सामुदायिक समूहों में व्यक्तिगत विभिन्नताओं की रेंज जानने तथा सामान्य जनसंख्या में प्रतिभाशाली तथा सामान्य से निम्न मानसिक स्तरों के व्यक्तियों की पहचान करता है।

- बुद्धिमता परीक्षण व्यक्तियों को उनके मानसिक स्तर के अनुसार वर्गीकरण करता है। स्कूलों में अध्यापक विद्यार्थियों को सामान्य या प्रतिभाशाली में वर्गीकरण कर सकते है तथा उन्हें एक प्रकार के समूह में इकट्ठा कर सकते हैं।

अभ्यास के प्रश्न

1. बुद्धि से क्या भाव है?
2. मानसिक आयु तथा बुद्धि लब्धि से आप क्या समझते हैं?
3. बुद्धि के बारे में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने कौन-कौन से सिद्धान्त दिए हैं?
4. बुद्धि का मापन किस प्रकार किया जाता है?

5. निम्नलिखित बुद्धि परीक्षण पर नोट लिखें-

(1) बिने-साईमन परीक्षा

(2) स्टैनफोर्ड-बिने बुद्धि मापन

(3) भाटिया क्रियात्मक बुद्धि परीक्षण

(4) वैश्लर बुद्धि मापन

(5) टरमर मैकनिमर मानसिक योग्यता परीक्षण।

6. भारत में कौन-कौन से बुद्धि-मापन तैयार किए गए हैं?

7. विभिन्न प्रकार के बुद्ध-परीक्षणों के कौन-कौन से लाभ तथा कमियां हैं?

8. बुद्धि-परीक्षणों का हमारे जीवन में क्या महत्व है।

9. बुद्धि का द्वि-कारकिय सिद्धान्त क्या है?

10. सामान्य कारक तथा विशिष्ट कारक में क्या अन्तर है?

11. बुद्धि के बहु-कारकिय सिद्धान्त की व्याख्या करें।

ω ω ω

2 सृजनात्मकता (Creativity)

सामान्य रूप से जब हम किसी वस्तु या घटना के बारे में विचार करते हैं तो हमारे मन-मस्तिष्क में अनेक प्रकार के विचारों का प्रादुर्भाव होता है। उत्पन्न विचारों को जब हम व्यवहारिक रूप प्रदान करते हैं तो उसके पक्ष एवं विपक्ष, लाभ एवं हानियाँ हमारे समक्ष आती हैं। इस स्थिति में हम अपने विचारों की सार्थकता एवं निरर्थकता को पहचानते हैं। सार्थक विचारों को व्यवहार में प्रयोग करते हैं। इस प्रकार की स्थिति सृजनात्मक चिन्तन कहलाती है।

प्रो०एस०के० दुबे के शब्दों में, ''सृजनात्मक चिन्तन का आशय कार्यों से हैं जिनके माध्यम से नवीन विचारों, वस्तुओं एवं व्यवस्थाओं का सृजन सम्भव होता है।''

श्रीमती आर.के. शर्मा के अनुसार, ''सृजनात्मक चिन्तन का आश्य मस्तिष्क उद्वेलन की उस प्रक्रिया से है जिसमें किसी एक विषय पर अनेक प्रकार के विचार उत्पन्न होते हैं। उन विचारों के आधार पर नवीन एवं उपयोगी वस्तुओं एवं विचारों का सृजन होता है।

साधारण शब्दों में सृजनात्मक चिन्तन का आधार नवीन विचारों एवं उपयोगी वस्तुओं का सृजन करना है। सृजनात्मक चिन्तन मानसिक प्रक्रिया के साथ-साथ कौशलात्मक प्रक्रिया से भी सम्बन्धित होता है। सृजनात्मक के दो संघटक हैं :

(i) मौलिकता : विचार पूर्ण तौर पर मौलिक होना चाहिए तथा किसी पहले से उपस्थित विचार का विस्तार न हो।

(ii) क्रियाशीलता : विचार वास्तविक रूप से कार्यशील हो तथा लाभपूर्ण हो।

सृजनात्मकता तथा बुद्धिमता के मध्य सम्बन्ध
(Relation between creativity and Intelligenes)

जिन व्यक्तियों में 120 या अधिक की बुद्धि लब्धि पाई जाती है, उनमें उच्च स्तर की सृजनात्मकता देखी गई है, परन्तु बुद्धिमता तथा सृजनात्मका के मध्य का सम्बन्ध कलाओं या योग्यताओं का overlap होना है न कि एक दूसरे पर निर्भरता। हालांकि बुद्धिमता तथा सृजनात्मकता दोनों का ही सम्बन्ध मस्तिष्क से है परन्तु यह दोनों ही भिन्न प्रकार की योग्यताएं हैं। बुद्धिमता को बुद्धि-लब्धि IQ द्वारा मापा जाता है जबकि सृजनात्मकता को मापना इतना सरल नहीं है। यह साधारण मान्यता है कि अधिक बुद्धि-लब्धि वाले व्यक्ति अधिक सृजनात्मक होते हैं तथा अधिक सृजनात्मक व्यक्ति अधिक बुद्धि-लब्धि वाले होते हैं, परन्तु यह आवश्यक रूप से सच नहीं है। उदाहरणतय: एक समस्या का हल करने के लिए किसी ने यदि सृजनात्मकता का प्रयोग किया है वो

भविष्य में उसी समस्या का हल करने के लिए वह बुद्धिमता का प्रयोग करेगा। कह सकते हैं कि किसी भी समस्या को सृजनात्मक ढंग से सुलझाने के लिए बुद्धिमता का होना आवश्यक है। यदि बुद्धिमता का स्तर कम है तो समस्या को सृजनात्मक ढंग से सुलझाने में बहुत दिक्कत आएगी। J.P. Guilford की बुद्धि (intellect) मॉडल की संरचना के अनुसार सृजनात्मकता तथा बुद्धिमता में इस प्रकार का सम्बन्ध है-

- यह अभिन्न (idential) क्रियाएँ हैं।
- सृजनात्मकता बुद्धिमता की अपेक्षा विस्तृत योग्यताओं का प्रयोग करती है।
- सृजनात्मकता की अपेक्षा बुद्धिमता अधिक महत्वपूर्ण है।
- बुद्धिमता सृजनात्मकता पर निर्भर करती है।

सृजनात्मक होने के लिए बहुत अधिक IQ की आवश्यकता नहीं है। एक बार व्यक्ति ज्ञान इकट्ठा करने तथा प्रयोग करने के स्तर तक पहुंच जाता है तो वह Albert Einstein, Bill Gates या Steve Jobs बनने की सृजनात्मक योग्यता रखता है। सृजनात्मकता वस्तुओं को जोड़ना मात्र है। वह अपने प्राप्त अनुभवों को जोड़ कर नई वस्तुओं की सृजना करते हैं। इसका कारण यह है कि उनके पास अधिक अनुभव होते हैं या वह दूसरे व्यक्तियों की अपेक्षा अपने अनुभवों के ऊपर अधिक सोच विचार करते हैं। जब वह अपनी समस्याओं के या प्रोजैक्ट की ओर कोशिश करना शुरु करते है तो वह आने वाले विचारों के साथ अधिकं कार्य करते है जबकि कोई दूसरा एक या दो संभव विचारों का मूल्यांकन करके छोड़ देता है या उनके भीतर का समीक्षक उन्हें अधिक संभावनाओं को ढूंढने से रोक लेता है।

संक्षिप्त में कह सकते हैं एक व्यक्ति जो बहुत तेजी से सीखने तथा ठीक पुन: पेश (reproduce) करने की क्षमता रखते हैं, बुद्धिमान हो सकते हैं परन्तु इन्हे तब तक सृजनात्मक नहीं कहा जा सकता जब तक वह सीखने या कार्य करने के नए तरीके नहीं खोजते। संशोधन कर्ताओं ने पाया है कि उच्च या मध्यम बुद्धिमता वाले बच्चों में बहुत उच्च तथा निम्न स्तर की सृजनात्मकता पाई जा सकती है। एक ही व्यक्ति सृजनात्मक तथा बुद्धिमान हो सकता है परन्तु आवश्यक नही कि बुद्धिमान व्यक्ति अधिक सृजनात्मक हो। हालांकि बुद्धिमता तथा सृजनात्मकता के मध्य सकारात्मक सम्बन्ध होता है। सभी सृजनात्मक क्रियाओं के लिए इतनी योग्यता होनी आवश्यक है कि ज्ञान को अर्जित किया जा सके, समझा जा सके, रखा जा सके तथा पुन: प्राप्त किया जा सके।

बच्चों में सृजनात्मकता विकसित करना (Developing Student's Creativity)

सृजनात्मका के लिए सुरक्षित वातावरण की आवश्यकता है जहाँ बच्चे खेल सकें, आज़ाद महसूस करें तथा रिस्क उठाएं तथा अध्ययनकर्ताओं द्वारा सृजनात्मकता विकसित करने के लिए निम्नलिखित सुझाव दिए हैं।

1. सहानुभूतिशील स्वीकार योग्य वातावरण बनाएं (Create a compassionate, accepting environment) : सृजनात्मक होने के लिए अलग ढंग से कार्य करना

होगा इसलिए बच्चों के अन्दर विश्वास होना चाहिए कि वह आपके सामने गल्तियाँ कर सकते हैं।

2. बच्चों के विचारों का सम्मान करें (Be present with student's ideas): विद्यार्थियों के साथ अधिक से अधिक वार्तालाप करें, पता करें कि उनके जुनून (passion) क्षेत्र कौन से हैं तथा अपने सार्म्थय अनुसार उन्हें विकसित करें।

3. स्वतन्त्रता को प्रोत्साहित करें (Encourage autonomy) : अपनी ओर से यह न बताएं कि क्या ठीक है बल्कि ऐसा प्रत्युतर (feedback) दें जिससे आत्म-मंथन तथा स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन मिले।

4. सृजनात्मक सोच को बढ़ावा देने के लिए नियत कार्य को अलग शब्दों में व्यक्त करने को कहें (Re-word assignment to promote creative thinking): गृह कार्य में इस प्रकार के शब्द शामिल करें जैसे 'सृजन', 'डिज़ाइन', 'आविष्कार', 'कल्पना करें', 'सोचें'। इस प्रकार के निर्देश देने कि अधिक से अधिक समाधान (Solutions) ढूंढे या सृजनात्मक बनें, सृजनात्मकता बढ़ाई जा सकती है।

5. विद्यार्थियों को उनकी सृजनात्मकता पर प्रत्यक्ष रूप से feedback दें (Give students direct feedback on their creativity) : अधिकतर विद्यार्थियों को यह नहीं पता होता कि वह कितने सृजनात्मक हैं या उन्हें फीडबैड ही प्राप्त नहीं होता। बच्चों में ऐसी स्वअवधारणा (Self-concept) विकसित करें जिसमें सृजनात्मकता हो। जब हम स्वयं का मूल्यांकन करते है तो हम अपनी कदर करते हैं।

6. विद्यार्थियों में यह जानने में मदद करें कि कब सृजनात्मक होना उचित है (Help students know when it's appropriate to be creative) : उदाहरणतय: उन्हें उन संदर्भो की पहचान करने में मदद करें जहां सृजनात्मक होना लाभदायक है।

7. सृजनात्मक अध्ययन की विधियाँ तथा मॉडल का प्रयोग करें (Use creative instructural strategies, models and methods) : बोलते समय तथा क्रिया करते समय बच्चों के सामने सृजनात्मकता का मॉडल प्रस्तुत करें। उदाहरणतय: कह सकते हैं कि मैंने इस पाठ को प्रस्तुत करने के तीन तरीके सोचे हैं, दो मैं आपके सामने पेश करुँगा, तीसरा ढंग आपको सोचना होगा'' या जिस व्यक्तिगत प्रोजैक्ट पर आप कार्य कर रहे हैं उसे प्रस्तुत करें।

8. अभद्र व्यवहार को सृजनात्मकता की ओर मोड़ें (Channel the creativity impulses in misbehaviour") वह विद्यार्थी जो अधिकतर उपद्रव करते है, यदि उनके व्यवहार में कोई सृजनात्मकता दिखाई देती है तो उनके उस व्यवहार को उस ओर प्रेरित करें।

9. अपने विद्यार्थियों के स्वाभाविक प्रेरणा की सुरक्षा करें तथा बढ़ावा दें (Protect and support your students intrinsic motivation) : कक्षा में ईनाम तथा प्रोत्साहन देने से स्वाभाविक व प्रेरणा कम हो जाती है। इसके लिए Beth Hennessey जो wellesley collage में मनोवैज्ञान के प्रोफैसर हैं उनके अनुसार प्रतिस्पर्धा तथा दूसरों के साथ तुलना को कम करें, स्वयं के विकास पर केन्द्रित होना सिखाएं। जब बच्चे कार्य

कर रहे हो, उनका निरिक्षण कम से कम करें तथा उन्हें अपने जुनून को विकसित करने के अवसर प्रदान करें।

10. विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि सृजनात्मकता के लिए कार्य करना पड़ता है (Make it clear to students that creativity requires effort) : विद्यार्थियों को स्पष्ट करें कि सृजनात्मकता बैठे बिठाए नही आती है उसके लिए कल्पना करके परिश्रम करना पड़ता है।

11. सृजनात्मकता के लिए स्थान बनाएं (Allow space for creativity) : अन्वेषण करने के लिए कक्षा में स्थान बनाएं जैसे सोचने के लिए मेज, ड्रामा स्टेज, ड्राइंग टेबल या अपने विचारों पर विवाद करने के लिए समूह के लिए स्थान।

12. विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए समय दें (Give student time to ask questions) : शिक्षक पाठ इस प्रकार डिज़ाइन करें जिनमें सोचने, हैरान होने तथा ढूंढने के लिए प्रेरणा मिले।

13. अपसारी चिंतन का प्रयोग करें (Use divergent thinking) : अधिकतर बच्चे अभिसारी सोच के अनुसार ही प्रश्नों का उत्तर देते हैं जिसमें सृजनात्मकता की आवश्यकता नहीं होती। अपसारी सोच बिल्कुल इसके विपरीत है। इसमें सृजनात्मकता की आवश्यकता पड़ती है। बच्चों में बुद्धिशीलता (brainstorming), अलग ढंग से सोचना, विभिन्न पहलुओं की खोज करनी तथा अपने विचारों के साथ सम्बन्ध बनाने को प्रेरित करे। पाठ को इस प्रकार डिज़ाइन करें जिससे अपसारी सोच को बढ़ावा मिले।

14. बहु-प्रतिभा का सिद्धान्त (Multiple Intelligences Theory का प्रयोग करें) : बहु-प्रतिभा का सिद्धान्त प्रयोग करके यह ज्ञात करें कि विद्यार्थी किस प्रकार का सीखने वाला है। जब विद्यार्थियों को अपनी ताकत ज्ञात होती है तो वह अपनी सृजनात्मकता पर कार्य कर सकते हैं। सृजनात्मकता में मस्तिष्क के विभिन्न हिस्से प्रयोग होते हैं। बहु-प्रतिभा का सिद्धान्त प्रयोग करके सृजनात्मकता को बढ़ाया जा सकता है।

15. प्रत्येक ओर से विचारों को ढूंढे (Look for ideas everywhere) : अलग से विचार कहीं से भी आ सकते हैं इसलिए अपनी आँखे, कान तथा मस्तिष्क को खुला रखें।

16. अपने मस्तिष्क को तेज़ रखें (Keep your mind sharp) : मस्तिष्क को तेज़ रखने के लिए पढ़े, सीखें तथा स्वयं को चैलेन्ज दें।

17. स्वयं की समीक्षा करना बन्द करें (Silence your inner critic) : स्वयं का मूल्यांकन न करें, नुक्से मत निकलें तथा बगैर निर्णय के अपने विचारों का स्वागत करें।

अभ्यास के प्रश्न

1. सृजनात्मकता से आप क्या समझते हैं?
2. बुद्धिमता तथा सृजनात्मकता के बीच क्या सम्बन्ध है?
3. विद्यार्थियों में सृजनात्मकता कैसे बढ़ाई जा सकती है?

ω ω ω

3 चिंतन (Thinking)

चिंतन एक मानसिक क्रिया है जब हमारे सामने कोई समस्या आती है तो चिंतन की प्रक्रिया शुरु हो जाती है। यह प्रक्रिया तब तक चलती रहती है जब तक कि हम समस्या का समाधान नहीं निकाल लेते है। यह प्रक्रिया ज्ञानात्मक तथा संज्ञात्मक पहलु से जुड़ी होती है। कागन तथा हेमैन के अनुसार प्रतिमाओं, प्रतीकों, सम्प्रत्यों, नियमों एवम अन्य मध्यस्थ इकाइयों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिंतन कहा जाता है।

Thinking is described as the mental mampulation of images, symbols, concepts, rules and other meditational units by cogan and Heman.

चिंतन प्रक्रिया प्रतीकों व चिन्ह के आधार पर चलती है।

गैरेट - चिन्तन एक प्रकार का अदृश्य व्यवहार है, जिसमें सामान्य से प्रतीकों का प्रयोग होता है।

चिन्तन तथा कल्पना दोनों ही ज्ञानात्मक व रचनात्मक प्रक्रिया है।

रॉस - चिन्तन मानसिक क्रिया का ज्ञानात्मक पक्ष है।

वैलेन्टाइन - मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से चिन्तन शब्द का प्रयोग उस क्रिया के लिए होना/किया जाना चाहिए जिसमें श्रंख्लाबद्ध विचार किसी लक्ष्य की ओर अविराम गति से प्रवाहित होते हैं।

चिंतन की विशेषताएं (Characteristics of thinking)

- चिंतन प्रक्रिया की शुरुआत समस्या सामने होने से होती है।
- चिंतन में सभी भिन्न-भिन्न पहलुओं के समाधान को एक साथ संयोजित किया जाता है।
- चिंतन में गत अनुभूति (Past experience) शामिल होते हैं।
- प्रत्येक चिंतन का उद्देश्य समस्या को सुलझाना होता है।
- समस्या समाधान की विधि प्रत्यन व भूल विधि का एक उदाहरण है।
- सभी चिंतन लक्ष्य निर्देशित होते हैं।
- चिंतन में भाषा, प्रतीक तथा प्रतिमाओं का काफी योगदान है।

चिंतन एक मानसिक क्रिया है जिसके सहारे प्राणी किसी समस्या का समाधान करता है।

चिंतन के प्रकार
(Types of Thinking)

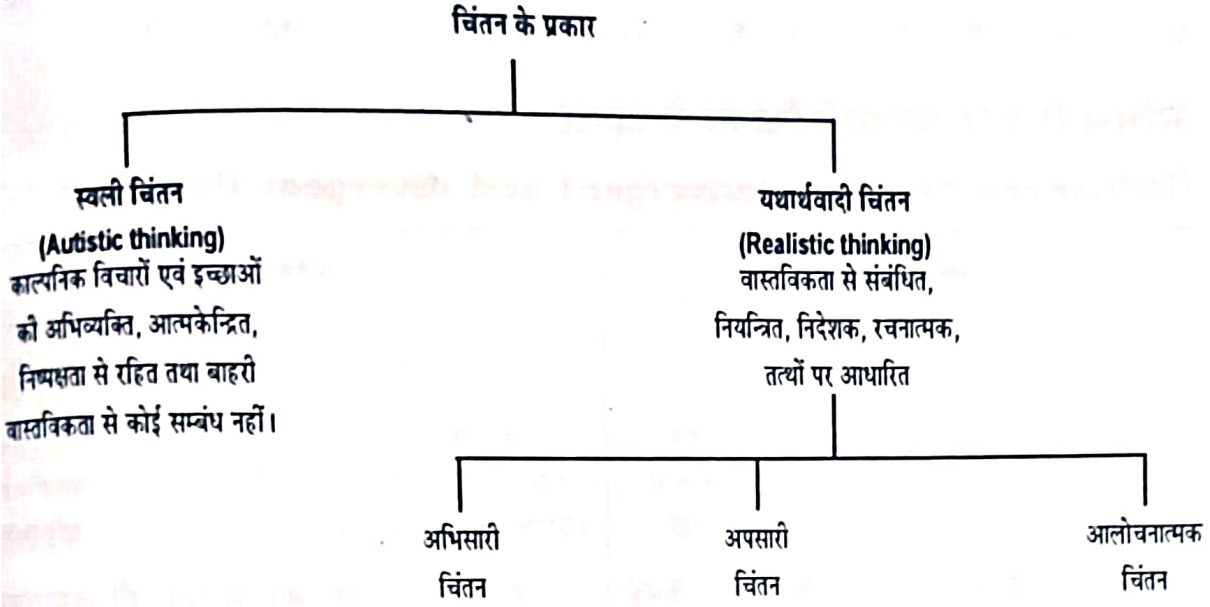

1. अभिसारी चिंतन (Convergent Thinking) : अभिसारी चिंतन पद को Joy Paul Guilford ने तैयार किया। अभिसारी चिंतन वह सोच है जिसमें किसी समस्या पर विभिन्न विकल्पों में उत्तर देने के बजाय एक अच्छी तरह से स्थापित उत्तर दिया जाता है। अभिसारी चिंतन को सृजनात्मक समस्या सुलझाने में एक साधन की भांति प्रयोग किया जाता है। जब किसी समस्या को सुलझाने के लिए तय नियम तथा तार्किक विचार का प्रयोग किया जाता है तो अभिसारी चिंतन कहलाता है। इस प्रकार के चिंतन में पहले से पता जानकारी का प्रयोग करके उसे तार्किक आक्षेप पर आधारित करके समस्या को सुलझाया जाता है। यह उन मानक प्रश्नों का उत्तर देता है जहाँ महत्वपूर्ण सृजनात्मकता की आवश्यकता नहीं होती। उदाहरणतय: बुद्धिमता मापने के बहु-पक्षिय परिक्षण मापक। प्रत्येक व्यक्ति अभिसार ढंग से सोच सकता है। अभिसार चिंतन में समस्या का मात्र एक कोण से ही विश्लेषण किया जाता है।

2. अपसारी चिंतन (Divergent Thinking) : अपसारी चिंतन वह मानसिक क्रिया या साधन है जिसमें कई सम्भव समाधान ढूंढ कर सृजनात्मक तर्क दिए जाते हैं। सृजनात्मक सोच के विपरीत अपसारी चिंतन अपने आप, स्वतन्त्र, गैर रेखीय तरीका है जिसमें कई विचार पैदा होते हैं। थोड़े समय में ही कई सम्भव हल ढूंढ लिए जाते हैं तथा आशा के विपरीत संयोजन बन जाते हैं। अपसारी चिंतन पूरा हो जाने के बाद अभिसारी चिंतन का प्रयोग करके विचार तथा जानकारी को व्यवस्थित तथा संरचित किया जाता है। अपसारी चिंतन वाले को उसके समय तथा कल्पना पर कोई पाबन्दी नहीं होनी चाहिए। अपसारी चिंतन सृजनात्मक सोच वालों में अधिक पाया जाता है जैसे कोई कलाकार या उच्च-स्तर के व्यवसायी में यह चिंतन बहुत कम देखा जाता है। हमारी संस्कृति नए

विचार तथा नई सम्भावनाओं को ढूंढने की स्वीकृति नहीं देती। अधिकतर संस्थाएं ह
विश्लेषणी नही होने देती। हमारे स्कूल भी यही चाहते हैं कि हमारे उत्तर परीक्षा ले
वाले के साथ मेल खाएँ। इन्ही कारणों से हम अपसारी ढंग से नहीं सोचते।

अभिसारी और अपसारी चिंतन में अन्तर

(Difference between convergent and divergent thinking)

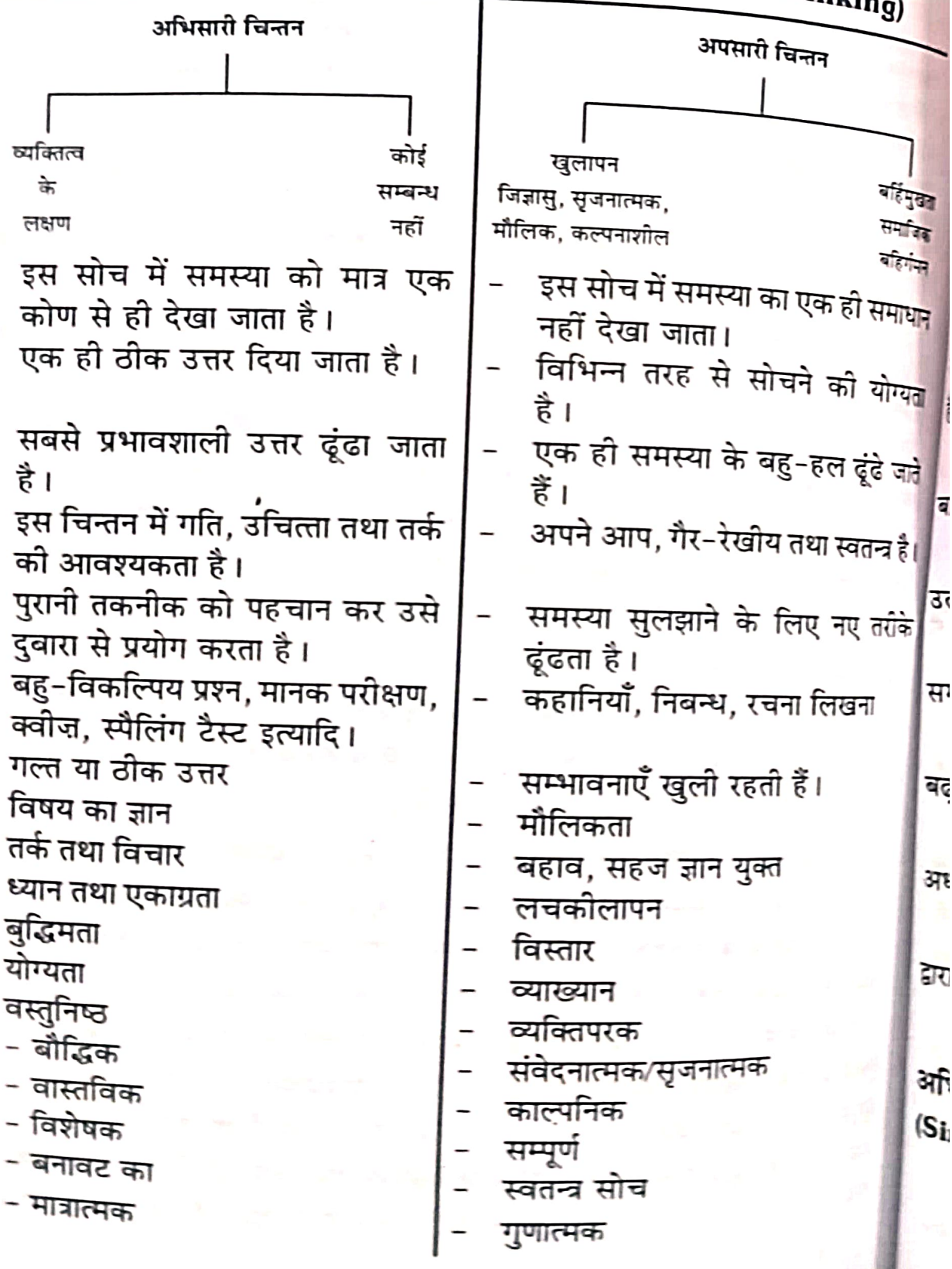

क्रिटिकल ढंग से सोचने के लिए तथा समाधान तक पहुँचने के लिए हमें दोनों प्रकार की सोच का सहारा लेना पड़ता है।

– पहले brainstorming के लिए समय दें, अर्थात नए विचार बनाएँ। फिर सभी सम्भावनाओं के बारे में सोचें जो समस्या का समाधान कर सकती हैं। इन विचारों के बारे में धारणा न बनाएँ। जब हम इन विचारों का विश्लेषण करना शुरु कर देते हैं, हमारा अभिसारी चिन्तन शुरु हो जाता है। जब हम सभी सम्भावित समाधानों को पेश करते हैं तो अगला स्तर शुरु हो जाता है। सभी विचारों का विश्लेषण करें, सर्वाधिक प्रभावशाली को चुनें तथा प्रयोग करें।

अपसारी चिन्तन का पोषण कैसे करें
(How to nurture divergent thinking)

1. वातावरण को उत्साहित करें : इसमें अध्यापक तथा माता-पिता दोनों ही काम कर सकते हैं। बच्चे को एहसास हो कि वह स्वीकृत है, अपने आपको व्यक्त कर सकता है तथा उसे अकेला मत पड़ने दें।

2. मौलिकता को उत्साहित करें : अध्यापक को चाहिए कि वह ध्यान रखे कि बालक रटने तक ही सीमित न रहे बल्कि नए विचारों को प्रस्तुत करे।

3. मानसिक झंझावत : प्रश्न तथा puzzles बनाएं ताकि बालक सीखने के लिए उत्सुक हो।

4. रोल प्ले करने की तकनीक : बालक रोल के चरित्र में आए, उसकी गुणता को समझे तथा अपने आपको व्यक्त करने के योग्य बने।

5. कला का प्रयोग : दृश्यात्मक तथा प्रदर्शन कला द्वारा अपसारी चिन्तन को बढ़ावा दें।

6. स्वयं से सृजनात्मक बने : अध्यापक स्वयं ही सृजनात्मक बने क्योंकि विद्यार्थी अध्यापक को अपना आदर्श मानते हैं।

7. खेलों की तकनीक का प्रयोग करें : खेलों की क्रियाओं तथा छोटी तकनीकों द्वारा बच्चे को सम्मिलित करें।

क्विज़, पज़ल्स, रिड्ल, छोटी खेलें इस दिशा में सहायता कर सकती हैं।

अभिसारी तथा अपसारी चिन्तन के मध्य समानताएँ
(Similarities between convergent and Divergent thinking)

1. दोनों ही चिंतन के पहलू हैं।
2. दोनों ही सृजनात्मकता को ढूंढते हैं तथा विभिन्न समस्याओं का समाधान ढूंढते हैं।

3. क्रिया उस समय उत्तम रहती है जब दोनों मिला कर प्रयोग करते हैं उदाहरणत, अभिसारी चिन्तन के लिए बहु-विकलपिय प्रश्न देते हैं जिसके चार उत्तर होते हैं, आप सभी चार विकल्पों के बारे में सोचते हैं तभी सही उत्तर चुनते हैं।

आलोचनात्मक सोच
(Critical thinking)

आलोचनात्मक सोच से तात्पर्य सूचना का निष्पक्ष रूप से विश्लेषण करने और तर्कपूर्ण निर्णय लेने की क्षमता से है। इसमें स्रोतों का मूल्यांकन शामिल है जैसे डेटा, तथ्य, अवलोकन योग्य घटनाएँ और शोध निष्कर्ष। अच्छे आलोचक विचारक जानकारी के एक सैट से उचित निष्कर्ष निकाल सकते हैं और समस्याओं को हल करने या निर्णय लेने के लिए उपयोगी और कम उपयोगी विवरणों के बीच भेदभाव कर सकते हैं।

आलोचनात्मक सोच में एक समस्या का विश्लेषण करना, समाधान तैयार करना, उसे लागू करना और योजना की सफलता का आकलन करना शामिल है।

आलोचनात्मक सोच में निम्नलिखित लक्षण देखे जाते हैं :

- यह उचित और तर्कसंगत है।
- यह चिंतनशील है।
- किसी विषय पर जांच की इच्छा की आवश्यकता है।
- व्यक्ति को स्वतन्त्र रूप से सोचने में सक्षम होना चाहिए।
- रचनात्मक सोच की आवश्यकता है।
- यह निष्पक्ष होना चाहिए।

- **आलोचनात्मक सोच के विकास के लिए आवश्यक है :** एक महत्वपूर्ण विचारक बनने के लिए कुछ कौशल विकसित करने आवश्यक हैं।

- **मान्यताओं से बाहर निकलें :** हम चीज़ों पर विश्वास करते हैं क्योंकि हमें विश्वास करने के लिए कहा जाता है। तटस्थ दृष्टिकोण से निरिक्षण करने के लिए अपनी खुद की मान्यताओं के बाहर कदम रखें। मान्यताओं से अवगत रहें और आत्म प्रविबिंबित करना सीखें।

- **नकली जानकारी से बचें :** प्रक्रिया की पूर्ण जानकारी हो, असत्य जानकारी या नकली समाचारों से बचें।

- **सामान्यीकरण से अलग सोचें :** जैसे लड़कियां डरपोक होती हैं हमेशा बुज़र्ग ही ठीक होते हैं। यह सामान्यीकरण है जो हमेशा सच नहीं होता।

- **पुरानी जानकारी तथा नए विचारों का मूल्यांकन करें :** एक चीज़ जो आमतौर

पर स्वीकार कर ली गई है जरूरी नहीं को वह ठीक ही है। समय के साथ संशोधन होते रहते हैं। नई जानकारी जुड़नी आवश्यक है।

- समस्या को व्यवस्थित ढंग से सुलझाएं।
- तथ्यों की उचितता तथा महत्व को पहचानें।
- स्वयं की मान्यताओं और मूल्यों की Justification पर सोच-विचार करें।

आलोचनात्मक सोच मात्र सूचना को इकट्ठा करना नहीं है। एक व्यक्ति जिसकी यादाश्त तेज है तथा जिसे बहुत से तथ्य मालूम है, आवश्यक नहीं कि उसकी सोच भी आलोचनात्मक हो। आलोचनात्मक चिंतक वह है जो उसी जानकारी से निष्कर्ष निकाले जो उसके पास है, समस्या का समाधान करे तथा स्वयं के लिए जानकारी प्राप्त करने का उचित स्रोत ढूंढे।

आलोचनात्मक सोच विकसित करने के साधन :-

1. प्रश्न को समझें
2. मानसिक प्रक्रिया
3. आपका नाजरियां
4. ज्यादा से ज्यादा लोगों से बात करें
5. अधिक ज्ञान इकट्ठा करें

प्रश्न को समझे तथा प्रश्न पूछे : सर्वप्रथम प्रश्न का विश्लेषण करें और उत्तर ढूंढे, उसी उत्तर में से कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। विश्लेषण से पता चलता है कि आप किस आधार पर उत्तर दे रहे हैं, कोई समस्या कहाँ से शुरु हुई, आप उसके बारे में क्या जानते हैं आप उसको कैसे सुलझाने वाले हैं। जब आप प्रश्नों पर आत्म-विश्लेषण करते हैं तो आलोचनात्मक सोच तेज होती है।

2. मानसिक प्रक्रिया : मानसिक प्रक्रिया पर हमेशा नजर रखें कि आप उस स्थिति के बारे में क्या सोच रहे हैं। क्या विश्लेषण किया है। कई बार मस्तिष्क बगैर सोचे ही अति-क्रियाशील हो जाता है। कई बार आत्म विश्वास अधिक होने से सही से ध्यान हट जाता है। जो होता ही नहीं उसके बारे में सोचते है। उसके नतीजों के बारे में भी नहीं सोचते और गलत निर्णय ले लेते हैं।

3. सोचने का नजरिया : प्रत्येक व्यक्ति का सोचने का नजरिया अलग होता है। जब किसी समस्या का विश्लेषण किया जाता है तो कई पहलू सामने आते हैं। उस समय नजरिये के ऊपर निर्भर करता है कि आप समस्या को कैसे सुलझाएँगे। इसके लिए आवश्यक है कि आपको पूरा अनुभव हो या आप उसी स्थिति से निकले हो। आपकी मानसिक प्रक्रिया ही आपके सोचने के नजरिये को प्रभावित करती है।

4. ज्यादा से ज्यादा लोगों से बात करें : जब आप विषय में निपुण व्यक्ति से करते है तो सोचने की प्रक्रिया का विकास होता है। यही सोच अलोचनात्मक सोच को बढ़ती है। जब वाद विवाद सकारात्मक और स्वस्थ होता है तथा तथ्यों पर निर्भर होता है तो विश्लेषण करने की क्षमता बढ़ जाती है और भविष्य का नज़रिया साफ होता जाता है। जिस बात पर वाद-विवाद किया जा सकता है उसका विश्लेषण भी मस्तिष्क कर सकता है। लोगों से बात करने से, वाद-विवाद करने से मस्तिष्क का वह भाग क्रियाशील होता है जिसे अर्ध-चेतन मस्तिष्क कहते हैं। जाने अनजाने वह याद आने लगता है जिसे कभी देखा या सुना गया है। ऐसे ही सोच की चेन बनाकर आलोचनात्मक सोच का विकास होता है।

5. अधिक ज्ञान इकट्ठा करें : ज्ञानवान होने से भाव है कि तथ्यों को इकट्ठा करें। जब तक तथ्य नहीं पता होंगे तब तक प्रक्रिया नहीं होगी। किसी भी स्थिति को reverse में सोचें फिर उसके नतीजे देखें, इससे तथ्य प्राप्त होंगे, स्थिति स्पष्ट होगी। ज्ञान किसी भी प्रकार का हो सकता है। जितना अच्छा ज्ञान होगा उतना ही अच्छा आपका तर्क होगा।

आलोचनात्मक सोच का महत्व

1. आलोचनात्मक सोच : साधारण सोचने की कला का ज्ञानक्षेत्र है आलोचनात्मक क्षेत्र स्पष्टता तथा तर्कपूर्ण ढंग से सोचने तथा समस्याओं को क्रमबद्ध ढंग से सुलझाने की योग्यता है जो किसी भी व्यवसाय के लिए आवश्यक है चाहे वह शिक्षा, क्षोध, अर्थव्यवस्था या कानूनी व्यवसाय हो।

2. आलोचनात्मक सोच : नई ज्ञान अर्थव्यवस्था के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। पूरे विश्व में ज्ञान की अर्थव्यवस्था जानकारी तथा तकनीक से प्रभावित होती है। वर्तमान युग में बदलाव तेजी से होते हैं। नई अर्थव्यवस्था लचकीली मानसिक कलाओं पर निर्भर करती है जहाँ जानकारी का विश्लेषण करके विस्तृत ज्ञान का प्रयोग समस्याएँ सुलझाने में किया जाता है। अच्छी आलोचनात्मक सोच इस प्रकार की योग्यता को विकसित करती है।

3. आलोचनात्मक सोच : सोच भाषा तथा प्रस्तुति की कलाओं का विकास करती है। अपने विचारों की प्रस्तुति के लिए स्पष्टता तथा क्रमबद्ध ढंग की सोच आवश्यक है। आलोचनात्मक सोच विश्लेषण करते समय समझ बढ़ाने में सहायक होती है।

4. आलोचनात्मक सोच सृजनात्मकता को बढ़ावा देती है : किसी भी समस्या के सृजनात्मक समाधान के लिए न सिर्फ नए विचारों की आवश्यकता है बल्कि यह विचार महत्वपूर्ण तथा उपयुक्त होने चाहिए। आलोचनात्मक सोच नए विचारों के

मूल्यांकन के लिए, सबसे उत्तम विचार का चुनाव करने तथा आवश्यकता पड़ने पर संशोधन करती है।

5. आलोचनात्मक सोच स्वंय के प्रतिबिंब के लिए आवश्यक है : अर्थपूर्ण जीवन, अपने मूल्यों के प्रतिबिंब तथा समर्थन के लिए निर्णयों की आवश्यकता है। आलोचनात्मक सोच स्वयं के मूल्यांकन की प्रक्रिया के लिए आवश्यक है।

6. अच्छी आलोचनात्मक सोच विज्ञान तथा प्रजातन्त्र की नींव बनाती है : विज्ञान में प्रयोगात्मक तथा सिद्धान्त की पुष्टि के लिए कारणों के आलोचनात्मक प्रयोग की आवश्यकता है। अच्छे लोकतंत्र में यह जरुरी है कि नागरिक समाजिक मुद्दों के बारे में आलोचनात्मक ढंग से सोचें व अपने सुझाव दें तथा पक्षपात से दूरी बनाकर रखें।

7. आलोचनात्मक सोच की योग्यता भ्रम तथा बुरे तर्कों को उजागर करने में प्रयोग की जा सकती है।

8. आलोचनात्मक सोच तर्क तथा निर्माणात्मक कार्यो में महत्वपूर्ण कार्य करती है।

9. आलोचनात्मक सोच ज्ञान अर्जित करने, अपने सिद्धान्तों को विकसित करने तथा तर्क को मजबूत करने में सहायक रहती है।

10. आलोचनात्मक सोच कार्य की प्रक्रिया को विकसित करने तथा सामाजिक संस्थाओं को बेहतर करने में मदद करती है।

चिंतनशील सोच/विमर्शी चिंतन
(Reflective thinking)

चिंतनशील सोच क्रिटिकल सोच का ही हिस्सा है। जब हम अपनी ही सोच का मूल्यांकन करते हैं, उसमें त्रुटियां ढूंढने की कोशिश करते हैं, उसे चिंतनशील सोच कहते हैं। जैसे हम तैयार हुए और खुद को शीशे में देखा कि क्या सब सही है, मतलब कि हम खुद का मूल्यांकन कर रहे हैं। वैज्ञानिक विधि में प्रयोग होने वाली विधि को चिंतनशील सोच कहते हैं। आप क्या जानते हैं तथा क्या जानना चाहते हैं, इसी अंतर की पूर्ति करना चिंतनशील सोच कहलाता है। इस प्रकार की सोच का उद्देश्य जटिल समस्याओं को हल करना है, Dewey (1933) के अनुसार चिंतनशील सोच किसी विचारधारा या ज्ञान के कथित प्रकार, उस ज्ञान को मजबूत बनाने वाले आधारों और उस ज्ञान तक ले जाने वाले अंतिम निर्णयों के बारे में क्रियाशील, दृढ़ तथा सावधानीपूर्वक किया गया विचार है।

यह ऊँचे स्तर का चिंतन है जो जटिल समस्याओं को हल करता है। चिंतनशील सोच एक व्यवहारिक संज्ञानात्मक दृष्टिकोण है क्योंकि यहां मानसिक क्रिया 'प्रयत्न एवं भूल' का यान्त्रिक प्रयास नहीं करती।

चिंतनशील सोच के बारे में जानने के लिए आपको सोचना विचारना होगा कि

- आप इस समय क्या कर रहे हैं?
- आपने पहले क्या किया है?
- आपने क्या अनुभव किया है?
- आपने क्या तथा कैसे सीखा है?

अपने अनुभवों की व्याख्या करें, चैक करें कि यह आपके लिए क्या अर्थ रखता है, अपनी क्रियाओं को जायज ठहराने तथा समस्या सुलझाने में यह भविष्य में सहायता करेगा।

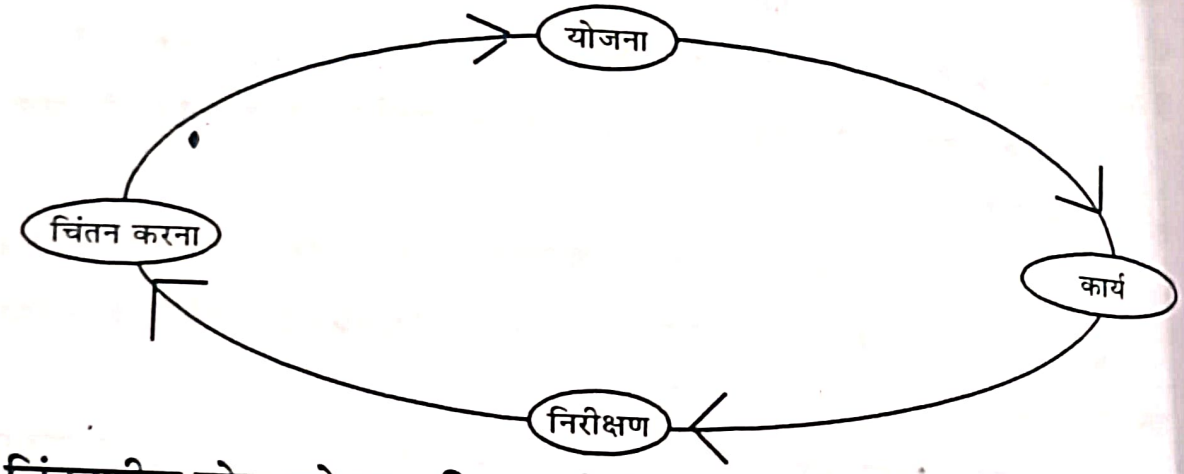

चिंतनशील सोच को उत्साहित करने के ढंग
(How to encourage reflective thinking)

1. किसी भी समस्या का समाधान पाने से पूर्व विद्यार्थियों को इतना समय अवश्य दें कि वह अपने विचारों पर सोच सकें।

2. कक्षा में संवेगात्मक रूप से सकारात्मक वातावरण प्रदान करें और उन्हें अपने निर्णयों का पूर्वमूल्यांकन करने को उत्साहित करें।

- विद्यार्थियों को उत्साहित करें कि वह सीखने वाली स्थितियों का जायज़ा लें कि उन्हें क्या पता है, क्या पता करना है तथा क्या सीखा जा चुका है।

3. विद्यार्थियों में चिंतनशील सोच को बढ़ावा देने के लिए उससे ऐसे प्रश्न पूछे जिससे वह कारण तथा सबूत ढूंढे।

4. जब विद्यार्थी उत्तर ढूंढ रहे हो तो कुछ उल्लेख देकर उनके सोचने की प्रक्रिया में सहायक बनें।

5. विद्यार्थियों को कम-सरंचित सीखने का वातावरण प्रदान करे इससे वह वो ढूंढेगे जो उन्हें महत्वपूर्ण लगेगा।

6. छोटे-छोटे समूह की क्रियाएं प्रदान करके उन्हे सामाजिक सीखने का वातावरण प्रदान करें ताकि वह दूसरों के मतों से भी अवगत हो सकें।

7. विद्यार्थियों को चिन्तन पत्रिका प्रदान करें ताकि वह अपनी स्थितियों के बारे में,

अपनी सोच को मजबूत करने के कारण, विपरीत मतों के बारे में जागरुकता तथा अपनी कमज़ोर स्थिति के बारे में लिख सकें।

चिंतनशील सोच का महत्व
(Importance of Reflection thinking)

आधुनिक समाज जटिल होता जा रहा है, नया ज्ञान तेजी से जुड़ता रहता है, इसलिए प्रयोग करने वाले को हमेशा सोचना पड़ता है, अपनी दिशाएँ तथा समस्या सुलझाने की विधियाँ बदलनी पड़ती हैं। प्रतिदिन की क्रियाओं की जटिल परिस्थितियों में नया ज्ञान प्रयोग करने के लिए सीखने वाले के लिए आवश्यक है कि वह चिंतनशील सोच को विकसित करे। यह विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करता है कि वह पीछे मुड़कर कर देखें तथा सोचें कि वह वास्तविकता में समस्या को कैसे सुलझा सकते हैं तथा किस प्रकार से समस्या सुलझाने की विधियाँ उनके उद्देश्य प्राप्त करने के लिए उपयुक्त हैं। यह उन्हें अपनी सोच तथा सीखने की विधियाँ समझने में सहायता करती है।

चिंतनशील सोच/विमर्शी चिंतन
(Reflective Thinking)

जब हम अपनी ही सोच का मूल्यांकन करते हैं, उसमें त्रुटियाँ ढूंढने की कोशिश करते हैं, उसे चिंतनशील सोच कहते हैं। इस सोच का अमरीका के विद्वान जॉन डेवी ने अपनी पुस्तक "हम कैसे सोचते हैं" मैं वर्णन किया। इस प्रकार की सोच का उद्देश्य जटिल समस्याओं को हल करना है, इस प्रकार उस स्थिति या अनुभवों या विचारों से संबधित होने के बजाय बाधाओं को दूर करने के लिए सभी प्रासंगिक अनुभवों के पुनर्गठन की आवश्यकता होती है।

असंरचित मुद्दों पर ज्ञानमीमांसीय अवधारणा के साथ तर्कपूर्ण निर्णय लेना ही चिंतनशील निर्णय कहलाता है। (King and kitchener, 1994) चिंतनशील सोच से अभिप्राय है जब किसी व्यक्ति के सामने कोई विवादास्पद, असंरचित या जटिल मुद्दा आता है तो उस पर सोचने-विचारने या तार्किक चिंतन करने की प्रक्रिया को चिंतनशील सोच कहा जाता है।

जॉन डी वी (1933 तथा 1938) के अनुसार व्यक्ति का ऐसी समस्याओं पर सोच विचार करना जिसका कोई निश्चित हल नहीं होता, चिंतनशील सोच कहलाता है। सीखने वाले चिंतनशील सोच द्वारा सीखने की क्रिया के बारे में जागरुक रहते हैं तथा सीखने को नियन्त्रित कर सकते हैं यह मूल्यांकन करके कि वह क्या जानते हैं, उन्हें क्या जानना चाहिए तथा इस दरार को कैसे भरा जा सकता है। डीवी के अनुसार चिंतनशील सोच के तीन चरण हैं।

(क) खुली सोच (Open mindedness)

(ख) जिम्मेदारी (Responsibility)

(ग) हार्दिकता (Whole heartedness)

खुली सोच (Open mindedness) : खुली सोच वाला व्यक्ति लगातार अपने

आपका निरिक्षण करता रहता है। वह अपनी कमज़ोरियों और ताकत को पहचानने की कोशिश करता रहता है। ऐसा व्यक्ति दूसरों के तर्क तथा नज़रिये की भी महत्व देता है।

जिम्मेदारी (Responsibility) : चिंतनशील व्यक्ति नतीजों को पूरी तरह ध्यान में रखते हैं। वह अपने आप पर नियन्त्रण रखते है कि वह क्या कर रहें तथा क्यों कर रहे हैं। व्यक्तिगत व्यवहार से दूसरों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। बहुत सख्य व्यवहार दूसरे व्यक्ति के आत्म विश्वास को गिरा सकता है जबकि बहुत नर्म व्यवहार का गल्त फायदा भी उठाया जा सकता है। हमेशा सीखने के लिए तत्पर होना चाहिए कहीं से भी किसी से भी सीखना चाहिए। इसके साथ स्वयं का निरिक्षण करते रहना चाहिए।

चिंतनशील सोच को प्रोत्साहन देने की विधियाँ :

- विद्यार्थी को सोचने के लिए काफी समय दें ताकि उत्तर देने से पूर्व उसके पास चिंतन करने का उचित समय हो।

- कक्षा में संवेगात्मक रूप से सहायक वातावरण प्रदान करें तथा निर्णयों पर दुबारा से सोचने का मौका दें।

- विद्यार्थियों को सीखने की परिस्थितियों की समीक्षा करने के लिए उत्साहित करें, उन्हें क्या जानकारी है, क्या जानना आवश्यक है तथा क्या सीखा जा चुका है।

- विद्यार्थियों में चिंतनशील सोच को बढ़ावा देने के लिए उनसे ऐसे प्रश्न पूछे जिसमें कारण तथा सबूत मांगा गया हो।

- जब विद्यार्थी खोज कर रहे हों तो कुछ व्याख्या देकर उनके सोचने की प्रक्रिया में सहायता करें।

- विद्यार्थियों को कम-संरचित सीखने का वातावरण दें। इस प्रकार विद्यार्थियों को यह पता (explore) करने का प्रोत्साहन मिलता है जिसे वह महत्वपूर्ण समझता है।

- छोटी-छोटी समूह की क्रियाओं द्वारा समाजिक ढंग द्वारा सीखने का वातावरण प्रदान करें ताकि दूसरों की राय का भी पता चल सके।

- चिंतनशील पत्रिका (journal) प्रदान करें ताकि विद्यार्थी की अवस्था लिखी जा सके, उनकी सोच को प्रोत्साहित करने के लिए कारण प्रदान करें, विपरीत परिस्थितियों के बारे में अवगत रहें तथा अपनी अवस्था की कमज़ोरियों का पता हो।

चिंतनशील सोच का महत्व : आधुनिक समाज बहुत जटिल हो चुका है, नई जानकारी जुड़ती जाती है, इस समय प्रयोग करने वाले को लगातार सोचना पड़ता है, अपनी दिशाएँ बदलनी पड़ती है तथा समस्या को सुलझाने की विधियाँ बदली जाती है। चिंतनशील सोच सीखने वाले को इस काबिल बनाती है कि वह प्रतिदिन की क्रियाओं की जटिल परिस्थितियों में नए ज्ञान का प्रयोग करें। यह विद्यार्थियों को इस काबिल बनाती है कि पीछे मुड़कर देखें तथा सोचें कि वह वास्तविकता में समस्याओं को कैसे सुलझाते हैं तथा अपना उद्देश्य प्राप्त करने के लिए समस्या सुलझाने की उचित विधियाँ कौन सी हैं। यह उन्हें अपनी सोचने और सीखने की विधियों को समझने की क्षमता प्रदान करती है।

पार्श्व सोच
(Lateral thinking)

यह अलग ढंग से सोचना, सृजनात्मक ढंग से सोचना, अप्रत्यक्ष ढंग से समस्या के हल को सोचना है। पार्श्व सोच समस्या को सुलझाने का वह ढंग है जहाँ अप्रत्यक्ष तथा सृजनात्मक ढंग अपनाया जाता है जो आक्समिक रूप से दिखाई नही देता। इसें परम्परागत चरणों में प्राप्त किया जाता है। तर्क से प्रयुक्त विचार इसमें प्रयुक्त नहीं होते। पार्श्व सोच तर्क के माध्यम से अप्रत्यक्ष और रचनात्मक दृष्टिकोण का उपयोग करके समस्याओं को हल करने का एक तरीका है जो तुरन्त स्पष्ट नहीं है। इसमें ऐसे विचार शामिल हैं जो केवल पारंपरिक चरण दर-चरण तर्क का उपयोग करके प्राप्य नहीं हो सकते हैं।

लेटरल थिंकिंग विकिपीडिया 1973 के अनुसार एडवर्ड डी बोनो द्वारा विकसित एक शब्द है, जिसमें उनकी पुस्तक लेटरल थिंकिग : क्रिएटिविटी स्टेप बाय स्टेप प्रकाशित है।

एक समान या अप्रत्याशित दृष्टिकोण से स्थिति या समस्या को देखने के लिए पार्श्व सोच शामिल है।

डी बोनो ने बताया कि विशिष्ट समस्याओं को सुलझाने के प्रयासों में एक रेखीय, कदम से कदम दृष्टिकोण शामिल है। एक पूरी तरह से अलग और अधिक रचनात्मक दृष्टिकोण से किसी स्थिति या समस्या की फिर से जांच करने के लिए 'रचनात्मक' कदम उठाने से अधिक रचनात्मक उत्तर आ सकते हैं।

डी बोनो के अनुसार पार्श्व सोच उन समाधानों के साथ आने के लिए आवश्यक है जो इतने सीधे नहीं है। अपराधों को हल करते समय पार्श्व सोच काम आती है। वकील तथा जासूस अपराधों को हल करने समय पार्श्व सोच प्रयोग करते हैं। अपराधों में घटनाओं का क्रम अक्सर उतना सीधा नहीं होता जितना पहले दिखाई देता है।

पार्श्व सोच छात्रों के लिए रचनात्मक कलाओं में बहुत लाभकारी है। कहानी लिखते समय अप्रत्याशित मोड आने पर पार्श्व सोच प्रभावशाली रहती है।

पार्श्व सोच अधिक रचनात्मक विचारों को शामिल करती है जो तार्किक और स्पष्ट दिशानिर्देशों का उपयोग नहीं करती।

पार्श्व सोच तीन कारकों पर आधारित है-

मौलिकता : जिज्ञासु और विभिन्न विचारों को उत्पन्न करने की क्षमता

प्रवाह : एक अनोखी उत्तेजना के आधार पर कई समाधानों का उत्पादन करते हैं।

लचकीलापन : पूर्वधारणा पर पुनर्विचार करें, पुर्नव्याख्या करें, विभिन्न दृष्टिकोण का आकलन करें।

पार्श्व सोच विकसित करने के ढंग
(Methods of increasing lateral thinking)

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार पार्श्व सोच विकसित करने की कई तकनीक हैं :

- प्रश्न में विषय के बारे में सोचें जैसे आप इसे पहली बार सुन रहे थे और उस जानकारी का विश्लेषण करें जो आप प्रदान कर रहे हैं।

- मूल्य से अधिक समाधान करने के लिए सामान्य से अधिक विकल्प उत्पन्न करें।

- वास्तविक विकल्पों को प्रस्तावित करने के लिए समस्या के प्रमुख विचार को पहचानें।

- नए विचारों को याद न करें।

- अभ्यस्त सोच पैदर्न से मदद न लें।

- सब कुछ पर संदेह करो।

अभ्यास के प्रश्न

1. चिंतन से क्या भाव है?
2. चिंतन की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं?
3. चिंतन को प्रमुख तौर पर वर्गीकरण करें।
4. इस पर नोट लिखें :-

(i) अभिसारी चिंतन

(ii) अपसारी चिंतन

(iii) आलोचनात्मक सोच

(iv) चिंतनशील सोच

(v) पार्श्व सोच

5. अभिसारी और अपसारी चिंतन में क्या अन्तर है?
6. विद्यार्थियों में अपसारी चिन्तन का पोषण कैसे कर सकते हैं?
7. आलोचनात्मक सोच वाले व्यक्ति में क्या लक्षण होते हैं?
8. आलोचनात्मक सोच का क्या महत्व है?
9. आलोचनात्मक सोच कैसे विकसित की जा सकती है?
10. चिंतनशील सोच को प्रोत्साहन कैसे दे सकते हैं?
11. चिंतनशील सोच का क्या महत्व है?
12. पार्श्व सोच का क्या महत्व है?
13. पार्श्व सोच कैसे विकसित की जा सकती है?

ଓ ଓ ଓ

4 स्मृति (Memory)

स्मृति वह साधन है जिससे हम अपने पुराने अनुभवों का प्रयोग करते हैं ताकि इस जानकारी को वर्तमान में प्रयोग कर सकें (Sternberg, 1999)। स्मृति से भाव उस संरचना (Structures) तथा प्रक्रियाओं (proceses) से है जो जानकारी के जमा होने तथा बाद में पुन: प्राप्ति (retrieval) में प्रयोग होता है। स्मृति हमारे जीवन के लिए बहुत आवश्यक है। रायबर्न के अनुसार स्मृति हमारे अन्दर अनुभवों को संचित रखने और उनको प्राप्त करने के कुछ समय बाद चेतना के क्षेत्र में पुन: वापिस लाने की शक्ति है।

स्मृति मस्तिष्क का वह विभाग (faculty) है जिससे डेटा या जानकारी संकेतन (encode), जमा तथा पुन: प्राप्ति (retrieve) की जाती है। भविष्य की क्रिया को प्रभावित करने के लिए जानकारी को जमा करके रखना आवश्यक है। यदि पुरानी घटनाएं याद न रखी जाएं तो भाषा, सम्बन्ध या व्यक्तिगत पहचान को विकसित करना असम्भव होगा। Squire, 2009 के अनुसार मनोविज्ञान में जानकारी को संकेतन (encode) करना जमा करना तथा पुन: प्राप्ति करना ही स्मृति है। मनोविज्ञानिकों के अनुसार स्मृति की तीन महत्वपूर्ण श्रेणियां हैं, संवेदनात्मक (Sensory), लघु-अवधि तथा लम्बे समय की स्मृति। स्मृति के तीन प्रमुख चरण हैं संकेतन, संचित करना तथा चेतना में पुन: वापिस लाना।

- **संवेदनात्मक स्मृति** (Sensory memory) : इसे जान बूझकर नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। यह वास्तविक Stimulus के खत्म हो जाने के बाद भी व्यक्ति की संवेदनात्मक स्मृति के impresion को बनाए रखती है।

- **लघु अवधि स्मृति** (Short term memories) : यह स्मृति बहुत कम समय के लिए होती है तथा एक समय पर 5-7 जानकारी को ही याद रख सकती हैं।

- **लम्बी अवधि स्मृति** (Long term memories) : यह बहुत बढ़ी मात्रा में जानकारी को संचित कर सकती है तथा लम्बे समय के लिए रहती है।

- अंतर्निहित (Implicit) तथा स्पष्ट (explicit) व स्मृति लम्बी अवधि की स्मृति के दो प्रकार हैं।

अंतर्निहित स्मृति संवेदात्मक (Sensory) तथा स्वचालित (automatized) व्यवहार को होती है।

स्पष्ट स्मृति जानकारी (information), प्रसंग (episodes) या घटनाओं की होती है।

1. संवेगात्मक स्मृति (Sensory memory) : संवेगात्मक स्मृति में व्यक्ति में वास्तविक उत्तेजना देने वाली वस्तु या परिस्थिति (Stimuls) के समाप्त हो जाने के बाद

भी संवेगात्मक सूचना (Sensory information) की छाप बनी रहती है। उदाहरणतय ट्रैफिक में अन्धेरे में तेजी से चलती हुई लाइटें व्यक्ति के दिमाग पर एक छाप (trail) छोड़ देती हैं। यह अनुप्रतीकात्मक स्मृति (Iconic) है जो दृष्टात्मक संवेगात्मक (visual sensory store) है। दूसरी संकेतात्मक स्मृति है। प्रतिध्वनित (echoic) स्मृति जो श्रवण संवेगात्मक स्टोर (auditory sensory store) है तथा स्पर्श स्मृति (haptic memory) जो स्पर्श सम्बन्धी संवेगात्मक स्टोक (tactile sensory store) है। संवेगात्मक स्मृति (Sensory memory) Short तथा long memory की भांति उच्च मानसिक कार्यों में लिप्त नहीं होती Sensory का कार्य हमारे संवेगों के अनुभव का प्रतिनिधित्व (representation) करना है जो लघु-अवधि स्मृति से प्राप्त होता है।

2. लघु-अवधि स्मृति (Short-term memory) : इसे कार्यशील स्मृति (working memory) भी कहते हैं। यह 5-9 वस्तुओं को ही याद रख सकता है तथा 20 सैकेन्ड तक रहता है। बार-बार दोहरा कर इसे long-term memory में बदला जा सकता है। उदाहरणतय: यदि हमें कोई फोन-नम्बर बताता है तो हम बार-बार दोहरा कर उसे याद करते रहते हैं ताकि लिखने तक याद रहे। परन्तु अगर बीच में कोई प्रश्न पूछ ले तो हम भूल जाते हैं क्योंकि वह नम्बर लघु-अवधि स्मृति में था।

3. लम्बी अवधि स्मृति (Long-term memory) : यह स्मृतियाँ हमारे अन्दर लम्बे समय तक रहती हैं। यह पहली कक्षा की पढ़ाई से लेकर आजतक किए जाने वाले कार्य की स्मृति हो सकती है। लम्बे समय की स्मृति में जमा करने की क्षमता बहुत अधिक होती है और कुछ स्मृतियाँ हमें मरने तक याद रहती है। लम्बी अवधि की स्मृति कई प्रकार की होती है। स्पष्ट Explicit या declarative स्मृति में सोच कर दोहराया जाता है। यह वह सूचना है जो होशपूर्वक (Consciously) जमा की जाती है तथा दोहराई जाती है। इसे सक्रिय स्मृति (Active memory) भी कहते हैं जैसे परीक्षा में उत्तर देते समय पुन: स्मरण करने के लिए प्रयत्न करना पड़ता है। स्पष्ट स्मृति को दो हिस्सों में बाँट सकते हैं।

- **अर्थ-सम्बन्धी** (Semantic) : स्मृति जिसे तथ्यों से लिया जाता है जैसे फ्रांस की राजधानी पैरिस है।

- **प्रासंगिक** (Episodic) : स्मृति जिसमें व्यक्तिगत अनुभव जुड़े होते हैं जैसे जब मैं फ्रांस में थी तो मैंने मोनालिसा की पेन्टिंग देखी। स्पष्ट (Explicit) स्मृति के विपरीत अंतर्निहित (Implicit) स्मृति है। यह स्मृतियां होशपूर्वक जमा तथा पुन: याद नहीं की जाती। उदाहरणतय: कार चलाना सीखना : हमें कार चलाते समय हर बार होशपूर्वक याद नहीं रखना पड़ता बल्कि हम साधारण तौर पर कार चला लेते हैं यह अंतर्निहित स्मृति है। इसे निष्क्रिय स्मृति (Passive memory) भी कहते हैं जैसे अपने पुराने शहर वापिस लौटाने पर ही बहुत से पड़ौसी, दुकानें, सड़के, गलियाँ याद आ जाती हैं।

स्मृति बढ़ाने के तरीके (Strategies to improve memory)

स्मृति बढ़ाने की वह तकनीक है जिसके द्वारा हम सीखी गई सूचना को याद करने को विकसित कर सकते हैं।

1. सामग्री को समझना (Understanding the material) : अध्ययन सामग्री को याद करने से पूर्व उसे समझें। इसके लिए अध्ययन सामग्री तथा पहले के अनुभवों के बीच सम्बन्ध ढूंढे। जितना अधिक आप पहले के ज्ञान को नई सामग्री के साथ सम्बन्धित करेंगे, उतना ही सीखना और याद रखना आसान होगा।

2. ध्यान केन्द्रित करना (Focus your attention) : ध्यान स्मृति का महत्वपूर्ण अंग है। प्राप्त सूचना को अल्प-अवधि स्मृति से लम्बे समय की स्मृति में भेजने के लिए उस सूचना पर पूर्ण ध्यान दें। जैसे पढ़ते समय ध्यान भटकाने वाली वस्तुओं और परिस्थितियों से दूर रहें जैसे टी.वी, संगीत, शोर इत्यादि।

3. अपने कार्य के बीच दूरी रखें (Space out your work) : एक ही अध्ययन session में अधिक कार्य को इकट्ठा न करें। अपने अध्ययन के Slots का Schedule बनाते समय उसे कई दिनों में फैला दें। एक समय में थोड़ी सामग्री पर ही ध्यान दें। एक बार में जितने कम नए Concepts याद करेंगे उतना ही अधिक देर तक याद रहेगा।

4. दोहराएँ (Repetition) : बार-बार दोहराने से सामग्री लम्बी अवधि की स्मृति में जमा हो जाती है। इसके लिए लिखकर, बोलकर या सूचना की ड्राईंग संक्षिप्ति बनाने की विधि प्रयोग कर सकते हैं।

5. रटना बंद करें (Avoid cramming) : जो विद्यार्थी नियमित रूप से पढ़ते हैं वह सामग्री को लम्बे समय तक याद रखते है बजाय कि उन विद्यार्थियों के जो एक ही बार लम्बे समय तक सामग्री को पढ़ते हैं।

6. सामग्री को व्यवस्थित करना (Structure and organize) : यदि सामग्री को व्यवस्थित किया गया है तो वह समूहों में हमारी स्मृति में जमा रहती है। एक समान concepts तथा terms का समूहीकरण करें या अपने नोट्स तथा किताबों की सामग्री की रूपरेखा बनाकर समूहों में इकट्ठा कर लें।

7. यादाश्त बढ़ाने के तरीकों का प्रयोग करें (Utilize Mnemonic devices) : Mnemonic Devices वह तकनीक है जिसे विद्यार्थी याद की गई सामग्री को पुनः दोहराने के लिए प्रयोग करते हैं। उदाहरणतयः किसी सामग्री को याद करने के लिए उसे उस सामान्य item के साथ जोड़ना जिससे आप परिचित हों। सूचना के किसी विशेष हिस्से को याद रखने के लिए उसे किसी गीत, कविता या चुटकले के साथ जोड़ना।

8. संक्षिप्ति (Acronyms) : वह शब्द है जो शब्दों के समूह के पहले letter से बना होता है। यदि आपके पास terms की लिस्ट है जो आपने याद करनी है तो संक्षिप्ति प्रभावशाली अध्ययन की तकनीक है। इस प्रकार संक्षिप्ति प्रयोग करके प्रत्येक पद का पहला वर्ण याद आ जाएगा और पूरी लिस्ट याद हो जाएगी।

9. विस्तृत करना तथा अभ्यास करना (Elaborate and rehearse) : सूचना को पुनः दोहराने के लिए उसे लम्बी अवधि की स्मृति में ले जाना आवश्यक है। उदाहरणतयः किसी भी प्रमुख पद (Key term) की परिभाषा को पढ़े, उसके बाद उस पद (term) के विस्तृत उल्लेख को पढ़ें। जब यह क्रिया कुछ बार दोहराई जाती है तो उस सूचना को पुनः दोहराना सरल हो जाता है।"

10. प्रत्यय का दृश्य बनाएं (Visualize concepts) : पढ़ी जाने वाली सूचना का दृश्य बनाकर (visualize) लम्बे समय तक लाभांवित हुआ जा सकता है। अपनी किताबें के चित्रों, चार्ट तथा दूसरे ग्राफ पर ध्यान दें। यदि आपके पास visual clip नहीं हैं तो अपने बनाएं। अपनी कापियों के हाशिए में चार्ट या चित्र खींचे या सम्बन्धित ideas का समूहीकरण करने के लिए लिखी गई सामग्री पर विभिन्न रंगों के पैन या हाइलाइटर highlighter का प्रयोग करें। कई बार उस याद रखी जाने वाली सामग्री को पक्का करने के लिए फ्लैश कार्ड बना सकते हैं।

11. पुरानी प्राप्त सूचना को नई सूचना के साथ जोड़ें (Relate new information to things you already know) : जब आप अपरिचित सामग्री का अध्ययन कर रहे हैं तो उसे पहले से जानी गई सूचना के साथ जोड़ें। इससे नई सामग्री को पुनः दोहराना आसान हो जाता है।

12. ऊँचा पढें (Read out loud) : 2017 में किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि जब हम सामग्री को ऊँचा बोलकर पढ़ते हैं तो उसे अधिक समय तक याद रखते हैं। मनोवैज्ञानिक तथा शिक्षकों ने ज्ञात किया है कि वह विद्यार्थी जो दूसरों को नए प्रत्यय (Concepts) पढ़ाते हैं, स्वयं अधिक समझते हैं तथा पुनः दोहरा सकते हैं।

13. कठिन सूचना पर अतिरिक्त ध्यान दें (Pay extra attention to difficult information) : यह देखा गया है कि पाठ के शुरु व अंत की सूचना को याद रखना आसान होता है। अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि पुनः दोहराने में सूचना का क्रम बहुत प्रभाव डालता है इसे Serial position effect कहते हैं।

बीच वाली सूचना कठिन हो सकती है। इसके लिए इस सूचना को बार-बार दोहराना चाहिए।

14. अपने पढ़ने की दिनचर्या को बदलते रहें (Vary your study routine) : पुनः दोहराने की क्षमता को बढ़ाने के लिए अपने पढ़ने के routine को बदलते रहें। यदि आप किसी खास स्थान पर ही पढ़ने के आदी हैं तो अगली बार अलग स्थान पर पढ़ें, यदि आप सांयकाल को पढ़ते हैं तो प्रत्येक सुबह कुछ मिन्टों तक पहले दिन पढ़ी गई सूचना को दोहराएं। अपने अध्ययन Session में नवीनता लाकर आप अपने श्रम के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं तथा लम्बी-अवधि तक याद रख सकते हैं।

15. पर्याप्त नींद लें (Get Some Sleep) : अध्ययनों से ज्ञात हुआ है कि नींद यादाश्त तथा सीखने के लिए आवश्यक है। पढ़ने के बाद कुछ देर का विश्राम सीखने की क्रिया तथा यादाश्त को तेज कर देता है।

16. याद कई गई सूचना के बारे में बात करें (Talk about what you have learned) : सीखे गए Concepts को अपने मित्र या परिचित के साथ उल्लेख करें उनके साथ वाद-विवाद करके उस topic के बारे में गहरी समझ बन जाती है।

17. विस्तृत करें (Elaboration) : एक विस्तृत सूचना को याद करने के लिए उस अर्थपूर्ण सूचना प्रदान करें। इसका एक अच्छा उदाहरण है जब संख्या का संयोजन (Combination) याद करना हो तो प्रत्येक अंक (digit) को याद करने के लिए एक

हिस्सा आपका जन्म वर्ष हो सकता है जबकि दूसरा अंक (digit) आपके बच्चों की संख्या हो सकता है।

विस्मृति (भूल जाना)
(Forgetting)

हमारे प्रतिदिन के जीवन में विस्मृति होना सामान्य बात है। कई बार भूल जाना इतना सामान्य हो जाता है कि हम महत्वपूर्ण जानकारी को याद रखने के लिए विभिन्न विधियाँ अपनाते हैं जैसे कागज़ पर नोट करना या मोबाइल पर अनुस्मारक (Reminder) लगाना। कई बार हम चाबियाँ रख कर भूल जाते हैं और यह लगता है कि हमारी यादाश्त से यह जानकारी बिल्कुल जा चुकी है कि हमने वह चाबियाँ कहाँ रखी हैं। विस्मृति या भूल जाना पहले से सीखी गई जानकारी की जाहिर तौर पर क्षति या संशोधन होना है (Wikipedia)\Praveen Shrestha (2017) के अनुसार जानकारी को वर्तमान चेतना में स्मरण करना या चित में रखने की असफलता है। सभी अनुभव मस्तिष्क के स्मृति वाले भागों में छाप छोड़ते हैं तथा स्मृति के हिस्सों से इन भागों को retain करने की असफलता ही विस्मृति है।

विस्मृति का अर्थ है - किसी समय प्रयास करने पर भी किसी पूर्व अनुभव का स्मरण करने या पहले सीखे हुए किसी कार्य को करने में असफलता-विस्मरण से तात्पर्य स्मरण की विफलता से है। जब व्यक्ति अपने भूतकाल के अनुभवों को चेतन में लाने में असफल हो जाता है उसे विस्मृति कहते हैं। जिस प्रकार से जीवन को उपयोगी तथा सुखी बनाने के लिए स्मृति आवश्यक है, उसी प्रकार जीवन में विस्मृति की उपयोगिता का भी महत्व है (विकिपीडिया)

ड्रावर के अनुसार, "विस्मृति का अर्थ है पूर्व से सीखी गई क्रिया को करने की कोशिश या क्रिया करते समय किसी अनुभव को किसी समय भूलने की असफलता है।

स्मृति का रोकने के पाँच कारण

1. संकेतन में असफलता - पहले-चरण में ही जानकारी सीखी नहीं जाती।
2. नष्ट हो जाना - स्मृतियाँ समय के साथ लुप्त हो जाती हैं।
3. पुन: प्राप्ति उचित न होना : उचित reminder नहीं मिलता
4. हस्तक्षेप - दूसरी स्मृतियाँ बीच में आ जाती हैं।
5. याद करने की कोशिश न करना - हम जानबूझ कर याद नहीं करना चाहते।

विस्मृति के मुख्य प्रकार तथा कारण
(Major types and causes of forgetting)

1. लुप्त होना (Fading) : प्राप्त जानकारी का प्रयोग न करने से समय के साथ स्मृति कम होनी शुरु हो जाती है। स्मृति लुप्त होना छोटी-अवधि की स्मृति से शीघ्र ही हो जाती है तथा वहाँ पर नई स्मृति जमा होनी शुरु हो जाती है।

इस प्रकार की स्मृति को धुधंला होना को रोकने के लिए

- जानकारी पर लगातार ध्यान केन्द्रित करते रहें।
- जानकारी को दोहराते रहें।

- जानकारी को लम्बी-अवधि की स्मृति में ट्रांसफर कर दें।

लम्बी-अवधि की स्मृति भी fade हो सकती है। इसमें वही लिंक लुप्त हो जाता है जो जानकारी को पुनः वापिस लाता है। यह लुप्त होना भी रोका जा सकता है।

- जहाँ तक संभव हो जानकारी को अर्थपूर्ण ढंग से संकेतन (encode) करें।
- जानकारी को बार-बार पुनः वापिस लाते रहें।
- जानकारी को सक्रियता से दुबारा जमा करें।
- प्रभावशाली स्मृति को वापिस लाने के ढंग प्रयोग करें।

2. हस्तक्षेप (Interference) : इस समय लम्बी-अवधि वाली स्मृति में जानकारी दूसरी जानकारी के साथ भ्रमित (Confuse) हो जाती है। दो प्रकार की दखल अंदाजी है-

- पूर्वव्यापी हस्तक्षेप (Retroactive interference)
- सक्रिय हस्तक्षेप (Proactive interference)
- **पूर्वव्यापी हस्तक्षेप :** इसमें पहले से सीखी गई जानकारी नई तथा उसी प्रकार की जानकारी के साथ मिल जाती है। उदाहरणतयः एक विद्यार्थी ने विश्व युद्ध-I की घटनाएँ तथा कारण पढ़े हैं। कुछ समय बाद वह विश्व युद्ध-II की घटनाएँ तथा कारण पढ़ता है। यदि वह प्रथम विश्व-युद्ध की घटनाएँ तथा कारण याद नहीं रख पाता तो यह पूर्वव्यापी हस्तक्षेप है।

सक्रिय हस्तक्षेप : इस समय विद्यार्थी नई जानकारी को भूल जाता है क्योंकि वह उसी प्रकार की पहले की जानकारी के साथ नई जानकारी को मिला देता है। यदि विद्यार्थी दूसरे विश्व-युद्ध की घटनाएँ तथा कारण भूल जाता है तो यह सक्रिय हस्तक्षेप है।

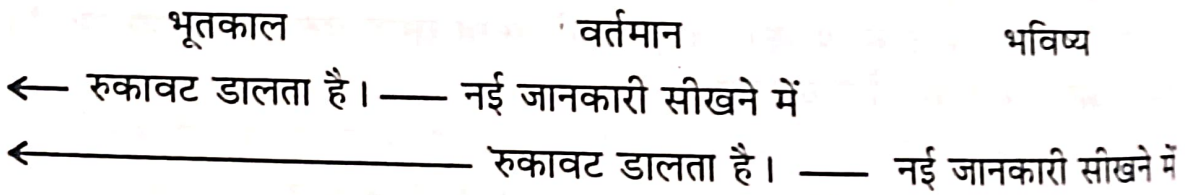

(पूर्वमान्य अवरोध)

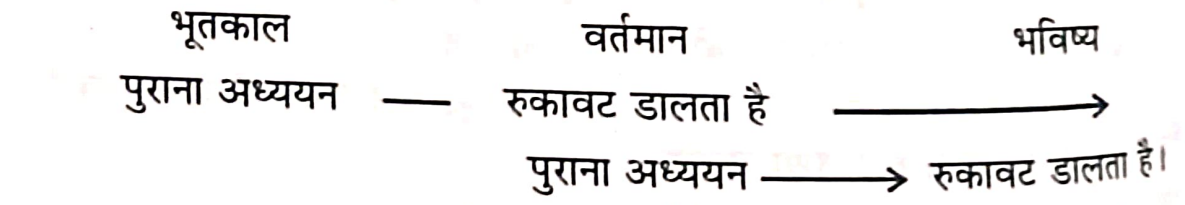

(सक्रिय अवरोध)

प्रेरित विस्मृति (Motivated forgetting) : इसमें स्मृति में बैठी जानकारी को जानबूझ कर रोका या दबाया जाता है। इस समय हम किसी बात को याद करने से अपने आपको रोकते हैं। उदाहरणतयः प्रतांड़ित बच्चा घटनाओं की स्मृति को दबाने पर उन्हें कुछ हद तक भूल जाता है।

स्मृति को दबाना हमेशा संवेगात्मक झटके (trauma) के कारण ही नहीं होता।

उदाहरणत: यदि बच्चे को किसी विषय का अध्यापक अच्छा नहीं लगता तो उसकी उस विषय की स्मृति कम हो जाएगी क्योंकि वह उस विषय के साथ सम्बन्ध नहीं रखना चाहेगा।

पुन: प्राप्ति में असफलता (Retrieval failure) : कई बार स्मृति रहती है परन्तु हम उस तक पहुँच नही पाते। इसके दो कारण हो सकते हैं- संकेतीकरण में असफलता (encoding failures) तथा पुन: प्राप्ति की सूचना (retrieval cues) की कमी। एक सामान्य कारण है कि स्मृति लम्बी-अवधि वाली स्मृति में पहुँची ही नहीं।

जानकारी को आसानी से पुन: वापिस लाया जा सकता है यदि जानकारी कोड encode होते समय के संकेत (cues) उस समय भी उपस्थित हों जब जानकारी को पुन: वापिस लाया जा रहा हो उदाहरणतय: यदि आपने अपने पार्टनर को उस समय शादी के लिए प्रस्ताव दिया जब रेडियो पर कोई गाना चल रहा है तो वह गाना हमेशा आपको याद रहेगा।

Tulving के अनुसार जब कोई जानकारी सीखी जाती है, उसी समय भौतिक वातावरण की जानकारी तथा सीखने वाले की मनोवैज्ञानिक स्थिति भी स्टोर हो जाती है। जानकारी को वापिस लाने के लिए सम्बन्धित जानकारी देकर दोहराया जा सकता है।

समय की त्रुटि (Laps of time) : समय बीतने के साथ-साथ सीखा गया या अनुभव किया गया भूल जाता है मस्तिष्क से स्मृति के चिन्ह समाप्त होने शुरु हो जाते हैं तथा समय बीतने के साथ धीमे पड़ जाते हैं।

आराम तथा नींद की कमी (Lack of rest and sleep) : बगैर आराम और नींद के लगातार सीखते रहना स्मृति को कमज़ोर कर देता है। स्मृति को बेहतर बनाने के लिए 8 घंटे की नींद आवश्यक है।

स्वास्थ्य खराब होना तथा मानसिक अवस्था त्रुटिपूर्ण होना (Poor health and defective mental state) : बेहतर स्मृति के लिए जानकारी की ओर ध्यान देना आवश्यक है परन्तु खराब स्वास्थ्य तथा मानसिक तनाव ध्यान को प्रभावित करता है जिससे सीखना और याद रखना संभव नहीं हो पाता।

सीखी गई सामग्री की प्रकृति
(Nature of the material learned)

अर्थपूर्ण सामग्री को अधिक समय तक याद रखा जा सकता है।

सीखने के लिए प्रयोग की जाने वाली विधियाँ (Method used to learn) : सीखने की विधियाँ यदि व्यवस्थित तथा प्रभावशाली नहीं है तो भूलने की दर बढ़ जाती है।

संवेगों की तीव्रता (Raise in Emotions) : संवेगों के एक दम से तीव्र होने पर दुबारा से दोहराने की क्षमता कम हो जाती है। उच्च संवेगात्मक अवस्था में रक्त में शूगर का स्तर बढ़ जाता है। सन्तुलन बनाने के लिए आन्तरिक ग्रन्थियां Cartisole का स्राव करती है जो स्मृति की कोशिकाओं को विचलित कर देती है। जैसे विद्यार्थी में यदि परीक्षा का डर है, सभी कुछ भूल जाता है। इसी प्रकार संवेगात्मक झटका याद रखने पर बुरा प्रभाव डालता है।

यादाश्त समाप्त (Amnesia) होने से भी विस्मृति हो जाती है। इसका कारण organic या क्रियाशीलता हो सकता है। Organic कारण में किसी बिमारी, दवाई या दुर्घटना से मस्तिष्क का हिस्सा नष्ट हो जाता है। क्रियाशील कारणों में मनोवैज्ञानिक कारण जैसे रक्षात्मक प्रतिक्रिया (defense mechanism) हो सकता है।

विस्मृति कम करने के तरीके
(How to minimize forgetting)

1. याद रखने की कोशिश करें (Intend to remember) : किसी भी जानकारी को याद रखने के लिए आवश्यक है कि आप उसे याद रखना चाहे। यदि आपने पढ़ी गई सामग्री को याद रखने का निर्णय नहीं लिया है तो आप उसी समय भूल जाएँगे।

(a) जहाँ आप आम तौर पर पढ़ते हैं उस स्थान का विवरण दें क्या वह शान्त है? वहाँ टी०वी० न हो, संगीत न हो, बातें न हो।

(b) क्या आप पढ़ी गई सामग्री को याद रखने के लिए प्रोत्साहित हो। उदाहरणतय: क्या आप इन ideas को याद रखने का कारण दे सकते हैं :

- फुटबाल खेल का स्कोर
- नौकरी की इन्टरव्यू में जाने के निर्देश
- टेस्ट के लिए किताब की सामग्री। चाहे आप पढ़ी जाने वाली सामग्री में दिलचस्प न भी हों तो भी उसे पढ़ना पड़े तो क्या आप अच्छी पढ़ाई के तरीके प्रयोग करना चाहेंगे।
- क्या आप पढ़ने से पहले पूर्व दर्शन (Preview) लेते हैं।
- क्या आप प्रश्न पूछते हैं तथा इसके बाद अपने प्रश्नों का उत्तर देने के लिए पढ़ते हैं।

2. यादाश्त को अधिभार न करें (Don't overload the memory) : एक समय में हमारी यादाश्त अधिकतर सात items ही सुविधाजनक तौर पर ले सकती है, परन्तु कईयों के लिए यह भी अधिक है। एक समय पर हमारी यादाश्त तीन, चार या पाँच items ही ले सकती है। इसलिए याद रखें यदि समूह में चार या पाँच items से अधिक हैं तो समूह को छोटे टुकड़ों में तोड़ें।

3. याद करने से पूर्व सामग्री को समझे (Understand before you try to remember) : यदि आप किसी सामग्री को समझते ही नहीं है तो उसे स्मृति में रखना भी मुश्किल होगा। इसलिए आवश्यक है स्मृति में ले जाने से पूर्व उसे समझें।

4. सर्वाधिक दिलचस्प points **का चुनाव करें** (Select the most interesting points) : पढ़ी गई सारी सामग्री को याद नहीं रखा जा सकता। अपने बनाए गए प्रश्नों के उत्तर ढूंढ कर सर्वाधिक महत्वपूर्ण points का चुनाव करें। यदि आप सब कुछ याद रखने की कोशिश करेंगे तो अधिक याद नहीं रख पाएंगे।

5. पढ़ी जाने वाली सामग्री की व्यवस्था करें (Organize the material to be learned) : आपकी स्मृति सबसे अधिक कार्य करेगी यदि आप सूचना को व्यवस्थित करके रखेंगे। इसके लिए औपचारिक या अनौपचारिक खाका बनाएं, map का प्रयोग करें। जब आप किसी वस्तु को देखते हैं तो बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। परन्तु यदि मस्तिष्क में उसका कोई चित्र नहीं है तो आवश्यकता पड़ने पर ठीक जानकारी प्राप्त नहीं होगी।

6. जो आप जानते हैं उसके साथ idea को जोड़ें (Relate the ideas to what you already know) : आपका मस्तिष्क नए idea को तभी स्टोर करेगा यदि आप उसे पुराने idea के साथ relate करेंगे। अपरिचित जानकारी को परिचित जानकारी के साथ

relate करने के लिए सम्बन्ध (association) बनाएं, मानसिक चित्र बनाएं।

7. स्मृति सहायक यंत्र (Use mnemonic devices) : यह स्मृति में सहायता करते हैं। यह सरल, स्पष्ट तथा ताजे हों। हम मजेदार, असाधारण या दोनों प्रकार को याद रखते हैं :

(a) संक्षिप्ति (Acronyms) : दूसरे शब्दों के पहले वर्ण से बना शब्द यादाश्त बढ़ाता है।

उदाहरणतय गणित की समस्याएँ सुलझाने में प्रयोग किया जाने वाला

BODMAS

B - Bracket

O - Of

D - Division

M - Multiply

A - Additionl

S - Subtract

बचपन से इन्द्रधनुष के रंगों को याद करने में हम शब्द प्रयोग करते रहे है :

VIBGYOR

R - Red

O - Orange

Y - Yellow

G - Green

B - Blue

I - Indigo

V - Violet

(b) अक्षरबद्ध कविता (Acrostic) : लिस्टलें उसके प्रत्येक शब्द के शुरुआती वर्ण से एक वाक्य बना लें और उसे याद कर लें।

जैसे : ग्रहों के नाम याद रखने के लिए सूर्य के सबसे नज़दीक से शुरु होकर दूर होते हुए

Mercury, Venus, Earth, Mars, Jupiter, Saturn, Uranus, Neptune इसको एक वाक्य में याद रख सकते हैं।

My Very Educated Mother Just Served US Noodles.

(c) छोटी कविता संक्षिप्ति (Rhyme mnemonic) : हम बचपन से ही टी०वी० पर यह कविता सुनते आए हैं निरमा वाशिंग पाउडर निरमा। यह कविता हमें अभी तक याद हैं। किसी भी गाने को दो बार सुनकर याद कर लेते हैं। जो भी हम याद करना चाहते हैं उसे गीत के रूप में गाकर याद करना चाहिए। टैस्टों के लिए पढ़ते समय संक्षिप्ति सहायक रहते हैं परन्तु यह सीखने का स्थान नहीं ले सकते।

8. बार-बार अपने आपको test करते रहें (Test yourself repeatedly) : अपने नोट बनाए, दूर देखकर अपने आपको दोहराएं। नई item याद करके वापिस जाएं और पहली वाली items भी दोहराएं।

9. सामग्री को अधिक बार सीखें (Over learn the material) : जितना अधिक आप किसी सामग्री को पढ़ते हैं उतना ही अधिक याद रख सकते हैं।

10. सोने से पूर्व पढ़ें (Study before going to bed) : परन्तु बेड के ऊपर न पढ़ें। पढ़ने के बाद कोई फिल्म न देखें या कोई ऐसी क्रिया न करें जिससे नए सीखने में विघ्न पढ़े। समुह उठकर इस सामग्री को दोहरा लें।

11. काम टालने की आदत से बचें (Avoid Procrastination) : हम काम को टालते रहते हैं क्योंकि वह हमें बोरियत भरा, तनाव देने वाला या कम महत्वपूर्ण लगता है। उन कारणों को ढूंढे जो टालने की आदत का कारण बनते हैं तभी हमें भूलने की आदत नहीं पड़ेगी।

12. ध्यान भटकाने वाले कारणों को पहचानें (Identify distractions that lead to forgetting) : कुछ लोग आपके समय तथा ऊर्जा ले लेते हैं, उनसे बचें। चिन्ताएं हमारे ध्यान को कम कर देती हैं। आराम करें तथा ध्यान भटकाने कारणों से बचें। ई-मेल भेजने का खास समय निश्चित करें। जब ऑफिस में हो तो फोन को मूक पर रखें। जब ध्यान को केन्द्रित रखना चाहें तो ऑफिस का दरवाजा बन्द रखें।

अभ्यास के प्रश्न

1. स्मृति से क्या भाव है?
2. स्मृति के तीन चरण कौन से हैं?
3. स्मृति कितने प्रकार की होती है?
4. निम्नलिखित पर नोट लिखें :-
   (i) स्पष्ट स्मृति (ii) प्रासंगिक स्मृति (iii) संवेगात्मक स्मृति
5. आप अपनी स्मृति को कैसे तेज़ कर सकते हैं?
6. विस्मृति का उल्लेख करें।
7. स्मृति को रोकने के क्या कारण हैं?
8. हम भूल क्यों जाते हैं?
9. हम विस्मृति को कम कैसे कर सकते हैं?
10. स्मृति सहायक यंत्र क्या हैं?

LIBRARY

VIJAYA®
TEXT BOOK SERIES
Available both in Hindi & English Medium

बाल्यावस्था तथा बालकों का विकास
[Childhood and Growing Up]
Course-I
Dr. Sunita Kumar, Jyoti Narula & Ritu Kapur
Rs. : 199/- (H) Rs. : 300/- (E)

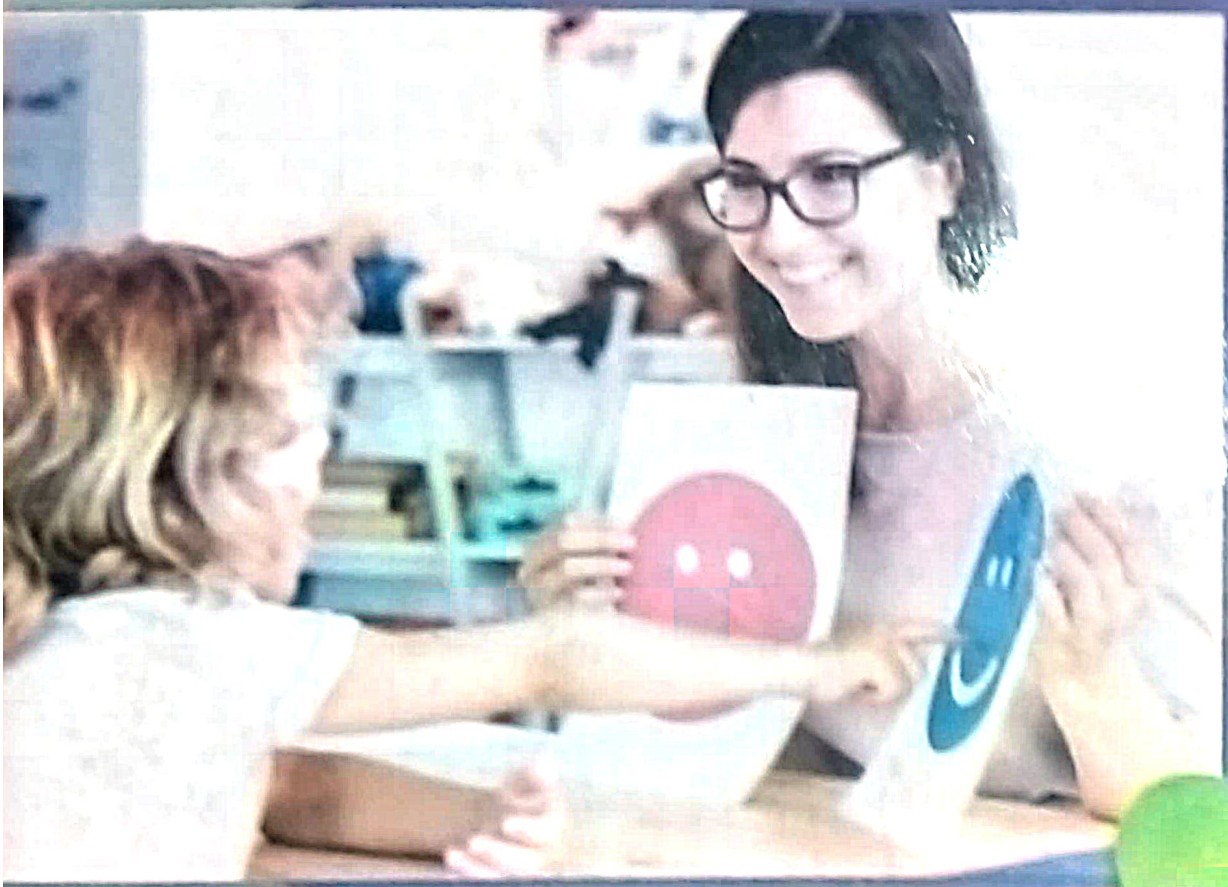

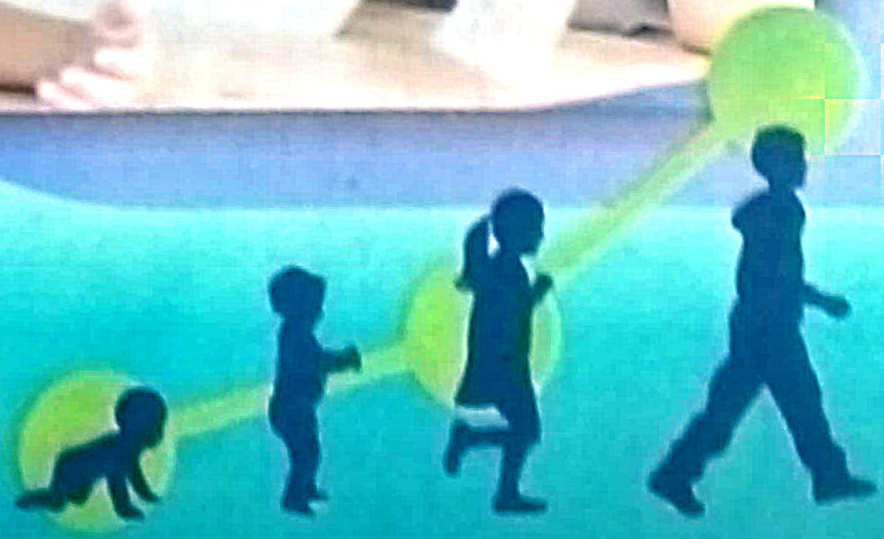

VIJAYA PUBLICATIONS

Educational Publishers

Books Market, Ludhiana-141 008

Ph. : 0161-2726190

Mobile : 9814067258, 9779368600

Email : vijayapublication@yahoo.in

ISBN 978-93-84004-56-9